निवेदन

जमनालाल सेवा-ट्रस्ट पुस्तकमाला का यह आठवां खण्ड 'बापू-स्मरण' पाठकों के सामने रखते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। वास्तव में यह पुस्तक सेवा-ट्रस्ट-माला के पहले खण्ड 'बापू के पत्र' का दूसरा भाग है।

प्रस्तुत पुस्तक दो हिस्सों में विभक्त है। पहले में पूज्य पिताजी (जमनालालजी) की डायरियों में से तथा परिवार के लोगों और मित्रों को लिखे पत्रों में से बापू (महात्मा गांधी) सम्बन्धी उल्लेखों का संकलन है तथा दूसरे में बजाज-परिवार के सदस्यों द्वारा लिखे बापूजी के संस्मरणों का संग्रह है।

आज से कोई नौ वर्ष पहले हमने 'पांचवें पुत्र को बापू का आशीर्वाद' नामक एक ग्रन्थ प्रकाशित किया था जिसमें महात्माजी तथा पिताजी के पत्र-व्यवहार के अलावा बजाज-परिवार के लोगों के साथ हुआ बापू का पत्र-व्यवहार भी था। उसमें पिताजी की डायरियां तथा पत्रों में से गांधीजी-सम्बन्धी चुने हुए अंश देने की जब व्यवस्था की गई तो यह विचार पूज्य काकासाहब कालेलकर को जो उस पुस्तक के संपादक थे बहुत पसंद आया था। उन्होंने इसके सम्बन्ध में अपने निवेदन में लिखा था—

"यह किताब करीब-करीब तैयार हो जाने के बाद परिशिष्ट २ का तैयार मसाला पढ़ने को मिला। इसमें अधिकांश तो जमनालालजी के जानकीदेवी के नाम लिखे हुए पत्र तथा डायरी में गांधीजी के बारे में जो जिक्र पाये जाते हैं उनका संग्रह है। सन् १९१७ के प्रारंभ से लेकर श्री जमनालालजी का विकास कैसा होता गया, कौटुम्बिक जीवन को सामाजिक एवं राजकीय जीवन के साथ एकरूप बनाने का उनका सतत प्रयत्न कैसा था, यह सब इस मसाले में इतना स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ है कि मानो हम उनकी आत्मकथा ही पढ़ रहे हैं।

उपर्युक्त परिशिष्ट में जो मसाला दिया गया था वह बहुत थोड़ा था। लेकिन उससे प्रेरणा पाकर उस आधार पर हमको एक अलग पुस्तक

रूप में देने का तय किया गया और प्रस्तुत संग्रह उसी प्रयत्न का फल है।

इसी प्रकार का एक संग्रह 'विनोबा के पत्र' नाम से इसी माला में पहले निकल चुका है। इसके पहले और दूसरे भाग में विनोबाजी के साथ पिताजी तथा बजाज-परिवार के सदस्यों का पत्र-व्यवहार तथा डायरी के अंश दिये गए हैं तथा तीसरे में बजाज-परिवार के सदस्यों के विनोबाजी-संबंधी संस्मरण हैं।

इन सब प्रकाशनों के पीछे यही भावना है कि पिताजी ने एक साधक के रूप में पूज्य बापूजी और विनोबाजी-जैसे महापुरुषों से जो कुछ पाया उसे सार्वजनिक हित के हेतु प्रकाश में लाया जाय।

जो डायरियां प्राप्त हो सकी हैं, उन्हींमें से उल्लेखों को संग्रह किया गया है। शेष या तो खो गई हैं या नष्ट हो गई हैं।

इस पुस्तक की तैयारी में जिन सज्जनों ने मदद दी है उनके हम आभारी हैं विशेष रूप से श्री रतनलाल जोशी के जिन्होंने डायरीवाले अंशों को देखकर अपने सुझाव दिये।

अंत में पूज्य दादा (आचार्य कृपालानी) को धन्यवाद दिये बिना यह निवेदन समाप्त नहीं कर सकते जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इसकी भूमिका लिखने की कृपा की।

—संपादक

भूमिका

स्वर्गीय सेठ जमनालाल बजाज और उनकी प्रवृत्तियों पर कई पुस्तकों के प्रकाशन के लिए जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट बधाई का पात्र है। जमनालालजी से मेरी पहली मुलाकात सन् १९१८ में कलकत्ता में हुई थी। तब वह युवक ही थे। मैं गांधीजी और उनके सहकर्मियों के साथ कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने वहां गया था। जमनालालजी उदीयमान उद्योगपति के रूप में आगे आ रहे थे और उन्हें ब्रिटिश सरकार से रायबहादुर का खिताब मिला था। उस समय पंडित मदनमोहन मालवीय के प्रति उनकी बहुत आस्था थी। गांधीजी और उनके साथियों को एक धर्मशाला में ठहराया गया था और उसका सारा प्रबन्ध जमनालालजी ने ही किया था। जब जमनालालजी ने गांधीजी को प्रणाम कर उनसे आशीर्वाद मांगा तो गांधीजी ने उन्हें खिताब के लिए बधाई दी और कहा कि उनकी अपेक्षा है कि उसका इस्तेमाल व्यक्तिगत प्रतिष्ठा व गौरव के लिए न कर राष्ट्र सेवा के लिए किया जायगा। तब से गांधीजी के साथ जमनालालजी का संपर्क और आत्मीयता निरंतर बढ़ती गई और अंत में वह उनके परिवार के ही एक सदस्य हो गए।

उस समय जमनालालजी एक उद्योगपति के रूप में उभर रहे थे। द्वितीय महायुद्ध के बाद व्यापार व उद्योग के क्षेत्र में काफी तेजी आ रही थी। कई जॉइंट स्टाक कंपनियां कायम हुईं। उनमें से कइयों ने जमनालालजी को संचालक-मंडल में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया। यदि उन्होंने अपना सारा ध्यान केवल व्यापार और उद्योग पर ही केन्द्रित रखा होता तो वह हमारे देश के प्रथम श्रेणी के गिने-चुने उद्योगपतियों में होते। किन्तु गांधीजी के व्यक्तित्व और देशभक्ति की पुकार से प्रभावित होकर वह राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आंदोलन में शामिल होगए।

सत्याग्रह-आंदोलन के कई कार्यक्रमों में एक था खादी का उपयोग और प्रचार। उस समय कपड़े की मिलों में असाधारण लाभ हो रहा था।

फिर भी इस सिद्धान्त के अनुरूप उन्होंने कपड़े की मिलों में किसी भी प्रकार का हिस्सा लेने से इंकार कर दिया। कुछ समय बाद काफी मुनाफे की शर्तों पर उन्हें कपड़े की एक मिल का प्रस्ताव मिला किन्तु उन्होंने इसी कारण उस प्रस्ताव को भी ठुकरा दिया।

धीरे-धीरे उनका अधिकाधिक ध्यान स्वतंत्रता-संग्राम की ओर मुड़ता गया। उनके व्यापार की व्यवस्था उनके साझीदार करने लगे। आंदोलन के शुरू में ही उन्हें कांग्रेस का कोषाध्यक्ष बनाया गया अतः इस नाते कांग्रेस के लिए धन इकट्ठा करना उनका मुख्य काम रहता था। उन्हें इसका भी ध्यान रखना पड़ता था कि कांग्रेस के पास जो थोड़ा-बहुत धन था वह असहयोग-आंदोलन के समय ब्रिटिश सरकार के हाथ में न पड़ जाय। आज लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि उस समय कांग्रेस के पास १ हजार रुपये की रोकड़ से अधिक जमा रकम कभी नहीं थी। अधिकांश कार्य लोग अवैतनिक ही किया करते थे।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान जमनालालजी एक पूँजीपति से गांधीजी *की कल्पना के अनुरूप कोषों के ट्रस्टी बन गये। उनका जीवन सादा था* और उन्होंने अपने परिवार के अन्य सदस्यों को भी वैसा ही जीवन अपनाने की ट्रेनिंग दी। हां सार्वजनिक कोषों में वह उदारतापूर्वक दान देते रहे। व्यक्तिगत सहायता में भी वे उतनी ही उदारता बरतते थे। अतिथि-सत्कार तो उनका अद्वितीय था ही। उन दिनों कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक अधिकतर वर्धा में ही हुआ करती थी क्योंकि गांधीजी पास ही सेवाग्राम आश्रम में रहते थे। उस आश्रम की भूमि भी जमनालालजी ने ही प्रदान की थी। कार्यकारिणी समिति के प्रत्येक अधिवेशन में छ-सात दिन तक एक साथ उन्हें सैकड़ों मेहमानों की व्यवस्था करनी पड़ती थी और उस समय तो कार्यकारिणी की बैठकें भी बहुत जल्दी-जल्दी हुआ करती थी।

जमनालालजी खरे व्यक्ति थे। निष्पक्षता और न्यायप्रियता की भावना उनमें प्रबल थी। स्वभाव से वह बहुत आशावादी थे और साथ ही बहुत विनोदी भी। मानवीय सहानुभूति उनमें गहरे तक पैठ गई थी। धन और पद के अहंकार से वे मुक्त थे। अपनी राय वह खुले तौर पर देते थे और उसमें किसी प्रकार का भी बंधन उन्हें स्वीकार नहीं था। हमारे

स्वतंत्रता-संग्राम के वह एक महान् सेनानी थे। जिन्हें भी उनके संपर्क में आने का अवसर मिला वे जमनालालजी को कभी नहीं भूल सकते।

प्रस्तुत पुस्तक में जमनालालजी की डायरी व पत्रों के उद्धरण संगृहीत हैं। इन सब उद्धरणों का संबंध गांधीजी से है। इससे पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ जाती है।

डायरी के उद्धरण संक्षिप्त हैं—कई-कई बहुत ही संक्षिप्त मानो लेखक ने उन्हें महज नोट के तौर पर लिख लिया हो, ताकि भविष्य में उन्हें पढ़कर याद ताजा कर ली जाय और उनका उपयोग किया जा सके। इसलिए सामान्य पाठक को शायद इन उद्धरणों का पूरा मतलब और महत्त्व स्पष्ट नहीं हो पायगा। किन्तु जो लोग हमारे राजनैतिक आंदोलन से भली भांति परिचित हैं और उसमें भाग लेनेवाले महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आये हैं उन्हें इनमें मूल्यवान् सामग्री उपलब्ध होगी।

पुस्तक के आखिरी हिस्से में जो पत्र दिये गए हैं, उनका महत्त्व अलग अलग प्रकार का है। उनसे उस युग पर, तत्कालीन सार्वजनिक व्यक्तियों पर और उल्लिखित घटनाओं पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। जमनालालजी के जीवन की झलकियां भी पाठकों को इनमें मिलेंगी।

यह पुस्तक न केवल हमारे स्वतंत्रता-संग्राम और समकालीन जीवन के जिज्ञासुओं के लिए ही उपयोगी सिद्ध होगी अपितु गांधीजी की विचार धारा के विद्यार्थियों के लिए भी।

—जे॰ बी॰ कृपालानी

फिर भी इस सिद्धान्त के अनुरूप उन्होंने कपड़े की
का हिस्सा लेने से इंकार कर दिया। कुछ समय
शर्तों पर उन्हें कपड़े की एक मिल का प्रस्ताव
कारण उस प्रस्ताव को भी ठुकरा दिया।

धीरे-धीरे उनका अधिकाधिक ध्यान स्वतन्
गया। उनके व्यापार की व्यवस्था उनके साझीदा
के शुरू में ही उन्हें कांग्रेस का कोषाध्यक्ष बना
के लिए धन इकट्ठा करना उनका मुख्य काम
ध्यान रखना पड़ता था कि कांग्रेस के पास
जनता-आंदोलन के समय ब्रिटिश सरकार के
लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि
१ हजार रुपये की रोकड़ से अधिक धन
अधिकांश कार्य कोष अवैतनिक ही किया क

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान जमनालाल
की कल्पना के अनुरूप लोगों के ट्रस्टी बन
और उन्होंने अपने परिवार के अन्य सदस्यों
की ट्रेनिंग दी। हां सार्वजनिक कोषों से यह
व्यक्तिगत सहायता में भी वे उतनी ही उदारता
तो उनका अद्वितीय था ही। उन दिनों
अधिकतर वर्धा में ही हुआ करती थी क्योंकि
आश्रम में रहते थे। उस आश्रम की भूमि भी
की थी। कार्यकारिणी समिति के प्रत्येक
एक साथ उन्हें सैकड़ों मेहमानों की व्यवस्था
समय तो कार्यकारिणी की बैठकें भी बहुत

जमनालालजी खरे व्यक्ति थे। मि
भावना उनमें प्रबल थी। स्वभाव से वह
बहुत विनोदी भी। मानवीय सहानुभूति
और पद के अहंकार से वे मुक्त थे। अपनी
और उसमें किसी प्रकार का भी संयम

जमनालाल बजाज की डायरी के
बापू-संबंधी अंश

डायरी के अंश

१९२४

२६ १-२४ पूना

पू महात्माजी के दर्शन किये। वार्तालाप हुआ।

२८ १ २४ बंबई

पूना से ७-४ की एक्सप्रेस से पू महात्माजी के दर्शन व वार्ता करके रवाना हुआ। रास्ते में मथुरादास विक्रमदासजी से साथ बातें।

२-२-२४ पूना

ऐंड्रूज के साथ बापूजी से मिला। एंड्रूज के लिए खादी की धोती कुरता व चद्दर ली।

पू बापूजी से बातें।

५ २-२४ वर्धा

आश्रम के भविष्य के कार्य के बारे में विनोबा से खूब बातें। आकूजी से भी विचार-विनिमय। कार्य के सम्बन्ध में कुछ निश्चय।

पू महात्माजी के आज प्रातःकाल छूटने के तार मिले। चित्त में विशेष आनंद नहीं हुआ।

महात्माजी के छूटने के बारे में आम सभा हुई। श्री रवेला ठीक बोले।

१०-२-२४ वर्धा

गांधीजी की पालकी (जुलूस) निकली।

श्री जमशमलजी गोयनका से अलग बातें। उनके प्रश्नों का स्पष्टता से जवाब देने की कोशिश। महात्माजी के व इनके सिद्धान्तों में अंत्यज-संबंधी बड़ा फर्क है कार्य-पद्धति का भी।

१-४ २४ नासिक

अग्रवाल महासभा में जाना नहीं हो सका। उसके लिए मन में थोड़ा विचार आया प्रेम-बन्धु भी आये। काम के लिए पू महात्माजी की

उन्होने मेरे सभी कामो को पूरी तरह अपना लिया था

—मो क गांधी

२१ ६-२४ अहमदाबाद (आश्रम)

स्टेशन से आश्रम गये। बापू से मिलकर चि० शान्ति को वहीं छोड़कर वल्लभभाई के घर आये। भोजन राजगोपालाचारीजी से बातें। फिर आश्रम गये—वर्किंग कमेटी के लिए। वर्किंग कमेटी का काम २ बजे से ११ बजे तक होता रहा। महात्माजी ने अपने चार प्रस्ताव[1] समझाकर बतलाये। खुलासेवार खूब चर्चा हुई। ये चारों प्रस्ताव वर्किंग कमेटी ने थोड़े फर्क से स्वीकार किये।

---

[1]ये प्रस्ताव २९-६-२४ के हिन्दी 'नवजीवन' में निम्न प्रकार प्रकाशित हैं—

१ इस बात पर ध्यान रखते हुए कि स्वराज्य की स्थापना के लिए चरखा और हाथकती-खादी के आवश्यक माने जाने पर भी और महासभा के द्वारा सविनय भंग के लिए पेशबन्दी के तौर पर उनकी स्वीकृति होते हुए भी देश की तमाम महासभा-संस्थाओं के सदस्यों ने चरखा कातने पर अब तक ध्यान नहीं दिया है, यह महासमिति निश्चय करती है कि तमाम प्रतिनिधिक महासभा-संस्थाओं के सदस्यों को चाहिए कि वे, बीमारी अथवा लगातार सफर की हालत को छोड़कर, रोज कम-से-कम आध घण्टा चरखा कातें और कम-से-कम १ नंबर का १ तोला एक-सा और पक्का सूत अखिल भारतीय खादी-मण्डल के मंत्री के पास भेज दें जोकि हर महीने की १५ ता तक उन्हें मिल जाय। पहली किस्त १५ अगस्त, १९२४ तक उनके पास पहुँच जाय और उसके बाद हर महीने बराबर भेजते रहें। जो सदस्य निश्चित तारीख तक निश्चित तादाद में सूत न भेजेगा उसका पद खाली समझा जायगा और मामूल के मुताबिक उसकी जगह पर दूसरे सदस्य की तजवीज की जायगी तथा पद-च्युत सदस्य अगले साधारण चुनाव तक फिर से चुने जाने का पात्र न समझा जायगा।

२ चूंकि इस बात की शिकायतें पहुँची हैं कि प्रान्तीय मंत्री तथा महासभा के दूसरे पदाधिकारी उन हुक्मों की तामील नहीं करते हैं, जोकि महासभा के बाकायदा अफसरों की तरफ से उनके नाम समय-समय पर भेजे जाते हैं इसलिए महासमिति निश्चय करती है कि जो पदाधिकारी अपने

आज्ञा नहीं मिलने से न जाना ही उचित समझा। महादेव को पत्र लिखवाया।

१८-४-२४ जुहू (बम्बई)

महात्माजी के पास जुहू आया। हाल में यहीं पर रहने का निश्चय हुआ। बापू से थोड़ी बातें। उनके साथ घूमने गया।

२०-४-२४ जुहू (बम्बई)

बापूजी से बातें। बहुत-सी बातों का खुलासा हुआ। उसे अलग लिखकर रखा।

२१-४-२४ जुहू

बापू का मौन था।

सुबह बापू के साथ प्रार्थना। बापू से कई बातों का खुलासा।

२४-४-२४ जुहू

वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। महात्माजी ने अपने विचार प्रकट किये। खादी-कमेटी की भी बैठक हुई।

५-५-२४ नासिक-मिलक

बापू का पत्र* पढ़कर हृदय भर आया। उनका तार आने के कारण रात की गाड़ी से बम्बई गया।

६-५-२४ बम्बई

९ बजे शान्ति आई। कमला व कमलनयन को लेकर बापूजी के पास गया। बापूजी ने कमला से बहुत बातें कीं।

सुन्दरलालजी व भगवानदीनजी के साथ बापू से बातें। खुलासा हुआ।

१६-५-२४ बम्बई

पं. मोतीलाल नेहरू तथा मौ. अबुलकलाम आजाद से बातें। बाद में वे पू. बापूजी से मिले। उनसे बातें करके आनन्द आया।

२४-५-२४ बम्बई

बापू का व स्वराज्य-पक्ष का बयान पढ़ा।

सावरकर से मिले। बातें। उन्होंने महात्माजी के लिए पुस्तकें दीं।

---

*देखिये 'बापू के पत्र' पृष्ठ १२।

२८-६-२४ अहमदाबाद

आश्रम में पूज्य बा ने खाना खिलाया। बापू से बातें। मोटर में उनके साथ मीटिंग के लिए टाउन-हाल आया। रास्ते में बातें होती रहीं।

२९-६-२४ अहमदाबाद (ऐतिहासिक दिन)

'ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी' की कार्रवाई दो बजे तक चलती रही। पू. बापू का भाषण बहुत ही सुन्दर हुआ। मोतीलालजी का भी भाषण

शुद्ध बलिदान को प्रोत्साहित करता है और जो पूर्ण शान्तिमय वायु-मण्डल में ही किया जा सकता है।

उपर्युक्त प्रस्तावों पर महात्माजी ने 'यंग इंडिया' में निम्न वक्तव्य दिया था—

"इस मौके पर तो मैं ठीक वही काम करता हुआ दिखाई देता हूं जिससे मैं बचने की इच्छा रखने का दावा करता हूं—अर्थात् महासभा में फूट पैदा करना और देश में चर्चा और विवाद का तूफान खड़ा कर देना। फिर भी पाठकों को यकीन दिलाता हूं कि कम-से-कम जहांतक मुझसे ताल्लुक है, यह हालत ज्यादा दिनों तक न रहेगी। मेरी एकमात्र चिन्ता और आतुरता यह है कि यह अनिश्चितता का वायु-मण्डल स्वच्छ हो जाय। मैं समझता हूं कि हर शख्स इसमें मेरा साथ देगा। मगर हमें यह जानना हो कि हम कहां हैं तो कुछ चर्चा करना लाजिमी है। मेरे संबंध में लोग खयाल करते हैं कि मैं कुछ चमत्कार करके बता दूंगा और देश को उसके मंजिले-मकसूद पर पहुंचा दूंगा। खुशकिस्मती से मेरे दिल में ऐसा कोई भ्रम नहीं है। हां, मैं एक शुद्ध सैनिक होने का दावा जरूर करता हूं। और अगर पाठक मेरी बात पर हंसें नहीं तो मैं उनसे यह भी कह देना बुरा नहीं समझता कि मैं एक कुशल कप्तान भी हो सकता हूं—महज उन्हीं शर्तों पर, जो मामूली हुआ करती हैं। मेरे पास ऐसे सैनिक होने चाहिए, जो आज्ञा-पालन करते हों, जो अपने तईं और अपने कप्तान के तईं विश्वास रखते हों और जो खुशी-खुशी कामों को करते हों। मेरी कार्य-विधि हमेशा खुली और निश्चित होती है। कुछ निश्चित शर्तें रहती हैं। उनकी पूर्ति पर सफलता का निश्चय ही समझिये। पर ऐसी हालत में बेचारा कप्तान क्या कर सकता है जब उसके सैनिक उसकी शर्तों

२७-६-२४ अहमदाबाद

महात्माजी के प्रस्तावों पर राजगोपालाचारीजी से चर्चा ।

श्री पुरुषोत्तमदासजी टंडन से बातें ।

'ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी' की बैठक ३ बजे के बदले ६ बजे हुई । आपस में चर्चा होती रही। मीटिंग ९ बजे तक चलती रही। महात्माजी का प्रस्ताव आर्डर में है या नहीं इसपर विचार हुआ ।

बाकायदा मुकर्रर अफसरों के हुक्मों की तामील करने में गफलत करेगा, वह अपनी जगह से खारिज समझा जायगा और उसकी जगह पर कायदे के मुताबिक दूसरा शख्स तजवीज किया जायगा; और वह पद-च्युत व्यक्ति अगले साधारण चुनाव तक फिर से चुने जाने का पात्र न समझा जायगा ।

३ महासमिति की राय में यह बात वांछनीय है कि महासभा के निर्वाचक लोग सिर्फ उन्हीं लोगों को पदाधिकारी चुनें जो महासभा के ध्येय के अनुसार तथा महासभा के विविध असहयोग-प्रस्तावों के अनुसार, जिनमें पंचविध बहिष्कार—अर्थात् मिल-बने कपड़ों, सरकारी अदालतों, स्कूलों, खिताबों और धारा-सभाओं के बहिष्कार—शामिल है, खुद चलते हों, और महासमिति यह निश्चय करती है कि जो सभ्य इन पांचों बहिष्कारों को न मानते हों और उनके मुताबिक न चलते हों वे अपनी जगहों से इस्तीफा दे दें, और उन जगहों के लिए नया चुनाव किया जाय—इस्तीफा देनेवाले सज्जन चाहें तो चुनाव के लिए फिर से उम्मीदवार हो सकते हैं ।

४ महासमिति स्वर्गीय गोपीनाथ साहा के द्वारा किये गए श्री डे के खून पर अपना अफसोस जाहिर करती है और मृतात्मा के परिवार के प्रति अपना शोक प्रकट करती है और ऐसे खून जिस देश-प्रेम के कारण होते हैं—फिर वह भ्रान्त ही क्यों न हो—उसका पूरा खयाल रखते हुए भी यह समिति ऐसे तमाम राजनैतिक खूनों की सख्त निन्दा करती है और जोर के साथ अपनी राय जाहिर करती है कि ऐसे तमाम काम महासभा के ध्येय और उसके शान्तिमय असहयोग के प्रस्तावों के खिलाफ हैं और उस सविनय भंग की तैयारी में बाधा डालते हैं जो कि महासमिति की राय में युद्ध के

बापू वर्किंग कमेटी के मेम्बर हुए। गोपीनाथ साहा के प्रस्ताव पर भाषण। काम खतम होने पर बापू का दुःख से भरा हुआ भाषण हुआ। उनकी व सभी की आंखों में पानी भर आया।

का भार सौंपते समय किसीकी पिछली सेवाओं पर ध्यान देने की जरूरत नहीं है—फिर वे कितनी ही उज्ज्वल हों। एक शख्स के लिए—नहीं तो आदमियों के लिए भी देश-हित का त्याग न होना चाहिए। बल्कि देश-हित पर उसीको या उन्हींको कुरबान कर देना चाहिए— 'त्यजेदेकं कुलस्यार्थे'। मैं महासमिति के सदस्यों से निवेदन करता हूं कि वे एक शुद्ध उद्देश्य को लेकर, बिना पक्षपात और मिथ्या भावुकता एवं भावनाओं के अधीन न होते हुए इस काम को हाथ में लें। मैं आपको बताकर और चेताकर कहता हूं कि मुझ पर अंध श्रद्धा न रखियेगा। किसी बात को इसलिए ठीक न मानियेगा कि मैं उसे ठीक कहता हूं। आपको खुद ही निर्णय करना चाहिए। आपको खुद अपने दिल का और क्षमता का अन्दाज मालूम कर लेना चाहिए। इतने दिनों के समागम से आपको यह तो मालूम हो ही गया होगा कि मैं एक बेढब साथी हूं और एक कड़ा काम लेनेवाला हूं। पर अब वे मुझे और भी ज्यादा सख्त पावेंगे।

"मैंने यह दलील पढ़ी है कि खादी से स्वराज नहीं मिल सकता। यह पुरानी है। अगर हिन्दुस्तान को यूरोप के नफीस कपड़ों की—फिर वे चाहे मैंचेस्टर के बने हों चाहे बम्बई की मिलों के—चाह हो तो उसे करोड़ों भाई बहनों के लिए स्वराज की बात का खयाल ही छोड़ देना चाहिए। अगर हमारा विश्वास चरखे के पैगाम पर हो तो हमें खुद चरखा कातना चाहिए और मैं दावे के साथ कहता हूं कि वे इसे बड़ा उत्साहजनक काम पावेंगे। अगर हम शान्तिमय उपायों से और इसलिए शान्तिमय संघ के द्वारा, स्वराज लेना चाहते हैं तो हमें शान्तिमय वायु-मण्डल तैयार किये बिना चारा नहीं। अगर हम हजारों की भीड़ में मनमाने व्याख्यान झाड़ने के बदले उनके अन्दर चरखा कातकर उन्हें दिखावें तो अभीष्ट शान्तिमय वायु-मण्डल तैयार हो जायगा। अगर मुझसे हो सके तो मैं तो महासभा-संस्थाओं के हरेक सदस्य का मुंह बन्द कर दूं—हां मेरा और शायद शौकतअली

हुआ। उनके स्टेटमेंट का अच्छा असर नहीं हुआ। वह बैठक में से उठकर चले गए।

'ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी' का काम सुबह से १ बजे तक होता रहा। भोजन के बाद अनसूया बहन के यहां वर्किंग कमेटी ३ बजे से ६ बजे तक होती रही। 'ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी' शाम को ७ बजे से फिर शुरू हुई।

को मानते तो हों पर उन्हें कुछ पालते न हों और शायद उनका विश्वास भी उनपर न हो। इन प्रस्तावों की तजवीज इसलिए की गई है कि जितने सैनिकों की योग्यता की जांच हो जाय। बल्कि इसे दूसरी तरह से कहूं तो ठीक होगा। सैनिकों की हालत तो बड़ी अच्छी है। क्योंकि वे अपना जनरल खुद चुनते हैं। उनके भावी जनरल के लिए उसकी सेवा की शर्तें जान लेना जरूरी है। मेरी हालत वही है, जो १९२० में थी। पर जितने दिन बीते हैं उतना ही मेरा विश्वास बढ़ गया है। अगर मेरी सेना बाहुबलवालों का भी यह हाल है तो वे मेरा तन और मन—सर्वस्व अपना ही समझें। दूसरी किसी तजवीज में मेरा विश्वास नहीं है। इसलिए दूसरी किसी शर्त पर मैं सेवा करने योग्य नहीं हूं। इसलिए नहीं कि मुझे सेवा की इच्छा नहीं है, बल्कि इसलिए कि मैं उसके लिए अयोग्य हूं। जहां किसी २५ वर्ष के पक्के सूखे अच्छे नौजवान की जरूरत हो वहां अगर कोई सफेद बालोंवाला ५५ बरस का बूढ़ा, जिसके दांत टूट गए हों तन्दुरुस्ती अच्छी न हो, दरख्वास्त लेकर हाजिर हो तो कैसे काम चल सकता है?

"इसलिए इन चार प्रस्तावों को जनरल की जगह के लिए मेरी दरख्वास्त ही समझिये। इसमें मेरी योग्यता और मर्यादा दोनों आ जाती हैं। इसमें न तो किसी प्रकार की मनमानी की जाती है और न कोई असंभव बात चाही गई है। अगर सदस्य लोग समझें कि मैं गलती पर हूं और अगर वे अपनेको तथा अपने मुल्क को धोखा न देना चाहते हों, तो उन्हें मेरा कुछ मुलाहिजा न रखना चाहिए। मैं मानता हूं कि कोई शख्स ऐसा नहीं है जिसके बिना देश का काम रुकता हो। हर शख्स अपनी जन्म-भूमि का, उसके द्वारा मानव-जाति का, ऋणी है। और जिस घड़ी वह अपना कर्ज चुकाने से मुंह मोड़े उसी घड़ी उसे खारिज कर देना चाहिए। इसलिए मौजूदा सेना-नायकों

१-७-२४ साबरमती-आश्रम

प्रार्थना में बापू ने चौथे नंबर के प्रस्ताव का विवेचन किया। उनके साथ घूमने गया। घूमते समय बातें। बाद में पू० बापूजी से 'गांधी-सेवा-संघ' के बारे में बहुत देर तक विचार-विनिमय होता रहा। श्री राजगोपालाचारी व राजेन्द्रबाबू मौजूद थे। संघ के प्रस्ताव उद्देश्य-नियम आदि तैयार किये गए। श्री राजगोपालाचारी व महात्माजी को दिखाकर उनकी नकल की गई।

४-७-२४ साबरमती-आश्रम

प्रार्थना के बाद बापू से बातें। बापू ने जो कहा था कि १८ महीनों के बाद उनका शरीर नहीं रहेगा उसका खुलासा किया। अपनी मानसिक स्थिति के बारे में विचार। बापू से आश्रम के बजट पर चर्चा। खादी-मण्डल-संबंधी बातें। चरखा कातना।

५-७-२४ आश्रम

प्रार्थना के बाद बापू से ट्रस्ट के बारे में चर्चा। उनके साथ घूमना तथा विचार-विनिमय। काम करने का निश्चय।

११-७-२४ बम्बई

रामनारायणजी के बंगले पर गया। रामनिवास की माताजी ने दस हजार रुपये के ब्याज-बाज हिन्दी प्रचार या महात्माजी की इच्छा के मुताबिक किसी कार्य में लगाने का स्वीकार किया।

१-८-२४ साबरमती-आश्रम

गुजरात-मेल से अहमदाबाद पहुंचा। बेलगांववाला साथ में थे।

शंकरलालभाई बैंकर के साथ आश्रम तथा खादी-बोर्ड की चर्चा।

बापू से बातें। राष्ट्रीय शिक्षण-परिषद में बापू के साथ गया। बापू का भाषण मनन करने योग्य हुआ।

खादी-बोर्ड की बैठक में गया। बापू के साथ आश्रम-संबंधी बातचीत का खुलासा हुआ। प्रार्थना की।

२-८-२४ साबरमती-आश्रम

सुबह प्रार्थना में। बापू का प्रवचन।

छगनलालभाई के साथ मकान की जगह देखने गये। विद्यालय की प्रार्थना में।

खादी-बोर्ड की बैठक। गुजरात खादी-भंडार बम्बई का अच्छी स्थिति में जो माल हो वह खरीद-कीमत पर रेल-खर्च चढ़ाकर २ टके कम से लेने का निश्चय हुआ—बापूजी व वल्लभभाई के साथ। छः महीने के अन्दर रकम देना तय हुआ।

१९-९-२४ वर्धा से दिल्ली

दिन-भर करीब-करीब रेल में ही बीता। रात में ८ ३ बजे दिल्ली पहुंचे। सीधे बापूजी के दर्शन करने के लिए मौ मुहम्मद अली के मकान पर गये।

२३-९-२४ दिल्ली

नेताओं की एकता-कान्फ्रेंस आज के लिए नियत की गई थी। परन्तु कुछ लोगों का आज पहुंचना असम्भव था इसलिए २६ तारीख के वास्ते कान्फ्रेंस बढ़ा दी गई।

२२-११-२४ बम्बई

खादी-बोर्ड की बैठक हुई। ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की भी बैठक हुई। बी अम्मा के लिए चौपाटी पर जाहिरा सभा हुई। बापूजी बोले। मैं भी बोला।

५-१२-२४ अमृतसर-लाहौर

पू महात्माजी के साथ अमृतसर गया। अकाली-दमन की जांच का कार्यक्रम निश्चय हुआ। कमेटी में डॉ किचलू सी आर दैदो ख्वाजा गाजी अब्दुल रहमान और मेरा नाम था।

डायरी के अंश

१९२५

१०-२-२५, साबरमती-आश्रम

सुबह ४ बजे प्रार्थना में। बापू ने कोहाट के बारे में मुसलमानों के द्वेष आदि की चर्चा की और विशेष प्रेम व नम्रता से इनकी सेवा करने का अपना इरादा बतलाया। अंग्रेज-जाति का उदाहरण दिया।

राजकोट के ठाकुरसाहब का बापू के स्वागत का कार्यक्रम देखने योग्य था। बापूजी के साथ खुलासा बातें हुईं।

१ वर्धा में मारवाड़ी राष्ट्रीय विद्यालय खोलने का विचार उन्होंने पसन्द किया।

२ श्री पुणतांबेकर को ही अधिष्ठाता बनाने की सलाह। वेतन दो सौ रुपये तक विशेष परिस्थिति समझकर देना चाहिए, ऐसा उनका मत था।

३ श्री अप्पासाहब को रत्नागिरि में ही प्रयत्न करना चाहिए, ऐसी इच्छा बताई।

४ श्री पुरुषोत्तम सिन्धवाले के बारे में व श्री कृष्णदास के बारे में अपनी पसंदगी बतलाई।

५ राजपूताना-खादी-कार्य के लिए मथुरादास पुरुषोत्तम के बारे में चर्चा प्रयत्न करने के लिए कहा।

६ बम्बई खादी भंडार का नाम बदलने का कहा।

७ कमला का विवाह आगामी वर्ष जब मुहूर्त निकले करने का कहा।

८ अग्रवाल-माहेश्वरी विवाह हो सके तो ठीक रहे।

११-२-२५, आश्रम

सुबह प्रार्थना में गया। आज का भजन व बापू का प्रवचन सुन्दर था। बापू आज बोरसद की ओर गये। मुझे साथ ले जाना चाहते थे पर मैं

नहीं गया। चूनी-भीकी तक पैदल गया बापू के साथ बातें। नीचे लिखी बातों की जाँच करने का कहा—

१ मणिबा के पत्रों का उत्तर। लक्ष्मी व शान्ता को पत्र।

२ बालचन्द कोठारी को पुनः पत्र।

३ बम्बई मेंस्थन-पत्र की तलाश करके रखना।

४ ठीक हो तो १) रु की मदद करना।

५ कामिया मूनिर्वासिनी अबीमद को सहायता।

६ श्री अबुलकलाम आजाद के खर्च के बारे में।

७ श्री पुरुषोत्तम त्रिकमदासजी से बातें व सहायता। पगार ७५) खर्च की व्यवस्था काम करें तो।

१२-२ २५, आश्रम

श्री देवदास गांधी से बापू-परिवार के बारे में बातें।

१४-२-२५, आश्रम

पूज्य बापू के साथ बातें। श्री पुणतांबेकर और बापू के साथ खुलासे वार बातें। पुणतांबेकर ने वर्धा मारवाड़ी महाविद्यालय में २ रु मासिक पर रहना स्वीकार कर लिया।

२४ २-२५, पालीताना

श्री ठाकुरसाहब नामवार बहादुरसिंहजी (पालीताना) से मिले। बहुत ही सज्जन पुरुष मालूम हुए। उन्होंने खादी और महात्माजी पर पूरी श्रद्धा दिखाई।

२५-२-२५, आश्रम

मगनलालभाई के पुत्र राधाभाई का विवाह यशोदादेवी के साथ हुआ। पू बापू न कन्या की प्रतिज्ञा गुजराती में कन्या के द्वारा शास्त्र-विधि के अनुसार कराई। विवाह के कारण प्रार्थना जल्दी हुई। बापूजी ने आश्रम में विवाह करने का कारण समझाया।

४-३-२५, आश्रम

पू बापू गुजरात-मेल से आये। नवजीवन-कार्यालय में प्रेस तथा पत्रों के संबंध में विचार। बापूजी ने स्वामी आनंद के कहने से हिन्दी 'नवजीवन' चालू रखने को कहा। ११॥ बजे आश्रम आया।

श्रीमती वसन्तीदेवी मोतीलालजी नेहरू, जवाहरलालजी आदि से बात-चीत ।

१९-७-२५, कलकत्ता

महात्माजी बंगाल-प्रांतीय अग्रवाल सभा में २॥ बजे आये। उपस्थिति ठीक थी। सामाजिक सुधार पर महात्माजी का जोरदार तथा विचारणीय व्याख्यान हुआ ।

२०-७-२५, कलकत्ता

महात्माजी के पास रहा ।

डॉ पी सी राय के यहां जवाहरलाल नेहरू के साथ गया। उनके हस्ताक्षर कराये। अखिल भारतीय देशबंधु दास मेमोरियल के संबंध में बातें। उनके प्रेमल अनुभव हुए।

जवाहरलालजी अहमदाबाद गये। पं मोतीलालजी से खानगी तथा सार्वजनिक बात ।

२१-७-२५, कलकत्ता (अतराई)

महात्माजी के पास रहा ।

हरीलाल गांधी से थोड़ी बातें ।

५-८-२५, शांतिनिकेतन

श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर के यहां प्रार्थना भजन ।

श्री द्विजेन्द्रनाथ टैगोर (बड़ो दादा) से बातें। पू बापूजी के प्रति बहुत ही श्रद्धा व भक्ति प्रकट की। उनकी पद्धति से अवश्य सफलता प्राप्त होगी ऐसा भी कहा।

डायरी के अंश

१९२८

२७-१-२८, साबरमती-आश्रम

निर्मला के साथ रामदास गांधी का विवाह हुआ ।

३-२-२८, आश्रम

अहमदाबाद में साइमन-कमीशन के बहिष्कार को लेकर हड़ताल ठीक रही ।

५-२-२८, आश्रम

पूज्य बापूजी को आश्रम-विद्यालय के उत्सव में करीब ६। बजे एकाएक मूर्छा आ गई ।

८-२-२८, आश्रम

बापूजी से उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे संतोषकारक निर्णय कराया ।

१९-२-२८, आश्रम

पूज्य बापूजी की डॉक्टरो ने जाच की । वजन ९७ पौण्ड । स्वास्थ्य ठीक मालूम हुआ ।

२४-४-२८, कलकत्ता

मगनलालभाई (गांधी) का पटना मे कल २३ तारीख को स्वर्गवास हो गया । समाचार जानकर दुःख और चिन्ता हुई ।

गुजरातियो की तरफ से मगनलालभाई के निमित्त आचार्य राय की प्रमुखता में शोक-सभा हुई ।

२५-४-२८, पटना

चि कृष्णदास के साथ पटना पहुंचा । चि राधा बहुत व्याकुल हो रही थी । उसे समझाया ।

पू मगनलालभाई के दाह-स्थल पर गया । स्नान तिलांजलि प्रदक्षिणा आदि की ।

दोपहर की गाड़ी से वि राधा व कुष्णदास को आश्रम रवाना किया।

२२-५-२८ साबरमती-आश्रम

पू बापूजी को अपनी मनोदशा खासकर ब्रह्मचर्य-संबंधी शुरू से लगाकर आज तक की जो लिख रखी थी पढ़कर सविस्तर सुनाई। उसपर पूज्य बापूजी का कहना था कि जिस प्रकार आश्रम के साथ तुम्हारा संबंध है, उसी प्रकार रखने में तो कोई हर्ज ही नहीं है।

८ ६ २८, बंबई-लोनावला

पूज्य मालवीयजी से बारडोली के संबंध में बातचीत।

२०-६-२८, आश्रम

पूज्य बापूजी वल्लभभाई, पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास जालजी-नारायणजी के साथ बारडोली-सम्बन्धी चर्चा में भाग लिया।

१९-७-२८, वर्धा

आज भी लक्ष्मीनारायण मंदिर अस्पृश्य लोगों के लिए खोल दिया गया। सुबह से लगाकर रात १ बजे तक मंदिर में जनता का व्यवहार बहुत ही संतोषप्रद व उत्साहजनक रहा।

मंदिर को खोलते समय का पू विनोबा का भाषण भावपूर्ण और बोध प्रद था। श्री परांजपेजी का हरि-कीर्तन भी ठीक रहा। परमात्मा की शक्ति में श्रद्धा और विश्वास विशेष बढ़ा।

११-८-२८, बनारस

पूज्य मालवीयजी के हाथ से हिन्दू-विश्वविद्यालय में खादी-भंडार खोला गया।

२९-८-२८, पूना

हिन्दू-सभा की ओर से डॉ मौपटकर की अध्यक्षता में अस्पृश्यों के लिए भी लक्ष्मीनारायण-मंदिर खोला गया।

१ ११-२८, साबरमती-आश्रम

चर्खा-संघ के विधान में सुधार करने का मसविदा पू बापूजी को देखने को दिया।

१७-११-२८, वर्धा

वर्धा-स्टेशन पर पू लालाजी (लाजपतराय) के स्वर्गवास के समाचार मिले। चिंता हुई।

२९ ११ २८, वर्धा

पू गांधीजी ने लालाजी की तेरहवीं के निमित्त आश्रम में विद्यार्थियों के बीच व गांव की जाहिर सभा में भाषण किया। श्री घनश्यामदासजी भी अच्छा बोले।

११ १२ २८, कलकत्ता

आज रात १ बजे कांग्रेस के खुले अधिवेशन में पू महात्माजी का एक वर्ष की मोहलतवाला प्रस्ताव पास हुआ।

डायरी के अंश

१९२९

२७-३-२९, दिल्ली

मथुरा से दिल्ली तक पू. महात्माजी के साथ आये। बापू से श्री छगनलालभाई गांधी के बारे में बातें कर लीं। संतोष हुआ। बापू से और भी बातें हुईं।

दिल्ली में वर्किंग कमेटी का कार्य हुआ।

२८-३-२९, दिल्ली

सवेरे वर्किंग कमेटी का काम पंडित मोतीलालजी के यहां हुआ। १ ३ बजे तक।

३-४-२९, साबरमती-आश्रम

२ १ से ५ बजे तक चरखा-संघ की मीटिंग पू. बापूजी के सामने होती रही।

४-४-२९, आश्रम

पू. बापूजी से बातें। पू. मगनलालभाई की लड़की चि. रुक्मिणी का संबंध चि. बनारसीलाल बजाज के साथ करने के बारे में खूब विचार विनिमय। खुलासे के बाद पू. बापूजी व घरवालों ने निश्चय किया।

श्री वल्लभभाई के यहां 'गांधी-सेवा-संघ' की बैठक, वहीं पर भोजन। राजेन्द्रबाबू, राजगोपालाचारीजी, गंगाधरराव आदि के साथ बातें।

६-४-२९, आश्रम

आज आश्रम में राष्ट्रीय दिवस मनाया गया। राजगोपालाचारीजी का अंग्रेजी में सुन्दर भाषण हुआ। अंग्रेजी का हिन्दी में अनुवाद मैंने किया।

७-४-२९, आश्रम

आज शाम की प्रार्थना में 'नवजीवन' में से बापू का लेख 'मेरा दुःख मेरी शर्म' पढ़कर सुनाया गया। सुनकर हृदय में खूब दुःख हुआ।

आज 'बायकाट-दिन' होने के कारण शहर में नदी-किनारे सभा हुई। मुझे सभापति बनना पड़ा।

आश्रम में होली मनाई।

२१-५-२९, बम्बई

चरखा-संघ की मीटिंग सुबह ८ बजे पू० बापूजी के यहां हुई। भोजन के बाद शाम को फिर बापूजी की उपस्थिति में चरखा-संघ की मीटिंग का कार्य हुआ।

२४-५-२९, बम्बई

शाम को ४ ३ बजे कांग्रेस-हाउस में ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई। बापूजी नहीं आए थे। दिन में ११ ३ बजे से कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक पू० बापूजी के स्थान पर हुई।

११-८-२९, बम्बई

पू० महात्माजी आज यहां थे। उनके पास ही ज्यादा रहना हुआ। उनके स्वास्थ्य के संबंध में उनसे थोड़ा लड़ना पड़ा। वह गुजरात-मेल से अहमदाबाद गये।

१७-८-२९, पूना

बम्बई से टेलीफोन आया कि साबरमती से तार द्वारा पू० बापूजी के स्वास्थ्य के नरम होने की खबर मिली है। चिन्ता हुई। रात की गाड़ी से जाने का निश्चय किया।

१८-८-२९, बम्बई

पूना से सवेरे बम्बई पहुंचा। पू० बापूजी का स्वास्थ्य सुधर रहा है, यह जानकर चिन्ता कम हुई। डॉ० जीवराज मेहता से पू० बापूजी के स्वास्थ्य के संबंध में बातें।

२०-८-२९, साबरमती-आश्रम

पू० बापूजी की तबीयत देखी। थोड़ी देर बातें भी कीं। वल्लभभाई आये। उनकी पू० बापूजी से बातें। डॉ० देसाई से पू० बापूजी के स्वास्थ्य के संबंध में चर्चा।

२१-८-२९, आश्रम

जैसा मेरी समझ में आया वैसा पंजाब का इतिहास पू० बापूजी को बतलाया।

चरखा-संघ की बैठक में महत्व का काम खतम हुआ।

२१-८-२९, पूना

स्वामी आनन्द ने आज के 'टाइम्स' की खबर पर से मेरा इंटरव्यू लिया। मसविदा बापूजी को देखने के लिए भेजा।

२८-८-२९, साबरमती-आश्रम

पू. बापूजी से स्वास्थ्य, भ्रमण-संबंधी आदि बातें। भोजन के बाद बापूजी से फिर बातें। उन्होंने कहा कि डॉक्टर की सलाह स्वीकार है।

२९-८-२९, आश्रम

भोजन-बाद पू. बापूजी ने दिनभर प्रायः मिल-मालिक व मजदूरों के झगड़े के निपटारे में अपनी शक्ति लगाई।

पू. बापूजी से चि. बनारसी के संबंध आदि की बातें। रात में जवाहरलालजी आदि आये।

३०-८-२९, आश्रम

जवाहरलालजी से करीब एक घंटा पू. बापूजी के भ्रमण-संबंधी बातें। फोटो देखे। जवाहरलालजी व बापूजी की बातें। बापूजी से चर्चा।

१-९-२९, राजकोट

सर प्रभाशंकर पट्टणी से मिलने गया। देशी राज्य प्रजा-परिषद के बारे में दो घंटे से भी ज्यादा बातें।

काठियावाड़ युवक-कान्फ्रेंस में बोलना पड़ा। वहां की कार्रवाई से थोड़ा असंतोष हुआ।

४-९-२९, साबरमती-आश्रम

पू. बापूजी से सर प्रभाशंकर पट्टणी, घुमक्कड़ सरकारदेवी अस्पताल तथा कान्फ्रेंस-संबंधी बातें।

४-९-२९, आश्रम

पू. बापूजी ने कहा कि जवाहरलाल से राष्ट्रपति के संबंध में खुलकर चर्चा करना। इसके मुताबिक जवाहरलालजी से खूब बातें हुईं। बाद में पू. बापूजी के साथ भी बातें हुईं।

५-९-२९, साबरमती

पू. बापूजी से जमनुलालभाई की लड़की उमिया की सगाई के संबंध में बातें। बापूजी ने जल्दी करने को कहा।

देशी रियासतों में रचनात्मक कार्य के साथ-साथ बापूजी की रीति नीति के अनुसार थोड़ा राजनैतिक कार्य करने के संबंध में चर्चा।

६-९ २९, साबरमती

पू महात्माजी ने देशी राज्य प्रजा-परिषद का विधान बनाकर दिया। उसपर चर्चा। विधान ठीक मालूम हुआ। आज सुबह रुई धुनकर और पूनी बनाकर भी मीराबहन को दी। पू बापूजी के लिए माला की व्यवस्था।

७-९-२९ बम्बई

दादर में उतरकर, मार्टुगा में स्नान करके विले-पारले गये। वहां 'भगिनी-समाज' के मकान के शिलारोपण का मुहूर्त था। पू बापूजी पांच मिनट बोले पर बड़ा सुन्दर बोले।

लाहौर-ऐक्सप्रेस से पू बापूजी के साथ भोपाल रवाना।

८ ९ २९, भोपाल

भोपाल में डॉ अन्सारी स्टेशन पर आए। भोपाल के बड़े अफसर भी थे। भीड़ अच्छी थी। महल में ठहरे। यहां सार्वजनिक सभा आदि करने के बारे में जो कई प्रकार की कठिनाइयां थी वे दूर हुईं।

९ ९ २९, भोपाल, (बापू का मौन-दिन)

पू बापूजी के साथ सुबह पैदल घूमने गया। डॉ अन्सारी की तथा और सब बातें रास्ते में उन्हें बताईं। नवाबसाहब से कोई दो घंटे से ज्यादा मुलाकात हुई। बहुत साफ और दिल खोलकर बातें हुईं। यहां खादी-कार्य का भविष्य ठीक मालूम होता है। पू बापूजी को थैली अर्पण करने की व्यवस्था।

शाम को प्रार्थना की व्यवस्था बाहर की जिसमें सब शामिल हो सके।

नवाबसाहब से पू बापूजी की बहुत देर तक बातचीत होती रही। बाद में जामिया की चर्चा हुई।

१०-९-२९, भोपाल

सुबह पू बापूजी के साथ खादी व बुड-स्टोर देखने गए। स्टेट की ओर से व्यवस्था की गई थी। श्री शोयाब ने अच्छी तरह दिखलाया। वहीं पर भोजन किया। बड़ा आनन्द आया।

भोपाल में सार्वजनिक सभा। श्री राजा अवधनारायण (फायनेंस मेम्बर) सभापति थे। सभा बहुत बड़ी हुई। भोपाल में यह पहली आम सभा थी। पू बापूजी अच्छा बोले।

प्रार्थना के बाद बापूजी से तीसरी बार नवाबसाहब मिले। मौड जाति के लोगों से मिलकर स्टेशन आये। आगरा के लिए रवाना।

११ ९ २९, आगरा

पू बापूजी व बा के साथ मोटर में जमुना के तट पर गये। वहां के मकान में ठहरे। व्यवस्था अच्छी थी। श्री पालीवालजी तथा अन्य कार्यकर्ताओं से बातें।

श्री रामनाथजी कुंजरू के साथ राधास्वामी-संप्रदाय का दयालबाग देखा। बहुत सुन्दर संस्था व आदर्श आश्रम मालूम हुआ। डेरी बोडिंग आदि देखे। श्री साहेबजी महाराजजी से बातें।

रात को बड़ी भारी सार्वजनिक सभा हुई।

२-१०-२९, लीम्बर

शाम को पू बापूजी की जयन्ती मनाई गई। श्री शंकरलालभाई बैंकर सभापति थे। सभा ठीक हुई। बाद में श्री शंकरलालभाई से बहुत देर तक बातचीत होती रही।

१७-११ २९, प्रयाग

म्युनिसिपैलिटी व डिस्ट्रिक्ट कौंसिल में पू बापूजी को मानपत्र दिया गया।

शाम को आम सभा में महात्माजी को कोई तीस हजार की थैली भेंट की गई।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी की १ से ३ व ९॥ से ९ बजे तक बैठक हुई।

१८-११ २९, प्रयाग

पूज्य बापूजी के साथ घूमने गए। आज उनका मौन दिन था। मुझे जो कुछ कहना था कहा।

वर्किंग कमेटी शाम को देर तक चलती रही। लीडर्स सभा। रात को फिर वर्किंग कमेटी चली। बाद में लीडर्स सभा। रात में दो बजे तक काम चलता रहा।

१९ ११-२९, प्रयाग

पूज्य बापूजी से स्टेशन पर मिले ।

४-१२-२९, साबरमती-आश्रम

पू महात्माजी से बातें ।

चि शंकरलाल व उमिया का विवाह ठीक तौर से हो गया ।

१३-१२ २९ वर्धा

पूज्य बापूजी से बातें ।

श्री हिंगारे, पटवर्धन धर्माधिकारी आदि आये । नागपुर-विद्यालय के संबंध में बापू से चर्चा व विचार-विनिमय । उनका निर्णय रहा कि अप्रैल से दो वर्ष तक कुछ शर्तों के साथ दो सौ रुपया सहायता दी जाय ।

१९ १२-२९, वर्धा

पूज्य बापूजी से बातें ।

१६ १२ २९, वर्धा

आज पूज्य बापू के साथ सभी मित्रों ने दोनों समय अपने यहां घर पर भोजन किया ।

मीराबहन व रेजीनॉल्ड रेनाल्ड्स नागपुर से रात को आये ।

२०-१२-२९, वर्धा

पूज्य बापूजी के साथ घूमते हुए आश्रम आया । बापूजी से बातें होती रहीं । बाद में फिर स्वामी आनन्द के साथ पूज्य बापूजी के पास गया । पूज्य बापूजी ने जोर देकर कहा कि इन्हें अस्पृश्यता-कमेटी का मंत्री बनाया जाय । स्वामी आनंद से बहुत देर तक बातें हुईं ।

२१ १२ २९, वर्धा

सुबह पू बापूजी तथा उनके साथियों के साथ ग्रांड ट्रंक से दिल्ली रवाना । रास्ते में बापूजी से बातें ।

बापूजी मंदिर व खादी-भंडार देखकर गये थे ।

२४ १२-२९, दिल्ली-लाहौर

दिल्ली-स्टेशन पर सरोजनी नायडू से बातें । पू बापूजी ने वाइसराय के साथ जिद करके भूल की ऐसा उनका मत था ।

२९-१२-२९, लाहौर

विषय-समिति का काम चार बजे दोपहर तक होता रहा। सारी कार्रवाई देखकर विशेष उत्साह व आनन्द नहीं हुआ।

कांग्रेस का अधिवेशन ५। बजे से ७॥ तक हुआ। जवाहरलाल का भाषण साधारण ठीक था। डा किचलू का भी ठीक था।

३०-१२-२९, लाहौर

विषय-समिति व ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक रात में बहुत देर तक होती रही। विषय-समिति का व्यवहार संतोषकारक नहीं मालूम हुआ।

३१-१२-२९, लाहौर

सर शादीलालजी के लड़के व लड़की खादी पहनकर आये। उन्हें पू बापूजी मीराबहन जवाहरलाल आदि से मिलाने के बाद प्रदर्शनी दिखलाई।

कांग्रेस का काम दोपहर १ बजे से रात के १२। बजे तक होता रहा। रात को १२ बजे महात्माजी का पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास हुआ। १ बजे के अंदाज निवास पर पहुँचे।

डायरी के अंश

१९३०

९-११ लाहौर

पं॰ जवाहरलालजी से बातें। उन्होंने बताया कि पंजाब-सरकार को बापूजी मोतीलालजी व उनको (जवाहरलालजी को) गिरफ्तार करने की केन्द्रीय सरकार ने इजाजत नहीं दी।

१२-११ नासिक रोड सेंट्रल जेल

बापूजी की गुजराती पुस्तक 'यरवडाना अनुभव' पढ़ना शुरू किया।

१७-११ सेंट्रल जेल

चरखा चलाया। पू॰ बापूजी की 'यरवडा-जेल के अनुभव' नाम की पुस्तक आज पूरी की।

८-१२ सेंट्रल जेल,

बापू का लिखा 'सर्वोदय' पढ़ना शुरू किया।

१४-१२ सेंट्रल जेल

गांधी-माला में से पू॰ बापूजी के आफ्रिका-जेल के अनुभव पढ़े। बाद में रिचर्ड ग्रेग की लिखी Economics of Khaddar (खादी का अर्थशास्त्र) पढ़ना शुरू किया।

१५-१२ सेंट्रल जेल

'गांधी-विचार' का तेरहवां भाग पढ़ा।

१०-८ १ सेंट्रल जेल

आज पत्र मिले। जी-वर्ग में रहा। बापूजी की टुकड़ी के लोग मंडल को चलानेवाले हैं। उन्हें रिलिजिन्स आदि के बारे में तथा अखबारों में खबर न छापने का महत्त्व समझाया। इन लोगों ने बड़ा विरोधी कार्यक्रम रखा था।

१२-८-३ सेंट्रल जेल

आज सुबह सी-वर्ग में से बापूजी के टकली के ४ सत्याग्रही छूटे। उनका दर्शन किया और उन्हें विदा किया। उनके स्वागत के लिए गांव में से बाजा वगैरा आया था।

१३-८-३ सेंट्रल जेल

आज 'टाइम्स' में गांधी कैंप व राष्ट्रीय झंडे के बारे में संपादकीय लेख अच्छा था।

१५-८-३ सेंट्रल जेल

आश्रम का विद्यार्थी रामसुख आज छूटा। इसके हाथ पू. बापूजी के लिए टकली व जमनाजी बजाज की बनाई सूत की माला भेजी।

पू. बापूजी का गोमतीबहन के नाम का पत्र पढ़ा।

१७-८-३ नासिक रोड सेंट्रल जेल

आज व्रत रखा। बापूजी की अनुवाद की हुई 'अनासक्तियोग' में से गीता के १८ वें अध्याय का पाठ किया।

१९-९-३ धुलिया-जेल

देशी तिथि के अनुसार आज बापूजी का जन्मदिन 'चरखा बारस' है। पू. बापूजी को ६१ वर्ष पूरे हुए और ६२वां वर्ष लगा। प्रार्थना की। 'वैष्णव जन' भजन गाया। आज का सौदाम सुबह तीन बजे से शुरू हुआ। साढ़े दस घंटों में २५६ तार माने १४११ गज सूत रात के ११॥ बजे तक खतम किया। बीच में सूत उतारने आदि में जो समय लगा सो अलग। शाम को प्रार्थना के बाद भजन। जेल के साथियों ने बापूजी-संबंधी लिख लेख पढ़े और आनन्द मनाया।

२-१०-३ धुलिया-जेल

अंग्रेजी तिथि से आज पू. बापूजी का जन्म-दिन है। सुबह ५ बजे प्रार्थना करने के बाद गांधी-शिक्षण में से पू. गांधीजी के 'मंगल विचार' में से कुछ अंश पढ़ा। सब साथियों ने एक घंटा कताई की। रात को प्रार्थना के बाद एक घंटे तक बापूजी की जीवनी में से पढ़ा गया।

७-१०-३ धुलिया-जेल

पू. बापूजी का जानकीदेवी के नाम लिखा छोटा-सा स्नेह-भरा पत्र पढ़कर खुश हुआ।

१६-१०-३० धुलिया-जेल

श्री नारायणदासभाई का पत्र आया। साथ में 'सर्वधर्म-समभाव' पर ता० २३-९-३० को बापूजी ने यरवडा-जेल से जो विचार लिख भेजे वह तथा ३०-९ को 'सर्वधर्म-समभाव' नामक लेख के संबंध में जो पत्र भेजा वह पढ़ा। बड़ा सुख मिला।

२५-१०-३० धुलिया-जेल

पू० बापूजी की आत्मकथा का पहला खंड पढ़ना शुरू किया। रात में एक घंटा तक पढ़ता रहा।

२७-१०-३० धुलिया-जेल

दिन में बापूकी आत्म-कथा पढ़ता रहा।

३१-१०-३० धुलिया-जेल

पू० बापूजी की 'आत्मकथा' का प्रथम खंड पूरा हुआ।

२९-११-३० धुलिया-जेल

आज बापूजी की 'आत्मकथा' का दूसरा भाग पूरा कर दिया।

१-१२-३० धुलिया-जेल

आज गीता-जयन्ती होने के कारण पू० बापूजी का लिखा 'अनासक्ति-योग' पूरा पढ़ डाला।

७-१२-३० धुलिया-जेल

अखबार पढ़े। महादेवभाई को ९ महीने की सख्त कैद व ३५) जुरमाना हुआ। जुरमाना न देने पर डेढ़ महीने की सजा और।

बंबई में ५ ता० को 'गांधी-दिवस' के निमित्त हुई सभा व जुलूस में लाठी चार्ज व गिरफ्तारी हुई। लाठी-चार्ज में २५० आदमी जख्मी हुए।

डायरी के अंश

१९३२

२-१-३२, बम्बई

श्री राजगोपालाचारीजी से बातें। उनकी पुत्री चि० लक्ष्मी का सम्बन्ध देवदास से आज निश्चित हुआ।

पू० बापूजी से बातें। चर्खा रखने व अस्पृश्यता-आदि के कार्य के बारे में चर्चा।

४-१-३२, बम्बई

सुबह मणिलाल कोठारी ४ बजे के करीब आये। उन्होंने बताया कि पू० बापूजी व वल्लभभाई को सुबह ३-१५ पर गिरफ्तार कर लिया गया। सन् १८२७ के बम्बई रैग्युलेशन सं० २५ के अनुसार नजरबंद करके दोनों को यरवडा ले गए। मैंने अपनी भी जेल जाने की तैयारी कर ली। कार्यकर्ताओं व इष्ट-मित्रों से बातचीत तथा विचार विनिमय।

१५-१-३२, बम्बई

बिड़ला-हाउस में पू० मालवीयजी के पास ठहरा। पू० मालवीयजी से बातें। वर्किंग कमेटी का हाल पू० बापूजी की मनःस्थिति व उनके वाइसराय से हुए तार-व्यवहार और वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव उनको बताये। उनके विचारों में परिवर्तन हुआ।

पू० मालवीयजी व माडरेट नेताओं की कान्फ्रेंस हुई। सर कावसजी से बोलचाल हो गई। दुःख हुआ।

१०-२-३२, धूलिया-जेल

पू० कस्तूरबा चि० शान्ति वगैरा मुलाकात को आये। सुपरिटेंडेंट ने मिलने की परवानगी नहीं दी इस कारण सुबह मुलाकात नहीं हुई। शाम को शांति मिलने आई।

२-४-३२, धुलिया-जेल

पू. बापूजी का पत्र आज विसापुर होकर यहाँ आया। पढ़ा। रात में ही पू. बापूजी को पत्र लिखकर रखा।

२८-४-३२, धुलिया-जेल

पू. बापू का दूसरा पत्र आया। उसपर विनोबा से खूब चर्चा हुई। दूध लेने के संबंध में विनोबा का संतोषजनक उत्तर।

१-५-३२, धुलिया-जेल

पू. मालवीयजी आदि छूट गए। गांधीजी के छूटने की मित्रों को आशा होने लगी। सरोजिनीदेवी के छूटने की खबर सुनी। विश्वास नहीं हुआ।

८-५-३२, धुलिया-जेल

बापू के प्रति मीराबहन की सगुण भक्ति है व विनोबा की निर्गुण। मैंने यह विनोबा को बताया तो उन्होंने यह स्वीकार किया।

१९-५-३२, धुलिया-जेल

रात में नींद देर से आई। टाल्स्टाय की कहानी व तुलसी-रामायण, कांग्रेस-संगठन, पू. बापू के मंत्री, फादर ऐल्विन व एंड्रूज सरीखे सहायक आदि के विचार आते रहे।

१०-७-३२ धुलिया-जेल

विनोबा के छात्र व मराठी प्रकाशन-विभाग के संचालक भाऊ पानसे को बापूजी ने गीता के ध्यान के बारे में पत्र लिखा*। उसकी नकल की।

२४-८-३२, धुलिया-जेल

लंदन में बापूजी का जो भाषण रेकार्ड हुआ था वह सुना। सुन्दर था।

१४-९-३२, धुलिया-जेल

भोजन के बाद आराम के समय मणिभाई कोठारी व गुलजारीलाल नंदा की घबराहटभरी आवाज सुनी। बापू के ता. २० से आमरण उपवास की खबर से गुलजारीलाल एकदम फूट-फूटकर रोने लगे। मेरे मन में थोड़ा विचार आया। बाद में सब मित्रों को समझाया।

---

* देखिये 'महादेवभाई की डायरी' भाग १ (नवजीवन प्रकाशन मंदिर द्वारा प्रकाशित)

बापू-होर ११ मार्च होर-बापू ११ अप्रैल बापू-मैकडानल्ड १८ अगस्त मैकडानल्ड-बापू ८ सितंबर और बापू-मैकडानल्ड ९ सितम्बर के तार पढ़े।

१७-९ ३२, धुलिया-जेल

रानडे देव व चन्द्र राय की अस्पृश्यता-निवारण की दृष्टि से व बापू के उपवास के कारण वर्तमान परिस्थिति में उसका क्या मर्म है यह समझा-कर बताया।

२०-९ ३२ धुलिया-जेल

गांधीजी के उपवास के लिए सब राजनैतिक कैदियों ने बहुत ही शान्ति गंभीरता व भावना से प्रार्थना की। श्री मणिभाई कोठारी व मुंशीजी के सुन्दर प्रवचन हुए।

२१-९ ३२, धुलिया-जेल

आज बापू के उपवास का दूसरा दिन है।

२२-९ ३२, धुलिया-जेल

बापू के उपवास का आज तीसरा दिन है। बापू के समाचार मालूम हुए। जेलर ने बुलाया। अस्पृश्यों के बारे में जो प्रश्न-उत्तर भेजा वह बतलाया।

प्रताप सेठ मिलने आये। महात्माजी का उपवास मिल-मजदूर तथा स्वास्थ्य आदि के संबंध में बातें। भविष्य के बारे में कहा।

बापू के उपवास का चौथा दिन।

२३-९ ३२ धुलिया-जेल

हिंगणघाट में एक मंदिर व वर्धा ताल्लुके में तीन मंदिर हरिजनों के लिए खुले।

२४ ९ ३२ धुलिया-जेल

बापू के उपवास का पांचवा दिन। 'गांधी-विचार-दोहन' पढ़ा।

पू बापू ने यरवडा-जेल से २१ ता को मेरे कमलिभाई के नाम जो पत्र भेजा था वह आज मिला। पढ़कर अपनी योग्यता व जवाबदारी का विचार आया। परमात्मा से प्रार्थना। बापू का प्रेम। अस्पृश्यता-संबंधी समझौता जल्दी होने की आशा है ऐसा समाचार मिला।

२६-९-३२, धुलिया-जेल

'गांधी-विचार-दोहन' पढ़ा ।

बापू की प्रतिज्ञा पूरी हुई । शाम को ५। बजे उपवास पूर्ण हुआ ।

वर्धा का राममंदिर हरिजनों के लिए खुलने का तार आया ।

प्रधान मंत्री ने पूना-समझौता स्वीकार कर लिया ।

बम्बई का १ बजे का तार यहां १-३५ को मिल गया । उपवास-समाप्ति का राजाजी का नीचे लिखे आशय का तार मिला—

'सोमवार सवा पांच बजे बापू ने उपवास समाप्त किया । टैगोर ने प्रार्थना कराई । बा ने फलों का रस दिया ।

स्वरूपरानी व कमला नेहरू, आश्रम के बच्चे तथा दूसरे उपस्थित थे ।'

२७-९-३२ धुलिया-जेल

बापू की तबीयत के बारे में लिखा । कमलनयन से मैंने कहा कि अस्पृश्यता-निवारण की दृष्टि से हरिजनों के लिए मंदिर वगैरा यहां भी खुलने चाहिए । उन्होंने इस सम्बन्ध में उद्योग करने का स्वीकार किया ।

बापू का जन्मदिन देसी तिथि से चरखा-द्वादशी । आज बापू को ६३ वर्ष पूरे हुए और ६४वां वर्ष लगा । चार बजे से नरसिम्या अखंड चली । मेरे जिम्मे चार घंटे चरखा चलाना आया ।

पूज्य बापू का सुबह जो पत्र लिखा था वह आज शाम को भेज दिया । बापू का स्वास्थ्य सुधर रहा है यह जानकर सुख मिला ।

२९-९-३२ धुलिया-जेल

मणिभाई कोठारी वगैरा ने कहा कि बापू तीन तारीख से पहले छूट जायंगे । स्थिति आशाजनक लगती है ।

३ से ९ तक बापू-सप्ताह निश्चित करना बताया ।

३०-९-३२ धुलिया-जेल

रामेश्वरलाल मिला । जानकी के नाम लिखा बापू के पत्र की नकल बताई । बड़ा सुन्दर पत्र है ।

बापू-सप्ताह निश्चित करना ठाना ।

२-१०-३२ धुलिया-जेल

अंग्रेजी तारीख के हिसाब से आज बापू का जन्मदिन है ।

३-१०-३२, धुलिया-जेल

बापू ने जानकी को जो पत्र लिखा उसका उर्दू में अनुवाद किया।

४-१०-३२, धुलिया-जेल

साथियों ने आज गांधी-सप्ताह पूरा किया। भजन प्रार्थना आदि में शामिल हुआ। प्रसाद बांटा। सीताराम शास्त्री ने बापू के आगामी जन्म-दिन तक १२ मंदिर खुलवाने का संकल्प किया।

२-११-३२, धुलिया-जेल

यरवडा-मंदिर से मेरे स्वास्थ्य के बारे में पू. बापू का तार आया। उसका जवाब तैयार किया।

३-११-३२, धुलिया-जेल

मेरे स्वास्थ्य के बारे में कल पू. बापू का जो तार आया था उसपर सुपरिंटेंडेंट से विस्तृत विचार-विनिमय के बाद उसका जवाब तार से भेज दिया। तार भेजने के बाद डॉ. मोदी की जो राय आई, वह सुपरिंटेंडेंट को बतलाई।

४-११-३२, धुलिया-जेल

बापूजी को विस्तार से पत्र लिखा। जेलर को पढ़कर सुनाया। उसी समय बापूजी का मेरे नाम का २ ता. का लिखा हुआ पत्र मिला। उस पत्र का भी विस्तृत जवाब दिया। उसकी नकल की। आज बापू के पत्र का ही काम हुआ। इसमें साढ़े पांच घंटे लगे।

५-११-३२, धुलिया-जेल

उर्दू का अभ्यास किया। बापू को पत्र जो लिखा उस बारे में सुपरिंटेंडेंट से बातें। उनके व्यवहार से दुःख हुआ। उसका व्यवहार बहुत ही अपमान-जनक लगा।

आराम के बाद जेलर के कहने से दूसरा पत्र लिखकर और नकल करके दिया। मन में बुरा लगता रहा।

१४-११-३२, धुलिया-जेल

ता. १ को बापू का जो पत्र आया था उसका जवाब आज लिखकर ईश्वेरदास के टाइम पर दिया।

जानकी पू. बापू का तार आया—काम के बारे में डॉ. मोदी के पास

से जांच कराने के लिए व खादी के बारे में भी। आपस में विचार करके पू बापू व भाई जी पी को तार भेजने का निश्चय हुआ। वे दोनों तार जेलर के पास भेज दिये गए।

१५ ११ ३२, धुलिया-जेल

पू बापू को भेजे जानेवाले पत्र जेलर को बराबर पढ़कर बतला दिये। पू बापू व भाई जी पी के तार के मसविदे में भी मणिभाई व दूसरे मित्रों की सलाह से थोड़ा फर्क किया। तार दोनों को भेजे गए। मन हल्का हुआ।

२१ ११ ३२ धुलिया-जेल

पू बापू को तार भेजा।

शाम को यहाँ जेल के वातावरण से ऐसा आभास होने लगा कि मुझे शायद पूना भेजें। मन में आनन्द व शान्ति महसूस की।

२६-११ ३२ यरवदा-जेल

बारह बजे यरवदा-जेल में पहुँचा। बापू के निकट होने के कारण मन को बड़ा संतोष शांति और आनन्द मिला। बापू के दर्शन की इच्छा। बापू का पत्र मिला। उत्तर भेजा।

२७-११ ३२, यरवदा-मंदिर

मेजर भंडारी व मेहता दोनों मिले। अच्छी तरह से जांच वगैरा की। दूध-मक्खन आदि अधिक लेने का मेजर मेहता ने आग्रह किया। मेजर भंडारी ने साग खाने को भी कहा। मैंने कहा कि बापू से सलाह करके निश्चय करेंगे।

मन को खूब शांति व प्रसन्नता हो रही है। यहाँ कुछ महीने रहने से अवश्य लाभ होगा ऐसा लगता है।

२९ ११ ३२, यरवदा-मंदिर

आज बापू-दर्शन का दिन है।

सुपरिंटेंडेंट का बुलावा आया। पू बापूजी वहां पहले से मौजूद थे।

एक ही जेल में होते हुए भी जमनालालजी को बापूजी के साथ न नहीं रखा गया था। जेल के अन्दर ही उनका आपस में पत्र-व्यवहार होता था।

प्रणाम किया। उनसे स्वास्थ्य खानपान आदि की चर्चा हुई। मिलने के बारे में लिखा-पढ़ी करनी होगी।

३-१२-३२, यरवदा-मंदिर

आज सुबह मैंने आधा रतल बकरी का व एक रतल भैंस का दूध लिया। सुना कि बापू ने आज दूध नहीं लिया।

बापूजी के फिर से उपवास करने की उड़ती हुई चर्चा सुनी। मन में थोड़ा विचार होने लगा।

४-१२-३२, यरवदा-मंदिर

बापूजी ने आज उपवास करने का विचार एक बार छोड़ दिया ऐसा सुना तथापि अभी फैसला नहीं हुआ। ईश्वर सब ठीक करेगा।

७-१२-३२, यरवदा-मंदिर

मेजर मेहता आये। बापू की राजी-खुशी के समाचार कह गए। मुलाकात आई. जी. पी. से पूछकर देंगे।

बापू का स्वास्थ्य के बारे में व कमल को लंका (सीलोन) भेजने के बारे में पत्र मिला। मैंने उत्तर दिया और कमल को दक्षिण अफ्रीका भेजने की अपनी राय लिखी।

११-१२-३२, यरवदा-जेल

बापू का सुन्दर पत्र मिला[1]। जवाब मेजर भंडारी को पूछकर भेजना है।

१२-१२-३२, यरवदा-मंदिर

सुपरिंटेंडेंट इन्सपेक्शन के लिए आये।

कर्नल डायर व कमल के बारे में बापू का पत्र मिला। बापू के पत्र का जवाब आज भेजा।

१४-१२-३२, यरवदा-मंदिर

बापू ने फाउंटेनपेन की स्याही भेजी। बापू का वजन १ १ रतल हो गया यह जाना।

ब्राउन ब्रेड में जो शक्कर पड़ती है उसके सम्बन्ध में बापू से चर्चा

---

[1] देखिये 'बापू के पत्र' पत्र-संख्या १७ और १८।

करना। दो रतल गेहूं में तीन रतल की तीन रोटी होती हैं, माने २६॥ तोले गेहूं दिन-भर में खाया जाता है।

२०-१२-३२, यरवडा-मंदिर

मेजर मेहता ने कल 'सी'-वर्ग के लोगों के साथ मिलने-जुलने के बारे में संकोच दिखाया। मेजर भंडारी से उसका खुलासा किया।

गुरुवायूर मंदिर-प्रवेश-संबंधी फाइल बापू भेज देंगे। अस्पृश्यता निवारण-संबंधी अन्य कागजात भी मैं देख सकता हूं यह खुलासा हुआ है।

टोस्ट अस्पताल में बनाकर देने का कहा। स्वदेशी धनकर की व्यवस्था की चर्चा।

पू. बापू से मुलाकात हुई। आज मालूम हुआ कि बम्बई-सरकार ने मुझे बापू से मुलाकात करने की पूरी छूट दी है। बापू से तेल व धनकर की चर्चा हुई। गुरुवायूर मंदिर-प्रवेश के बारे में बापू ने कहा कि शायद उपवास न करना पड़े। मुझे फाइल देखने को देंगे। सजा के बारे में बापू से विनोदात्मक चर्चा। कमल की पढ़ाई के संबंध में भी।

२२-१२-३२, यरवडा-मंदिर

प्रार्थना के बाद ४॥ से ६ बजे तक बापू की अस्पृश्यता-निवारण-संबंधी फाइल पढ़कर वापस भेजी।

मेजर भंडारी से बापू के पास मुझे रहने देने या मुलाकात के समय उन्हें मिलने देने के संबंध में काफी चर्चा हुई।

बापू से तीसरी बार आफिस में सुपरिंटेंडेंट की उपस्थिति में मुलाकात हुई। बातचीत व चर्चा में बापू का समय थोड़ा ज्यादा ले लिया, उसका मन में विचार होता रहा।

२५-१२-३२, यरवडा-मंदिर

बापू से ९॥ से १२ बजे तक आज चौथी बार मिला। संतोष हुआ। अस्पृश्यता-निवारण की फाइल देखकर तीन बजे वापस की।

२७-१२-३२, यरवडा-मंदिर

आज बापू की एक नम्बर की हरिजन-फाइल देखकर वापस भेजी। आज करीब चार घंटे हरिजन-फाइल पढ़ने में गये।

१०-१२-'३२, यरवडा-मंदिर

प्रार्थना-बाद हरिजन-ग्रंथमाला में २ पद्य और बाद में वापस भेजी।

बापू को लिखकर गुरुवायूर मत-संग्रह का परिणाम व उस संबंध में बापू का स्टेटमेंट मंगवाया। वह शाम को आया। उसे तीन बार पढ़ा। मन को थोड़ी शान्ति हुई। पर बापू को उपवास के जरिये ही यह शरीर छोड़ने का विचार पैदा हुआ इस संबंध में विचार चलता रहा।

ईश्वर-इच्छा!

११-१२-'३२, यरवडा-मंदिर

रात को दो बजे बाद नींद नहीं आई। चार बजे से पहले ही प्रार्थना आदि करके गुरुवायूर मंदिर-प्रवेश के संबंध में बापू ने उपवास करने का जो स्टेटमेंट दिया उसकी नकल की। इसमें साढ़े तीन घंटे लगे। फिर बापू को पत्र लिखा।

डायरी के अंश

१९३२

२-१ ३३, यरवडा-मंदिर

पू. बापू से करीब डेढ़ घंटा मुलाकात हुई। उनका पत्र मुझे करीब ९॥ बजे मिला। इसलिए पूरी तैयारी नहीं कर पाया।

यहाँ आने के बाद बापू से चार मुलाकातें पहले हो चुकीं। आज यह पाँचवीं थी।

हरिजन-फाइल देखी। शाम की प्रार्थना के बाद भी करीब दो घंटे देखना पड़ा।

५-१ ३३, यरवडा-मंदिर

बापू से १२ से १ बजे तक एक घंटा मुलाकात हुई। संतोषजनक बात-चीत। मंदिरों की फेहरिस्त, हरिजन-फंड, विनोबा ने नालवाड़ी में आश्रम कायम किया उस बारे में और आश्रम का कब्जा, बालकोबा की देखरेख, देशपांडे वास्ताने, वर्धा के मुकदमे, वर्धा-बैंक, कान व जनेऊ आदि के बारे में बापूजी से चर्चा हुई।

७-१ ३३, यरवडा-मंदिर

हरिजन-फाइल पढ़ी। बापू के नाम विनोबा ने नालवाड़ी से १०-१२ ३२ को जो पत्र भेजा वह तथा छोटेलालजी का पत्र पढ़ा। विनोबा का पत्र पढ़कर बड़ा सुख व प्रेम मिला।

९ १ ३३ यरवडा-मंदिर

पू. बापू से सातवीं मुलाकात १२ से १ बजे तक। सिक्ख-कमेटी के विधान के बारे में तथा अन्य बातें। अस्पताल की मशीन पर, जिसकी मेजर मेहता ने बापू के हाथ का दबाव लिया यह देखा।

११ १ ३३, यरवडा-मंदिर

रात में सुन्दर स्वप्न आया जैसे आकाशवाणी हुई और प्रत्येक मंदिर

की देवमूर्तियाँ कहने लगीं कि गोपी का कहना सही है। उसीके अनुसार करो। अस्पृश्यता का भय निकाल डालो आदि।

आज सुबह प्रार्थना के बाद व दोपहर को ऑल इंडिया एण्टी-अनटचेबिलिटी लीग जिसका नाम अब 'सर्वेन्ट्स ऑफ अनटचेबल्स सोसायटी दिल्ली' हो गया है के विधान तथा कार्य-पद्धति आदि के बारे में बापू से विचार विनिमय। बापू के कहने पर अपने सुझाव उन्हें सविस्तर लिख भेजे।

१४-१-३३ यरवदा-मंदिर

हरिजन-सम्बन्ध में से श्री रणछोड़भाई पटवारी के ८८ प्रश्न व बापू के उत्तर ध्यान से पढ़े व नोट किये।

बापू से आठवीं मुलाकात १२ से १ बजे तक। घनश्यामदासजी को विधान के बारे में तथा अन्य सूचना का पत्र भेज दिया।

रणछोड़भाई के प्रश्न २, ३, ९, १८, १७, ४, ७४, ७७ के जवाब के बारे में मैंने मेरे अपने विचार उन्हें कहे। पोलक आज बापू से मिलनेवाले थे। रोहित मेहता के बारे में उन्होंने पूछताछ की। मेजर मेहता की परवानगी लेकर रोहित मेहता से मिला। डॉ. भाजेकर के साथ प्रथम बार बीमारों की बैरक आज देखी। रोहित को हिम्मत दी। उन्होंने कहा कि पेरोल के लिए मेजर भंडारी के कहने पर लिखा है।

बापू से मिलने के बाद थोड़ी देर सो गया। बाद में हरिजन की नई फाइल देखना शुरू किया।

१५-१-३३, यरवदा-मंदिर

आज बापू की बकरियाँ व उनके बच्चों के दर्शन नहीं हुए—सुबह व शाम को भी बापू का नाई नपस्त भी नहीं आया।

१६-१-३३ यरवदा-मंदिर

पूज्य बापू से १२। से १॥ बजे तक नवीं मुलाकात। हरिजन-प्रश्न नगीनदास मास्टर का प्रश्न तथा जेल व मारपीट पर चर्चा आदि। सुपरिंटेंडेंट भंडारी ने विश्वास दिलाया कि भविष्य में ऐसा नहीं होगा।

जेल में निम्न सुधारों की चर्चा पू. बापू से व जेल-अधिकारियों से करने का विचार—

१. मारपीट बिलकुल बंद होनी चाहिए।

२ सी-वर्ग के कैदियों को कोठरियों में बन्द होने के समय न फर्क करना—देरी से बंद करना।
३ पोस्ट कार्ड की जगह पत्र।
४ इतवार को तेल नमक की सुविधा।
५ जो गुड़ न लें उन्हें दाल।
६ सी-वर्गवालों के लिए लिखने के साधन।
७ रोशनी का इंतजाम।
८ पेशाब के कूंडे ढंके रहने की व्यवस्था।
९ दाल तथा रोटी में सुधार।
१० गेहूं इस वर्ष सस्ता है। बाजरा की जगह दे सकते हैं।
११ अखबार कम-से-कम साप्ताहिक तो दिया ही जाय।

१९-१-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से आज लम्बी मुलाकात १२-१ से १॥ तक बातचीत। साथ तो सनातनियों से अपील तथा समझौते का खुलासा पढ़ा। संतोष हुआ। ता० १४ के स्टेटमेंट का खुलासा बापू ने समझाया। कमलनयन मसीनदास मास्टर तथा नवीनचन्द के बारे में चर्चा। बरेलीवाला नोटिस इन्हें पसंद है। वाइसराय का जवाब नहीं आया। विनोबा के तथा मेरे कागजात के बारे में बापू ने दोनों मेजरों से चर्चा की। मैंने उन्हें चिन्ता न रखने को कहा।

२१-१-३३ यरवदा-मंदिर

मेजर भोसले आये। पूछा कि डॉ० मोदी को बुलाना चाहते हैं क्या? मैंने कह दिया कि जरूरत होगी तब बापू की सलाह लेकर निश्चय कर लिया जायगा। यहां बुलाने की इच्छा कम है।

२३-१-३३ यरवदा-मंदिर

बापू से १२ से १ बजे तक प्यारभरी मुलाकात। बापू ने 'आश्रम का इतिहास' लिखा है। वह मुझे पढ़ने को भेजेंगे ऐसा कहा। महिलाश्रम वर्धा के बारे में कहा कि विचार करके कहेंगे। डॉ० मोदी को दिखाने के लिए बापू की राय रही कि बम्बई जाना ही ठीक हो तो दिखाना चाहिए। वह सुपरिंटेंडेंट से बात करेंगे। जल-सुधार के बारे में कुछ चर्चा हुई। इस संबंध में

अपने विचार मैंने बापू के सामने रखे। बापू ने कहा कि इसके लिए कोशिश तो करनी चाहिए परन्तु अपमान गाली-गलौज मारपीट को छोड़कर अन्य बातों के बारे में सीधा विरोध करना ठीक नहीं है।

बापू के पास से हरिजन-पत्रिका आई। पढ़ना शुरू किया।

२४ १ ३३, यरवदा-मंदिर

अफसर ने बापू का आज की तारीख का स्टेटमेंट[1] लाकर दिया उसे चार-पांच बार पढ़ा। हृदय में भक्ति प्रेम व चिन्ता आदि के भाव उत्पन्न हुए।

२५ १ ३३ यरवदा-मंदिर

वाइसराय ने डॉ सुब्बारायन के मद्रास के बिल को मंजूरी नहीं दी। विचार करने पर लगा कि यह एक प्रकार से बहुत ठीक ही हुआ। अब जो प्रचार-कार्य होकर मंजूरी मिलेगी वह ज्यादा असरकारक होगी। ईश्वर सब ठीक करता है।

बापू का स्टेटमेंट खूब शांति से ईश्वर-प्रार्थना करके पढ़ा। अभी सुबह ही वापस करना है।

२६-१ ३३, यरवदा-मंदिर

पू बापू से १२ से १ बजे तक खानगी मुलाकात हुई। बापू के सिर में दर्द था इस कारण मिट्टी की पट्टी बांधकर आये थे। खुराक कम कर दी है। २४ ता से कातना भी शुरू कर दिया है। उन्होंने हाथ के दर्द के बारे में कहा कि इसमें फर्क नहीं पड़ा है। ता २४ के स्टेटमेंट के संबंध में कहा कि अनशन करने का अभी जल्दी ही याने करीब १ महीने तो संभव नहीं दीखता।

जयकर, सप्रू अंबेडकर को बापू ने पत्र-तार आदि अस्पृश्यता-निवारण बिल के बारे में दिये। पू मालवीयजी का भी सुन्दर तार आया। ऐंड्रूज के भी तार आये। उन्हें अनशन स्थगित हो जाने के कारण संतोष हुआ। मेरे कान के इलाज के लिए अभी बंबई न जाने का निश्चय हुआ।

---

[1] देखिये 'महादेव भाई की डायरी' भाग ३ पृष्ठ ३९ ; नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित।

२८-१-३३, यरवदा-मंदिर

चरखा काता। बापू ने 'गो सेवा मंडल' के नियम-वगैरा भेजे थे। उन पर बापू के लिए विचार करके नोट तैयार किया।

३०-१-३३, यरवदा-मंदिर

पू. बापू से १३वीं मुलाकात—१२। से १ बजे तक। स्वास्थ्य, अस्पृश्यता-निवारण, वेरियर एल्विन का आश्रम, जेल-सुधार आदि के बारे में चर्चा। सुपरिंटेंडेंट मेजर भंडारी ने उन्हें जो कहा था वह उन्होंने बताया। मैंने उसका खुलासा किया। जो-जो सुधार होने चाहिए, वे मैंने पू. बापू व मी. कटेली को नोट करा दिये। उन्होंने कहा कि तेल तो इतवार को मिला करेगा। नमक-मिर्च का अभी तय नहीं हुआ है। अन्य आवश्यकताओं के बारे में भी तय होना बाकी है।

२-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १२।। से १। बजे तक १४वीं मुलाकात हुई। विविध वृत्त तथा अन्य पत्रों का खुलासा किया। मुझे किसी प्रकार का विचार व चिंता न करने को कहा। वह जो कुछ भेजें उन्हें मैं बिना विचार के पढ़ता रहूं। छपी हुई पुस्तकें, पेम्फ्लेट आदि जमनालालजी या मित्रों को दिखाना चाहूं तो दिखा सकता हूं।

अस्पृश्यता-निवारण की दृष्टि से पूना से अंग्रेजी में 'हरिजन' पत्र अगले सप्ताह से निकलना शुरू होगा। दिल्ली से वह पत्र हिन्दी में भी निकलेगा। वियोगी हरि संपादक होंगे।

राजाजी के कार्य का खुलासा। बापू के हाथ के दर्द के लिए डॉ. विस्टर या डॉ. भरूचा को बुलाने के संबंध में उनसे चर्चा हुई। उन्होंने अभी जरूरत नहीं समझी।

४-२-३३, यरवदा-मंदिर

हरिजन-अपील आई। पढ़ना शुरू की। 'सत्याग्रह-आश्रम का इतिहास' जो बापू ने लिखा है, वह भी आज आया।

६-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १२ से १ बजे तक १५वीं मुलाकात। डॉ. अम्बेडकर के विचार, उनका व्यवहार, हिन्दू जाति से लड़ने की उनकी तैयारी आदि के

अपने विचार मैंने बापू के सामने रखे। बापू ने कहा कि इसके लिए कोशिश तो करनी चाहिए परन्तु अपमान गाली-गलौज मारपीट को छोड़कर अन्य बातों के बारे में सीधा विरोध करना ठीक नहीं है।

बापू के पास से हरिजन-फ़ाइल आई। पढ़ना शुरू किया।

२४ १ ३३ यरवडा-मंदिर

अकर ने बापू का आज की तारीख का स्टेटमेंट[1] लाकर दिया उसे चार-पाँच बार पढ़ा। हृदय में भक्ति प्रेम व चिन्ता आदि के भाव उत्पन्न हुए।

२५ १ ३३, यरवडा-मंदिर

वाइसराय ने डॉ सुब्बारायन के मद्रास के बिल को मंजूरी नहीं दी। विचार करने पर लगा कि यह एक प्रकार से बहुत ठीक ही हुआ। अब जो प्रचार-कार्य होकर मंजूरी मिलेगी वह ज्यादा असरकारक होगी। ईश्वर सब ठीक करता है।

बापू का स्टेटमेंट खूब शांति से ईश्वर-प्रार्थना करके पढ़ा। अभी सुबह ही मालूम करता है।

२६ १ ३३, यरवडा-मंदिर

पू बापू से १२ से १ बजे तक बातचीत मुलाकात हुई। बापू के सिर में दर्द था इस कारण मिट्टी की पट्टी बाँधकर आये थे। खुराक कम कर दी है। २४ ता से कातना भी शुरू कर दिया है। उन्होंने हाथ के दर्द के बारे में कहा कि इसमें फर्क नहीं पड़ा है। ता २४ के स्टेटमेंट के संबंध में कहा कि अनशन करने का अभी जल्दी ही याने करीब १ महीने तो संभव नहीं दीखता।

जयकर, नम्र अंबेडकर को बापू ने पत्र-तार आदि अस्पृश्यता-निवारण बिल के बारे में दिये। पू मालवीयजी का भी सुन्दर तार आया। एंड्रूज के भी तार आये। उन्हें अनशन स्थगित हो जाने के कारण संतोष हुआ। मेरे कान के इलाज के लिए अभी बंबई न जाने का निश्चय हुआ।

---

[1] देखिये 'महादेव भाई की डायरी' भाग ३ पृष्ठ ३९ ; नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित।

२८ १ ३३, यरवदा-मंदिर

चरखा काता। बापू ने 'गो सेवा मण्डल' के नियम-वगैरा भेजे थे। उन पर बापू के लिए विचार करके नोट तैयार किया।

३०-१ ३३, यरवदा-मंदिर

पू. बापू से ११वीं मुलाकात—१२। से १ बजे तक। स्वास्थ्य अस्पृश्यता-निवारण, वेरियर एलविन का आश्रम, जेल-सुधार आदि के बारे में चर्चा। सुपरिंटेंडेंट मेजर भंडारी ने उन्हें जो कहा था, वह उन्होंने बताया। मैंने उसका खुलासा किया। जेल में जो सुधार होने चाहिए, वे मैंने पू. बापू व श्री कटली को नोट करा दिये। उन्होंने कहा कि तेल तो सरकार को मिला करेगा। नमक-मिर्च का अभी तय नहीं हुआ है। अन्य आवश्यकताओं के बारे में भी तय होना बाकी है।

२ २ ३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १२-१ से १। बजे तक १४वीं मुलाकात हुई। विविध वृत्त तथा अन्य पत्रों का खुलासा किया। मुझे किसी प्रकार का विचार व चिंता न करने को कहा। वह जो कुछ भेजें उन्हें मैं बिना विचार के पढ़ता रहूं। छपी हुई पुस्तकें, पेम्फलेट आदि नवीनचंदजी या मित्रों को दिखाना चाहूं तो दिखा सकता हूं।

अस्पृश्यता-निवारण की दृष्टि से पूना से अंग्रेजी में 'हरिजन' पत्र अगले सप्ताह से निकलना शुरू होगा। दिल्ली से यह पत्र हिन्दी में भी निकलेगा। वियोगी हरि संपादक होवें।

राजाजी के कार्य का खुलासा। बापू के हाथ के दर्द के लिए डॉ. पिल्लर या डॉ. भरूचा को बुलाने के संबंध में उनसे चर्चा हुई। उन्होंने अभी जरूरत नहीं समझी।

४-२ ३३ यरवदा-मंदिर

हरिजन-साप्ताहिक आई। पढ़ना शुरू की। 'सत्याग्रह-आश्रम का इतिहास' जो बापू ने लिखा है वह भी आज आया।

६ २-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १२ से १ बजे तक १५वीं मुलाकात। डॉ. अम्बेडकर के विचार, उनका व्यवहार, हिन्दू जाति से लड़ने की उनकी तैयारी आदि के

बारे में चर्चा। बापू को इससे दुःख तो पहुंचा ही है। मंदिर-प्रवेश का हाल बताया। मेरे स्वास्थ्य-संबंध में मैंने बापू से प्रार्थना की कि आप मेरे बारे में अधिकारियों से अधिक चर्चा न करें तो मुझे संतोष रहेगा। मैं स्वयं अपनी खुराक जो कुछ ज्यादा मालूम होती है, घटाना चाहता हूं। जेल-सुधार के बारे में बापू ने लिखकर भेजा है।

७-२-३३ यरवडा-मंदिर

सवेरे बापू की बकरियों के दर्शन करके आनन्द हुआ।

बापू ने सवेरे मिलने बुलाया। करीब आधा घंटा स्वास्थ्य के बारे में व जेल की चिन्ता न करने के बारे में समझाया। अपना उदाहरण देकर कहा। मैंने अपनी अड़चनें बताईं। 'हरिजन' अंग्रेजी पत्र का प्रकाशन। पत्र किन-किन को भेजा जाय, इसकी यादी जल्दी में तैयार करके भेजी।

८-२-३३, यरवडा-मंदिर

जेल-सुधार के संबंध में १५ प्रश्न सूत्रवार बापू के लिए लिखकर तैयार करना है।

१०-२-३३ यरवडा-मंदिर

बापू से ११वीं मुलाकात १२। से १ १ तक। 'हरिजन' पत्र हरिजन विषय जेल-सुधार आदि के संबंध में चर्चा। बा को छः महीने की सजा और ५) जुर्माना। जुर्माना न देने पर डेढ़ महीने की सजा और। 'ए' वर्ग। मीराबेन का स्वास्थ्य बंबई में खराब रहता है। इस संबंध में बापू ने सरकार को लिखा है। रास्ताने व 'बी'-वर्ग बापू को पसंद नहीं। चेचक का टीका लगाने के बारे में बापू अधिकारियों से बातें करेंगे।

बापूजी ने नया प्रकाशित 'हरिजन' साप्ताहिक पत्र पढ़ने भेजा। प्रेम पूर्वक उसका स्वागत किया।

१२-२-३३ यरवडा-मंदिर

हरिजन-बन्धु आई। २॥ बजे कोठरी में बंद होने बाद उसे देखा। बाद में 'सर्वेंट ऑफ अनटचेबल्स सोसाइटी' का नया विधान जो बापू ने देखने भेजा था पढ़ा। चरखा काता।

१६-२-३३ यरवदा-मंदिर

बापू से १२ १ से १ बजे तक १७वीं मुलाकात हुई। बापू को मैंने यह सुझाया कि 'हरिजन' में हर हफ्ते एक कायम आमरण अनशन से लगाकर आज तक जो अनुभव उनको हुआ इस संबंध में वह स्वयं लिखा करें। यह सुझाव उन्हें पसंद आया। 'अस्पृश्यता-निवारण समिति' के विधान के बारे में भी कुछ सुझाव दिये। बापू ने कहा कि लिखकर भेज दो। अंबेडकर, राजभोज, रावबहादुर राजा वगैरा के बारे में उनका मत जाना। बापू ने अपने स्वास्थ्य की रिपोर्ट बताई। जानकीदेवी ने ओम् के बारे में बापू को जो कहा वह उन्होंने बताया। ओम् को वास्वाई के पास रखने की मैंने सूचना की। बाद में 'आश्रम' या 'शारदा-मंदिर' आदि कहीं का भी सोचा जा सकता है।

सरोजिनी नायडू का आज जन्मदिन है। बापू ने कहा कि वह मिलने आनेवाली थीं।

प्रभुदास की सगाई के बारे में बातें हुईं। गोमतीबहन की व्यवस्था सूरत में करनेवाले हैं।

बापू ने कहा कि विनोबा तीन वर्ष के अन्दर ब्रह्म की प्राप्ति कर लेने वाले हैं।

अप्पासाहब का फैसला हो गया। अब बापू का इस बारे में उपवास करने का अंदेशा नहीं रहा।

'अस्पृश्यता-निवारण समिति' का विधान तीन बजे ठीक करके वापस भेजा।

१७-२-३३ यरवदा-मंदिर

बापूजी से १९वीं मुलाकात १२ १ से १२-५ तक। वेरियर एल्विन ने श्रीमती मार्जोरी सिक्लेट से ईस्टर के बृहस्पतिवार के दिन करंजिया ग्राम में विवाह करने का निश्चय किया। १२ २ ३३ का पत्र वेरियर ने बापू को मुझे दिखाने को लिखा था। बापू ने वह मुझे दिखाया। चिंचवड़-आश्रम-संबंधी देवधर की योजना बापू ने मुझे विचार करने के लिए दी। बापू को विश्वनाथ के बारे में अपने विचार कहे। नवीनदासजी के मार्फत उनकी मदद लेने का निश्चय। बापू का वजन १ १ रतल हुआ। डॉ. अंबेडकर, मालवीयजी

राजाजी आदि के बारे में वाइसराय का जवाब आया। उस संबंध में व हरिजन के संबंध में बापू ने संक्षेप में बताया। मीराबहन साबरमती गईं। प्यारेलाल नासिक को।

१८-२-३३, यरवदा-मंदिर

बैरिस्टर एकनिल के विवाह के संबंध में बापूजी को लिख भेजा।

१९-२-३३ यरवदा-मंदिर

देवधरजी की शिक्षक-आश्रम की योजना के बारे में बापू को अपने विचार लिखकर भेजे। बापू की बकरियां आज भूलकर इस 'कब्रस्तान यार्ड' में आ गईं। आश्चर्य व आनन्द हुआ।

२०-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १९वीं मुलाकात १२ २ से १ तक। बैरिस्टर एकनिल के विवाह के बारे में बापू को थोड़ा आश्चर्य व विचार हुआ। देवधर की शिक्षक की योजना के बारे में मेरी सूचनाओं पर विचार। स्वामी आनन्द के वजन के बारे में शिवप्रसाद गुप्त बनारसवालों का स्वास्थ्य व उनकी लड़की के लड़के की अचानक मृत्यु आदि के बारे में चर्चा। मेरे वजन व खुराक के बारे में बापू ने पूछा। मराठी व बंगला 'हरिजन' भी जल्दी शुरू होगा यह बापू ने बताया।

२२-२-३३, यरवदा-मंदिर

कल रात १ बजे से आज सुबह तक सोने का नाम नहीं। परमात्मा का खूब चिन्तन व प्रार्थना। मन में हरिजन-कार्य तथा चालू काम की योजना की स्फूर्ति पैदा हुई। चिट्ठी लिखाली। बापू को मुलाकात के बारे में ३ बजे रात्रि को पत्र लिखा।

बापू से २ री मुलाकात १२ १ से १-२ तक। रात में चलते रहे विचारों का हाल कहा व अपना निश्चय बापू को बताया। एक बार तो आज ही जाने का मेरा निश्चय कायम रहा। बाद में सूक्ष्म चर्चा होने के बाद बापू ने भी पटेली के पास से चिट्ठी मंगवाई।[1] जाने के बारे में प्रयत्न न करने की चिट्ठी आई। संतोष हुआ।

---

[1] बम्बई जाकर डाक्टर को कान दिखाने के बारे में।

२४-२-३३ यरवदा-मंदिर

बापू ने एकदिन को आज सुबह ४ ३ बजे उनके विवाह के संबंध में सुन्दर पत्र लिखकर भेजा। उसपर विचार किया।

२५-२-३३ यरवदा-मंदिर

नागपुर से पूनमचन्द रांका की पत्नी का रजिस्टर्ड पत्र मिला। पू बापूजी को नोट लिखकर भेजा कि वह सिवनी-जेल में पूनमचंदजी को व नागपुर उनकी पत्नी को तार भेजें। बापूजी का जवाब मिला कि उन्होंने तार-वगैरा भेज दिया है। श्री रामचंद्रराव को भी लिखा है।

२६-२-३३ यरवदा-मंदिर

बापू ने रामदास गांधी को जेल की स्थिति पर सुन्दर पत्र लिखा। मैंने भी उसे भली प्रकार समझाया। बात उसके गले कमतक उतरी दीखती है।

२७-२-३३ यरवदा-मंदिर

बापू से २१वीं मुलाकात १२ ३५ से १ ३५ तक। 'हरिजन' पत्र की ग्राहक-संख्या ८ हजार है। शिवप्रसादजी का स्वास्थ्य पूनमचंद रांका सिवनी जेल की स्थिति आदि के संबंध में चर्चा। जेल म 'हरिजन' मिलने के बारे में बम्बई-सरकार को पत्र। 'हरिजन' विद्यार्थियों को सरकारी विद्यालय कालेज आदि में पढ़ने के लिए असहयोगी भी सहायता कर सकते हैं? यह पूछने पर बापू ने कहा कि करना चाहिए। मेरे आहार के बारे में पूछने पर बापू ने कहा कि काफी व प्याज लेना मेरे लिए उचित है।

जेल-सुधार की चर्चा। सुपरिटेंडेंट मेजर भण्डारी के बारे में भी काफी चर्चा हुई। मेरे कान की जांच के लिए मुझे बंबई भेजने के बारे में आई जी पी को लिखा गया है। इसी सप्ताह में शायद जाना पड़े। मथुरादास से बापू मिलेंगे। रामदास के बारे में ठीक चर्चा व विचार।

२८-२-३३, यरवदा-मंदिर

'प्रस्थान' (गुजराती मासिक पत्र) का अस्पृश्यता-अंक आज पढ़ा। बापू का लिखा हुआ 'आश्रम-इतिहास' आज वापस भेजा। 'हरिजन-सेवक' भी पढ़कर वापस भेजा।

रामदास की मानसिक स्थिति पर विचार-विनिमय। उसे बहुत-सी बातें समझाकर कहीं। उससे संतोष रहा।

२-३-३३, यरवदा-मंदिर

रामदास से बातचीत। उसने बापू को जो पत्र लिखा वह बतलाया। रामदास के लिए बापू ने गीता में से चालीस श्लोक चुनकर दिये। उसका नाम उन्होंने 'रामगीता' रखा। ये श्लोक रामदास के पास से नोट कर लिये।

३-३-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से बाईसवीं मुलाकात १२.१ से १२-५ बजे तक। चमनशंकर को डॉ. मोदी के लिए लिखा। बापू ने बम्बई-सरकार को मेरे बारे में पत्र भेजा है। मुझे दिखा नहीं सके इसका कारण बताया। 'प्रस्थान' के अंकों के बारे में मैंने बापू से अपने विचार कहे। अंक सुन्दर हैं।

रामदास के स्वास्थ्य व मुलाकात के बारे में चर्चा।

४-३-३३, यरवदा-मंदिर

राजाजी व देवदास आज बापू को मिलने आये होंगे। हरिजन-पत्रक आई—'हरिजन' का चौथा अंक आज मिल गया।

६-३-३३, यरवदा-मंदिर

पूज्य बापू से तेईसवीं मुलाकात करीब ४ मिनट तक हुई। स्वास्थ्य का हाल बताया। बापू ने मेरे बारे में बम्बई-सरकार को पत्र लिखा था वह मुझे दिखा सकते हैं या नहीं इसपर थोड़ी चर्चा। मैंने कहा कि आपकी दलीलों से मेरा पूरा समाधान नहीं हुआ। राजाजी एक बार तिरुचेनगोडु जायगे। देवदास आश्रम में लक्ष्मी व मारुति राय का विवाह कराने जायगा। शंकरलाल बैंकर वापस जायंगे। 'हरिजन' कैदियों को नहीं मिल सकेगा। सरकार का इन्कार आ गया। विनोबा की मराठी गीताई का यहां प्रचार किया जा सकता है। सुपरिंटेंडेंट भंडारी को मेरी सब सूचनाएं—जेल-सुधार की—स्वदेशी कमकर के साथ भी कह देने का बापू ने स्वीकार किया। आगामी शुक्रवार को यह जवाब देंगे। रामदास के बारे में भी चर्चा हुई।

७-३-३३, यरवदा-मंदिर

हरिजन-पत्रक आई। बंगला 'हरिजन' देखा। पुस्तकाकार रूप में निकला। बाहर पृष्ठ पर सुन्दर चित्र है। शीतलाबाबू संपादक हैं। सतीश बाबू ने बापू को पत्र भेजा।

मुसलमान नेता जमा हुए थे। बसंत पुरुषोत्तम रघुनाथ अनगारे की चर्चा। बापू ने जानकीदेवी आदि की व डेविड-योजना की भी चर्चा की।

१४-१-३३ यरवदा-मंदिर

आज बापू की बकरियों में रस लेना। उन्हें रंगी दिखाई, पेड़ उन्होंने नापसंद किया, बाजरा घास लिया। उनके खान-पान व स्नान की व्यवस्था करायी है। बाल भी बढ़ गए हैं।

१५-१-३३ यरवदा-मंदिर

आज बापू को जो नोट भेजा उसमें डेविड-योजना में जिनकी ओर से मदद मिल सकती है उनके नाम लिखे। श्री जानकीदेवी अगर बापू की प्रार्थना स्वीकार न करें तो बापू ने उनका 'हुक्का-पानी बन्द करने' की विनोदी सूचना लिख भेजी।

१७-१-३३ यरवदा-मंदिर

बापू से छब्बीसवीं मुलाकात। बापू का वजन १ ५ रत्तल हुआ। स्वास्थ्य वल्लभभाई, डेविड-योजना, महाराष्ट्र चरखा-संघ, अनन्तपुर खादी-कार्य, हरिजन उच्च वर्ग के लोग कैसे बनें, नैतिक व व्यावहारिक अड़चनें, इसमें डा० अंबेडकर का विरोध संभव है आदि मेरी शंकाओं का समाधान। मेरा व डंकन का परिचय। लक्ष्मी का विवाह। १ हरिजन आये। घनश्यामदास बिड़ला की एक डेविड-योजना—पूनमचंद शिवप्रसाद गुप्त आदि के हाल बापू ने कहे। रामदास के समाचार हरिजन-साइक्लो आना आगे से बंद हो जायगी। सरकार से लिखा-पढ़ी आज ही बापू करेंगे। बापू ने मुझे बंबई जाने के बारे में समझाया। राजनैतिक दिक्कतों का डर।

१८-१-३३ यरवदा-मंदिर

रामदास से उसके मन की अशान्ति के संबंध में ठीक संतोषकारक चर्चा हुई। उसे भी समाधान हुआ मालूम दिया।

२०-१-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से सत्ताईसवीं मुलाकात हुई। मेरा स्वास्थ्य व वजन १६७ हुआ दो रत्तल बढ़ा। स्वामी मुक्त आदि की चर्चा। बापू ने बम्बई-सरकार को हरिजन-साइक्लो मुझे देखने के लिए भेजते रहने आदि के बारे में लिखा है।

बम्बई जाँच कराने के लिए सरकार को रिमाईंडर करने के बारे में बापू लिखें या मैं लिखूँ, इसका बाद निश्चय करेंगे।

केशव बापू से मिल गया व हकीकत कही। श्री वल्लभभाई आदि के विचार कहे। बापू ने १८-२-३३ का 'आश्रम-समाचार' केशव को दिया।

२२-२-३३ यरवडा-मंदिर

इन दिनों हरिजन-आश्रम बन्द हो जाने तथा स्वास्थ्य सुस्त रहने के कारण मानसिक दुर्बलता के विचार भी बीच-बीच में मन में आने लगे।

२४-२-३३ यरवडा-मंदिर

बापू से २८वीं मुलाकात। हिन्दू धर्म अखिल-योजना नारायणदास व प्रभावहन को महिला-आश्रम के लिए बापू लिखेंगे। आश्रम के बीमारों की हालत, मुरारीलाल का स्वास्थ्य ठीक है। हरिजन-सेवक, बापू का मोदी को पत्र लिखेंगे आदि चर्चा। बापू ने कहा कि बम्बई में मुझे दूध लेना चाहिए। मैंने गाय की कलम आदि का कारण समझाया। बापू ने उसका समाधान किया। बापू हो सका तो गुरुवार को पत्र भेजा करेंगे। बापू अनुभव करते हैं कि सत्याग्रह मुहिम से आज सत्य व अहिंसा न नहीं चल रहा है। उनको पाँच वर्ष इसी तरह निकल जाते दीखते हैं।

२५-२-३३ बम्बई (आर्थर रोड जेल)

प्रार्थना के बाद पूज्य बापू तथा दास्ताने, गंगाधरराव देशपांडे, नर्मदाप्रसादजी को अधिकारियों के मार्फत जो सूचनाएँ भेजनी थीं वे लिखीं।

आज बापू से मुलाकात नहीं हो पाई। सुपरिंटेंडेंट ने इजाजत नहीं दी। बुरा लगा। मेजर भंडारी का व्यवहार अच्छा रहा।

१-३-३३ बम्बई (आर्थर रोड जेल)

सुपरिंटेंडेंट आए। मेरे नाम महादेवभाई का आज पत्र आया हो तो देने को उनको कहा।

उन्होंने हिस्ट्री-टिकट देखकर जवाब देने का कहा।

२-३-३३ बम्बई

जानकीदेवी व गुलाबबहन कमला ने बापूजी को 'अखिल-योजना' के लिए पच्चीस सौ रुपये देने का निश्चय किया।

७-४-३३ बम्बई-पूना

पूना में गोविन्ददासजी के बंगले पर सामान रखकर और निवृत्त होकर १२॥ बजे बापू से जेल में मिला। जानकी व मधू साथी साथ थे। बड़ा सुख मिला।

बापू ने डेयरि-योजना स्वास्थ्य मोरी-रिपोर्ट बंद किसने भरा भविष्य का कार्य वर्धा जाना जरूरी है आदि के बारे में चर्चा की। पूनमचंद रांका के बारे में बापू ने कहा कि सब समझौता करना जरूरी है। मेरे कहने पर राजेन्द्रबाबू से मिलना भी उन्होंने पसन्द किया मुझे स्टेटमेण्ट देने की जरूरत नहीं। उन्होंने कहा कम-से-कम एक महीना तो मुझे किसी ठंडी जगह—मसूरी महाबलेश्वर या पंचगनी वगैरा रहना जरूरी है। मेरे पहनावे[1] के संबंध में जानकीदेवी ने चर्चा की। प्रश्न-उत्तर के बाद मामूली धोती कुरता टोपी—अभी यही रखना तय हुआ। बापू ने केशव रांका संतोषचन्द के हाल कहे। दुःख हुआ।

८-४-३३ पूना-बम्बई

पूज्य बापू से बातें—पूनमचंद रांका राजेन्द्र बाबू हरिजन सेवक मसूरी व अल्मोड़ा जाने के बारे में। वसन्त रामदास जेल-क्लास में जानकीदेवी की चिन्ता व फिक्र की चर्चा।

२१-४-१९३३ वर्धा (अल्मोड़ा जाते हुए रेल में)

लक्ष्मीनारायण-मंदिर तक पैदल। दर्शन किये। रास्ते में देवदास गांधी से बातचीत खासकर फादर एलविन को नागपुर के विषय में पत्र भेजा उस सम्बन्ध में।

२७-४-१९३३ सीक आश्रम (अल्मोड़ा)

प्रार्थना। मदनभाई की वार्षिक पुण्यतिथि। विशेष कार्यक्रम—९ बजे

---

[1] जेल से छूटकर आने के बाद जमनालालजी की इच्छा थी कि वह 'सी' वर्ग में जैसी छोटी चड्डी और आधी बांह की कमीज पहनते थे वैसी ही, एकदम अनेक पोशाक सादगी की दृष्टि से बाहर भी पहनी जाय। चड्डी की जगह छोटी घुटनों तक की धोती पहनी जा सकती थी। जानकीदेवी ने इस प्रस्ताव का सख्त विरोध किया और बापूजी के सामने फैसला हुआ।

प्रार्थना ८ बजे मगनभाई के जीवन संबंध में पू बापूजी विनोबा काका साहब महादेवभाई के लेख व प्रमुदास के साथ का पत्र-व्यवहार पढ़ा।

३-५ ३३, सेवा-आश्रम

चि रामेश्वर नेवटिया का तार मिला—अस्पृश्यता-निवारण के सिलसिले में बापू ने ८ ता से बिना शर्त के अनशन करने का निश्चय किया। बापू को पत्र लिखा।

३-५ ३३ सेवा-आश्रम

तार व पत्र आये। बापूजी के उपवास का निश्चय मालूम हुआ। बापू का वक्तव्य 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में पढ़ा। अच्छी तरह चिंतन व विचार करने के बाद वक्तव्य सबोको समझाया। यहां से शुक्रवार ता ५ को जाने का निश्चय किया।

४-५ ३३ सेवा-आश्रम

बापूजी के पास पूना जाने का निश्चय किया व तयारी की। पर बापूजी का तार आया। उन्होंने मुझे पूना आने को रोका। विचार किया मन में मंथन रहा। फिर सबोंने मिलकर प्रार्थना की। प्रार्थना के बाद खूब श्रद्धा-पूर्वक चिठ्ठियां डाली न जाने की चिट्ठी निकली। जाने की तैयारी रद्द करके बापू को तार भेजा।

८-५ ३३ सेवा-आश्रम

आज ११ ३ से १२ बजे भोजन। बाद में २४ घंटे का उपवास करने का निश्चय। प्रार्थना में बापू के उपवास का कारण समझाया और सेवा-आश्रम में रहनेवाले हरिजनों के लिए हम लोग क्या कर सकते हैं, उसपर विचार किया।

१०-५ ३३, सेवा-आश्रम

पू बापू के जेल से छूटने की और पू बापू व श्री अणे ने मिलकर डेढ़ मास के लिए सत्याग्रह स्थगित कर दिया इसकी खबर मिली। बापू का व सरकार का स्टेटमेंट पढ़ा। एक प्रकार से खुशी हुई। परन्तु विचार करने से चिन्ता ही रही। रात को बराबर निद्रा नहीं आई। पूना जाने के विचार चलते रहे।

११-५-३३ शील-आश्रम

११ ता. को पूना जाने का विचार किया, पर बाद में श्री जानकीदेवी आदि की सलाह से यह निश्चय किया कि अगर पू. राजगोपालाचारी या देवदास बुलावें तो जाना चाहिए, नहीं तो ठहरना चाहिए। यह निश्चय करके देवदास को पूना व बंबई तार भेजा। देवदास का तार व पू. बापूजी का पत्र मिला।

१२-५-३३ शील-आश्रम

देवदास को तार भेजा कि श्री रामस्वामी को बापू से पंद्रह मिनट तक क्यों बात करने दी? आगे से ऐसी गफलत न करने की गारंटी मांगी।

१४-५-३३ शील-आश्रम

बीकानेर महाराज, अलवर महाराज, कर्नल औगल्वी, कमीश्नर को खास कर हरिजन-संबंध में पत्र भेजे। औरों को भी पत्र लिखे।

१५-५-३३ शील-आश्रम

शाम को चित्रकार व असली हरिजन (मेहतर) दोनों में से प्रोसेशन निकला। चित्रकारों में व मेहतरों में आपस में अनबन होने के कारण हालांकि वहां बहुत आदमी जमा थे, सभा चित्रकारों के यहां न करके हरिजनों में ही करनी पड़ी। प्रोसेशन अच्छा था। रास्ते में गायन व एक जगह खान-पान भी हुआ। श्री मुरलीमनोहरजी के मंदिर में प्रोसेशन पहुंचा। रोशनी आदि की खूब सजावट थी। रामलीलावाले श्री हरगोविन्दजी मंच सभापति बने। वह ठीक बोले। श्री बद्रीदत्तजी, श्री गोविन्द सहायजी, श्री जानकीदेवी व कुछ हरिजनों के भाषण हुए। मेरे हाथ से मंदिर खुलाया गया। मैंने भी भाषण दिया।

२८-५-३३ पूना

पूना पहुंचा। लेडी ठाकरसी के बंगले पर डॉ. अन्सारी, डॉ. विधान राय, सरोजिनी देवी, राजाजी आदि से मिला। बापू के पास जानबूझकर नहीं गया।

२९-५-३३ पूना

१ बजे पर्णकुटी पहुंचा। ठीक १२ बजे बापू को हाल में लाया गया। खूब शान्ति थी। 'रघुपति राघव राजाराम' की धुन के बाद डॉ. अन्सारी

में कुरान, क्रिश्चियन मित्रों ने बायबिल, पारसी मित्रों ने गाथा और काकासाहब ने उपनिषद में से पाठ किया। महादेवभाई ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर का प्रिय भजन 'एकला चलो' गाया। बाद में 'वैष्णव जन' गाने के बाद पू० बापू का संदेश पढ़ा गया। उसके बाद बा ने बापू को संतरे का रस दिया।

२९-९-३२ पूना-बम्बई

इच्छा के विरुद्ध पू० बापू के दर्शन करने पड़े। महादेवभाई, मथुरादास आदि के आग्रह के कारण। दर्शन से खूब सुख मिला।

१-१०-३२ बम्बई

बापू ने मुझे पूना बुलाया। पूना से देवदासभाई मुझे लेने आये।

५-१०-३२ पूना

पू० बापू ने मुझे बम्बई से बुलाया, उसका महादेवभाई ने तात्पर्य समझाया। रामदासभाई से उसके भावी जीवन के बारे में उसके विचार सुने उसे सलाह दी। पू० बापू की इच्छा होने के कारण अपने स्वास्थ्य के संबंध में चर्चा। प्रभुदास, अल्मोड़ा-आश्रम, देवदास, रामदास आदि के संबंध में भी चर्चा हुई।

१०-६-३३ पूना

बापू के पास गया। महादेवभाई ने उनके विचार पढ़कर सुनाये। श्रीनिवास शास्त्री की बातचीत हुई।

१४-६-३३ पूना

डॉ० गिल्डर ने पू० बापू के स्वास्थ्य की ठीक जांच की। लक्ष्मी-देवीदास विवाह-संबंध में बापू से विनोद हुआ।

१६-६-३३ पूना

जल्दी निवृत्त होकर पर्णकुटी। ७ बजे से देवदास के विवाह की तैयारी। विवाह सानंद सम्पन्न हुआ। बापू ने कुछ कहा। उस समय उन्हें रोमांच हो आया और गद्गद हो गए। बापू के दर्शन करनेवालों की भीड़। पांव छूने की आतुरता। जबरदस्ती करके उन्हें वहां से हटाया। इसपर विचार चलता रहा।

१७-६-३३ पूना

बापू को जांचने के लिए मेडिकल बोर्ड बैठा। डॉ० देशमुख डॉ०

११-५-३३ शैल-आश्रम

११ ता. को पूना जाने का विचार किया, पर बाद में श्री जानकीदेवी आदि की सलाह से यह निश्चय किया कि अगर पू. राजगोपालाचारी या देवदास बुलावें तो जाना चाहिए, नहीं तो ठहरना चाहिए। यह निश्चय करके देवदास को पूना व बम्बई तार भेजा। देवदास का तार व पू. बापूजी का पत्र मिला।

१२-५-३३ शैल-आश्रम

देवदास को तार भेजा कि श्री रामस्वामी को बापू से पंद्रह मिनट तक क्यों बात करने दी? आगे से ऐसी गफलत न करने की गारंटी मांगी।

१४-५-३३ शैल-आश्रम

बीकानेर महाराज, अलवर महाराज, कर्नल गोपालजी, कमेन्ट को काट-कर हरिजन-सेवक में पत्र भेजे। औरों को भी पत्र लिखे।

१५-५-३३ शैल-आश्रम

शाम को शिल्पकार व असली हरिजन (मेहतर) वर्ग में से प्रोसेशन निकला। शिल्पकारों में व मेहतरों में आपस में अनबन होने के कारण हालांकि यहां बहुत आदमी जमा थे तथा शिल्पकारों के यहां न करके हरिजनों में ही करनी पड़ी। प्रोसेशन अच्छा था। रास्ते में भाषण व एक जगह चाय-पानी भी हुआ। श्री मदनमोहनजी के मंदिर में प्रोसेशन पहुंचा। रोशनी आदि की खूब सजावट थी। रानीखेतवाले श्री हरगोविन्दजी पंत सभापति बने। वह ठीक बोले। श्री बद्रीदत्तजी, श्री गोविन्द वल्लभजी, श्री जानकीदेवी व कुछ हरिजनों के भाषण हुए। मेरे हाथ से मंदिर खुलाया गया। मैंने भी भाषण दिया।

२८-५-३३ पूना

पूना पहुंचा। लेडी ठाकरसी के बंगले पर डॉ. अन्सारी, डॉ. विधान राय, सरोजिनी देवी, राजाजी आदि से मिला। बापू के पास जानबूझकर नहीं गया।

२९-५-३३ पूना

१ बजे पर्णकुटी पहुंचा। ठीक १२ बजे बापू को हाल में लाया गया। खूब शान्ति थी। 'रघुपति राघव राजाराम' की धुन के बाद डॉ. अन्सारी

ने कुरान, क्रिश्चियन मित्रों ने बायबिल, पारसी मित्रों ने अवस्ता और काकासाहब ने उपनिषद् में से पाठ किया। महादेवभाई ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर का प्रिय गायन 'एकला चलो' गाया। बाद में 'वैष्णव जन' गाने के बाद पू. बापू का संदेश पढ़ा गया। उसके बाद बा ने बापू को संतरे का रस दिया।

११-५-३३ पूना-बम्बई

इच्छा के विरुद्ध पू. बापू के दर्शन करने पड़े। महादेवभाई, मथुरादास आदि के आग्रह के कारण। दर्शन से खूब सुख मिला।

१-६-३३ बम्बई

बापू ने मुझे पूना बुलाया। पूना से देवदासभाई मुझे लेने आये।

५-६-३३ पूना

पू. बापू ने मुझे बम्बई से बुलाया, उसका महादेवभाई ने तात्पर्य समझाया। रामदासभाई से उसके भावी जीवन के बारे में उसके विचार सुने, उसे सलाह दी। पू. बापू की इच्छा होने के कारण अपने स्वास्थ्य के संबंध में चर्चा। प्रभुदास, अल्मोड़ा-आश्रम, देवदास, रामदास आदि के संबंध में भी चर्चा हुई।

१०-६-३३ पूना

बापू के पास गया। महादेवभाई ने उनके विचार पढ़कर सुनाये। श्रीनिवास शास्त्री की बातचीत हुई।

१४-६-३३ पूना

डॉ. गिल्डर ने पू. बापू के स्वास्थ्य की ठीक जांच की। लक्ष्मी-देवीदास विवाह-संबंध में बापू से विनोद हुआ।

१६-६-३३ पूना

जल्दी निवृत्त होकर पर्णकुटी। ७॥ बजे से देवदास के विवाह की तैयारी। विवाह सानंद सम्पन्न हुआ। बापू ने कुछ कहा। उस समय उन्हें रोमांच हो आया और गद्गद हो गए। बापू के दर्शन करनेवालों की भीड़। पांव छूने की आतुरता। जबरदस्ती करके उन्हें वहां से हटाया। रातभर विचार चलता रहा।

१७-६-३३, पूना

बापू को जांचने के लिए मेडिकल बोर्ड बैठा। डॉ. देशमुख डॉ.

मिस्टर, डॉ पटवर्धन, डॉ पटेल डॉ भारपुटे डॉ पाठक ने मिलकर बापू को देखा। बाद में उन्होंने प्रेस को वक्तव्य दिया—कम-से-कम एक मास आराम लेने को कहा। माधवराव अणे राजाजी तथा मैंने मिलकर सत्याग्रह स्थगित करने के प्रश्न पर चर्चा की। अंत में बापू की स्वीकृति से छः सप्ताह के लिए सत्याग्रह और स्थगित किया गया।

१८-९-३३, पूना-बम्बई

पर्णकुटी में बापूजी के पास रहा। चि शान्ता साथ में थी। बापूजी ने रामदास के बारे में अपने विचार कहे। मुझे अल्मोड़ा लौट जाने को कहा। मैंने उनसे अपने शरीर की संभाल रखने का वचन लिया। उन्होंने कहा कि कि मुझे तो अभी जीना है।

महादेवभाई देसाई से कुछ नैतिक प्रश्नों पर विस्तार से चर्चा।

२७-६-३३ वर्धा

शाम को आश्रम में प्रार्थना। बापूजी के बारे में कुछ कहा।

आज बापूजी के हाथ का लिखा पत्र आया।

७-७-३३, वर्धा

डॉ प्रफुल्ल घोष और आनन्द आज मेल से पूना गये। उनके साथ मैंने अपना वक्तव्य लिखकर पूज्य बापूजी व श्री अणे के पास भेजा।

३१-७-३३ अहमदाबाद

पू बापूजी का मौन था फिर भी बातें उनसे ठीक हुईं। उन्होंने लिखकर उत्तर दिये। आश्रम गया वही स्थान आश्रम वर्धा वालेवालों से परिचय बातचीत। पू बापूजी ११॥ बजे आश्रम आये। उनसे प्रश्नोत्तर व बातचीत। उनके विचार समझे।

रात के ९॥ बजे तक आश्रम में ही रहे। वहीं भोजन। रणछोड़भाई के बंगले पर सोने को गये। बापूजी के नजदीक ही सोया। बापू से कुछ बातें और हुईं। रात में नींद नहीं आई। कई बार उठना पड़ा। रात में १ २ पर पुलिस की चार मोटरें आईं। बापू, बा और महादेवभाई को वहां गिरफ्तार किया। बाकी के लोगों को आश्रम में गिरफ्तार किया।

१-८-३३ साबरमती-पूना

गुजरात-मेल से रवाना। बापूजी को भी गुजरात-मेल से ले गए।

साथ घर हैं उनके वहाँ गये। शाम को सभा की व्यवस्था की। हरिजन व अन्य बालकों को व आये हुए मेहमानों को जलेबी व मूँगफली बाँटी।

२१-९-३५, वर्धा

श्री एण्ड्रूज का आज टाउन-हाल में मेरे सभापतित्व में भाषण हुआ। खूब भीड़ थी। महात्माजी का व उनका परिचय कैसे हुआ आदि बताया। बाद में उनका सुन्दर भाषण हुआ। शाम की प्रार्थना में उन्होंने भजन गाया।

२३-९-३५, वर्धा

आज मेल से पू. बापू, बा, मीराबहन, कामिनी देवी, प्रभावती, चन्द्र शेखर, आनन्दी, नैयर और दो लड़की चि. मोती, चम्पाबहन, कमला, सुशीला वगैरा आये। बापू को आश्रम में ठहराया। प्रोग्राम निश्चित किया। व्यवस्था की।

२४-९-३५, वर्धा

बापू से साबरमती-आश्रम की जमीन के बारे में बातें हुईं। यह आश्रम केन्द्रीय हरिजन-सेवक संघ को या स्थानिक हरिजन कमेटी को देने के संबंध में विचार। मैंने आखिर में हरिजन-बोर्ड को देना पसंद किया। घनश्यामदास बिड़ला को पत्र लिखा।

२५-९-३५, वर्धा

बापू से बातें। डॉ. खरे व डॉ. घोलप नागपुर से आये। बापू का ब्लड प्रेशर लिया। छाती व नाड़ी जाँची। उन्होंने ४-६ सप्ताह तक पूरा आराम लेने को कहा।

श्री मैथ्यू से बातचीत। उसकी हालत का सार बापू ने कहा। केलन व मेरी की योजना बताई।

२६-९-३५, वर्धा

आश्रम पहुँचा। बापू स्त्रियों की प्रार्थना में बैठे थे और समझा रहे थे। प्रार्थना के बाद बापू से चि. शान्ति बिड़ला के बारे में बातें हुईं। उनकी और मेरी एक ही राय हुई।

१-१०-३५, वर्धा

आज से बापू का मौन शुरू हुआ। घनश्यामदासजी को पत्र लिखा—

बापू से अपनी मनःस्थिति तथा 'मुझे अगर जेल नहीं ही जाना हो तो कांग्रेस वर्किंग कमेटी से इस्तीफा देना ही उचित है' मेरे इस विचार पर चर्चा। मनोरंजन।

१६-१०-३३ वर्धा

पू. बापू ने वर्किंग कमेटी से मेरे इस्तीफे का मसविदा बनाकर दिया। मैंने काकासाहब, बापूजी, किशोरलालभाई, आदि से चर्चा की और बाद में अपनी मनःस्थिति बापूजी को लिखकर दे दी।

१८-१०-३३ वर्धा

प्रार्थना करके उसके बाद जल्दी तैयार होकर आश्रम गया। आज पू. बापूजी की उपस्थिति में चि. प्रभुदास गांधी व अम्बादेवी का विवाह मारवाड़ी बोर्डिंग में हुआ। बापू का उपदेश सुन्दर था।

१९-१०-३३ वर्धा

'गांधी-सेवा-संघ' की सदस्यता से मेरे इस्तीफे का अंतिम फैसला आज बापू के सामने हो गया। अभी तो मुझे ही सभापति रहना पड़ेगा ऐसा निश्चय हुआ।

गंगाधरराव देशपांडे व करंदीकर की बापू से बातचीत हुई। नागपुर से एक पादरी बापू से मिलने आये।

२१-१०-३३, वर्धा

बापू की हरिजन-यात्रा का प्रोग्राम बनाना शुरू किया। अभी तो उनका बरार व हिन्दी सी. पी. का भ्रमण निश्चित किया।

२४-१०-३३ वर्धा

बापू से कन्या-आश्रम के संबंध में खुलकर चर्चा हुई।

डॉ. खरे ने बापू को जांचा। उनका वजन १०७ पौंड हुआ। ब्लड प्रेशर ९६ १५५। ६०[?] का फर्क।

२५-१०-३३ वर्धा

बापू के साथ कन्या-आश्रम तथा महिलाश्रम-संबंधी चर्चा।

मृदुला, मणिबहन, हरिभाऊ, भुलाभाईलाल, गोवर्धनदास, संतूभाई, अमीरा से बापू की मुलाकात।

देखिये 'पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद' पृष्ठ ३७२।

शाम को वर्धा में ६ से ६.४५ तक सभा। भीड़ ज्यादा थी पर व्यवस्था ठीक थी।

८ ११ ११ वर्धा

सुबह जल्दी तैयार होकर बापू की नागपुर-यात्रा की तैयारी की। नागपुर से डॉ. खरे, और जबलपुर से ब्यौहार राजेन्द्रसिंह मोटर लेकर आये थे। बापू सुबह ६.१५ बजे रवाना हुए।

११ ११ ११ वर्धा

स्टेशन गया। बापू नागपुर-मेसेंजर से गोंदिया से आये। उनकी वर्धा रिफ्रेशमेंट रूम में निवृत्त होने तथा भोजन आदि की व्यवस्था की। बाद में वह रेल मजीत की गाड़ी से देवली गये। रास्ता खराब था। लोगों का उत्साह यहाँ भी अच्छा था परन्तु कुछ सनातनी स्वयंसेवकों ने खूब धूमधाम मचाई और थोड़ी गड़बड़ी की। सभा ठीक तौर से हो गई। दो ट्रस्टियों की प्रार्थना से आज मन्दिर बापू ने नहीं खोला। ११ बजे वापस वर्धा पहुँचे।

१२-११ ११ वर्धा

डॉ. अन्सारी ने बापू की तबीयत सब प्रकार से देखी और अपना पूरा सन्तोष व्यक्त किया। पिछले दस वर्ष में उन्होंने बापू का ऐसा स्वास्थ्य पहले नहीं देखा था।

११ ११ ११ वर्धा

बापू की हिंगनघाट-यात्रा की तैयारी।

हिंगनघाट के लिए बराबर दो बजे मोटर से रवाना हुए। हिंगनघाट वालों ने खूब उत्साह के साथ स्वागत किया। जनता में खूब प्रेम था। वहाँ से बापू को आगे रवाना करके मैं वापस वर्धा आया।

१९ ११ ३१ बिलसरा

जल्दी उठकर बापू के स्वागत की तैयारी शुरू की। मीराबहन पहले आईं, बापू जरा देर से आये। करीब २५ मेहमान होगए। तीन बार रसोई बनी। भोजन देर से हुआ। बापू ने १.२ पर अपना मौन शुरू किया।

२०-११ ३१ बिलसरा

सुबह जल्दी तैयार होकर बापू के पास गया। उनके साथ करीब एक

घंटा घूमा। बापू ने १-२ पर अपना मौन छोड़ा। शाम को भी उनके साथ घूमने गया।

२१ ११ ३३ विसन्ना

१ बजे उठ गया। ४ बजे बापू की प्रार्थना में शामिल हुआ। ठक्कर बापा से बातें। बापू को किले की ओर एक घंटे तक घुमाने ले गए।

बापू के विसन्ना से रवाना होने की तैयारी। सब अतिथियों को भोजन कराया। बापू १२॥ बजे रवाना हुए। बापू को यह पहाड़ी स्थान पसन्द आया।

२८ ११ ३३ विसन्ना

पू० बापू का पत्र आया। श्री जवाहरलाल को तार किया जबलपुर के बारे में।

४-१२-३३ इटारसी, जबलपुर

रात में बापू से बातें। जबलपुर में जबर्दस्त स्वागत। जवाहरलालजी वगैरा सब प्रोसेशन में गये। भारी तैयारी। एक स्वयंसेवक के पैर में मोटर के बीच में आजाने से चोट लगी। चिन्ता न हुआ। बड़ी बाहिर सभा में मुझे बोलना पड़ा।

५ १२ ३३ जबलपुर

प्रार्थना करके व जल्दी निवृत्त होकर पू० बापू के पास गया। थोड़ी बातचीत। परमानंद का स्टेटमेंट सुना। बापू को डॉ० अन्सारी ने बांचा।

८ से ११ व १ से ५ तक इनफॉर्मल बातचीत होती रही। जवाहरलाल अन्सारी मौलाना आजाद महमूद नरीमान बापू, जमनालाल थे। लड़ाई के प्रोग्राम के संबंध में बापू से गरमागरम चर्चा हो गई।

१४-१२-३३ दिल्ली

डॉ० अन्सारी के यहां पंडित जवाहरलाल से मिला। उनको लेकर बापू के पास गया। पंडित जवाहरलाल डॉ० अन्सारी मौलाना आजाद डॉ० महमूद कृपलानी टंडनजी आदि की बापू के साथ बातचीत। साफ-साफ बातें हुईं ८ से ११ तक। केंधी व आश्रम की बैठक बापू से दरी के संबंध में चर्चा वगैरा हुई।

बापूजी शाम को पाट ट्रंक से वर्धा होते हुए आगरा गये। स्टेशन पर समाजवादियों का थोड़ा तमाशा हो गया।

डायरी के अंश

१९३४

११-१-३४ पटना-बनारस

सुबह 'सर्चलाइट' के कार्यालय में गया। राजेन्द्रबाबू के साथ बापू से मुगलसराय में भेंट करने व परिस्थिति समझाने का निश्चय हुआ। मुगलसराय में बापू से मिले। वहां से १।। बजे रवाना। भीड़ खूब थी। रास्ते में बातें।

१३-१-३४ पटना

सुबह ९ बजे बापू से मायपुर में विदेशी वस्त्र-बहिष्कार-संबंधी गिरफ्तारियों व उनके बचाव व अपील के बारे में देर तक विचार-विनिमय। बापू ने वर्तमान परिस्थिति में बचाव व अपील की अपेक्षा बिहार के काम की आवश्यकता समझाई।

राजेन्द्रबाबू ब्रजकिशोरबाबू वगैरा के साथ में बापू से चर्चा।

१६-१-३४ पटना

पू. बापू व राजेन्द्रबाबू चंपारन से आये। शाम को मैदान में प्रार्थना हुई। बापू की बातें सुनी।

१७-१-३४ पटना

आज रहने का स्थान हरिजन-आफिस को बदलकर बापू के पास पीली कोठी में रख आये। पू. बापू राजेन्द्रबाबू के साथ साधारण सभा के प्रस्ताव व मैनेजिंग कमेटी के निर्वाचन के बारे में अच्छी तरह विचार विनिमय हुआ। करीब ७ घंटे इसी काम में गये।

पू. मालवीयजी व बापू की बातें हुईं।

१८-१-३४ पटना

बापू के पास बिधान राय कलकत्ता के मेयर सन्तोषबाबू मौलाना आजाद वगैरा आये। ३ बजे से [illegible] इंस्टीट्यूट में बिहार सेंट्रल रिलीफ कमेटी की सर्वसाधारण सभा हुई। ९। तक चली।

आज की सभा के सभापति बापू बने। पू मालवीयजी व मेरे आग्रह के कारण बापू को उनकी इच्छा के बिना भी उन्हें सभापति बनना पड़ा। सभा का काम ठीक हुआ। रात को बापू से मिला।

२०-१-३४ पटना

बापू से बातचीत।

गुरुद्वारे में आज गुरु गोविंदसिंह का जन्म-दिन मनाया जाने के कारण बापू के साथ वहां गया। सार्वजनिक सभा सफलतापूर्वक हुई। करीब १ हजार लोग थे। बापू, मालवीयजी और मौ आज़ाद बोले।

२१-१-३४ पटना

बापू से बातें।

बिहार में जितनी रिलीफ सोसाइटियां सहायता-कार्य के लिए आई हैं, उनके प्रतिनिधियों की बापू के साथ व कमेटी के साथ बातचीत।

महाराजा दरभंगा बापू से मिले।

२२-१-३४ पटना

बापू ने आश्रम-निवासियों को व्यक्तिगत सत्याग्रह का मर्म समझाया और उनको जल्द में भेजने से रोकने का कारण समझाया।

बिहार खादी-सेवा-संघ के कार्यकर्ता बापू से मिले। बापू से विचार विनिमय।

२४-१-३४ पटना

सुबह ८ बजे से 'बिहार रिलीफ मैनेजिंग कमेटी' का काम शुरू हुआ।

बाहर से आये हुए कार्यकर्ताओं को आपस भजन के बारे में बापू ने सलाह दी। स्वामी आनन्द हार्डीकर आदि से उनकी चर्चा। बापू से बिहार के काम की थोड़ी चर्चा।

२४-१-३४ पटना

बापू को सुबह घूमने ले गया। रास्ते में उनसे नागपुर बहिष्कार, सत्याग्रह आदि की चर्चा हुई। उदाहरणार्थ बापू ने भाऊजी व भाऊभाई का उदाहरण दिया। मैंने कहा वे दोनों आपस सहमत नहीं हैं। बातचीत हुई। बापू को दुःख भी हुआ।

सुबह दोपहर व रात में मैनेजिंग कमेटी की बैठक हुई। बापू का

प्रस्ताव व बजट मंजूर हुआ । बापू के लिए स्त्रियों की सभा रखी गई । शाम को बापू पूज्य मालवीयजी के साथ घूमने गये ।

२५-४-३४ पटना

बापू से बातें । खादी-योजना सत्याग्रह आदि के बारे में बापू के विचार स्वामी आनन्द ने लिखकर दिये ।

२६-४-३४ पटना

बिहार रिलीफ कमेटी की बैठक सुबह से रात तक होती रही ।

बापू ने नागपुर के मामले में स्टेटमेंट बनाकर दिया । रात को मौन छूटने पर उसपर विचार-विनिमय ।

२८-४-३४ पटना

मुजफ्फरपुर गया । बापू के साथ पटना लौटा । रास्ते में बापू से इन विषयों पर बातें होती रहीं—जवाहरलालजी के साथ हुई चर्चा रांची की सभा स्वराजियों का प्रोग्राम भवन-आश्रम रिलीफ-कार्य डेकन चिमनलालभाई, शकरीबहन प्रभावतीबहन आदि ।

२९-४-३४ पटना

बापू के साथ आरा बक्सर, वैद्यनाथ-धाम गया । वैद्यनाथ के सनातनियों का बर्ताव देखकर दुःख हुआ ।

रांची में बापूजी का थप्पड़ खाकर (आशीर्वाद पाकर) सीतारामजी के पास ठहरा ।

१-५-३४ रांची

सुबह बापू ने ५॥ बजे आश्रम के बारे में तथा अन्य विषयों पर अपने विचार सुनाये । चर्चा तथा विचार-विनिमय । नारायणदासभाई के बारे में बातचीत ।

बापू को जवाहरलाल की भेंट का हाल सुनाया । स्वराज्य पार्टी के बारे में बापू से चर्चा हुई । उसमें भाग लिया । खुलासा समझने का प्रयत्न किया ।

२-५-३४ रांची

सुबह जल्दी उठा । बापू से कमलनयन सभा आदि की बातचीत । बापू ने सभा के स्थान आदि की चर्चा की । बापू को सभा के बारे में लिखा । उससे बातचीत ।

१-५ ३४ रांची

सुबह जल्दी बापू के पास गया। बापू से स्वराज्य पार्टी के बारे में चर्चा। बापू निबारणबाबू के पास गये। गांधी-सेवा-संघ की ओर से निवारण आश्रम का उद्‌घाटन। सार्वजनिक सभा ठीक हुई थी।

१७-५ ३४ पटना

बापू के पास गये। राजेन्द्रबाबू के साथ बापू से फैसला।

१८-५ ३४ पटना

बापू से बातें। वर्किंग कमेटी ६ बजे से १ बजे बाद में फिर हुई। शाम को ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक। बापू के पास गये।

१९-५ ३४ पटना

सुबह हरिजन-दौरे के बारे में बातचीत। गांधी-सेवा-संघ व बापू के विचार। वर्किंग कमेटी ३ बजे तक बीच में थोड़ी छुट्टी। मालवीयजी-अन्सारी की लिस्ट में बहुत समय गया।

ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी तीन बजे से रात के १ बजे तक हुई। रात में बापूजी व मालवीयजी के साथ पार्लमेंटरी पार्टी की लिस्ट बनाने में भाग लेना पड़ा। रात को सिर्फ दो घंटे सोने को मिला होगा।

२०-५ ३४ पटना

बापू से बातें—गांधी-सेवा-संघ आश्रम के संबंध में। बापू गये।

२७-५-३४ कर्रंजिया

फादर एलविन के साथ कर्रंजिया-आश्रम के बजट पर विचार-विनिमय किया। बापू का पत्र पढ़कर सुनाया। बजट की व्यवस्था।

५ ६ ३४ वर्धा

बापू का तार आया। वर्धा ९ से ११ तक रहेंगे। पटना जाना स्थगित किया। वर्किंग कमेटी १२ को रखने का तार किया। बापू को भी तार किया।

९ ६ ३४ वर्धा

बापूजी मेल से आये। आश्रम पैदल गये। रास्ते में बातचीत होती रही। आश्रम गया। बापू के साथ जानूजी का नोट पढ़ा। बापू ने प्रार्थना में थोड़ा कहा।

१०-९-३४ वर्धा

बापू से बातचीत। बापू मगनवाड़ी गये। विनोबा को कन्या-आश्रम में ले गये। बरसात में बापू खूब भीगे।

१२-९-३४ वर्धा

बापू से ६ से ७। तक बहुत-सी बातचीत। वर्किंग कमेटी के मेम्बर आये। ९ से ११ व २ से ५॥ बजे तक काम हुआ।

१३-९-३४ वर्धा

वर्किंग कमेटी ७ से ११ तक हुई। प्रायः बहुत-सा काम खतम हुआ। पूज्य बापू भी हाजिर थे। बापू से थोड़ी बातें। बापू पैदल स्टेशन के लिए निकले। रास्ते में मोटर मिली। नागपुर-मेल से बंबई गये।

१७-९-३४ बंबई

बापू के पास मणि-भवन गया। वहाँ देर तक ठहरकर और बातें करके बिड़ला-हाउस गया। भोजन वगैरा करके। फिर बापू के पास मणि-भवन गया।

वर्किंग कमेटी का काम हुआ।

१८-९-३४ बंबई

पूज्य मालवीयजी ने रात में जो कहा उस बारे में सुबह जल्दी उठकर उनसे बातचीत की। वह काफी दुःखी मालूम हुए। सांत्वना देने का प्रयत्न किया। अपने त्याग-पत्र के बारे में उनका संदेशा पूज्य बापू को कहा। बापू के कहने से डॉ. विधान राय भी अबुलकलाम तथा मालवीयजी से देर तक बातचीत की।

वर्किंग कमेटी २॥ से ५ तक चली।

रात में बापू मालवीयजी से मिले। वर्किंग कमेटी तथा पार्लमेंटरी बोर्ड के मेम्बर १ बजे तक मालवीयजी के साथ विचार-विनिमय करते रहे। बहुत देर तक बातचीत। आखिर शुभ परिणाम निकला। मौलाना शौकत अली मिलने आये एक बजे तक रहे।

१९-९-३४ पूना

सुबह ५ बजे उठकर तथा तैयार होकर पूज्य बापू के साथ पूना रवाना हुए। पूना में भीड़ खूब थी। केलकर वगैरा से मिले।

बापू के कम्प में ही भोजन प्रार्थना बातचीत। राजगोपालाचारीजी आये।

२०-६ ३४ पूना

बापूजी के कम्प में गया। महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं की सभा हुई। बापूजी ने डेढ़ घंटे तक प्रश्नों के जवाब दिये। बापूजी से देशी रियासतों का डेपुटेशन मिला। श्री केलकर वगैरा भी मिलने आये थे। बापू से बातचीत।

२६ ६-३४ पटना

पूना में बापू पर बम फेंका गया यह खबर 'सर्चलाइट' व बाद में 'इंडियन नेशन' में पढ़ी। चिन्ता व दुःख हुआ। ईश्वर का धन्यवाद किया।

२७-६ ३४ पटना

अखबारों में बापू का वक्तव्य पढ़ा। राजेन्द्रबाबू तथा ब्रजमोहनबाबू से बातचीत करके बापू को तार भेजा। भोपटकर को भी तार भेजा व बापू के साथ हुई पूना की दुर्घटना के बारे में अखबारों में वक्तव्य दिया।

३०-६ ३४ पटना

हिन्दू जनता की ओर से मैदान पर सभा हुई। पूना की दुर्घटना से बच जाने पर महात्माजी को बधाई दी गई। दो शास्त्रियों के व्याख्यान अच्छे हुए।

४-७-३४ जीरादेई

सुबह निवृत्त होकर मालवीयजी को दो तार भेजे बापू-दिवस मनाने के बारे में।

२६-७-३४ कानपुर

खादी-समर्थकर्ताओं की सभा में भाग लिया। प्रश्नोत्तर के बाद बापूजी का २५ मिनट बोलना पड़ा।

बापू के साथ भोजन।

३०-७-३४ बनारस-पटना

सुबह तीन बजे उठे। निवृत्त हुए, बापूजी से वर्धा के बारे में स्टटमेंट तैयार करवाया।

५-८ ३४ वर्धा

पूज्य बापू, बा वगैरा आये। स्टेशन से आश्रम।

बापू का वजन १ रतल हुआ।

कान के इलाज के लिए बापू ने मुझसे बंबई जाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि तुम नहीं जाओगे तो मैं बंबई भगूंगा। अन्य प्रकार से भी इलाज की बातें हुईं। जाना निश्चित किया।

बापू ने ओम् (उमा) की सगाई की इजाजत दी। बापू से आश्रम-संबंधी बातें।

११-८ ३४ बंबई

कान के इलाज-संबंधी डॉक्टरों की रिपोर्ट बापू को भेजी। डॉ. जीवराज और डॉ. रजबअली का पत्र जानकी के नाम भेजा। बापू से आपरेशन की इजाजत मांगी।

१३-८ ३४ बंबई

शाम को आपरेशन कराने की इजाजत का बापू का तार आया।

१४-८ ३४ बंबई

सुबह ६ बजे प्रार्थना की। आज इसी समय वर्धा में बापू का उपवास छूटनेवाला है।

बृहस्पतिवार को सुबह ९ बजे कान का आपरेशन होगा। बापूजी को वर्धा अर्जेंट तार दिया।

६-९ ३४ बंबई

आज से बापू व जानकी की इच्छा से बंबई में चावल व दाल खाना बंद किया।

२६-९ ३४ बंबई

रामनिवास पार्थीरामजी केशवदेवजी के साथ एक ई शिवपा के पास गया कपड़ की मिल लेने के लिए। उसे (शिवपा को) उसके साथ काम तक का सौदा करने की छूट दी। मन में मंथन चलता रहा। मिल लेने की इच्छा नहीं है पर अवाम देरी इसका खयाल रहा।

२८-९ ३४ बंबई

बापू व ओम् का पत्र मिल न लेने के बारे में आया। बापू को तार दिया कि न लेने का निश्चय पहले ही कर लिया था।

११-१०-३४ वर्धा

डॉ. अन्सारी सरदार, मोहन मणि वगैरा की बापू से बातचीत व विनोद। वर्धा तालुका की सभा में बापूजी ने अनेक प्रश्नों के जवाब दिये। मैंने भी खुलासा किया।

१४-१०-३४ वर्धा

बापू के साथ सुबह ६ बजे घूमते समय ट्रस्ट, कन्याश्रम, गांधी-सेवा संघ की बैठक २७ नवंबर को रखने आदि के संबंध में बातचीत।

१६-१०-३४ वर्धा

बापू से और विनोबा से कन्या-आश्रम तथा महिला-आश्रम की थोड़ी बातें हुईं। बाद में बापू से चर्खा-संघ के बारे में चर्चा हुई।

१७-१०-३४ वर्धा

सुबह बापू व विनोबा से बातें। बापू ने कारेस्पांडेंस स्कूल की रचना समझाई।

१९-१०-३४ वर्धा

सुबह ५ बजे उठे। बापू के साथ पैदल घूमने गये। रास्ते में मदालसा, महिलाश्रम, काकासाहब आदि के संबंध में बातचीत। आज बापू और बहुत से लोग बंबई गये।

३०-१०-३४ वर्धा

स्टेशन गया। बापूजी, लाल-बाल, प्रफुल्ल घोष वगैरा आये। बापूजी के साथ पैदल आश्रम। बापूजी ने अजमेर की घटना का हाल कहा।

२४-११-३४ वर्धा

बापू के साथ पैदल घूमना।

प्यारेलाल की माता से बातें। बापू ने प्यारेलाल के बारे में बातचीत की। महादेवभाई से बातें। प्रार्थना।

२६-११-३४ वर्धा

सुबह जल्दी उठकर कमलनयन, मदालसा, उमा के साथ आश्रम गया। बापूजी की पार्टी में घूमना हुआ। रामायण सुनी।

२७-११-३४ वर्धा

बापू के पास रहा। घूमते समय गांधी-सेवा-संघ, कांग्रेस-संबंधी बातें।

शाम को बापू ने गांधी-सेवा-संघ के बारे में अपने विचार कहे। सभापति व ट्रस्टी के त्यागपत्रों का फैसला। सदस्यों की हाजिरी ठीक मालूम हुई।

२८-११-३४ वर्धा

बापूजी का प्रवचन हुआ। गांधी-सेवा-संघ से मेरा ट्रस्टी व सभापति-पद का त्यागपत्र स्वीकार करने के बारे में बापू ने सदस्यों व ट्रस्टियों को ठीक तरह से समझाया।

बापू ने सभापति के लिए नाम मांगे। २२ लोगों ने नाम भेजे। विनोबा काकासाहब व किशोरलालभाई के नाम आये। बापू ने और मैंने किशोरलाल-भाई का निश्चय किया।

गांधी-सेवा-संघ का कार्य प्रायः दिन-भर होता रहा।

२९-११-३४ वर्धा

बापू ने ८ बजे गांधी-सेवा-संघ के सदस्यों की बैठक में सभापति का नाम जाहिर किया। सबोंने स्वीकार किया। इसके बाद बापू के हाथ से किशोरलालभाई को माला पहनवाई और मैंने अपनी जिम्मेदारी उनको सौंप दी। उन्होंने सभापति का काम शुरू किया।

३०-११-३४ वर्धा

बापू ने ग्राम-संगठन के संबंध में सुबह ठीक समझाकर कहा।

गांधी-सेवा-संघ का कार्य विधान वगैरह तथा सदस्यों से बातचीत का काम होता रहा।

१-१२-३४ वर्धा

कुमारप्पा को लेकर बापू के पास गया। बिहार-रिलीफ के बारे में बातें। उन्हें ठीक करवाया।

बिहार-रिलीफ की सेंट्रल कमेटी से मैंने त्यागपत्र दे दिया।

२-१२-३४ वर्धा

बापू से ब्रजकृष्ण जयप्रकाश प्यारेलाल के संबंध में बातें।

गांधी-सेवा-संघ के विधान के बारे में बापू से चर्चा व उनके सुझाव नोट किये।

४-१२-३४ वर्धा

बापू से थोड़ी बातें। रामायण-पाठ में शामिल। शाम को मिली ट्रस्ट

के संबंध में चर्चा हुई। गांधी-सेवा-संघ के विधान पर बापू के साथ विचार विनिमय।

८-१२-३४ वर्धा

नागपुर में बैरिस्टर अभ्यंकर की हालत ठीक नहीं है। डॉ॰ मोडक व टिकेकर आये। उन्होंने समाचार कहे। बापू को लेकर नागपुर गया। मोटर में बातें। बापू के जाने से अभ्यंकर को खुशी व हिम्मत आई।

प्रार्थना भी वहीं हुई।

१०-१२-३४ वर्धा

सुबह घूमने आश्रम गया। बापू का मौन था।

शंकरलाल बैंकर ने बहुत जोर देकर ग्राम उद्योग-मंडल का सभापति बनने के लिए कहा। उन्हें अपनी कठिनाइयाँ बतलाईं।

कुमारप्पा से बातचीत। बिहार सेन्ट्रल रिलीफ फंड की हालत कही। ग्राम-उद्योग-मंडल के बारे में उन्होंने भी सभापति का भार लेने को कहा।

११-१२-३४ वर्धा

ग्राम-उद्योग-मंडल की सभा का कार्य बापू की हाजिरी में शुरू हुआ। मैं देर से पहुँचा। सब मित्रों की एक राय होने व बापू की इच्छा होने पर, उत्साह न होते हुए भी सभापति की जवाबदारी स्वीकार करनी पड़ी। ईश्वर इच्छा!

१२-१२-३४ वर्धा

सुबह ४ बजे उठे। लक्ष्मीदासभाई ने मुझसे कमलनयन के मेरे व्यवहार के बारे में कहा। मुझे उनका कहना ठीक लगा। उनके मुताबिक मन में विचार करता रहा। इस बारे में बापू से थोड़ी बातें कीं।

ग्राम-उद्योग-मंडल की बैठक ८ से १ हुई। बापू के वक्तव्य पर चर्चा। मैंने अपनी स्थिति स्पष्ट की। बाद में बापू के साथ ग्राम उद्योगमंडल के बारे में और विचार-विनिमय हुआ।

१३-१२-३४ वर्धा

आज दिन भर ग्राम उद्योग-मंडल के बारे में विचार चर्चा तथा कार्यक्रम आदि तय करने में लगा। बापू के साथ भी बहुत सुन्दर ढंग से चर्चा चली।

१४-१२-३४ वर्धा

बापू के साथ सुबह घूमने गया। अपनी मनःस्थिति उनको बताई। ग्राम-उद्योगमंडल के सभापतित्व का भार लेने में निरुत्साह बताया। मेरी मनःस्थिति का खयाल कर बापू ने हुक्म नहीं दिया। उन्हें दुःख हुआ। अंत में जाजूजी सभापति हुए। मन में थोड़ा विचार चलता रहा।

१५-१२-३४ वर्धा

ग्राम-सेवासंघ की सभा सुबह व दोपहर को आश्रम में बापू के पास व शाम को बंगले पर हुई। बहुत समय इसीमें गया।

१७-१२-३४ वर्धा

राजेन्द्रराव (होम मेम्बर) से मिलना हुआ। ठीक बातें। ग्राम-उद्योग मंडल खादी-संघ की रजिस्ट्री, फादर एलविन बापूजी वार्तामें भावी विचार, आदि।

१८-१२-३४ वर्धा

बापू की राजेन्द्रराव से जो बातें हुईं, वे कहीं। अन्य बातें भी हुईं।

१९-१२-३४ वर्धा

बापू से उनके रहने आदि के बारे में बातचीत।

रामायण-पाठ के बाद बापू से जाजूजी विनोबा व कुमारप्पा के सामने बातें।

मगनलाल गांधी-स्मारक के लिए बगीचा दान में देने का संकल्प किया। इससे मन को संतोष हुआ। बगीचा व खेत देखने गये।

२१-१२-३४ बंबई

सरदार वल्लभभाई से मिलना हुआ। उन्होंने बापू को जो पत्र लिखा वह बतलाया। उससे तथा उनसे जो बातचीत हुई, उससे दुःख हुआ। साफ-साफ बातें कीं।

डायरी के अंश

१९३५

९-२-३५, बम्बई

बापू का जरूरी व खानगी पत्र मिला—ग्रामोद्योग-मंडल व ट्रस्टी मेरी स्थिति व गोला-मिल का सम्बन्ध प्यारेलाल व पंडितजी लक्ष्मीदासभाई व ट्रस्टियों का चुनाव रामेश्वरजी व मंजूबाई रमीबहन व कामदार, इंडिया बैंक नागपुर-ब्रांच व मेरा सम्बन्ध आदि के बारे में।

११-२-३५, बम्बई

बापू को पत्र लिखा। बापू का बहुत आग्रह होने के कारण ग्रामोद्योग संघ की सदस्यता का फ़ार्म भरकर भेजना पड़ा।

२०-२-३५, वर्धा

पूज्य बापूजी से बगीचे में मिला। बापू ने प्यारेलाल व पंडितजी का निश्चय बताया। डॉ. जाकिर हुसैन व जामिया का हाल बताया और कहा कि उन्हें रुपया भेज सकें तो भेज दें। रामेश्वरदास व मंजूबाई का हाल कहा।

२२-२-३५, वर्धा

बापूजी से—रामेश्वरजी पुनियावाले व मंजूबाई का फैसला।

बापूजी से २ बजे से ४ बजे तक बातचीत—गोलवर व्यापार-सम्बन्ध में। उन्होंने हार्डविप कम्पनी का काम ठीक बतलाया। मिल का पसन्द नहीं किया। रामेश्वर (नेवटिया) भी साथ था। उनसे भी बातें हुईं।

२३-२-३५, वर्धा

बापूजी आज नागपुर गये—खादी-भण्डार के लिए।

२६-२-३५, वर्धा

बापू से देर तक ऊपर घूमते हुए संघ, विद्यापीठ, शिक्षालय, भगिनी-समाज, जामिया मिलिया, चरखा-संघ आदि के सम्बन्ध में बातें होती रहीं।

२७-२-३५, वर्धा

बापू से बातें—मन के बारे में तथा चरखा किर्लोस्कर, कामदार, डॉ महोदय, साबुस्ता वा आदि के बारे में।

२८-२-३५, वर्धा

अभ्यंकर-स्मारक की बैठक वर्धा में घर पर हुई। व्याख्यान—देशमुख, टिकेकर, पटवर्धन व बाबासाहब देशमुख। छगनलाल भारुका, पूनमचन्द रांका, शिवराज भूतीवाले आदि से बातचीत व निश्चय। पूज्य बापूजी से बातें। वह वसीयत करेंगे। तीन ट्रस्टी निश्चित हुए—घरे, टिकेकर और जमनालाल। पचास हजार रुपया जमा करना तय हुआ—अभ्यंकर-स्मारक ग्रामोद्योग की दुकान व पुस्तकालय वगैरा के लिए।

११-३-३५, वर्धा

श्रीनिवास शास्त्री नागपुर से बापू से मिलने आये। उनसे बातें। उन्हें मंदिर में लक्ष्मीनारायण की मूर्ति बहुत पसन्द आई। आश्रम देखने गये। खादी भी देखी।

१३-३-३५, वर्धा

सवेरे बापू से 'नवजीवन' के बारे में बातें। मोहनलाल भट्ट को वहां से हट जाने की सलाह दी।

जीवरामभाई, गोपबाबू व किशोरलालभाई ने बापू से उड़ीसा-योजना की चर्चा की और उन्होंने निश्चय किया।

बगीचे में बापू के पास देर तक इन्दौर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के बारे में भी बातचीत हुई।

१४-३-३५, वर्धा

बगीचे में सुबह व दोपहर को ग्रामोद्योग-मण्डल की कार्रवाई। बापू या राजेन्द्रबाबू के इन्दौर जाने के बारे में विचार-विनिमय।

१५-३-३५, वर्धा

बापू से बगीचे की जमीन के बारे में बातें। राजेन्द्रबाबू की सब स्थिति उन्होंने और मैंने बापू को पूरी समझाई।

१८-३-३५, वर्धा

इन्दौर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सम्बन्ध में बातें। पोतदार व

तिवारीजी आये। बातें हुईं। पूज्य बापूजी से बातें करके अंत में फैसला हुआ कि वह हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति बनेंगे। मुझे भी जोर लगाना पड़ा।

८ से ९ तक पूज्य बापूजी से खादी-प्रतिष्ठान वगैरा के बारे में बातचीत हुई।

२१-१-३५, वर्धा

सुबह बापूजी से व राजकुमारी अमृतकुंवर बहन से देर तक बातचीत हुई। बापू से—कृष्णदास सुचेता चन्द्रकान्ता तथा अन्य विषयों पर बातचीत। मदालसा को साथ ले जाने का निश्चय हुआ।

२४-१-३५, वर्धा

सुचेता मजूमदार बनारस से आई, उससे ठीक बातें। बाद में बापू के साथ खुलासा हुआ। बापू ने लिखकर दिया कि उन्हें संतोष हुआ।

२६-१-३५, वर्धा

सुबह श्री छोटेलालजी वर्मा डिप्टी कलेक्टर के साथ धर्मशाला बगीचा मंदिर वगैरा गये। बापू से मिले। बाद में दोपहर को बापू से फिर मिला और बातें की।

७-२-३५, भुसावल

कमलाबहन (नेहरू) के पास गया। स्वरूपरानीजी भी वहां आई थीं। स्वामी रामतीर्थ का जीवन तथा बापू व विनोबा के बारे में ठीक विचार विनिमय हुआ।

१३-७-३५, वर्धा

सबेरे स्टेशन से बगीचे गये बापू से बातें—स्वरूपरानी नेहरू मेंगाबेन सिखानी मिसेस शास्त्री राजपुर, पं. मदनमोहन मालवीय सरदार वल्लभभाई आदि के संदेश व हाल कहे। अपने काम के हाल बताये। आगे चलकर टांसिल का आपरेशन कराने की बापू की सलाह हुई।

विनोबा तथा बापू से खादी के नये फेरफार की भी थोड़ी चर्चा की। आश्रम में प्रार्थना में शामिल।

१६-७-३५, वर्धा

बापू से बातें कमल के सम्बन्ध का हाल कहा। उन्होंने व महादेवभाई

ने कमल को पत्र भेजा कि उन्हें संतोष हुआ। डॉ. चौयरानी के बारे में बातें कीं।

१९-७-३५, वर्धा

बापूजी के साथ मजदूरों की मजदूरी की ठीक चर्चा हुई। आठ घंटे में आठ आने के बजाय फिलहाल तीन आना देने की योजना पर संतोष कारक विचार।

२०-७-३५, वर्धा

नागपुर से श्री गोवर्धनदास छांगाणी व अग्निहोत्री आये। उनके साथ बापूजी से नागपुर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के बारे में बातचीत व विचार विनिमय।

चरखा-संघ व सतीशबाबू के सम्बन्ध में भी ठीक चर्चा। मैंने अपने विचार कहे।

२१-७-३५, वर्धा

चरखा-संघ से मेरे त्यागपत्र के बारे में बापू से चर्चा व विचार। शंकर लाल बैंकर तो पहले से विरोधी थे ही। बापू से तय हुआ कि सभापति का काम वह करेंगे मैं केवल सदस्य रहूंगा। वह जो काम लेना चाहेंगे और मैं कर सकूंगा उतना करूंगा।

२४-७-३५, वर्धा

इन्दौर की एक लाख की थैली खीकर-आन्दोलन डेरी वगैरा के बारे में बापू से बातें व प्रोग्राम की चर्चा।

२५-७-३५, वर्धा

सरदार वल्लभभाई व मणिबेन मेल से आये। वे बापू के पास जाकर फिर घर आये। सरदार से बातें। बापू के पास २ से ४ तक देशी राज्यों के बारे में चर्चा। राजेन्द्रबाबू, वल्लभभाई, कृपलानी वगैरा से बातें।

२६-७-३५, वर्धा

बापू के पास १ से २ तक खादी तथा गांधी-आश्रम की चर्चा। २ से ४ तक राजेन्द्रबाबू, वल्लभभाई, कृपलानी डॉ. महमूद वगैरा के साथ चर्चा।

२७-७-३५, वर्धा

बापू के पास १।। से ४ तक विचार-विनिमय हुआ । राजेन्द्रबाबू सरदार वगैरा भी थे ।

३१-७-३५, वर्धा

बापू के निमंत्रण पर वर्किंग कमेटी के सब मेम्बर तथा मेहमानों ने शाम को मगनवाड़ी में भोजन किया ।

१-८-३५, वर्धा

पूज्य बापू के पास सरदार वल्लभभाई राजेन्द्रबाबू जयरामदास गये । देशी राज्यों के प्रस्ताव में फेरफार करवाया । बापू से अन्य बातें ।

२-८-३५, वर्धा

सरोजिनी नायडू तथा अन्य लोग आये । सरोजिनी के साथ बगीचे गये । बापू से बातें । गोविन्दवल्लभ पंत के साथ बापूजी से फलों की कंपनी की योजना पर चर्चा हुई । बाबूजी भी सुबह ८ से ९ १५ तक थे । योजना बापू को पसन्द न होने के कारण स्थगित रखी ।

३-८-३५, वर्धा

मजदूरी के विषय में बापू की खादी-योजना पर ८ से १ तक विचार विनिमय । राजेन्द्रबाबू वल्लभभाई, गंगाधरराव पट्टाभि जयरामदास कृपलानी बाबूजी शंकरलाल बैंकर, किशोरलालभाई वगैरा के साथ ।

कातनेवालों की मजदूरी और खादी के कार्य की चर्चा बापू के साथ २ से ४ तक फिर चली । सुबहवाले प्रायः सब ही उपस्थित थे ।

४-८-३५, वर्धा

सुबह बापू के पास चर्खा-संघ मजदूर व कांग्रेस के बारे में विचार विनिमय । फिर दोपहर को बापू के पास दो से चार तक रहा ।

पाचलेगांवकरजी के सांप के प्रयोग । बापू के गले में सांप पहनाया । बाद में खादी-चर्चा हुई ।

६-८-३५, वर्धा

सुबह बापू के पास कई प्रश्नों पर विचार-विनिमय । खासकर इन्दौर हिन्दी साहित्य सम्मेलन सीकर का जाट प्रकरण, कांग्रेस-सभापति स्टेटमेंट

देने का निर्णय। शंकरलाल और महिला-विद्यालय जिसमें बालासाहब, अमृतलाल अनसूया वगैरा के बारे में ठीक सुलझाया।

७-८-३५, वर्धा

मगनवाड़ी में बापू से बातें—खासकर अनसूया के बारे में।

१०-८-३५, इन्दौर

इन्दौर के महाराजा श्री यशवंतरावजी से ११॥ से १२ तक मुलाकात। माणिकभाई कोठारी साथ थे। महाराजा बहुत ही सादे व सरल-हृदय सज्जन तथा बापू के प्रति भक्तिवाले मालूम हुए।

२१-८-३५, देहली

सुबह तैयार होकर भाई देवदास गांधी व पूज्य बा से मिला। बातचीत। बापू को व राजाजी को तार भेजा।

४-९-३५, कानपुर-इलाहाबाद

जवाहरलाल के साथ इलाहाबाद-ऐरोड्रोम से कानपुर तक आये। १ घंटा १ मिनट लगा। उन्होंने अपने विचार बताये। बापू के नाम पत्र लिखा।

जवाहरलालजी की बातचीत के नोट्स

१ बापू के व मेरे (जवाहरलाल के) विचारों में काफी फर्क है।
२ जहांतक एक भी राजनीतिक कैदी जेल में है, वहांतक बापू को कांग्रेस से अलग नहीं होना था।
३ बापू ने सत्याग्रह बन्द किया वह मैं समझ सका।
४ फ्रीडम ऑफ स्पीच फ्रीडम ऑफ प्रेस के बारे में संभव हो तो सबोंको साथ लेकर, इस एक ही बात पर जोरदार देशव्यापी आन्दोलन होना चाहिए।
५ आज की हालत में कौंसिल जाने के मैं विरुद्ध नहीं हूं।
६ आफिस स्वीकार करने के बारे में यहां हमारी मांग हो और हम जो शर्तें दें वे सरकार मंजूर करे तो आफिस स्वीकार करना ठीक है अन्यथा हमारी बात व शर्तें सरकार कबूल नहीं करती है यह कहकर देश में फिर आन्दोलन करें।
७ भूलाभाई को मैंने देखा भी नहीं। जहांतक भाषणों का सम्बन्ध

है माडरेटों में व उनमें फर्क नहीं दीखता । बुद्धिमान हो सकते हैं।

८. सोशलिस्ट अच्छे हैं, यह मैं नहीं कहता परन्तु उन्होंने कुछ विचार तो देश के सामने रखे हैं।

९. मुझे अंग्रेज ज्यादा पहचानते हैं, मेरी कदर भी ज्यादा करते हैं।

१ वर्तमान वकिंग कमेटी से मुझे बिलकुल संतोष नहीं ।

११ दूसरी बनाने में भी पूरी कठिनाई है।

१२ कांग्रेस-प्रेसिडेंट के बारे में मुझे देश की हालत से वाकिफ होना जरूरी है। मैं खुला रहना ज्यादा पसन्द करूंगा । इतने पर भी जवाबदारी आयेगी तो ठीक है।

१३ फरवरी से पहले याने सजा खत्म होने की तारीख के पहले मैं लौट आया तो शायद उतने रोज जेल में रहना पड़े।

१४ मैं कांग्रेस-अधिवेशन के अवसर पर अवश्य आना चाहता हूँ।

१५. शिक्षण-पद्धति तथा अन्य परिस्थितियों व विचारों पर भी उन्होंने अपने विचार कहे ।

१६ प्रेस आदि के बारे में भी खुलासा किया ।

२४-९ ३५, बिन्सर (अल्मोड़ा)

आज देशी तिथि के अनुसार बापू का जन्मदिन है।

नीचे मन्दिर में जो साधु ब्रह्मचारी रहते हैं उनसे हरिजनों के मंदिर प्रवेश के बारे में बहुत देर तक बातें हुईं । मेरी बात उनके गले नहीं उतरी । पुराने विचारों के हैं। स्नान वगैरा करके १२ से १२ १ तकसब लोगों ने मौन रहकर कताई की । रात को दादा धर्माधिकारी ने बापू की जीवनी पर बहुत ही सुन्दर विचारणीय प्रवचन किया। उसके बाद प्रार्थना व भजन हुए।

३ १०-३५, वर्धा

बापूजी से बातचीत । जवाहरलालजी की बातचीत का हाल कहा महिलाश्रम व कन्याश्रम के बारे में भी बातें कीं ।

४ १०-३५, वर्धा

सुबह बापू के पास गया । उनके साथ सिन्दी गांव पैदल गया और आया । सीतारामजी की झोंपड़ी देखी ।

बापू से कृष्णदास जैपान आदि की बातें। चरखा-संघ की सभा में हुई बैठक का परिणाम सुना।

८-१०-३५, वर्धा

मगनवाड़ी गया। वहाँ से बापू के साथ सिन्दी जाते-आते समय बातें। बापू से फिर बातें। उन्हें बैतूल की चर्चा का हाल बाबा धर्माधिकारी ने सुनाया।

९-१०-३५, वर्धा

बापूजी से बातें। उन्हें बैतूल की स्थिति मैंने कही थी वह बात कबूल की। धन्धा के विचार कहे।

१०-१०-३५, वर्धा

बापूजी के पास दिल्ली-बोर्ड की बैठक हुई—दो घंटे करीब सुबह और एक घंटा शाम को। श्री लक्ष्मीनारायणजी, परमेश्वरीप्रसाद, ईश्वरदास हाजिर थे। पुराने कर्ज (दिसम्बर १९३५ तक) की जिम्मेवारी बापू ने तीन जनों पर, खासकर घनश्यामदास लक्ष्मीनारायणजी और मुझपर छोड़ी।

११-१०-३५, वर्धा

सुबह वल्लभभाई के साथ मगनवाड़ी गया। वहाँ से बापू के साथ सिन्दी तक पैदल।

२०-१०-३५, वर्धा

मगनवाड़ी से बापू व जयरामदास के साथ पैदल सिन्दी गये-आये। रास्ते में बापू से मैंने 'बम्बई क्रानिकल' राजाजी कांग्रेस-सभापति आदि के बारे में अपने विचार कहे। उन्होंने अपनी राय दी।

बापू ने आज ग्रामीण कार्यकर्ताओं के सामने ११ से २-१ तक खाद्य पदार्थ व ग्राम-सेवा पर प्रवचन किया। आश्रम में प्रार्थना। बापू से बातें।

२१-१०-३५, वर्धा

बापू आज नालवाड़ी गये। चर्मालय तथा मरे ढोरों के चमड़े के बारे में विचार-विनिमय। मरण की हुई बकरी के चमड़े का उपयोग किया जा सकता है। बापू ने आश्रम के कार्यकर्ताओं के सामने अपने विचार ग्रामीण कार्यकर्ताओं के वेतन के संबंध में कहे। कम-से-कम तीन आना ज्यादा-से-ज्यादा आठ आना रोज।

२५-१०-३५, वर्धा

पूज्य बापू, बा व मनु (हरिलाल गांधी की पुत्री) से बात करके मनु की सगाई चि० सुरेन्द्र मशरूवाला से करने का निश्चय। विनोद मुहूर्त ३ बजे हुआ।

सर अलिन्स मडगांवकर बापू से मिलने आये।

२७-१०-३५, वर्धा

पूज्य बापूजी से ३ से ४ तक टीचिंग-आपरेशन महिला-मंडल ट्रस्ट, हिन्दी प्रचार विद्यालय मद्रास में हिन्दी-प्रचार वगैरा के संबंध में बातें।

२९-१०-३५, वर्धा

बापू को नये वर्ष के प्रणाम करने गया।

२९-१०-३५, वर्धा

कल बापू से अनायास रामकृष्ण व अनसूया की जो बातें हुईं व बापू ने जो निर्णय किया वह सब रामकृष्ण ने मुझसे कहा। उसने कहा कि बापू ने तो दोनों से बात करके यह कहा कि वे तो आज नये वर्ष के दिन यह सम्बन्ध पक्का हुआ मानते हैं। इसपर सुबह ही बापूजी से सविस्तर बातें हुईं। वहां रामकृष्ण व अनसूया हाजिर थे। दोनों की पूरी तैयारी से सम्बन्ध पक्का हुआ। दोनों के घरवालों को कहा गया। दोनों के पत्र पढ़े गए और विचार-विनिमय हुआ। बाद में चि० रामकृष्ण की सगाई चि० अनसूया के साथ पूज्य बापूजी, काकासाहब, जाजूजी तथा अन्य प्रतिष्ठित मित्र-समुदाय के सामने पक्की हुई। बापू ने सारगर्भित भाषण दिया। समारंभ अच्छा हुआ।

३०-१०-३५, वर्धा

बापू व जाजू से बातें।

चि० तारा के साथ बापू के पास ३ से ४ तक। मैनिया की हालत भी जानने में रही।

१-११-३५, वर्धा

बापू के पास चि० तारा के साथ ७ से ८॥ तक बातें होती रहीं। बापू ने ठीक मुनासिब राय दी।

दोपहर को ३ से ४ तक बापू से बातें। जमीन का फैसला। बापू ने तारा के बारे में अपनी राय कही। मुझे भी ठीक मालूम हुई।

७-११ ३५, वर्धा

नागपुर-मेल से वर्धा पहुँचा। मगनवाड़ी में बापू से मिला। ग्रामोद्योग-संघ की बैठक का कार्य २॥ से ४ तक हुआ।

८ ११ ३५, वर्धा (जन्मदिन)

स्नान आदि से निवृत्ति के बाद माँ को प्रणाम। लक्ष्मीनारायण मंदिर में दर्शन व बापू को प्रणाम। बापू व अन्य मित्रों के साथ मगनवाड़ी में ही आज भोजन किया।

९ ११ ३५, वर्धा

विनोबा से करीब डेढ़ घंटे तक टेकरी देखने के बाद विचार-विनिमय। विनोबा ने कहा

१ देहातों में स्वाभाविक रूप से समजीवी जीवन व्यतीत करने वाले लोगों में समजीवन के सिद्धान्तों के बारे में निष्ठा निर्माण करके उन्हीं में से देहातों की सेवा करनेवाले अध्यापक और साहसी कुशल कार्यकर्ता निर्माण हो सकें ऐसी योजना बनाना।

२ शिक्षित वर्ग के जो कार्यकर्ता देहात की सेवा की लगन रखते हैं वे स्वतंत्र रूप से अपने पैरों पर खड़े रह सकें ऐसी औद्योगिक शिक्षण की—सहकार्य—की और दिशा-दर्शन की योजना तैयार करना।

३ अहिंसक आंदोलन के मूलभूत तत्त्वों के बारे में विश्वास और ज्ञान की कमी बिलकुल निकट के कार्यकर्ताओं में भी दिखाई देती है। ऐसी स्थिति में उन मूल तत्त्वों का महत्त्व जानने और उसके अनुसार जीवन-परिवर्तन करने की आवश्यकता खुद के और आसपास के लोगों के चित्त पर जमी रहे ऐसी आचार-योजना बनाना।

बापू से विनोबा की बातचीत पर विचार-विनिमय।

१०-११ ३५, वर्धा

बापूजी ने आज प्रार्थना के बाद रामचन्द्र-जयन्ती पर सुन्दर प्रवचन किया। व्यवहार करते हुए भी मनुष्य उच्च विचार व आचार रख सकता है।

११ ११ ३५, वर्धा

विनोबा से ८ से ९॥ तक बातें। विषय—कार्यकर्ताओं की कमी, मगनवाड़ी की व्यवस्था, बापू का मोह, डेरी, आमिषा वगैरा।

श्री जुगलकिशोर बिड़ला व श्री रामेश्वरदास बिड़ला के पत्र अंबेडकर के बारे में आये। उन्हें तार व पत्र दिया। बापू से भी कहा।

१४ ११ ३५, वर्धा

प्रार्थना। बापू से हरजीवनभाई के बारे में व विट्ठलदास, सुमित्रा आदि के बारे में बातें।

२१ ११ ३५, वर्धा

घनश्यामदासजी से बातें। उनका मेरे कान के इलाज के लिए विशेष (चिन्ता) आने पर जोर। उन्होंने बापू से भी इस संबंध में बातें कीं।

२३-११ ३५, वर्धा

हरिजन-बोर्ड के सदस्य आना शुरू हुए। मगनवाड़ी में बापू से बातें—ऊपर की इमारत, फेलोशिप वगैरा के बारे में।

२४ ११ ३५, वर्धा

बापू के पास हरिजन बोर्डिंग-विषयक थोड़ी बातें। बाद में दिल्ली-डेरी के बारे में विचार-विनिमय।

२६ ११ ३५, वर्धा

बापू से मीराबहन के सेगांव में रहने आदि के बारे में बातें।

२७-११ ३५, वर्धा

मगनवाड़ी में बापू से दिल्ली-डेरी, बिहार-रिलीफ, हिंगणघाट मजदूर हड़ताल के बारे में विचार-विनिमय। जो मैंने फैसला किया वही महावीर प्रसाद को बापू ने कहा।

२८-११ ३५, वर्धा

सुबह जल्दी तैयार होकर श्री रामेश्वरी नेहरू व मीराबहन के साथ सेगांव गया। जाते समय आश्रम से पैदल गये। आते समय अपने बगीचे में व बाबासाहब के यहां दही-हलुए का भोजन हुआ। गांव में सभा हुई। बाबासाहब वाघोलेवाले सभापति थे। वहां श्री रामेश्वरी नेहरू तथा धर्माधिकारी व मैं बोले। मीराबहन का परिचय दिया और वहां रहने का

कारण समझाया। मालगुजारी के बारे में बताया और कहा कि ब्याज सहित जितने रुपये निकलेंगे उसके बारह आने भी नगदी दे देवें तो यह हिस्सा पुराने पटेल को देने को आज भी तैयार हूँ। दो वर्ष तक भी यह व्यवस्था करेंगे तो विचार किया जायगा। मीराबहन यहां रहने लगीं।

२१-११-३५, वर्धा

दिल्ली-डेरी व जुगलकिशोरजी बिड़ला को मैं जो पत्र भेजना चाहता था बापू से उस संबंध में सब कहा। बापू ने कहा—इस प्रकार के पत्र भेजने की जरूरत नहीं। उसके कारण भी बताये।

१-१२-३५, वर्धा

सिन्दी से मगनवाड़ी तक बापूजी से सिन्दी की व्यवस्था व डिस्ट्रिक्ट कौंसिल की व्यवस्था पर खास विचार। उनका कहना था कि इसमें अधिक ध्यान देना जरूरी है।

३-१२-३५, वर्धा

बापू ने रामदास गांधी की छपाई के काम की योजना बिलकुल नापसंद की। उसके साथ पूरा समझ लेने के बाद बापू को मैंने भी अपनी राय बताई।

मगनवाड़ी जाकर बापू व बहनों से मिला। चि० तारा को गौरीशंकर भाई के पास इलाज को भेजने का बापू ने निश्चय किया।

४-१२-३५, वर्धा

मगनवाड़ी बगीचे से सिन्दी तक जाने की सड़क बनाने का फैसला किया। पेड़ों के बीच से ही रास्ता बनाने का तय रहा—म्युनिसिपल कमेटी की दृष्टि से। बगीचे की कीमत के बारे में बापू की जाजूजी और कुमारप्पा से देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

बापूजी के स्वास्थ्य खराब होने की सूचना मिलने पर बगीचे गया और वहां सब व्यवस्था करके आया। सिन्दी के लोग मिलने आये। वहां की हालत समझी।

५-१२-३५, वर्धा

सुबह जल्दी मगनवाड़ी गया। बापू का स्वास्थ्य ठीक मालूम हुआ। वहीं नाश्ता किया। बाद में सिन्दी पैदल घूमने गया।

महिला-आश्रम में बापू के लिए मकान की सफाई करवाई।

डॉ॰ भरे, घोरसेकर, मंगलूलकर और महोदय आदि ने मिलकर बापू की भली प्रकार से जांच की और कहा कि कोई खास शिकायत नहीं है। थोड़ा आराम लेने से ठीक हो जायगा। चिन्ता कम हुई।

७-१२-३५, वर्धा

बापू को आज फिर से ब्लडप्रेशर का दौरा हुआ व गर्दन में दर्द हुआ। उनसे दौरे का कारण व आराम लेने के बारे में बातचीत। उन्होंने श्लाम्स (मिस मेरी) के बारे में तथा मैंने विट्ठलसिंह के बारे में अपने विचार कहे।

प्रार्थना आज मगनवाड़ी में ही की।

७-१२-३५, वर्धा

बापू का ब्लडप्रेशर ता॰ ५ को १६॰/११॰ था। यह आज दोपहर को डॉ॰ साहनी (सिविल सर्जन) मंगलूलकर, घोरसेकर, महोदय आदि ने देखा तो २१॰/१२॰ निकला। चिन्ताजनक बात है। शाम को डॉ॰ भरे व सिविल सर्जन ने फिर लिया तो १८॰/११॰ हुआ। फिर भी चिन्ता रही। डॉ॰ जीवराज को तार किया।

महादेवभाई व देवदास से बापू के आराम के बारे में विचार-विनिमय।

८-१२-३५, वर्धा

बम्बई से डॉ॰ जीवराज मेहता बापू को देखने आये। बहुत देर तक जांच की और बुलेटिन निकाला।

१०-१२-३५, वर्धा

मगनवाड़ी गया। बापू का स्वास्थ्य ठीक नहीं लग रहा है। उन्हें स्थान परिवर्तन की बात समझाई। उन्होंने स्वीकार नहीं की। ब्लडप्रेशर ठीक नहीं है यह चिन्ता का विषय है।

११-१२-३५, वर्धा

मगनवाड़ी गया। बापू को देखा। डॉ॰ साहनी ने बापू का ब्लडप्रेशर लिया।

बापू को स्थान-परिवर्तन का समझाने की कोशिश कर देखी। सफलता नहीं मिली। बाम्प के ४॰॰ स्त्री-पुरुष पूज्य बापूजी के दर्शनों के लिए स्पेशल ट्रेन लेकर दो रोज के लिए आये। उनके नेता सौम भोजन को आये। शाम की प्रार्थना में मगनवाड़ी में शामिल हुए। उनकी स्पेशल ट्रेन देखी।

१२-१२-३५, वर्धा

बापू से मगनवाड़ी में मिला। यद्यपि वह मगनवाड़ी छोड़ना नहीं चाहते थे फिर भी उनको महिला-आश्रम या अपने यहां बंगले पर स्थान-परिवर्तन करने को राजी किया। सिविल सर्जन से मिला। उन्होंने आश्रम का स्थान पसन्द किया—घर पर मच्छर वगैरा तथा अन्य अड़चनों के कारण।

कल सुबह ९ बजे आश्रम जाने का तय किया। पूज्य बा की इच्छा मगनवाड़ी में ही रहने की है।

आन्ध्र सेवक ट्रेन के यात्रियों को जो बापू के दर्शनों को आये थे दुकान पर भोजन कराया। मैंने भी उनके साथ दुबारा भोजन किया। मंदिर में भजन। शाम को महादेवभाई ने बताया कि बापू महिलाश्रम नहीं जायंगे।

१३ १२-३५, वर्धा

मगनवाड़ी गया। बापू से मिला। उनकी इच्छानुसार अंत में मगनवाड़ी में ही रहने का निश्चय किया। पूज्य राजेन्द्रबाबू आये। बापू से बातें हुईं। वहीं प्रार्थना।

१५ १२-३५, वर्धा

सरदार वल्लभभाई, मणि डॉ. जीवराज मेहता डॉ. गिल्डर आदि बंबई से आये। बापू को दोनों डॉक्टरों ने भली प्रकार देखा। डॉ. गिल्डर ने छाती की जांच की। फोटो लिया। डॉ. जीवराज ने कहा कि चिंता की बात नहीं है पर बापू को अभी आराम लेने की जरूरत है।

बापू की तबीयत के बारे में उनके प्रोग्राम-संबंधी चर्चा।

१७-१२-३५, वर्धा

वल्लभभाई महादेवभाई, मणि जमना के साथ घूमते हुए मगनवाड़ी गया। बापू से मिलकर वापस पैदल बंगले आया।

१८ १२-३५, वर्धा

सरदार वल्लभभाई के साथ बापू से मिलकर आया।

गांधी-सेवा-संघ का कार्य तीन घंटे ४ से ५।। व ७ से ८।। तक किया।

१९ १२-३५, वर्धा

वेरियर एल्विन सरदार के साथ बापू से मिलकर आये। एल्विन से बातें।

२०-१२-४५, वर्धा

मगनवाड़ी गया। बापू से विनोद तथा ४ १ से ५ १५ तक बातें। सरदार भी साथ थे।

गांधी-सेवा संघ की बैठक सुबह ८ से १०-१५ व शाम ८ से ९ तक हुई। काफ्रेंस २९ फरवरी से ६ मार्च तक सावली में रखने का निश्चय हुआ।

२४ १२-४५, वर्धा

मगनवाड़ी गया। बापू से उनके साथ जानेवालों के बारे में तथा जो यहां रहेंगे उनकी व्यवस्था करने के बारे में विचार-विनिमय। उनकी इच्छा जानी। मैंने अपना अभिप्राय बताया।

२५ १२-४५, वर्धा

डॉ जीवराज मेहता बम्बई से आये। बापू से देर तक बातचीत। स्वास्थ्य की जांच ब्लड-प्रेशर, नाड़ी। प्रगति धीमी बताई।

डॉ जीवराज से बापू के बारे में बातें। डॉ खरे नागपुर से आये। उन्होंने भी बापू को देखा।

२६-१२ ४५, वर्धा

बापू से बातें। उनको भी कहना था वह सुना। नागपुर जा नहीं सकते मैंने कहा।

२७-१२ ४५, वर्धा

बापू से बातें। उन्होंने रामकृष्ण व उमा के विवाह के बारे में कहा। अन्य बातें।

३१ १२-४५, वर्धा

४ १ उठा। मगनवाड़ी गया। बापू से मामूली बातचीत।

बापू से इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ फेमीनिस्टवाले मिले। थोड़ी देर बात हुई। बापू से मेरी भी मामूली बातचीत हुई।

डायरी के अंश

१९३६

२-१-३६, बंबई

वर्किंग कमेटी की बैठक। पू. मालवीयजी से देर तक बातें।

३-१-३६, वर्धा

मगनवाड़ी गया। बापू को मालवीयजी का सन्देश कहा। बापू का ब्लड प्रेशर फिर २१०।११२ हो गया। बढ़ जाने से चिंता। डॉ. महोदय से बापू के स्वास्थ्य के बारे में बातचीत।

शाम को फिर बापू के पास मगनवाड़ी गया। ४ से ७-३० तक डाक्टरों ने बापू को देखा। ब्लडप्रेशर २१५।११५ हुआ। इतना आराम लेने पर भी ब्लडप्रेशर कम नहीं हो रहा है, यह जानकर चिन्ता होती है। बापू का आज बंबई जाना स्थगित रहा। डॉ. जीवराज ने भी टेलीफोन पर कहा कि १८५ से कम हो तो ही बापू को बम्बई भेजना चाहिए।

४-१-३६, वर्धा

सुबह ५ बजे उठा। दादा धर्माधिकारी के साथ मगनवाड़ी गया।

बापू को रात में नींद ठीक आई। आज ब्लडप्रेशर १८६।११६ रहा। डॉक्टरों ने अंत में बापू को सेकंड या फर्स्ट क्लास में भी यात्रा न करने देने व बंबई न जाने देने का निर्णय किया। डॉक्टरों ने व बापू ने जनवरी-आखिर तक आश्रम में ही रहने का निश्चय किया।

आश्रम जाकर बापू के रहने आदि की व्यवस्था की।

शाम को करीब ५।। बजे बापू को मगनवाड़ी से महिला-आश्रम के पुराने मकान में ऊपर ले गए, डॉ. शाह्नी ने जांचा। ब्लडप्रेशर १९६।११६। शाम की प्रार्थना आश्रम में की। आज से जानकीवाले पुराने मकान में सोने का रखा। बाहर खुले में सोया।

५-१-३६, वर्धा

४ बजे उठकर प्रार्थना में गया। रात में बापू को नींद आ गई।

घूमने के बाद बापू के पास गया। डॉक्टरों ने बापू की जाँच की। ब्लडप्रेशर १९२-११ हुआ। कम नहीं हुआ।

डॉ. जीवराज मेहता बम्बई से ऐक्सप्रेस से आये और मेल से वापस गये। बापू को भली प्रकार देखा। विनोद व बातचीत। कुछ समय बाद बाद स्वस्थता हुई तो बम्बई व बाद में माथेरान बापू को रखने का विचार हुआ। डॉ. जीवराज के साथ भोजन। शाम की प्रार्थना आश्रम में। बापू ने ७॥ बजे मौन लिया।

६-१ १६, वर्धा

४ बजे उठा। प्रार्थना बापू का मौन। बापू को नींद ठीक आई। उनका ब्लडप्रेशर २२०-१२ करीब हुआ। डॉ. महोदय ने सिविल सर्जन डॉ. साहनी को बुला लाने को कहा। वह आये। उन्होंने ब्लडप्रेशर देखा तो १७५ १२ निकला। दोनों में फर्क रहा। शाम को डॉ. क्षेरशेकर व डॉ. गंधक्कर दोनों ने ब्लडप्रेशर लिया तो २१ १२ निकला। इससे चिन्ता हुई। डॉक्टरों ने कहा कि बापू कमरे के अन्दर ही रहें व पूरा आराम लें।

७-१ १६, वर्धा

बापू को नींद ठीक आई। मिस कौस्टर आज बापू के मिलने आईं। अपने यहीं मेहमान है। उनके साथ में भोजन किया।

बापू का ब्लडप्रेशर १९४ ११ था। स्वास्थ्य साधारण ठीक रहा।

८ १ १६, वर्धा

४ बजे प्रातः बापू से मिलकर बंगले पर आया। पत्र लिखवाये। घूमने गया। बापू का स्वास्थ्य आज ठीक लगा। ब्लडप्रेशर १९०-१ ९ था।

आज से बापू को रामायण सुनाने का निश्चय हुआ। शाम को आश्रम में भोजन किया। बाद में प्रार्थना।

९ १ १६, वर्धा

४ बजे प्रातः बापू से मिलकर बंगले आया।

बापू का रामायण-वर्ग हुआ।

बापू के दो दांत डा. साहनी ने निकाले। ब्लडप्रेशर शाम को १८०-११ ।

१ १ १६, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। बापू को देखकर बंगले आया। वहांपर कुछ लिखना-पढ़ना किया। मिस कीस्टर वगैरा सेगांव गये।

श्री राजेन्द्रबाबू मेल से आये। बापू के पास ८-२ से ९ तक रहे। रामायण-वर्ग में बैठे रहे। बात ज्यादा नहीं की। बापू को आज रात में नींद कम आई। ब्लडप्रेशर शाम को १८९ १ ९ था।

भोजन के बाद जल्दी ही वापस बापू के पास गया।

११ १ १६, वर्धा

बापू का ब्लडप्रेशर सुबह १७९ १ ९, शाम को १७२-१ ४। स्वास्थ्य ठीक है। रामायण-वर्ग।

सरदार वल्लभभाई व राजेन्द्रबाबू के प्रोग्राम तथा बंगाल-संबंधी विचार-विनिमय।

मगनवाड़ी गया उसके बाद बापू के पास गया।

१२ १ १६, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। बापू को रात नींद आई थी।

डॉ. जीवराज डॉ. गिल्डर बम्बई से १२ १५ बजे करीब आये। डॉ. बटेटी दांत निकालने नागपुर से आये। १ बजे सब मिलकर बात डोलकर होगए। डॉ. जीवराज व गिल्डर तो बापू को बम्बई ले जाने को आये थे किन्तु बापू ने आज जाने से इन्कार किया। दो दांत निकलवाये।

मेरी राय थी कि बंबई जाना हो तो आज जाना चाहिए। बाद में सरदार, डॉ. जीवराज व डॉ. गिल्डर ने मिलकर गुरुवार को बम्बई जाने का विचार किया। कई कारणों से मुझे दुःख हुआ रात में नींद भी बराबर नहीं आई।

१३-१ १६, वर्धा

१ बजे तथा ४ बजे प्रार्थना। रात में बापू को नींद आई थी। मनोहा भूल से सुबह प्रार्थना के समय अंदर बापू के पास आई। उसे समझा दिया। उसके प्रश्न ठीक मालूम हुए। सरदार के साथ वापस पैदल बापू के पास। बापू का आज मौन था। दिन में ठीक आराम किया। बापू को स्टेशन ले जाने के बारे में स्टेशन-मास्टर के साथ विचार-विनिमय।

प्रार्थना के बाद बापू के समक्ष महादेवभाई ने लीलावती को बापू के दर्शन कराने के बारे में जो दुराग्रह व जिद की तथा उस समय मेरा भी जो व्यवहार रहा उसके लिए मन में दुःख अनुभव होता रहा। बापू के सामने यह घटना नहीं होनी चाहिए थी। उन्हें भी विचार रहा होगा।

सरदार और राजेन्द्रबाबू मीराबहन के पास सेगांव जाकर आये।

१४-१-३८, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। रात में महादेवभाई के साथ घटी कल की घटना का विचार चलता रहा। कई बातें मन में आईं।

बापूजी को रात में नींद कम आई और १ बजे दो दस्त हुए, यह सुनकर चिंता हुई। महादेवभाई को दुःख से भरा हुआ पत्र लिखा। उनका भी पत्र आया। इस संबंध में सरदार का व्यवहार न्याय से थोड़ा अलग मालूम हुआ। आज मन में काफी असंतोष व दुःख रहा। आँखें भी गीली हुईं।

इन्दौरवाले हीरालालजी व मनोरमा अम्मा आदि से बातें। उन्हें कृष्णदास का संबंध पूर्णतया पसन्द है। बापू को भी कहा। इन सब लोगों को शाम को बापू के दर्शन करा दिये। बापू ने हीरालालजी के बारे में पूछा।

बापू ने अपने मन की दो बातें कहीं। एक मगनवाड़ी को सफल बनाना व दूसरी जो मारवाड़ी की लड़ाई लड़नी है उस बारे में। केन्द्र वर्धा ही रखना जरूरी बतलाया।

१५-१-३८, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। बापू से मिलकर बंगले आये सरदार व मणि के साथ घूमते हुए फिर आश्रम। डॉ. जीवराज मेहता बम्बई से आये। बापू से मिलकर स्टेशन गया। बापू को ले जाने की व्यवस्था देखी। वहां से मगनवाड़ी जाकर व अस्पताल में डॉ. साहनी से मिलकर ११॥ बजे भोजन। बापू की इच्छा के मुताबिक ४॥ से ५॥ तक खास-खास लोगों को उनसे मिलाया। कुमारप्पा दादा शान्ता लीलावती हरिलाल गांधी महादेवभाई वगैरा। बापू को आज आश्रम की बहनों ने भजन सुनाये। कम पसन्द आये।

बापूजी रात को एक्सप्रेस से बम्बई रवाना हुए। व्यवस्था से पूरा संतोष नहीं रहा।

१-२-३६, वर्धा

घूमने जमनावाड़ी गया। मीराबहन से बहुत देर तक बातचीत। उन्हें कई तरह से समझाया कि बापू के पास जाने से उन्हें अच्छा नहीं लगेगा। मीराबहन ने मेरे आग्रह पर कबूल तो किया पर कहा कि अगर नहीं गई तो सिर फट जायगा ऐसा लगता है आदि।

महादेवभाई का पत्र आया। आखिर में मीराबहन ने जाने का ही निश्चय किया। उसकी हालत देख क्षोभ व प्रेम दोनों पैदा होते हैं।

बापू का ब्लडप्रेशर १७५ ९ ।

७-२-३६, वर्धा-मुसाफिर

हरिभाऊजी के साथ पैदल स्टेशन। महादेवभाई दुर्गाबहन कलकत्ते गये। उन्होंने बापू के स्वास्थ्य का व मन का हाल थोड़े में बताया। मीराबहन और प्यारेलाल का भी। बडनेरा तक प्यारेलाल की राम-कहानी महादेवभाई के पत्र वगैरा देखे।

९-२-३६, अहमदाबाद

वल्लभभाई व जीवराज मेहता आये। मुझे भी साथ ले गए। बापू का प्रोग्राम जो निश्चित हुआ था बतलाया। बापू बारडोली ठहरते हुए ता० २१ को वर्धा पहुंचेंगे यह कहा।

गुजरात-विद्यापीठ में प्रार्थना। बापू से बात नहीं हुई।

२१-२-३६, वर्धा

मीराबहन से बातें। मैंने अपने विचार कहे। किशोरलालभाई से गांधी सेवा-संघ के बारे में बातचीत। छगनलालभाई से कृष्णदास के विवाह के बारे में बातें। प्यारेलाल से बातें। उसे समझाया। तीन रोज बाद आखिर उसने बहुत समझाने पर, खाना खाया।

२३-२-३६, वर्धा

पू. बापूजी सरदार, मणि दोपहर को ऐक्सप्रेस से वर्धा पहुंचे।

२५-२-३६, वर्धा

सरदार से बड़ौदा कन्या-विद्यालय की बातें। मैंने अपनी राय बताई। उन्होंने बापू से बात करके निश्चय करने का विचार किया।

जवाहरलालजी का पत्र। विचार-विनिमय।

बापू को ब्लड-प्रेशर ज्यादा हुआ मह सुना। मीराबहन वगैरा से बातें ज्यादा की।

२६-२ ३६, वर्धा

निवृत्त होकर प्यारेलाल व सुशीला के साथ पैदल आश्रम गया।

पू बापू के पास रामायण ८.१ से ९ तक हुई। बाद में ९ से १०-१५ तक बापू से सेगाव सावली सेवली मीराबहन प्यारेलाल बड़ौदा का मामला तारा वल्लभभाई आदि की चर्चा व विचार।

२७-२ ३६, वर्धा

पू बापू सेगांव गये। मन पर बहुत विचार रहा। जाते समय रवर टायरवाली बैलगाड़ी में गये और आते समय बाबासाहब की मोटर में आये।

बापू का ब्लडप्रेशर ता २५ को १८८ ११ ता २७ को सुबह ७-३ बजे २१९ १२। सेगांव से वापस आने पर ११ बजे १८८ ११ दोपहर को २-४५ बजे १८८ ११ रहा। सरदार ऐक्सप्रेस से आये। बड़ौदा-प्रकरण के बारे में ठीक बातें हुई। सरदार से बापू व बड़ौदा के प्रोग्राम के बारे में चर्चा।

२८-२ ३६, वर्धा-सावली

बापू व कमला से मिले। सुशीला दिल्ली गई, हम लोग सावली रवाना हुए। रात को १०-१ बजे के करीब बापू व राजेन्द्रबाबू वगैरा आये।

२९ २-३६ वर्धा-सावली

बापू, सरदार, राजेन्द्रबाबू से मिलना व बातचीत। बापू ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। अपने विचार कहे। प्रदर्शनी में आसपास का सामान ही रहना चाहिए था। दूध व खाद पर प्रवचन। कृष्णदास (गांधी) के विवाह का तार भजा बापू ने लिखवाया।

गांधी-सेवा-संघ की कार्यकारिणी की सभा। तीन-बजाई १२॥ से १ तक। साधारण सभा परिचय रिपोर्ट आदि।

१ ३-३६, सावली

बापू का कन्या-गुरुकुल बड़ौदा न जाने का सरदार का ता ९ को वहां पहुंचने का व बापू का ता ८ को दिल्ली पहुंचने का निश्चय। सभा का कार्य। सदस्यों का परिचय। बापू के साथ ४ से ५ तक प्रश्नोत्तर।

३-१-३६, सावली

गांधी-सेवा-संघ की कार्यकारिणी का कार्य सुबह ७-१ से ११ तक। कान्फ्रेंस में प्रश्नोत्तर। बापू ४ से ५ तक रहे। प्रचार-कार्य का खुलासा करना पड़ा। जो थोड़ी गलतफहमी थी वह दूर हुई।

४-१-३६, सावली

सुबह गांधी-सेवा-संघ की कान्फ्रेंस हुई। विनोबा का स्पष्टीकरण सुन्दर व महत्त्वपूर्ण हुआ। बापू ने कान्फ्रेंस की कार्य-पद्धति पर टीका की। उस समय बहुत ज्यादा क्षोभ आया। इतने क्षोभ का इन वर्षों में अनुभव नहीं हुआ था। बापू से भी ज्यादा पू. वल्लभभाई पर क्षोभ आया। मन में खूब दुःख व विचार आता रहा। विनोबा व किशोरलालभाई से बातचीत। आखीर में बापू और वल्लभभाई से खुलासा होने पर थोड़ी शान्ति हुई।

५-१-३६, सावली

कृष्णदास (गांधी) का विवाह मनोज्ञा के साथ हुआ।

६-१-३६, सावली-वांधा-वर्धा

आज गांधी-सेवा-संघ की सभा में पू. विनोबा का तकली व चरखे के बारे में सुन्दर व प्रभावशाली भाषण हुआ। राजेन्द्रबाबू, बापूजी का, किशोरलालभाई व मेरा भाषण भी ठीक हुआ।

१-१२ को बापू व राजेन्द्रबाबू के साथ मोटर से वांधा रवाना। २-१ के करीब वांधा पहुंचे। वहां से पैसेंजर से वर्धा। रास्ते में बापू व कुमारप्पा से बातें। गर्मी बहुत थी। भोजन रास्ते में ही हुआ।

वर्धा करीब ८-१ बजे। बापू को आश्रम में छोड़ा। आज करीब सत्तर मेहमान बंगले पर ठहरे।

७-१-३६, वर्धा

सुबह जल्दी बापू के पास गया। उन्हें नपनवाड़ी ले गए। बाद ट्रक से बापूजी व बा दिल्ली गये।

१७-१-३६, दिल्ली

हरिजन-सेवक-संघ की कॉलोनी में ठहरे। स्नान व नाश्ते के बाद बापू से मिले। जवाहरलालजी आये। बापू से सुबह ९ से १॥ व शाम को ४ से ५॥ मिले। उनके साथ थोड़ी चर्चा हुई।

१८-३-३६, दिल्ली

हिन्दी-प्रचार के लिए इन्दौर से जो पंद्रह हजार की सहायता मिली बापू से उस बारे में तथा अन्य बातें ।

१९-३-३६, दिल्ली

सुबह पू. बापू से थोड़ी बातें। डॉ. अन्सारी ने बापू को देखा। स्वास्थ्य ठीक बताया। ब्लड-प्रेशर १५५ ९२।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा को पंद्रह हजार भेजने का हक बापू ने निश्चय किया। बापू से उनके स्टेटमेंट, जवाहरलालजी के प्रोग्राम तथा देशी सम्बन्धी बातें।

जवाहरलालजी से सुबह व शाम बातचीत हुई। बहुत-सी बातें साफ हुईं। खासकर देशी रियासतों के प्रश्न पर अच्छी चर्चा हुई।

पू. मालवीयजी से मिला।

२२-३-३६, दिल्ली

बापू से बातचीत। बाद में शंकरलाल बैंकर को लखनऊ टेलीफोन किया।

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११ शाम को १॥ से ५ तक हुई। तेरह मेंबर हाजिर थे। भूलाभाई व पंतजी की दलीलें ठीक थीं।

सरदार बीमार पड़ गए। बापू का ब्लड-प्रेशर डॉ. अन्सारी ने लिया १५४ १ २ हुआ। नाड़ी ७२।

२३-३-३६, दिल्ली

बापू से मिला।

वर्किंग कमेटी सुबह ७॥ से १ तक और दोपहर १२ से ५ तक।

पू. मालवीयजी से मिला। जवाहरलालजी, राजेन्द्रबाबू, जयरामदास और कृपलानी से करीब एक घंटा बातें।

२४-३-३६, दिल्ली

बापू के साथ टी. बी. अस्पताल डॉ. कृष्णा के साथ देखी। जेल की अस्पताल भी देखी। बापू से बातें। बापू के रामायण-वर्ग में।

बापू, राजेन्द्रबाबू, जवाहरलालजी के साथ ९ से ११ तक विचार विनिमय।

सरदार वल्लभभाई का स्वास्थ्य खराब हो गया। उन्हें बुखार आ गया। डॉ अन्सारी ने देखा। उनकी राय से उन्हें बिड़ला-हाउस ले गए।

वर्किंग कमेटी दोपहर १ से ६ तक और रात को ९ से १ ॥ तक होती रही

२५ १-३६, दिल्ली

सुबह बापू से बातचीत।

सरदार वल्लभभाई का स्वास्थ्य ठीक नहीं है उनके पास देर तक बैठा।

पू मालवीयजी महाराज से देर तक बातचीत। हिन्दी साहित्य सम्मेलन कांग्रेस व पद-ग्रहण आपस का समझौता आदि की चर्चा। कृपलानी आदि के बारे में उन्होंने अपने विचार कहे। उन्हें समझाया और उनका भ्रम दूर किया।

२६ ३ ३६, दिल्ली

सुबह बापू राजेन्द्रबाबू व प्यारेलाल से बातचीत। बापू से ठीक बातें हुईं। प्यारेलाल का चार्ज बापू ने लिया।

सुबह ९ १५ से १ व शाम को बिड़ला-हाउस में ४ से ५ तक बापू के साथ डेरी-संबंधी चर्चा। डेरी की भावी व्यवस्था बापू की इच्छा के अनुसार हुई। एक चिंता कम हुई।

बापू ने डॉ टैगोर को ठीक सहायता करवाई।

२७-१ ३६, लखनऊ

बापू के ठहरने के योग्य स्थान देखा। घूम-फिरकर अंत में मुनिवर्सिटी रोडवाला मकान पसन्द हुआ। वहां व्यवस्था की। शाम को बापू के लिए जो मकान किराये से लिया वहां रहने आया।

२८ १-३६, लखनऊ

सुबह ६ १ बजे लखनऊ से करीब तीस मील दूर के स्टेशन पर बापू को उतारकर मोटर से लाये। ६ मील आना-जाना हुआ। युनिवर्सिटी रोड वाले किराये के बंगले में बापू को ठहराया। व्यवस्था की देखभाल की।

जवाहरलालजी वैसाहर की गाड़ी से आये। उन्हें लेने गया। बापू ५१ के बाद प्रदर्शनी में गये साथ में जवाहरलालजी व राजकुमारी थे। प्रदर्शनी

देखने के बाद बापू का भाषण हुआ। भीड़ बहुत ज्यादा नहीं थी। बापू के पत्र लिखने का कार्य करना पड़ा।

३०-३-३६ लखनऊ

प्रदर्शनी में तीन बजे से ६-४५ तक रहा। वहां की स्थिति समझी। पू. बापू से प्रदर्शनी की व थोड़ी अन्य बातें।

३१-३-३६ लखनऊ

बापू के साथ प्रदर्शनी में गया। ७॥ से ९॥ तक खूब घूमकर ठीक तौर से प्रदर्शनी देखी।

शाम को प्रार्थना के बाद बापू से शंकरलाल का पत्र, उनके विचार तथा मेरा हाल कहा।

१-४-३६ लखनऊ

सुबह घूमते समय बापू से बातचीत। रामायण-पाठ। बाद में मुलाकात। प्रार्थना के बाद गुरुजी ने बापू से काश्मीर के बारे में बातें कीं। बापू से जिम्मेदारी व प्रदर्शनी-संबंधी तथा अन्य निजी बातें कीं। चरखा काता। बाद में प्यारेलाल से देर तक बातचीत।

२-४-३६ लखनऊ

४ बजे सुबह प्रार्थना। बाद में पू. बापू से प्यारेलाल के बारे में बातचीत। बापू के साथ प्रदर्शनी में गया। कैलाश ने स्टालों का वर्णन ठीक समझाया।

३-४-३६ लखनऊ

रात को लखनऊ से बापू के साथ इलाहाबाद के लिए रवाना।

४-४-३६ इलाहाबाद

सुबह करीब ५ बजे प्रयाग पहुंचे। बापू की गाड़ी के साथ जवाहरलालजी, रणजीत (पंडित) नन्हा (विजयालक्ष्मी पंडित) आदि साथ थे। स्टेशन से आनन्द-भवन तक पैदल चलकर आए।

बापू का सामान—बिस्तरा आदि की व्यवस्था की। रामायण-पाठ। बापू की जवाहरलालजी से बातें। शाम को घूमते समय भी बापू से बातें।

५-४-३६ इलाहाबाद

सुबह बापू के साथ घूमे। जवाहरलालजी और मैं दोनों थे। बापूजी

बातें होती रहीं। बापू व जवाहरलाल के साथ एक घंटा कमला-मेमोरियल संबंधी बातें। कठिनाई आदि पर चर्चा।

शाम को ५ से ६॥ तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संग्रहालय का उद्घाटन बापूजी ने किया उपस्थिति ठीक थी। बापू का भाषण अच्छा हुआ। प्रार्थना के बाद बापू थोड़ा घूमे।

६-४-३६, इलाहाबाद

बापू मौन होते हुए भी सुबह अकेले घूमने निकल गये। कुछ देर तक खूब विचार व चिन्ता होती रही। थोड़ी दौड़-धूप करनी पड़ी। मोटर लेकर खोजने निकले पर रास्ते में ही मिल गए। सरोजनी नायडू साथ थीं।

वर्किंग कमेटी ११ से रात के ९ तक होती रही। काफी चर्चा और विचार-विनिमय हुआ।

८-४-३६, लखनऊ

सुबह करीब ५ बजे रास्ते में ही बापू के साथ उतर गए। १२ मील के पत्थर के पास एक घंटा पैदल घूमे। बाद में मोटर से लखनऊ पहुंचे।

९-४-३६, लखनऊ

बापू के साथ पैदल एक घंटा घूमे।

सुबह वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। शाम को ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई। बाद में सब्जेक्ट कमेटी रात में देर तक चली।

१२-४-३६, लखनऊ

सुबह जल्दी बापू के साथ घूमा। राजेन्द्रबाबू भी शामिल हो गए। कांग्रेस की बातें। बाद में सरदार व राजेन्द्रबाबू बापू से मिलने आये। स्थिति समझाई। वर्किंग कमेटी ८ से ११ १ तक। शाम को ५ १ से कांग्रेस का खुला अधिवेशन शुरू हुआ। रात में १॥ बजे तक चला। २ बजे सोये।

१४-४-३६, लखनऊ

बापू घूमकर आये। उसके बाद उनके साथ बातें।

बापू से प्रभावती के बारे में परस्पर बातें हुई। दुःख के साथ मेरा कष्ट भी मालूम हुआ।

जवाहरलालजी बापू से मिलने आये।

कांग्रेस का खुला अधिवेशन आज समाप्त हुआ। रात में १॥ बजे तक उसमें रहना पड़ा।

१५-४-३६, लखनऊ

सुबह बापू से थोड़ी बातें।

जवाहरलालजी राजेन्द्रबाबू मौलाना सरदार ये चारों बापू के पास देर तक बैठे—विचार-विनिमय। स्थिति नाजुक विचारणीय व चिन्ताजनक। आज ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक व बापू के व्याख्यान में जाना नहीं हो सका। शाम को भी जवाहरलालजी व मौलाना बापू से मिलने आये। समझौता होता हुआ मालूम हुआ। जवाहरलालजी से देर तक बातचीत।

१६-४-३६, लखनऊ

बापू के साथ घूमने गया। राजेन्द्रबाबू भी साथ हो गए। जवाहरलालजी सरदार तथा मेरी अपनी स्थिति कही। मेरा नाम आखिर रखा गया। उससे मन में थोड़ी अशान्ति हुई।

जवाहरलालजी आये। साथ में मौलाना आजाद भी थे। बापू से देर तक बातचीत। मुझे थोड़ा जोश आ गया। जो कहना था सो कहा।

लखनऊ से ९॥ बजे रवाना। थर्ड क्लास में बापू के डिब्बे में आराम रहा। बाद में उनसे थोड़ी बातचीत।

२१-४-३६, वर्धा

बापू से नागपुर में होनेवाले हिन्दी साहित्य सम्मेलन की व्यवस्था पर विचार-विनिमय व सेगाव के बारे में चर्चा। मैंने अपने विचार बताये। सरदार ने भी अपने कहे। बापू का निश्चय।

२२-४-३६, वर्धा

बापू से मिलकर राजेन्द्रबाबू नागपुर गये। कन्हैयालाल मुंशी आये। शाम को बापू व सरदार को लेकर नागपुर गये। रास्ते में बापू से बातचीत होती रही।

२४-४-३६, नागपुर

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्य हुआ। काकासाहब व बापूजी के भाषण हुए। हाल में आवाज गूंजने के कारण भाषण बराबर सुनाई नहीं

किये। रात में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का खुला अधिवेशन हुआ। बापूजी आये थे।

२५-४-३६, नागपुर

सुबह जल्दी उठा।

बापू से विचार-विनिमय। हिन्दी साहित्य सम्मेलन व भारतीय सम्मेलन का कार्य हुआ। बाद में सम्मेलन की कार्यकारिणी की बैठक।

२६-४-३६, नागपुर

टिकेकर के यहां बापूजी के पास रहा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नियमावली पर विचार होता रहा।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की सब्जेक्ट कमेटी २ से ६.४५ तक हुई। प्रचार-विभाग का निर्णय हुआ। बापू वर्धा गये।

२८-४-३६, वर्धा

वर्किंग कमेटी सुबह ७॥ से १ ॥ व दोपहर को २ से ६॥ तक। शाम को वर्किंग कमेटी में पूज्य बापूजी आये। देर तक विचार-विनिमय।

२९-४-३६, वर्धा

जल्दी उठा। वर्किंग कमेटी का कार्य सुबह ७॥ से ११॥ तक हुआ।

गांधी-सेवा-संघ की बैठक १ से ४॥ तक हुई।

जवाहरलालजी ने बापू से ४ से ५॥ तक बातें की।

३०-४-३६, वर्धा

बापू आज से सेगांव रहने गये। वहां जाकर उनकी व्यवस्था देख आया।

१-५-३६, वर्धा

डा० अंबेडकर व वालचंद हीराचंद बम्बई से आये। उन्हें मोटर से बापूजी के पास सेगांव ले गया। वहां ७-४५ से ९.३ तक बातचीत हुई। उन्होंने अपने विचार कहे। शाम को भी सेगांव गये। साथ में भोजन। डॉ० अम्बेडकर व वालचन्दभाई से बातचीत।

१-५-३६, वर्धा

मगनवाडी में प्रदर्शनी का उद्घाटन। पू० बापू का व जाजूजी का भाषण हुआ। बापू से थोड़ी देर बातचीत।

४-५ ३६, वर्धा

सुबह ४ बजे मगनवाड़ी में प्रार्थना। बापू का मौन था। उनके साथ पोस्ट आफिस तक आया। वह सेगांव गये।

६-५ ३६, पवनार

खादी-यात्रा का कार्य। विनोबा का सुन्दर व प्रभावशाली प्रवचन। बाद में पू बापू का प्रवचन।

७-५ ३६, वर्धा

ग्रामगांव-निवासी चि पुरुषोत्तम मुनमुनवाला के साथ चि सीता की सगाई हुई। पूरी बातचीत हो जाने पर बापू के सामने निश्चित करके जाहिर की गई।

बापू ने ग्रामोद्योग संघ के सदस्यों के सामने भाषण दिया।

८-५ ३६ वर्धा

दांतवाले डॉ पाठक नागपुर से बापू के दांत के इलाज के लिए आये। बापू आज ग्रांड ट्रंक से बेंगलोर (नन्दी हिल) गये। मगनवाड़ी में आंधी बहुत आई।

१४ ६ ३६, वर्धा

बापू आज ग्रांड ट्रंक से मद्रास से आये।

किशोरलालभाई व बापूजी से कमल की सगाई के बारे में विचार विनिमय।

मगनवाड़ी में प्रार्थना। बापू से थोड़ी चर्चा।

१६ ६ ३६, वर्धा

सुबह बापू बारिश में भी सेगांव गये। साथ में चि कमलनयन बालूंजकर व चिरंजीलाल भी गये।

२०-६-३६, वर्धा

सुबह ६ बजे पैदल सेगांव गया। मिस लीस्टर भी साथ थी। वापस आते समय जोर का पानी बरसने लगा। खूब भीगे। ११॥ बजे घर पहुंचे।

२७-६ ३६, वर्धा

बापू आज सेगांव से मगनवाड़ी रहने गये। मिलने गया। बापू के घूमने

समय भावी प्रोग्राम की चर्चा। मेरे अंदर निरुत्साह का कारण बतलाया। मगनवाड़ी में प्रार्थना।

२९-६-३९, वर्धा

दोपहर को वर्किंग कमेटी का काम २॥ से ६ बजे तक हुआ। पू. बापूजी से थोड़ी देर मिलकर बातें हुईं।

३०-६-३९, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८। से १२ बजे तक हुई। दुःख व चिन्ताजनक स्थिति। मित्रों सहित बापू से मिला। शाम को वर्किंग कमेटी नहीं हो सकी। रात में गैस्ट-हाउस में मित्रों के साथ देर तक बातचीत। अंत में रास्ता निकला। स्थिति सुधरी।

१-७-३९, वर्धा

जवाहरलालजी को घुमाने ले गया। पवनार, महिला-आश्रम वगैरा दिखाया। वापस लौटते समय उन्होंने अपने मन का गुबार निकाला। उनको समझाया। वर्किंग कमेटी में साफ-साफ बातचीत थोड़ी गरमा-गरमी हुई। बाद में वातावरण संतोषकारक व समझौते का हुआ। सुबह से ११। व दोपहर को १। से ७। तक वर्किंग कमेटी का काम होता रहा। बाद में पार्लमेंटरी कमेटी का काम हुआ।

३-७-३९, वर्धा

सरदार के साथ बापू के पास गया। गांधी-सेवा-संघ तथा अन्य बातें। गांधी-सेवा-संघ की बैठक ९॥ से १।।। तक हुई। रात में ८ से ९ तक।

४-७-३९, वर्धा

भारतीय साहित्य सम्मेलन व हिन्दी-प्रचार के कार्य की सभा १ से ५ तक बापू के पास हुई। पहले व बाद में बंगले पर काम हुआ।

५-७-३९, वर्धा

श्री लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार व रामकुमार भुवालका से चि. कमल व सावित्री की सगाई के बारे में खूब खुलासेवार विचार-विनिमय। उन्होंने कहा कि चि. सावित्री ने स्वयं व सब घरवालों ने भी कमल के साथ सम्बन्ध न करने का पूर्ण निश्चय कर लिया है। उनका आग्रह था कि

चार वर्ष तक विवाह न करने की शर्त भारी है, दिसम्बर १९३७ तक विवाह हो जाना चाहिए।

पू. बापू सरदार व राजेन्द्रबाबू से सब स्थिति कही। बापू ने कहा कि सावित्री व उसकी माता को मेरे पास भेज दो। मैं उनसे बात कर सगाई पक्की कर दूंगा।

हिन्दी-प्रचार-कार्य की बैठक में। बापू के साथ महिला-आश्रम गया।

१४-७-३६, वर्धा

सुबह जल्दी तैयार होकर सेगांव पैदल। चि. माता साथ में। मर्यादा कर्तव्य आदि पर उससे चर्चा।

पू. बापूजी से महिला-मंडल वगैरा के बारे में बातचीत। पू. बा व बापू के लिए अलग झोंपड़ी की चर्चा।

मीराबहन की झोंपड़ी देखी। वहां आराम किया। बाद में फलाहार। सुन्दर दृश्य देखा।

२१-७-३६, वर्धा

सुबह सेगांव पैदल। राजकुमारी बहन, महादेवभाई, श्रीमन् मोहन भी पैदल साथ में थे। जानकी गाड़ी में थी।

चि. कमल की सगाई चि. सावित्री पोद्दार से होने के संबंध के बापूजी के नाम के लक्ष्मणप्रसादजी व सावित्री के पत्र उन्हें दिये। बापू ने सम्बन्ध पक्का करके कलकत्ता व चि. कमल को तार दिया। मैंने भी स्वीकृति-पत्र लिख भेजे।

२८-७-३६, वर्धा

सेगांव बापूजी से मिलकर आये। गाड़ी में रामकृष्ण डालमिया साथ थे। उनकी पत्नी भी थी। उन्होंने बिहार के चुनाव में जो मदद करना कबूल किया था उस बारे में तथा ग्रामो-सेवा-संघ की सहायता के संबंध में बापूजी से खुलासा बातचीत।

४-८-३६, वर्धा

धर्मानन्द कौशाम्बी बम्बई से बापू से मिलने आये।

साढ़े ग्यारह की गाड़ी से खान अब्दुल गफ्फार खां अलमोड़ा-जेल

से छूटकर मथुरा होते हुए आये। उन्हें लेने स्टेशन गया। खानसाहब के साथ सेगांव गया। वहां पू. बापू से मिले। बातचीत।

तुकडोजी बुवा के भजन। राजकुमारी अमृतकौर व मीराबहन ने राखी बांधी।

७-८-३६, वर्धा

खानसाहब का बहुत आग्रह होने के कारण उनको लेकर दोपहर में सेगांव जाना पड़ा। पू. बापू से विनोद। पैदल घूमते हुए मीराबहन के यहां गये। तुकडोजी बुवा से थोड़ा विनोद। मीराबहन का स्वास्थ्य ठीक था। बापू से सलाह करके वर्धा-आश्रम से किसीको भेजने का निश्चय करना पड़ा।

९-८-३६, वर्धा-पवनार

अब्दुल गफ्फार खां को देखने डॉ. साहनी आये। खानसाहब साथ सेगांव रहने गये।

१२-८-३६, वर्धा

वरोरा होकर पैदल सेगांव गया। मीराबहन की झोंपड़ी में आध घंटा ठहरकर सेगांव पहुंचा। भोजन वर्धा से तैयार होकर गया था। बापू के साथ बैठकर सबीने खाया। खानसाहब व तुकडोजी से बातचीत। आराम। तुकडोजी के भजन २॥ बजे शुरू हुए। तीन बजे तक वहां रहे।

१६-८-३६, वर्धा

श्री राजाजी मद्रास से आये। राजेन्द्रबाबू, राजाजी, महादेवभाई, चन्द्रशेखर के साथ सेगांव गया। रास्ते में मोटर बिगड़ गई। दो मील पैदल चले। बापू के साथ भोजन किया। अढ़ाई बजे वापस आये।

शाम को पांच ट्रेन से जवाहरलालजी आये। स्टेशन पर राजाजी और राजेन्द्रबाबू ने बातें कीं। भोजन के बाद जवाहरलालजी, राजाजी, राजेन्द्र बाबू के साथ देर तक बातचीत। राजाजी के रिटायर होने-संबंधी व अन्य बातें भी हुईं।

१७-८-३६, वर्धा

जवाहरलालजी को मारवाड़ी विद्यालय, हिन्दी शाला व महिला आश्रम दिखाया। वहां वह थोड़ा बोले भी। बाद में सेगांव गये।

राजेन्द्रबाबू व राजाजी से बातें। उन्हींके साथ भोजन व आराम। दोनों मोटर से सेगांव गये।

राजाजी से देर तक बातचीत—कांग्रेस मानसिक स्थिति आदि के बारे में।

२६-८ ३६, वर्धा

सरदार व खानसाहब सेगांव गये। सेगांव जाते समय मथुराबाबू व आश्रम से पद्मावती साथ हुई। पू बापू व मोती के बारे में विशेष बातें। मोती से भी थोड़ी बातचीत।

२७-८ ३६, वर्धा

बापू सेगांव से आये। उनके साथ सरदार व मुन्नुभा। बापू के सभापतित्व में चरखा-संघ की महत्त्व की बैठक हुई।

२८-८-३६, वर्धा

चरखा-संघ की बैठक का कार्य ७ से १ तक पू बापू की उपस्थिति में हुआ। काम पूरा हुआ।

गांधी-सेवा-संघ बैठक का कार्य २ से ४ तक व रात में ७॥ से १ तक हुआ। तीन से पांच तक बापू हाजिर थे। कौंसिल-प्रवेश इत्यादि पर विचार-विनिमय हुआ।

३१-८ ३६, वर्धा

बापू को १ ५ डिग्री बुखार। चिंता।

१-९ ३६, वर्धा

बापू के स्वास्थ्य की चिन्ता। सरदार, सिविल सर्जन डॉ साहनी व डॉ महोदय मोटर से देखने गये। मोटर रास्ते से नहीं जा सकी। वे लोग पैदल गये। मक्खियां मेरी। सरदार व महादेवभाई के प्रति क्रोध आया। वे बापू को हैरान करते हैं ऐसी मेरी समझ हुई। पर कोई उपाय नहीं। आज बापू को ज्वर नहीं हुआ। मगनवाडी महादेवभाई के पास पता सरदार साथ में।

१-९ ३६, वर्धा

सुबह सेगांव बापू को देखने सरदार वगैरा गये। तीन गाड़ी गई-आई। एक बग्घ भी गये। पेरीबहन व नरगिस सेगांव गईं।

खानसाहब सेगांव से आये। बापू के स्वास्थ्य के बारे में उन्होंने बताया। उन्हींके साथ डाक्टर की रिपोर्ट भेजी। मीराबहन भी बीमार। अस्पताल में दाखिल हुई।

३-९ ३६, वर्धा

चि० राधाकृष्ण बापू को लाने सेगांव गया। डॉ० महोदय महादेव-भाई, कनु सेगांव से आये। आज रात-भर विचार करते रहे। सिविल सर्जन से बातें। अस्पताल में बापू के लिए कमरा ठीक किया। मीराबहन से बातें। बापू अस्पताल में १२॥ बजे भरती हुए। वहां जाकर व्यवस्था देखी।

४-९ ३६, वर्धा

बापू को अस्पताल में देखने गया। उन्हें पूरा आराम मिले इस बारे में समझ हो गया। आवश्यक व्यवस्था आदि की। वहां भी संवाला व डी० एस० पी० भी आये थे।

५-९ ३६, वर्धा

सुबह अस्पताल में बापू से बातें। उन्होंने अपने सपने की थोड़ी बातें कहीं। मनोरंजक थीं। पर उनको ज्यादा बोलने से मना किया।

६-९ ३६, वर्धा

पू० बापू ने हरेक को पच्चीस रु० मासिक की सहायता उनके मार्फत फंड में से १ सितंबर से भेजने को कहा। बाद में सेगांव से मलेरिया दूर करने के बारे में और टेकड़ी पर रहने का मकान बनाने की योजना के बारे में बातें कीं। बापू को उनकी वर्तमान स्थिति में अधिक बातचीत न करने को कहा।

७-९ ३६, वर्धा

सुबह घूमते हुए महिला-आश्रम व अस्पताल बापू के पास गये। बरसात की झड़ी लगी थी।

सेगांव के गरीब किसानों व मजदूरों को कर्ज में अनाज देने की योजना चिरंजीलाल ने रखी। वह मंजूर की।

१२-९ ३६, वर्धा

जल्दी उठे। बापू के साथ घूमे। आज बापू अस्पताल से वापस सेगांव गये।

१६-९ ३६, वर्धा

सेगांव गया। कुर्मीबहेन व जयप्रकाश भी आये। बापू से जयप्रकाश की बातें हो गई। वहीं पर सभीने भोजन किया।

बापू से बातें। बालासाहब के लड़के वसी के विषय में उन्होंने अपनी राय कही। बालासाहब के दौरे के बारे में फैसला हुआ कि अभी उसे स्थगित रखें। सरदार का व मेरा पत्र बापू को दिखलाया। उसपर विचार। बापू ने अपने विचार कहे। मेरा राजस्थान का दौरा स्वास्थ्य टेकड़ी पर झोंपड़ी आदि के बारे में चर्चा।

जे. जे. वकील का बंबई से टेलीफोन आया। बापूको ता. १८ सितंबर को १ बजे कष्ट है ऐसा भविष्य बताया। चिंता।

१८-८ ३६, वर्धा

बापू को करीब ९.४५ बजे उनके संबंध की भविष्यवाणी की बात अकेले में बताई। विनोद व हँसी। उन्होंने अपने विचार कहे कि जून १९३७ तक में निकाल सका तो फिर पांच-सात वर्ष निकल जाना स्वाभाविक है। बापू से भोजन के बाद वसी के संबंध में तथा अन्य बातें।

२०-९-३६, वर्धा-सेगांव

सुबह सरदार व घनश्यामदास बिड़ला सेगांव गये और बापू से मिलकर आये। दोपहर को घनश्यामदास व सरदार के साथ सेगांव बापू के पास जाकर आया। सरदार व घनश्यामदास ने खूब आग्रह किया। मुझे व्यापार आदि करना चाहिए। बापू ने भी मदद करने को कहा। मन में विचार आते रहे। सरदार, घनश्यामदास से बातें हुने के बाद राजेन्द्रबाबू के साथ एक बाजी शतरंज खली।

२४-९ ३६ वर्धा

आज वर्षा खूब ज्यादा आई। बालासाहब व कान्ती सेगांव से आये। राजेन्द्रबाबू को पहुंचाकर आये। शाम को सेगांव गया। बापू से साधारण बातचीत।

२५ १०-३६, बनारस

बापू ने 'भारत-माता मन्दिर' का उद्घाटन किया।
सुबह ४ बजे प्रार्थना में बापूजी के साथ।

भारतमाता के मन्दिर में दो बजे से पांच बजे तक रहे। भीड़ अच्छी थी। प्रबन्ध साधारण था। समारंभ ठीक हुआ। वहींपर कई लोग मिल गए।

सेवा-उपवन में बापू तथा अन्य मित्रों से बातचीत।

१०-१०-३६, अहमदाबाद

विट्ठल कन्या-आश्रम में मगनभाई हिन्दू-छात्रालय की इमारत का मेरे हाथ से उद्घाटन हुआ। पू. बापूजी, बालासाहब, सरदार, बा वगैरा थे। थोड़े में मुझे जो कहना था सो कहा। बापूजी मोटर से अहमदाबाद गये खानसाहब भी।

९-११-३६, वर्धा

श्री एण्ड्रूज व कालिदास नाग आज आये। दोनों सेगांव जाकर आये।

१५-११-३६, वर्धा

जवाहरलालजी शाम को मेल से आये। स्नान-भोजन के बाद सेगांव। जवाहरलालजी महादेवभाई के साथ बापू से रात को मिलकर आये।

१७-११-३६, वर्धा

सेगांव दो बार जाना हुआ। सरदार, राजेन्द्रबाबू व जवाहरलालजी साथ थे। खानसाहब व बापू वहां थे ही। जवाहरलालजी से साफ-साफ बातें हुईं।

२५-११-३६, वर्धा

राजेन्द्रबाबू से जवाहरलालजी के स्टेटमेंट के बारे में तथा सरदार व बम्बई के मित्रों का डर आदि के बारे में बातें। मथुरादास व बापू से भी बातें। ११ बजे राजेन्द्रबाबू, जीवनलाल, मरियम और विजया के साथ सेगांव बापू से मिलने गया। बापू व जवाहरलालजी का स्टेटमेंट तथा बापू के विचार जाने। हम लोगों के स्टेटमेंट (मसविदा) पर विचार।

२७-११-३६, वर्धा

मगनवाड़ी के ट्रस्ट व दान-पत्र आज रजिस्टर्ड किये। श्री वैकुंठ मेहता साथ थे। वहां देर लगी।

२-१२-३६, वर्धा-नागपुर

भोजन-बाद रजिस्ट्रार-कोर्ट गये। गांधी-सेवा-संघ का मार्टगेज रद्द करने पर ही अहमदाबाद का डेपुटेशन मेल से आया। श्री कस्तूरभाई लालभाई,

मारामचदास व शंकरलाल गुलजारीलाल बाबूभाई वगैरा आये। बापू ने भी बाबा के कागजात पर कोर्ट में जाकर सही की। मोटर ले जाकर बापू को चौकी से कोर्ट तक लाये। दिल्ली-केरी का खुलासा।

५-१२-३६, वर्धा

श्री कस्तूरभाई स्टेशन पर मिले। बातचीत की पर कोई परिणाम नहीं आया। श्री मुंशी बंबई से आये व बापू से सेगांव मिलकर आये। ट्रस्ट, मीराबहन मोटर-ऐसोसीएट आदि के बारे में देर तक बातचीत।

अगाथा हैरिसन ग्राउ ट्रंक से आई। सी एफ ऐण्ड्रूज रात को ग्राउ ट्रंक से आये।

६-१२-३६, वर्धा

सेगांव। बापू से बातें—बम्बई हिन्दी-प्रचार, इन्दौर के रुपये हिन्दी-प्रचार-कार्य व स्थान जयदयाल का पत्र अंडे जापान-यात्रा बापू को जाना पसन्द खानसाहब आदि।

बापू ता २ को सुबह फैजपुर पहुँचेंगे।

२३-१२-३६, फैजपुर

बापू से बातें मेरा कांग्रेस का खजांची न रहने के बारे में। जवाहरलालजी को मैंने वर्किंग कमेटी में अपने न रहने का कारण समझा-कर कहा। एम एन राय व बापू की बातचीत समाधानकारक हुई। सुख मिला।

बापू से मृदुलादेवी व मदन बड़्या के बारे में बातें।

वर्किंग कमेटी १ से ५॥ तक। जवाहरलालजी को मेरे वर्किंग कमेटी में न रहने का कारण समझाकर बताया।

२४-१२-३६, फैजपुर

एम एन राय की बापू से बंगाल-रेलवे के संबंध में बातें। बापू ने अपने विचार कहे। आज की चर्चा से एम एन राय के विचारों में ज्यादा गहराई नहीं मालूम हुई।

वर्किंग कमेटी की बैठक ८ से ११ व २ से ६ तक हुई।

२५-१२-३६, फैजपुर

खादी-प्रदर्शनी का उद्घाटन। बापू का भाषण। बापू से गौ-सेवा-संघ-

संबंधी बातें। कांग्रेस कमेटी की बैठक ९ से ११ । सब्जेक्ट कमेटी २ से ६ तक हुई।

२५-१२-३६, फैजपुर

बापूजी से व राजकुमारीजी से बातें।

वर्किंग कमेटी की बैठक ८ से ११ तक तथा सब्जेक्ट कमेटी ३ से ८॥ तक हुई। कोरोनेशन-बहिष्कार के प्रस्ताव पर ४९-७९ मत आये।

२६-१२-३६, फैजपुर

सरदार व राजेन्द्रबाबू जबरदस्ती से कैम्प में ले गए। वर्किंग कमेटी की चर्चा। बिना इच्छा के उसमें भाग लेना पड़ा व जवाहरलालजी सरदार व राजेन्द्रबाबू आदि के आग्रह के कारण एक बार वर्किंग कमेटी में नाम घोषित करने की इजाजत देनी पड़ी।

बापू की पार्टी व जानकीदेवी वर्धा गये। उनकी व्यवस्था देखी।

डायरी के अंश

१९३७

५ १ ३७, वर्धा

डॉ. ज़ाकिर हुसैन व खानसाहब के साथ सेगांव हो आया। बापू का विचार पूना व त्रावनकोर जाने का मालूम हुआ।

६ १ ३७, वर्धा

डाक ट्रंक से वर्धा। बापूजी को मगनवाड़ी पहुंचाया। वह शाम पूना तथा त्रावनकोर की तरफ गये।

१९ १ ३७, पूना-वर्धा

प्रेमाबहन कंटक आई। उससे बातचीत। उन्होंने बापू से जो बातचीत हुई, वह सविस्तर कही। बापू के विचार जाने। प्रेमाबहन ने अपनी स्थिति समझाई। ग्राम-सेवा-कार्य की जानकारी दी।

२१ १ ३७, वर्धा

सेगांव जाते हुए रास्ते में काका कालेलकर के साथ बातचीत। बापू से स्वतंत्रता-दिवस के बारे में बातें। खानसाहब ने पेशावर के मीठे नीबू दिये।

५-२-३७, वर्धा

सेगांव गया। बापूजी से बातें। जवाहरलालजी का पत्र मालवीयजी के संबंध में। विचार-विनिमय। दिल्ली-डेरी के बारे में स्वीकृति। वहीं बालकोबा से मिला। प्रार्थना में शामिल हुआ।

१७-२-३७, वर्धा

सेगांव से मगनवाड़ी तक मोटर में आते हुए बापू से कार्यकर्त्री-योजना के संबंध में बातचीत। बापूजी तथा सम्मेलन के सभापतित्व आदि के विषय में भी चर्चा।

१८-२-३७, वर्धा

सेगांव गया। पू. बापूजी से सम्मेलन-सभापति कांग्रेस-सभापति

बापूजी ग्राम-उद्योग-कार्य मेरी मानसिक स्थिति व कमजोरी आदि के बारे में बातें। फिर मिलकर विस्तार से बातें करना है।

१९ ९-३७, वर्धा

राजेन्द्रबाबू के साथ सेगांव गया। बापू व राजकुमारीजी से बातें।

२१ ९-३७, वर्धा

सुबह जल्दी उठकर प्रार्थना व गीता-पाठ के बाद बापू के पास सेगांव गया। ग्राम-उद्योग-संघ के विद्यार्थियों का प्रवचन सुना। बाद में बापू के साथ घूमते समय मन-स्थिति मन की कमजोरी ब्रह्मचर्य आदि के संबंध में साफ बातें उदाहरण देकर कहीं। बापू ने स्थिति समझी व उपाय भी बतलाया। इस बारे में फिर और बातें होंगी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन और कांग्रेस दोनों के सभापति पद से अलग हट जाने के बारे में बातें हुईं। बापू ने पीछक को जो खत दिया वह समझाया। ठीक से समझ में नहीं आया।

२६-९-३७, वर्धा

जवाहरलालजी बापू से मिलने सेगांव गये।

२७-९-३७, वर्धा

वर्किंग कमेटी सुबह ९ से ११ तक दोपहर १॥ से ५ तक व रात्रि में ८ से १ तक हुई। पू बापूजी सुबह ९ से शाम को ५ तक रहे।

२८ ९-३७, वर्धा

पू बापूजी सुबह ८ १ से शाम के ५ १५ तक वर्किंग कमेटी में रहे। उन्होंने आफिस लेने के बारे में अपनी राय व शर्तें आदि बताईं। काफी विचार-विनिमय हुआ।

१ १ ३७, वर्धा

जवाहरलालजी की गिरफ्तारी के बारे में पूछताछ करने के लिए रायटर का टेलीफोन आया। मन में चिंता हुई। बापूजी मौलाना आजाद जवाहरलाल सरदार व मैं मिलकर करीब शाम को ६ बजे से ८ तक बातचीत करते रहे। विचारों की सफाई व खुलासा हुआ। गांधी-सेवा-संघ की बैठक २ से ४ १५ तक हुई।

२-३-३७, वर्धा

मालवाड़ी टेनरी का समारम्भ। बालुंजकर की रिपोर्ट मननीय थी। गो-रक्षा व हरिजन-सेवा का टेनरी से जो संबंध है उस बारे में भी बापूजी ने समझाया। बापू के साथ सेगांव गया। वहीं भोजन भ्रमण प्रार्थना व रामायण-पाठ में शामिल हुआ।

१४-३-३७, वर्धा

ग्रांड ट्रंक से बापूजी व राजाजी के साथ देहली रवाना। रास्ते में ही सम्मेलन के बारे में विचार-विनिमय। भाषण के बारे में बापूजी व राजाजी से परामर्श। बापू ने १२ १५ बजे मौन लिया।

१६-३-३७ दिल्ली

प्रार्थना गीताई का पाठ। बापू से बातें। जवाहरलाल को बापू का सुझाव कहा। वर्किंग कमेटी ९ से १२ व शाम को २ से ६ तक हुई। आखिर में पदग्रहणवाला मुख्य प्रस्ताव ठीक तौर से मंजूर हुआ।

१७-३-३७, दिल्ली

सावित्री व स्यामनप्रसादजी के साथ हरिजन-कॉलोनी पहुँचे। उन्हें बापू व अन्यों से मिलाया।

प्रार्थना में सुशीला ने भजन गाया—"अन्तर मम विकसित करो अन्तरतर हे"। सुन्दर था।

१८-३-३७ दिल्ली

वर्किंग कमेटी ९ से १२ तक हुई। गंभीर चर्चा। जवाहरलाल की मानसिक स्थिति के कारण समाधान हुआ।

ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक २ से रात के ९॥ बजे तक हुई। पद-ग्रहणवाला मुख्य प्रस्ताव स्वीकार हुआ। श्री जयप्रकाश के संशोधन को जिसके पक्ष में पू. मालवीयजी टंडनजी व विजयालक्ष्मी पंडित थे ७८ वोट मिले। मूल प्रस्ताव के पक्ष में १२७ व विपक्ष में ७० आये। ५७ के बहुमत से मुख्य प्रस्ताव पास हुआ। प्रस्ताव के पक्ष में सरदार का भाषण बहुत सुन्दर हुआ। भाषा की दृष्टि से थोड़े सुधार की आवश्यकता थी।

१९-३-३७, दिल्ली

जलियाँवाला बाग-स्मारक की बैठक हरिजन-कॉलोनी में बापूजी के

सभापतित्व में हुई। दो घंटे से ज्यादा बैठक का काम चला। नया जीवन पैदा करने के बारे में विचार-विनिमय। ट्रस्टी-मण्डल में फँसना पड़ा।

कन्वेंशन में जवाहरलाल का भाषण पौने दो घंटे से ज्यादा हुआ। उसमें जहर तथा क्रोध था। भाषण अच्छा नहीं हुआ। बापू से पौने दो घंटे तक विचार-विनिमय।

२०-३-३७, दिल्ली

वर्किंग कमेटी ११ से १ व रात में ८ से ११॥ बजे तक हुई। पं. जवाहरलाल ने अपना खुलासा पेश किया व अन्तःकरण से भूल स्वीकार की। माफी भी मांगी। उसका मन पर अच्छा असर हुआ। उनके प्रति आदर व भक्ति बढ़ी।

जवाहरलाल से वर्किंग कमेटी के पहले व रात में ११॥ से १२ तक दिल खोलकर बातें हुईं। क्रोध प्रेम में परिवर्तित हुआ। आदर बढ़ा।

२१-३-३७, वर्धा

शाम की गाड़ी से पू. बापूजी सरदार, भूलाभाई आदि आये। बापूजी की अध्यक्षता में चरखा-संघ की बैठक का कार्य हुआ।

२६-३-३७, मद्रास

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्वागत-सभा में।

बापू के साथ अपने भाषण के बारे में थोड़ी चर्चा। अंग्रेजी में थोड़ा सुधार किया।

द. भा. हिन्दी प्रचार सभा का कन्वोकेशन-समारंभ। बापू का भाषण उत्तम हुआ। टंडनजी का भाषण भी मननीय था। थोड़ा लंबा हो गया था।

२७-३-३७, मद्रास

भारतीय-हिन्दी-परिषद में बापूजी व काकासाहब के भाषण हुए।

२८-३-३७, मद्रास

दोपहर को हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्य प्रारंभ हुआ। बापू का राजाजी आदि दक्षिण प्रान्त के मित्रों से खूब विचार-विनिमय। राजाजी ने कांग्रेस-संबंधी प्रस्ताव रखा। टी. प्रकाशम्, सांबमूर्ति, काशेश्वरराव, मान्य हुसेन ने प्रस्ताव पर अपने विचार प्रकट किये। अच्छा वातावरण बना।

मद्रास में हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति जमनालालजी थे।

भारतीय परिषद्। बापूजी ने प्रस्ताव का परिचय दिया। हिन्दी-हिन्दुस्तानी के भेद पर खुलासा किया। बाद में मुझे सभापति के नाते काम करना पड़ा।

१०-३-३७, मद्रास

टंडनजी व पू बापूजी से बातें। वे आज ग्रांड ट्रंक से वर्धा के लिए रवाना।

२-४-३७ वर्धा

बापूजी से सेगाव मिलना गया। जानसाहब को वहाँ छोड़ा और मगनलाल बोस को वहाँ से साथ लाया। मगनलाल बोस को पवनार का स्थान व समाधि की जगह दिखाई। बापू ने समाधि के स्थान के बारे में अपनी इच्छा बताई।

१५ ४ ३७ पूना

मेल से हुबली के लिए वाड में रवाना। गाड़ी में भीड़ थी। पूना में १ ॥ बजे तक बापू के साथ बातें।

१६-४-३७, हुबली

रात में गाड़ी में भीड़ भी थी व रास्ते में जगह-जगह बापूजी का जय जयकार होता रहा। स्टेशन से सवा-डेढ़ मील दूर हुबली गांव के पास कैम्प में पैदल आये। बापू से बातें।

१२ ३ से १ तक चरखा-यज्ञ। बापू भी कातने आये थे।

१। से ३ बजे तक गांधी-सेवा-संघ की कार्यकारिणी की बैठक। ४ बजे से गांधी-सेवा-संघ की कान्फ्रेंस शुरू हुई।

१७-४-३७, हुबली

हिन्दी-प्रचार सभा की बैठक बापूजी के डेरे पर हुई।

हुबली शहर में सवेरे ६ ३ से ९ तक मजदूरी का काम किया। सुख व आनन्द मिला।

१८-४ ३७, हुबली

शाम को गांधी-सेवा-संघ का कार्य। बापू का खुलासा तथा विचार विनिमय। सभापति के नाते किशोरलालभाई की कठिनाई। कौंसिल-प्रवेश आदि की चर्चा। आर्यनायकम् के बारे में बातें।

१९-४-३७, हुदली

किशोरलालभाई के मन में सभापति की हैसियत से गो-सेवा-संघ का काम करने में कठिनाई। विचार-विनिमय।

२०-४-३७ हुदली

गांधी-सेवा-संघ कान्फ्रेंस ७ से ११ तक रही। उसके पहले बापू के पास थोड़ी देर किशोरलालभाई व बापू की बातचीत सुनी। जाजूजी भी वहाँ थे। आखिर में बापू ने किशोरलालभाई को सभापति बने रहने की आज्ञा दी। बापूजी ने स्वयं सभापति का काम किया। बड़ी देर तक समझाते रहे। गो-सेवा का महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुआ।

२२-४-३७, पूना-बम्बई

रेल में बापू से प्रयाग के प्रोग्राम की चर्चा।

२६-४-३७, प्रयाग

सुबह ९ बजे इलाहाबाद पहुँचे। बापू फिर इन्दिरा तथा रणजीत पंडित के साथ आनन्द-भवन गये। जवाहरलालजी अम्मा स्वरूप आदि से मिलना हुआ। वर्किंग कमेटी २ से ५ तक, बाद में प्रार्थना तक। रात में भी ९ तक बैठक होती रही। बापू को कई पत्र दिखाये। बापू ने भी एण्ड्रूज, सर पी. सी. राय, घनश्यामदास बिड़ला तथा दिल्ली-डेरी के बारे के पत्र आदि दिखाये।

२७-४-३७, इलाहाबाद

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११॥ तक, दोपहर में २ से ५ तथा शाम को ५.४५ से ७-१५ और रात में ८ से ९.१५ तक होती रही। कौंसिल सेक्रेटरी मि. बटलर तथा लार्ड लोथियन आदि के वक्तव्यों पर विचार-विनिमय। प्रान्तों के नेताओं के विचार—खासकर राजाजी, पंतजी। बापू के मसविदे पर विचार-विनिमय। जवाहरलालजी व सरदार से आगामी कांग्रेस के बारे में विचार-विनिमय। जवाहरलालजी से रात में देर तक बातें।

२८-४-३७, इलाहाबाद

बापू के साथ घूमने गया। जवाहरलालजी से जो बातें हुईं, वे उन्हें बताईं। अध्यक्ष-पद के लिए सुभाषबाबू की इच्छा बहुत ज्यादा होने के कारण उन्हें ही अध्यक्ष बनाने का विचार ठहरा। वर्किंग कमेटी के पहले

हिन्दी-प्रचार के बारे में बापूजी व टंडनजी से बातचीत, खासकर धमध के बारे में ।

१-५-३७, वर्धा

बापूजी व राजाजी प्रयाग से आये । बापूजी ने मेहताबबाबू, डॉ० काटजू, सुभाषबाबू, कांग्रेस प्रेसिडेण्ट आदि के बारे में बातें कीं ।

९-५-३७, वर्धा

सेगांव में बापू से देर तक बातें । जेटलैंड का भाषण, किशोरलालभाई का पत्र, कांग्रेस के खजांची-पद से मेरा इस्तीफा आदि के बारे में बापू से बातें । बापू ने अपने विचार बताये ।

बापू सेगांव से आये । बंगले पर ही प्रार्थना हुई । भजन व रामायण-पाठ हुआ । बापूजी एक्सप्रेस से तीथल के लिए रवाना हुए ।

११-६-३७, वर्धा

पू० बापूजी श्री कैलनबेक के साथ ७॥ बजे की पैसेंजर से आये । बंगले पर गरम पानी, नीबू, खीरा लेकर पैदल उनके साथ बालकोबा को देखते हुए सेगांव गये ।

१२-६-३७, वर्धा

मीराबेन व महादेवभाई के साथ सेगांव गया । बापू के साथ सेगांव गांव में गया । वहां सभा हुई । उसमें बापू बोले । उसका मराठी-भाषांतर किया गया ।

१६-६-३७, वर्धा

श्री केदार व मदालसा के साथ सेगांव । बापू से बातें । 'सावधान'-केस का हाल कहा । 'म्युचुअल बेनिफिट सोसायटी', मारवाड़ियों का व्यवहार, विधवा-तलाक आदि विषयों पर चर्चा ।

२०-६-३७, वर्धा

डॉ० खरे ने बापूजी से मिलकर जो स्थिति थी, उन्हें साफ-साफ कही । मन में जो था, वह समझाकर कहा ।

२२-६-३७, वर्धा

बापूजी, किशोरलालभाई व गोमतीबहन के साथ सेगांव गया । बापू से वर्धा में छापाखाना खोलने के बारे में बातें । पूना-दिल्ली से माल मांगना ।

मदालसा के संबंध के बारे में बापूजी ने, बापूजी ने व किशोरलालभाई ने भी श्रीमन् को ही सब तरह से ठीक समझा। गांधी-सेवा-संघ की रकम रोकने व ब्याज उपजाने के बारे में भी विचार-विनिमय हुआ।

एसोसियेटेड प्रेसवाले श्री माधवन् वाइसराय का भाषण लेकर आये। पढ़कर सुनाया। लम्बा था व नरम भी था।

६-७-३७, वर्धा

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११॥ बजे व शाम को ३ से ७ तक तथा रात में ८॥ से १० तक हुई। पद-ग्रहण करने न करने के बारे में चर्चा व विचार-विनिमय। बापू के मसविदे पर विचार हुआ। जवाहरलालजी भी दूसरा मसविदा बनावेंगे।

७-७-३७, वर्धा

सुबह हिन्दी-प्रचार सभा की ओर से पू. बापूजी के हाथ से प्रचार विद्यालय खोला गया। बापू, राजेन्द्रबाबू व काकासाहब बोले। श्री पदमपत सिंहानिया व मेरी सहायता की बापू ने घोषणा की।

वर्किंग कमेटी ८ से १२ तथा २ से ५ तक हुई। जवाहरलालजी ने अपनी स्थिति कही। आखिर में बापू व जवाहरलालजी दोनों का मिला हुआ प्रस्ताव मंजूर हुआ। नरीमान व वल्लभभाई-प्रकरण तथा खरे के व्यवहार के बारे में भी उन्हीं के सामने थोड़े में सब स्थिति बताई। पूनमचन्द-प्रकरण तथा धोत्रे आदि के बारे में वर्किंग कमेटी के सामने बात आई। मैं त्यागपत्र क्यों देना चाहता हूं यह भी कहा। देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

९-७-३७, वर्धा

सेगांव गया। हिन्दी-प्रचार सभा का कार्य पू. बापूजी की उपस्थिति में पूरा हुआ। टंडनजी हाजिर थे। टंडनजी रात को प्रयाग गये।

११-७-३७, वर्धा

मदालसा के विवाह की तैयारी—८-१५ बजे दूकान पर (बजाज-चौक) पहुंचे। आठ बजे से विधि शुरू हुई। पू. बापूजी व विनोबाजी की उपस्थिति में विवाह संपन्न हुआ। अच्छा समुदाय उपस्थित था।

२१-७-३७, वर्धा

मौलाना व मैं बैलगाड़ी से सेगांव गये। बरसात खूब जोर की हो रही थी। रास्ते में गाड़ी का चाक निकल गया। पहुंचने में देर हुई। वहां बापू से मौलाना की व मेरी बातचीत। बापू कुछ थके हुए मालूम हुए। बापू से किशोरलालभाई व पंडितजी के पत्रों पर विचार।

वर्धा में मौलाना से अच्छी तरह बातें हुईं।

१-८-३७ बनारस

प्रयाग में जवाहरलालजी मिले। उन्होंने बापू के नाम पत्र व सन्देश दिया। कृपलानी दिल्ली तक साथ रहे। खाना साथ हुआ व अन्य राजनैतिक बातें भी।

४-८-३७ दिल्ली

दिल्ली पहुंचे। हरिजन-कॉलोनी जाकर बापू से बातें। बापू ११॥ से १ बजे तक वाइसराय से मिले। शाम ५.१५ की ग्रांड ट्रंक से बापूजी के साथ थर्ड क्लास में वर्धा रवाना। बापू ने वाइसराय से जो बातें हुईं व उनपर जो असर हुआ वह बताया। सरदार-नरीमन प्रकरण पर भी ठीक चर्चा। मैंने दूसरा पक्ष लेकर जो कहना था सो कहा।

५-८-३७, नागपुर-वर्धा

बापूजी से सुबह व शाम खुलासेवार ठीक बातचीत हुई। विषय—मदालसा उमा की सगाई डॉ. मठरा व उनकी पत्नी के लिए सेगांव में दो छोटे घर बनाना विनोबा सीकर या सेगांव हरिहर शर्मा पारनेरकर, सावित्री व विदेशी वस्त्र-प्रयोग कार्यकर्ताओं का अभाव आश्रम के नियमों का परिणाम मनुष्य की कमजोरी बापू का भावी प्रोग्राम आदि।

शाम को वर्धा पहुंचे। बरसात हो रही थी। बापू बंगले पर थोड़ी देर ठहरे, बाद में सेगांव गये।

७-८-३७ वर्धा

बापूजी व विनोबा से पारनेरकर तथा रामेश्वरदास के बारे में पत्र। बाद में बापू के नाम पत्र लिखकर सेगांव भेजे।

१०-८-३७ वर्धा

नागपुर से शिक्षा-मंत्री श्री रविशंकर शुक्ल बापूजी से मिलने आये। शिक्षण-संबंधी बातचीत

डॉ खरे व पटवर्धन नागपुर से खासतौर से मुझसे मिलने आये। डॉ खरे ने कहा कि मैंने जो पत्र लिखा है, उसे मैं वापस ले लूं। उन्होंने अपना दुःख प्रकट किया। क्षमा आदि की बातें कीं और कहा कि प्रान्त की जिम्मेदारी मुझे ले लेनी चाहिए आदि। बहुत देर तक अपने विचार का उन्होंने खुलासा किया। मैंने भी अपना दुःख व दर्द कहा।

१४-८-३७, वर्धा

वर्किंग कमेटी ९ से ११॥ व शाम को ३॥ से ५॥ तक हुई। बापू भी हाजिर थे।

१७-८-३७, वर्धा

बापू साढ़े सात बजे आये। शिक्षा-योजना के संबंध में डॉ चोइथराम से बातें। खानसाहब से भी बातें।

वर्किंग कमेटी का काम सुबह ८ से ११॥ तक व २ से ५॥ तक हुआ। बापू ५ बजे तक हाजिर थे।

१८-८-३७, वर्धा

बापू आये। उनसे शंकरराव देव की सरदार-नरीमन-प्रकरण के बारे में मेरे सामने बातें हुईं। बाद में बापू ने सरदार से व मुझसे नरीमन-प्रकरण के संबंध में बातें कीं। सरदार को बहुत चोट पहुँची। दुःख हुआ। रात को दो-ढाई घंटे उनके पास देव के साथ बातचीत।

१९-८-३७, वर्धा

गंगाधरराव देशपांडे व स्वामी आनन्द का लिखा पत्र तथा उनको लिखा पत्र दोनों बापूजी को देने के लिए सरदार वल्लभभाई को दिये।

सेगांव में बापू से बातें। सरदार बम्बई गये।

२१-८-३७, वर्धा

डॉ गिल्डर व मुन्नालाल नंदा बम्बई से आये। बापू का ब्लडप्रेशर ज्यादा हो गया २   के करीब। चिन्ता हुई। डाक्टर व बापू से विचार विनिमय। डॉ गिल्डर ने एक छोटा-सा वक्तव्य दिया।

२७-८-३७, वर्धा

बापूजी से हँसी-विनोद की बातें। उन्होंने मंजूर आना स्वीकार कर लिया। पूना व बम्बई जाने का प्रोग्राम बताया।

५-९-३७, वर्धा

पैदल सेगांव गया। बरसात शुरू हो गई। मदालसा, श्रीमन्, काका साहब व नाना आठवले साथ थे। बापू खूब थके हुए मालूम हुए। ब्लडप्रेशर थी १६५/१०५ था। नाड़ी भी ठीक थी फिर भी थकावट खूब थी।

८-९-३७, वर्धा

महादेवभाई ने सेगांव की चिन्ता दूर की। उन्होंने अच्छी रिपोर्ट दी है।

९-९-३७, वर्धा

जवाहरलालजी व इंदिरा के साथ नाश्ता किया। सुबह ७॥ बजे मोटर से सेगांव गये। २-४५ बजे तक वहीं रहे। बापू कमजोर मालूम दिये। वहां का वातावरण ठीक करने के प्रयत्न।

प्यारेलाल का आज सातवां उपवास था। उससे देर तक बातें करके उपवास छुड़वाया। नानावटी को मैनेजर मुकर्रर किया। बापू से व अन्य लोगों से भी बातचीत।

जवाहरलालजी व इन्दु वापस आते समय थोड़ी दूर बैलगाड़ी में आये। घर पर चाय-पार्टी की। कुछ और मित्र भी आये थे। बिहार का फैसला उन्हें दिखाया। दोनों को ठीक नहीं मालूम हुआ। जवाहरलालजी व इन्दु को मगनवाड़ी दिखाते हुए स्टेशन पहुंचे। वहां से वे दोनों मेल से बम्बई गये थर्ड क्लास में।

१५-९-३७, पूना

सर मरुपीवकर मिलने आये। उनका बापूजी से मिलने का प्रोग्राम बनाया।

राधाकृष्ण व सीता का संबंध टूटा। इस संबंध में उन्हें खूब समझाया, हिम्मत व उत्साह दिलाया। उन्हें बापू के पत्र पढ़ाये।

१६-९-३७, वर्धा

वर्धा पहुंचा। महादेवभाई ने स्टेशन पर बापू के स्वास्थ्य की अच्छी खबर सुनाई। शंकरलाल बैंकर बापू के पास सेगांव जाकर आये।

१७-९-३७, वर्धा

चरखा-संघ की बैठक ८ से ११॥ तक व दोपहर में १ से ३ तक। ३ से ५ तक चरखा-संघ व ग्रामोद्योग-संघ दोनों की सम्मिलित सभा। बापू सेगांव

से आये। जिन प्रान्तों में कांग्रेस मंत्रि-मंडल हैं, वहां किस प्रकार रचनात्मक कार्य किया जाय इस बारे में अपने विचार बताये। कठिनाइयाँ भी बतलाईं। वह ९-१५ बजे वापस सेगांव गये।

१९-९-३७, वर्धा

लक्ष्मीदास आसर के साथ बापूजी के पास सेगांव गया। गांधी-सेवा-संघ शिक्षण-सभा व चरखा-संघ के बारे में थोड़ी बातें।

२२-९-३७ वर्धा

मुझे नागपुर प्रांतिक कांग्रेस कमेटी का सभापति सर्वानुमति से चुना गया यह सूचना मिली।

बापू से बातें। मुझे नागपुर प्रान्तिक कांग्रेस कमेटी का सभापति बनाया गया यह बापू को बताया। बापू ने सरकार के साथ संघर्ष की तैयारी रखने को कहा शिक्षण समग्र दृष्टि से हो क्रान्तिकारी लोगों की व्यवस्था हमीदा का प्रश्न—आदि विषयों की चर्चा हुई।

२१-९-३७, वर्धा

सेगांव गया। बापू से देर तक विचार-विनिमय। शंकरलाल बैंकर साथ में थे।

२-१०-३७, वर्धा

तारीख के हिसाब से आज बापू-जन्मदिन। बापूजी को ६७ वर्ष पूरे हुए और ६८ वां चालू हुआ। सेगांव गया। बापूजी लीलावती आसर को लेकर सेगांव से अस्पताल आये। लीलावती का टॉन्सिल का आपरेशन हुआ। बापूजी साढ़े चार बजे तक अस्पताल में रहे। बाद में उन्हें सेगांव छोड़कर आया। आते व जाते समय मोटर में बातचीत। नवभारत विद्यालय में बापू के जन्मदिन-निमित्त विनोबा का भाषण हुआ।

१९-१०-३७ वर्धा

सेगांव गया। बापू थके हुए लगे। उनका मौन था। उनके भोजन आदि के संबंध में उनसे बातें कीं।

२४-१०-३७, वर्धा

मार्गस-स्कूल की प्रदर्शनी देखी। बापूजी भी आये थे। शिक्षण-समिति की पहली बैठक बापूजी की उपस्थिति में हुई। बापूजी ने कार्य-पद्धति समझाई।

२५-१०-३७, वर्धा

नागपुर-मेल से वर्धा से कलकत्ता रवाना हुए। बापूजी तथा सरदार वगैरा भी इसी गाड़ी से चले। रास्ते में खूब भीड़ रही स्टेशनों पर भी। आराम कम मिला। सिर में चोट आ गई। बिलासपुर में दर्वाजा नहीं खोलने देने के कारण क्रोध भी आया।

२६-१०-३७ कलकत्ता

खड़गपुर में उठे निवृत्त हुए। प्रार्थना आदि। उमा की सगाई के बारे में बापू से चर्चा। वल्लभभाई के साथ का मतभेद सुशीला प्यारेलाल बापू के स्वास्थ्य व आराम तथा भावी प्रोग्राम की चर्चा। बापूजी को स्टेशन से सुभाष व शरद बोस अपने घर ले गए।

वर्किंग कमेटी ११ बजे शरद बोस के घर पर हुई।

२७-१०-३७ कलकत्ता

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११॥ और २ से ७-॥ । श्री खेर व जवाहरलाल के विवाद से शुरू हुआ। खेर की थोड़ी गलती थी इस कारण जवाहरलाल को रोक नहीं सका परन्तु जवाहरलाल का व्यवहार भी ठीक नहीं था।

२८-१०-३७, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११॥ और २ से ५ तक हुई। आज मौलाना आजाद व जवाहरलाल पर क्रोध आया। जो कहना था सो साफ तौर से कहा। जवाहरलाल का व्यवहार मिनिस्टरों के साथ असभ्यता का था व उनकी हिदायतें वर्किंग कमेटी के बहुमत की नहीं थीं।

३१-१०-३७, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी में ५ से ८ तक। रात में बापू से कहकर वर्किंग कमेटी से अपने त्यागपत्र का मसविदा बनाया। मित्रों को दिखाया। ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी में भी एक घंटा गया—२ से ३ तक।

१-११-३७ कलकत्ता

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११॥ और १२-॥ से ५ बजे तक हुई। गरमागरम चर्चा, विचार-विनिमय। मैंने वर्किंग कमेटी में नहीं रहने का

निश्चय रखा। नागपुर-मेल से वर्धा रवाना। बापू का ब्लडप्रेशर खूब बढ़ गया स्वास्थ्य चिंताजनक। बापू रवाना नहीं हो सके।

१७-११ ३७, वर्धा

शाम को सेगांव गया। वहां बापू के रहने आदि की व्यवस्था देखी। भोजन वहीं किया और रात को वहीं सोया।

१८-११ ३७, वर्धा

बापू कलकत्ता से मेल से आये। डाक्टर ने देखा। बापू के साथ सेगांव गया। बापू वहां थोड़ा बोले। उनकी व्यवस्था की।

'गांधी-सेवा-संघ' की बैठक का कार्य हुआ। महत्वपूर्ण बैठक थी। ठीक विचार-विनिमय हुआ। सरदार, गंगाधरराव जयरामदास कृपलानी शंकरराव देव प्रफुल्लबाबू आदि हाजिर थे।

१९ ११ ३७, वर्धा

सुबह उठकर बापू के साथ पैदल डेढ़ मील तक घूमना हुआ। बापू को देखने डाक्टर लोग आये।

महादेवभाई से बंगाल की हालत समझी। विचार-विनिमय।

बापू के पास जल्दी गया। गांधी-सेवा-संघ की बैठक में विचार-विनिमय। रात सेगांव में रहा। प्रार्थना।

२०-११ ३७, वर्धा

सुबह ४ बजे प्रार्थना। बापू का ब्लडप्रेशर १९४ ११४ हो गया। इससे थोड़ी चिन्ता हो गई। सेगांव गया। बापू का स्वास्थ्य तथा उनकी व्यवस्था आदि देखी।

२१ ११ ३७ सेगांव-वर्धा

प्रात ४ बजे उठा। बाद में पैदल वर्धा के लिए रवाना। रास्ते में खेत वगैरा देखे।

बंबई से डॉ. गिल्डर व डॉ. जीवराज मेहता बापू को देखने आये। स्टेशन पर बातचीत।

२२-११ ३७ नागपुर-वर्धा

बापू का ब्लड प्रेशर २१८ ११८ हो गया। बापू को देखने डॉ. जीवराज व महादेवभाई के साथ सेगांव गया। ब्लड प्रेशर बहुत ज्यादा था। इससे चिन्ता बढ़ गई।

डॉ. जीवराज से बापू के स्वास्थ्य के बारे में देर तक बातचीत। प्रार्थना के बाद बापू ने सेगांव में और कहीं न जाने के बारे में अपने विचार कहे।

२३-११-३७ सेगांव-वर्धा

पू. बापू से बातें व विनोद। थोड़ा घूमना। ब्लड-प्रेशर १९४ व ११२ हो गया। चेहरा भी ठीक मालूम हुआ।

२४-११-३७ वर्धा

पांच बजे के करीब उठा। बापू का ब्लड प्रेशर १९८/११२। बापू के साथ घनश्यामदास बिड़ला और महादेवभाई की कलकत्ते के बारे में बातें। नजरबंदी के विचार सुने। सरलाबाबू को पत्र दिया। दिन-भर सेगांव रहा। गांव देखने गया।

२५-११-३७, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। बापू का ब्लड प्रेशर १९४/११२ शाम को १८/११। मगनवाड़ी-म्यूजियम के बारे में विचार-विनिमय।

भोजन करके सेगांव गया। प्रार्थना के बाद कार्यकर्ताओं से बातें।

२७-११-३७ वर्धा

४ बजे प्रार्थना। बापू का ब्लड प्रेशर ८ बजे १८/११ रहा।

२८-११-३७, वर्धा

सुबह बापू को घनश्यामदासजी के साथ देखकर आया। स्वास्थ्य साधारण।

सेगांव में जिमनास्टिक की कवायद की दुरुस्त-कारी। बापू के साथ प्रार्थना का आनन्द।

१-१२-३७ सेगांव

प्रातः बापू से मिला। घूमने गया। बाल्कोबा को देखा।

नागपुर-यूनिवर्सिटी बापूजी को डॉक्टरेट की पदवी देना चाहती थी। बापू ने कहा कि मैं उसके योग्य नहीं हूं। विनोद होता रहा।

३-१२-३७ सेगांव

प्रार्थना के बाद बापू से विनोद। थोड़ी देर बातचीत-चर्चा।

बापू ने बातचीत के लिए बुलाया। हिंसामय वातावरण को रोकने के लिए हम लोगों ने जोरों से प्रयत्न करने को कहा।

४-१२-३७, सेगांव-वर्धा

डॉ० नर्मदाप्रसाद महादेवभाई के साथ मोटर से सेगांव जाकर आये। बापू का स्वास्थ्य वैसा ही है। सुबह २   ११४ के करीब व दोपहर को १९   १ ८ ब्लडप्रेशर रहा। दोपहर का ठीक था।

५-१२-३७, सेगांव-वर्धा

सेगांव पैदल गया। डॉ० जीवराज मेहता व नर्मदाप्रसाद आये। डॉ० मेहता से बातचीत। डॉ० जीवराज के आग्रह से कल मेल से बापू ने बम्बई (जुहू) जाने का निश्चय किया। बम्बई तार-टेलीफोन वगैरा किये।

सेगांव-आश्रम की व्यवस्था की। बापू ने ६ बजे के करीब मौन लिया।

६-१२-३७, सेगांव-वर्धा

मेल से बापू को लेकर बम्बई रवाना हुए। रास्ते में बापू को थोड़ा शारीरिक आराम मिला। विचार करते रहे।

प्रार्थना। बापू का मौन रहा।

७-१२-३७, दादर

कल्याण में तैयार होकर बापू के डिब्बे में गया। दादर उतरकर वहां से बापू को जुहू ले आये। अपनी छोटी कुटिया में बापू ठहरे। वहीं भोजन किया। उन्हें कुटिया पसन्द आई।

डॉ० जीवराज गिल्डर व रामस्वामी वगैरा देखने आये। बापू की जांच की।

८-१२-३७, जुहू (बंबई)

बापू को रात में नींद ठीक आई। बापू के साथ घूमना हुआ। डॉ० जीवराज वगैरा ने बापू के पेशाब व खून वगैरा की जांच कराई। मिलने जुलनेवालों से बापू को शान्ति मिले इसकी व्यवस्था की। बापू का कुटुंब परिवार मिलने आया।

९-१२-३७, जुहू

बापू के साथ घूमना हुआ। जीवराज मेहता ने कहा कि बापू का पायर ऐक्स-रे फोटो लेना पड़े।

बापू को रात में नींद ठीक आई। शान्ति भी मिली। डॉ० गिल्डर व डॉ० जीवराज ने आज जांचा। ब्लडप्रेशर १८८ ११२ रहा।

बापू की प्रार्थना में। अपनी कुटी के सामने—देशपांडे ने भजन गाये।

१०-१२-४७, बापू

बापू के साथ घूमा।

हरिहर शर्मा (अण्णा) से बातचीत की। बापू की इच्छा के कारण उनसे मिलाया परन्तु बापू को दुःख पहुंचा। यहां आने की जरूरत नहीं थी।

बापू का ब्लड-प्रेशर १८४ ११२। वजन ११२ पौंड रहा।

११ १२ ४७ बापू

बापू के साथ घूमना तथा विनोद। ब्लड प्रेशर १८२-११ । सरदार व जयरामदास आये। सरदार व पुरुषोत्तमदास बापू से मिले।

१२-१२-४७, बापू

बापू का ब्लड प्रेशर आज कल से कम यानी १७५ १ था। बापू के साथ शाम को भी घूमना हुआ।

१४ १२ ४७, बापू

बापू के साथ घूमना हुआ। हिज हाईनेस आगाखाना व उनका लड़का प्रिंस अलीखान बापू को देखने आये। कुछ विनोद करके चले गए। शाम को कमजोरी मालूम हुई तो भी बापू के साथ घूमना हुआ।

१५ १२ ४७, बापू

बापू के साथ घूमना हुआ। उन्हें अपना दूसरा प्लाट दिखाया। शाम को भी बापू के साथ घूमना व प्रार्थना। जल्दी सोया।

१६ १२-४७ बापू

बापू के साथ घूमना हुआ।

बापू को आज डॉ० गिल्डर व डॉ० जीवराज ने देखा। शाम को ब्लड-प्रेशर फिर ज्यादा मालूम हुआ। चिन्ता हुई।

२१ १२ ४७, बापू

पीठ में दर्द ज्यादा हुआ। बापू ने सेंक करने को कहा। बापू के साथ थोड़ा घूमा। महाराजा रीवां बापू के दर्शन को आये। उनसे बातचीत।

बापू ने बातचीत के लिए बुलाया। हिंसामय वातावरण को रोकने के लिए हम लोगों ने जोरों से प्रयत्न करने को कहा।

४ १२-३७, सेगांव-वर्धा

डॉ. नर्मदाप्रसाद महादेवभाई के साथ मोटर से सेगांव आकर आये। बापू का स्वास्थ्य वैसा ही है। सुबह २ ०-११४ के करीब व दोपहर को १६०-१ ८ ब्लडप्रेशर रहा। दोपहर का ठीक था।

५ १२-३७, सेगांव-वर्धा

सेगांव पैदल गया। डॉ. जीवराज मेहता व नर्मदाप्रसाद आये। डॉ. मेहता से बातचीत। डॉ. जीवराज के आग्रह से कल मेल से बापू ने बम्बई (जुहू) जाने का निश्चय किया। बम्बई तार-टेलीफोन वगैरा किये।

सेगांव-आश्रम की व्यवस्था की। बापू ने ६ बजे के करीब मौन लिया।

६ १२-३७, सेगांव-वर्धा

मेल से बापू को लेकर बम्बई रवाना हुए। रास्ते में बापू को थोड़ा शारीरिक आराम मिला। विचार चलते रहे।

प्रार्थना। बापू का मौन रहा।

७-१२-३७, दादर

कल्याण में तैयार होकर बापू के डिब्बे में गया। दादर उतरकर वहां से बापू को जुहू ले आये। अपनी छोटी कुटिया में बापू ठहरे। वहीं भोजन लिया। उन्हें कुटिया पसन्द आई।

डॉ. जीवराज गिल्डर व रजबअली वगैरा देखने आये। बापू की जांच की।

८ १२-३७, जुहू (बंबई)

बापू को रात में नींद ठीक आई। बापू के साथ घूमना हुआ। डॉ. जीवराज वगैरा ने बापू के पेशाब व खून वगैरा की जांच कराई। मिलने जुलनेवालों से बापू को शान्ति मिले इसकी व्यवस्था की। बापू का कुटुंब परिवार मिलने आया।

९ १२-३७ जुहू

बापू के साथ घूमना हुआ। जिवराज मेहता ने कहा कि बापू का [illegible] ऐक्स-रे फोटो लेना पड़े।

डायरी के अंश

१९३८

१ १ ३८ जुहू (बम्बई)

सबेरे बापू के साथ घूमना हुआ।

सरदार वल्लभभाई, राजेन्द्रबाबू, भूलाभाई, जयरामदास दौलतराम शंकरराव देव व शंकरलाल बैंकर जुहू आये। वर्किंग कमेटी के संबंध में देर तक विचार-विनिमय होते रहे।

२-१ ३८ जुहू

सुबह जल्दी तैयार हुआ और बापू से मिलकर पंडित जवाहरलाल से मिलने बम्बई गया। बाद में बिड़ला-हाउस में राजेन्द्रबाबू सरदार, जयरामदास भूलाभाई, कृपलानी आदि से अपनी नीति के बारे में विचार विनिमय।

३-१ ३८ जुहू

सुबह जल्दी तैयार होकर व बापू से मिलकर बम्बई। वर्किंग कमेटी ८ १ से ११ १५ व १ १ से ३ १५ तक हुई। बाद में पं जवाहरलाल मौलाना आजाद सरदार, राजेन्द्रबाबू और राजाजी बापू से मिलने आये। जानकी-कुटीर में नाश्ता चाय वगैरा व चर्चा।

४-१ ३८ जुहू

जल्दी तैयार होकर बम्बई जाते समय बापू से मिलकर कल का हाल कहा।

वर्किंग कमेटी सुबह ८ १ से ११ १ व १० १ से ८ तक हुई। महत्त्व की चर्चा व दो महत्त्व के प्रस्ताव पास हुए। खासकर कांग्रेस की नीति मिनिस्टरों के मामले में व हिंसा आदि के बारे में साफ की। बिहार किसान-सभा के बारे में भी ठीक चर्चा व विचार-विनिमय हुआ।

२२-१२-३७, जुहू (बम्बई)

माधवजी वैद्य व रामेश्वरदासजी बिड़ला आये। बापू के तथा मेरे स्वास्थ्य के बारे में बातचीत। बापू से मिलकर वर्धा जाने की तैयारी।

२४-१२-३७, वर्धा

सेगांव गया। वहां सबको बापू के समाचार बताये।

३१-१२-३७, जुहू (बम्बई)

दादर उतरकर जुहू २ १ बजे करीब पहुंचा। स्नान वगैरा करके बापू से मिला।

१३-१ ३८, वर्धा

पैदल सेगांव—बापू से हकीमजी की बातचीत। बापूजी को देखने नागपुर से हनुमन्तराव व सिविल सर्जन आये।

प्यारेलाल से बातचीत।

१५ १ ३८, वर्धा

पैदल सेगांव रास्ते में महादेवभाई मिले। उन्होंने बापू की हालत बताई। ब्लड प्रेशर बढ़ा हुआ है—२ के ऊपर। बापू से थोड़ी बातें। हकीमजी को भेजने का विचार। वापस आते समय किशोरलालभाई, गोमतीबहन व चांदा साथ में। हकीमजी सरस्वती (वाडीदिया) बालकी वापस सेगांव गये।

१७-१ ३८, वर्धा

चि शान्ता के साथ सेगांव। पू बापूजी को देखकर हकीमजी व सरस्वतीबाई को लेकर जल्दी वापस।

घनश्यामदास बिड़ला डाक मेल से कलकत्ता से आये। मेरे आने के पहले वह सेगांव पहुंच गए। महादेवभाई से लार्ड लोथियन के प्रोग्राम के बारे में विचार-विनिमय।

१८ १ ३८, वर्धा

सुबह जल्दी तैयार होकर लार्ड लोथियन के लिए स्टेशन गया। गाड़ी १ मिनट पहले आ गई। काकासाहब व शान्ता को मिलाया। बाद में महादेवभाई व दोनों कुमारप्पा को मिलाया। डॉ नर्मदाप्रसाद की गाड़ी में सेगांव रवाना। रास्ते में आर्यनायकम् आदि से भी मिलाया। सेगांव पहुंचकर लार्ड लोथियन बापू से मिले। बाद में मीराबहन को मिलाया। उन्हें अपने कच्चे मकान में ठहराया।

बापू के साथ घूमना। फिर वापस वर्धा।

वियेना के एक प्रोफेसर व डाक्टर व उनके एक साथी बापू को देखने आये। उनकी व्यवस्था की। वापस सेगांव आकर बापू से मिला।

१९ १ ३८, वर्धा

लार्ड लोथियन नवभारत विद्यालय महिलाश्रम मगनवाड़ी खादी-भंडार, लक्ष्मीनारायण मंदिर देखने आये। उनके भोजन की व्यवस्था महिलाश्रम में की। वह थोड़ा बोले पर सुन्दर बोले।

७-१-३८ बंबई

बापू से मिलकर बम्बई। आज शाम को बापू की लकड़ी एक पागल मुसलमान ने पकड़ ली। इस घटना का हाल पू. बापूजी ने बताया।

कृपलानी और जयरामदास मिलने आये। बापू को कल के दोनों व्याख्यान ठीक मालूम हुए।

राजेन्द्रबाबू, सरदार, राजाजी, भूलाभाई, जयरामदास और आदि से बातचीत। मिनिस्टरों के व्यवहार के बारे में विचार-विनिमय।

८-१-३८ वर्धा

जल्दी निवृत्त हुआ। पू. बापूजी बंबई से आये। स्टेशन पर पैदल गया। गाड़ी १ घंटा १ मिनिट लेट थी। बापू बंगले आये। ब्लड-प्रेशर देखा।

९-१-३८ वर्धा

पैदल सेगांव। बापू से महादेवभाई के साथ बातचीत। उन्हें हरिपुरा कांग्रेस तक पूरा आराम लेने को कहा परन्तु कोई वक्त नहीं निकला। बापू की इच्छा के मुताबिक महादेवभाई मुलाकात प्रोग्राम आदि की व्यवस्था करेंगे।

१०-१-३८ वर्धा

मोटर से सेगांव आना व जाना। सीतारामजी, जानकीदेवी साथ में। वहीं प्रार्थना।

बापूजी ने आज लिखने का काम ज्यादा किया। ब्लडप्रेशर भी ठीक था। जवाहरलालजी की माता के देहान्त होने की खबर बापूजी ने दी।

११-१-३८ वर्धा

सुबह जल्दी उठा—४ बजे स्नान आदि से निवृत्त। पैदल सेगांव। प्यारेलाल से करीब डेढ़ घंटे बातचीत। उसका मानस समझा।

बापू यहां से अगले महीने की ता. ७ को जानेवाले हैं। वहांतक तो चिन्ता का कारण नहीं।

१२-१-३८ वर्धा

डॉ. खरे के साथ सेगांव गया। डॉ. खरे ने बापू को देखा। स्वास्थ्य ठीक बताया।

२५-१-३८, वर्धा

सेगांव जाकर बापू व अन्य लोगों से मिला। वापस घर आकर भोजन। बाद में दो बजे फिर महादेवभाई के साथ सेगांव गया। बापू से २ से ३ तक बातचीत—गांधी-सेवा-संघ विट्ठलभाई पटेल वर्किंग कमेटी फेडरेशन मलकानी आर्यनायकम्, डॉ० बतरा प्यारेलाल आदि के बारे में।

२६-१-३८, वर्धा

सेगांव जाकर बापू से सेगांव का हिस्सा व अन्य इमारतें आदि ग्राम सेवा-मंडल को देने पर विचार-विनिमय। बापू ने अपना भावी कार्यक्रम व इच्छा बतलाई। उन्हें अब सेगांव छोड़ना नहीं है। हिन्दू-मुस्लिम-एकता के लिए फ्रंटियर रहना पड़े तो विचारणीय है।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी व स्वतंत्रता के प्लेज (प्रतिज्ञा) पर विचार।

२९-१-३८, वर्धा

सेगांव गया। बापू से सेगांव दान देने के बारे में बातचीत। मालगुजारी का हिस्सा दान में देने में व्यवहार की अड़चन। बगीचा व जमीन वसंत-पंचमी से दान देने का निश्चय।

३१-१-३८, वर्धा

सेगांव गया। बापू का स्वास्थ्य ठीक था। सुशीला ने बताया कि नार्मल हालत समझी जा सकती है। बापू को नागपुर-कांग्रेस के चुनाव व डॉ० खरे, पूनमचंद रांका आदि की स्थिति का हाल थोड़े में कहा। बापू का मौन था।

२-२-३८, वर्धा

सुबह स्टेशन गया। वल्लभभाई, जयरामदास आदि बापू से मिलने आये। नागपुर से मोटर द्वारा जवाहरलालजी व कृपलानी आये। मेल से सुभाषबाबू आये। पहले जवाहरलालजी को लेकर सेगांव गया। बाद में सुभाषबाबू को लेकर गया।

३-२-३८, वर्धा

पैदल सेगांव गया। बापू से मिला। सुभाषबाबू को लेकर वर्धा आया।

४-२-३८, वर्धा

प्रार्थना। पैदल सेगांव। बापू को वर्किंग कमेटी का थोड़ा हाल बताया।

दोपहर को व शाम को लार्ड लोथियन के साथ सेगांव गया। उनको घूमकर सब दिखाया।

बापू के पास प्रार्थना तक रहा। घनश्यामदास बिड़ला भी आये। शाम को सेगांव में ही भोजन किया।

२०-१-३८, वर्धा

आज सुबह लार्ड लोथियन ने हरिजन बोर्डिंग राष्ट्रभाषा प्रचार विद्यालय नालवाड़ी टेनरी कार्यालय आदि को देखा। उन्होंने कोई २०-२५ मिनट विनोबा के साथ आध्यात्मिक विचार-विनिमय किया। उसके बाद लार्ड लोथियन घर पर आये। कार्यकर्ताओं व मित्रों से परिचय व बातचीत। भोजन। सारा समारंभ ठीक रहा।

लार्ड लोथियन व घनश्यामदासजी सेगांव गये। बापू से बातें। प्रार्थना। आज बापू का ब्लड प्रेशर ज्यादा था।

२१-१-३८, वर्धा

सवेरे लार्ड लोथियन को ग्रांड ट्रंक ऐक्सप्रेस पर पहुंचाया। वह दिल्ली गये।

सेगांव गया। बापू से पचास हजार रुपये (घनश्यामदासजी बिड़ला के इस वर्ष के एक लाख में से) गांधी-सेवा-संघ के जनरल फंड में दिलाने का निश्चय। ईश्वरार्पण-फंड में से ढाई हजार बापू के जिम्मे नालवाड़ी में विद्यार्थियों के लिए मकान बनाने के लिए। विट्ठलभाई-फंड के संबंध में विचार। उत्तमचन्द शा (पैरिसवालों) ने पांच हजार का चेक दिया।

२२-१-३८, वर्धा

तुकडोजी महाराज के भजन। सेगांव पैदल गया। बापूजी से मुलाकात। फ्रंटियर जाने तथा हकीमजी के जाने के बारे में चर्चा। सेगांव में नाश्ता।

२३-१-३८, वर्धा

सेगांव तक पैदल। बापू के साथ कांग्रेस व शिक्षण बोर्ड-विषयक चर्चा। विद्यापीठ के स्नातक सरस्वतीबाई बाडोरिया हकीमजी वगैरा बापू से मिले। प्यारेलाल से बातें। बापू ने कांग्रेस जाने के बारे में पूरी तैयारी रखने को कहा।

पहुंचा। मुझे इसमें से निकाला। उन्होंने कबूल तो किया। और भी हामी नहीं।

खादी-प्रदर्शनी के स्थान पर प्रार्थना। बाद में बापू का खादी के महत्त्व पर मार्मिक भाषण हुआ।

१७-२-३८ हरिपुरा

श्री खेर से बम्बई के गवर्नर के बारे में जो बातचीत हुई, उसका हाल बापू से कहा।

शाम की वर्किंग कमेटी की बैठक में मुख्यमंत्री श्री गोविन्दवल्लभ पंत व श्री कृष्णसिंह के निवेदन व वहां की स्थिति का वर्णन सुनने पर दुःख व चिन्ता।

१९-२-३८ हरिपुरा

बापू से बातें व अपने संबंध में—वर्किंग कमेटी के बारे में।

२१-२-३८ हरिपुरा

वर्किंग कमेटी में चर्चा। वर्किंग कमेटी में न रहने के बारे में अपने विचार मैंने साफ कहे।

जवाहरलालजी सुभाषबाबू वगैरा शाम को बापू से मिले।

कांग्रेस का खुला अधिवेशन। आज की कार्रवाई आखिर तक की ठीक रही।

बापू से हुई बात का सार मौलाना से कहा। मुझे वर्किंग कमेटी में रहना चाहिए, इसका आग्रह किया। अपनी कठिनाइयां मैंने कहीं।

२२-२-३८ हरिपुरा

प्रातःकाल बापू के जाने की तैयारी। उनसे मिला। बापू व किसी का व सुभाषबाबू का यह आग्रह कि मैं वर्किंग कमेटी में रहूं बताया। मैंने इन्कार किया।

ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक में सुभाषबाबू ने मेरा नाम भी जाहिर कर दिया। सरदार ने भी समझाया किया वह पूरा नहीं किया अधूरा किया। मैं पूरा करना चाहता था पर सुभाषबाबू ने कहा यहां ठीक नहीं मालूम होगा।

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११॥ व २ से रात्रि ९॥ तक होती रही। फ़ैडरेशन-वाला ठहराव हुआ।

५-२-३८ वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११॥ व २ से ८॥ तक होती रही। बीच में कुछ लोग सेगांव बापू के पास हो आये।

वर्किंग कमेटी में आज भूख-हड़ताल मिनिस्टरी देशी रियासतें आदि पर खासतौर से विचार-विनिमय हुआ।

६-२-३८ वर्धा-नागपुर

वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। देशी रियासत का ठहराव बहुत वाद-विवाद व विचार-विनिमय के बाद जवाहरलालजी ने जैसा पेश किया वही उन्होंने मंजूर किया।

सेगांव जाकर बापू से मिले। जवाहरलालजी की बापू से बातचीत। जाते समय महिला-आश्रम के सदन में ठहरे।

११-२-३८ हरिपुरा (विट्ठलनगर)

बारडोली-स्टेशन से बैठकर मढ़ी-स्टेशन पर उतरे। रास्ते में सुभाषबाबू व डा० पट्टाभि से देशी रियासतों के संबंध में बातचीत। सुभाषबाबू के साथ भोजन। बाद में उन्हें इन तीन वर्षों की स्थिति व वर्किंग कमेटी के अन्दर के काम से ठीक तौर से वाकिफ़ कराया। बाद में सुभाष से जितनी बातें हुईं, वे सब घूमते हुए बापू को सुनाईं। उन्हें पसंद आईं। सुभाषबाबू बापू से मिल लिये।

१५-२-३८ हरिपुरा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ९॥ व २ से ६ तक हुई। जवाहरलालजी की रिपोर्ट पर आज गरमागरमी रही।

बापू से वर्किंग कमेटी का हाल कहा। शाम की प्रार्थना में गये।

बापू के साथ जवाहरलालजी सुभाषबाबू, मौलाना सरदार और मैंने मिनिस्ट्री के बारे में खासकर बिहार व यू० पी० के बारे में बातचीत की। उन्होंने अपने विचार कहे।

१६-२-३८ हरिपुरा (विट्ठलनगर)

बापू के साथ बातचीत। मैंने बताया कि मैं वर्किंग कमेटी में नहीं

७-३-३८, वर्धा

मौलाना से कलकत्ते का हाल व सुभाषबाबू के विचारों के बारे में बातचीत। सेगांव गया। बापू का मौन था। मौलाना से जो बात हुई, वह बापू को सुनाई। प्रार्थना के बाद वापस।

२६-३-३८, बेरबोई-डेलांग

प्रार्थना। स्टेशन उतरकर पैदल बेरबोई गांधी-सेवा-संघ कान्फ्रेंस में पहुँचे। साथ में लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार, महावीरप्रसादजी पोद्दार, रामकुमारजी केजड़ीवाल, हीरालालजी सराफ आदि थे।

बापूजी के साथ घूमना। थोड़ी बातें। सिर में दर्द हो गया। मैंथल वगैरा लगाया।

गांधी-सेवा-संघ की कार्यकारिणी सुबह ८ से १ तक। कान्फ्रेंस ३ से ५ तक। रात्रि में कार्यकारिणी ७।। से ९।। तक रही।

२८-३-३८, डेलांग

प्रार्थना के बाद बापू ने हिन्दू-मुस्लिम-दंगे के बारे में जो प्रस्ताव रखा था उसके बारे में मेरी शंकाओं का समाधान करने की दृष्टि से भाषण किया —करीब एक घंटा।

गांधी-सेवा-संघ की कार्यकारिणी कमेटी ८ से १ तक हुई। दोपहर को १।।। से ३।। तक। कान्फ्रेंस ३ से ५ तक।

३०-३-३८, बेरबोई-डेलांग

बापू व जयप्रकाश से थोड़ी बातें।

१।।। से ५ तक गांधी-सेवा-संघ कान्फ्रेंस का काम हुआ। कृपलानी, सरदार, राजेन्द्रबाबू, किशोरलालभाई के भाषण ठीक हुए।

१-४-३८, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी ८ से ११।। व २ से ७ तक हुई। दो से पांच तक बापूजी के साथ नागपुर का खरे-प्रकरण चला। सुबह सुभाषबाबू के घर दो बारे में जो परिस्थिति थी उससे स्थिति एकदम बदली हुई मालूम हुई। उस बारे में विचार-विनिमय। बापूजी के सामने मैंने मि. खरे को यहां बुलाने के खिलाफ जो विचार रखा वे सरदार को बिलकुल पसन्द नहीं आये लेकिन कई मित्रों को बहुत पसन्द आये।

२५-२-३८, वर्धा

श्री रामजजी के यहां वर्किंग कमेटी के मेम्बरों की इनफार्मल बैठक हुई। आठ मेम्बर हाजिर थे। मिनिस्टरों की स्थिति टेलीफोन से समझी व उन्हें स्वीकृति दी।

बापूजी के स्टेटमेंट के आधार पर बयान देने को कहा।

२ ३ ३८, वर्धा

सेगांव गया। हीरालालजी शास्त्री व रतनबहन के साथ बापू से जयपुर प्रजा-मंडल की स्थिति वार्षिक उत्सव उस अवसर पर मेरे वहां जाने आदि के बारे में विचार-विनिमय।

रमीबाई कामदार, मौलाना सुभाषबाबू, हरिपुरा-कांग्रेस व खर्च वगैरा के बारे में थोड़ी बातें।

३-३-३८, वर्धा

सेगांव गया। बापू के पास—विनोबा व महादेवभाई साथ थे। नागपुर प्रांतिक कांग्रेस कमेटी से त्यागपत्र देने के बारे में देर तक विचार-विनिमय। बापू ने अपनी नीति कही। सब जिम्मेदार कार्यकर्ताओं को कांग्रेस में सम्मिलित होना चाहिए। विनोबा व शिक्षण-बोर्ड आदि की चर्चा।

४-३-३८, वर्धा-गुलगांव-देवली

मैल से शांतिकुमार, मास्टर व कमलबिहारी आये। दोपहर में बापू के पास सेगांव गये। विदेशी व्यापारी भारत में किस नीति से व्यापार करें, इसपर विचार-विनिमय। महादेवभाई भी मौजूद थे।

६ ३-३८, वर्धा

सुभाषबाबू ने दो बार कलकत्ते टेलीफोन पर बात की। शरदबाबू से बापू के प्रोग्राम के बारे में व डिटेन्यू के लिए प्रचार आदि सम्बन्ध में बातें। सुभाषबाबू ने मंदिर, खादी-भंडार, मगनवाड़ी देखी।

सुभाषबाबू व मौलाना के साथ सेगांव गया। बापू के साथ बातें। मिस्टर जिन्ना का पत्र-व्यवहार। शहीदगंज का मामला। सिक्खों का खून बंगाल का प्रोग्राम वर्किंग कमेटी की जगह पूरी करना, वर्किंग कमेटी की बैठक उड़ीसा में रखना तथा शिक्षण-बोर्ड आदि के बारे में बात हुई। उस समय पंडित रविशंकर शुक्ल भी मौजूद थे।

७-३-३८, वर्धा

मौलाना से कलकत्ते का हाल व सुभाषबाबू के विचारों के बारे में बातचीत। सेगांव गया। बापू का मौन था। मौलाना से जो बात हुई, वह बापू को सुनाई। प्रार्थना के बाद वापस।

२६-३-३८, बेरकोई-डेलांग

प्रार्थना। डेलांग उतरकर पैदल बेरकोई गांधी-सेवा-संघ का कैम्प में पहुँचे। साथ में जमनाप्रसादजी पोद्दार, महावीरप्रसादजी पोद्दार, रामकुमारजी केजड़ीवाल हीरालालजी सराफ आदि थे।

बापूजी के साथ घूमना। थोड़ी बातें। सिर में दर्द हो गया। मेंथल वगैरा लगाया।

गांधी-सेवा-संघ की कार्यकारिणी सुबह ८ से १ तक। कान्फ्रेंस ३ से ५ तक। रात्रि में कार्यकारिणी ७॥ से ९॥ तक रही।

२८-३-३८, डेलांग

प्रार्थना के बाद बापू ने हिन्दू-मुस्लिम-दंगे के बारे में जो प्रस्ताव रखा था उसके बारे में मेरी शंकाओं का समाधान करने की दृष्टि से भाषण किया—करीब एक घंटा।

गांधी-सेवा-संघ की कार्यकारिणी कमेटी ८ से १ तक हुई। दोपहर को १॥। से ३॥ तक। कान्फ्रेंस ३ से ५ तक।

३०-३-३८, बेरकोई-डेलांग

बापू व जयप्रकाश से थोड़ी बातें।

१॥। से ५ तक गांधी-सेवा-संघ कान्फ्रेंस का काम हुआ। कृपलानी, सरदार, राजेन्द्रबाबू, किशोरलालभाई के भाषण ठीक हुए।

१-४-३८, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी ८ से ११॥ व २ से ७ तक हुई। दो से पांच तक बापूजी के साथ नागपुर का खरे-प्रकरण चला। सुबह सुभाषबाबू के घर डॉ० खरे ने जो परिस्थिति कही उससे स्थिति एकदम बदली हुई मालूम हुई। उस बारे में विचार-विनिमय। बापूजी के सामने मेरे मि० शरीफ को यहां बुलाने के खिलाफ जो विचार रखे वे सरदार को बिलकुल पसन्द नहीं आये लेकिन कई मित्रों को बहुत पसन्द आये।

४-४-३८, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी में ८॥ से ११॥ व दोपहर को २ से ५॥ बजे तक मैं रहा। बाद में पू० बापूजी से मिला। चि० सावित्री वगैरा को बापू से मिलाया। सीतारामजी से मिलकर हावड़ा-स्टेशन। श्री सुभाषबाबू व मौलाना का आग्रह था कि मैं न जाऊं, परन्तु जाना तो था ही। नागपुर के मामले में सरदार का रुख देखकर भी जाना ही उचित समझा।

५-४-३८, वर्धा

मैंने ता० १ को कलकत्ते में खरे-प्रकरण के बारे में बापू के सामने वर्किंग कमेटी में जो यह राय दी थी कि डॉ० खरे का खुलासा सुनने के बाद अब हम इस स्थिति में विशेष कुछ कर नहीं सकते, क्योंकि पार्टी-मीटिंग में सर्वानुमति से उन्हें माफी दे दी गई व सब मिनिस्टरों की भी यही राय है, तब फिर उन्हें बुलाने से क्या काम है, आदि। इससे सरदार वल्लभभाई नाराज हो गए, ऐसा मामूली मालूम हुआ था। परन्तु आज ज्यादा हाल मालूम हुए। रामपुर से बापू व सुभाष बोस को ऐक्सप्रेस तार दिया कि मेरी राय का विचार न किया जाय।

६-४-३८, वर्धा

बंबई जाने की तैयारी। बापूजी व किशोरलालभाई से देर तक वर्किंग कमेटी से मेरा त्यागपत्र, सरदार से मतभेद तथा मानसिक दुर्बलता आदि का हाल कहा। दोनों ने त्यागपत्र अभी नहीं देने की राय दी। विचार करना है।

११-४-३८, वर्धा

स्टेशन गया। ग्रांड ट्रंक से बापूजी दिल्ली से वर्धा आये। उन्हें सेगांव के आधे रास्ते तक पहुंचाकर वापस आया।

१८-४-३८, वर्धा

सेगांव गया। प्रार्थना के बाद बापू का मौन खुलने पर थोड़ी देर बातचीत। डॉ० सौन्दरम् साथ थी।

१९-४-३८, वर्धा

माधवजी वैद्य व मुम्बईवाले भी दवे वैद्य नागपुर से आये। उनसे बातचीत। उन्हें लेकर सेगांव गया।

बापू से करीब एक घंटा बातचीत। जयपुर प्रजा-मंडल का व बाकी

प्रवासी वर्किंग कमेटी महिला-सेवा-मंडल व परीक्षा-विभाग स्वास्थ्य मानसिक अशान्ति व महर्षि रमण इत्यादि प्रश्नों पर विचार-विनिमय।

२१ ४ ३८, वर्धा

बापूजी सेगांव से आये। मारवाड़ी-स्कूल में उनका भाषण। उन्होंने बाद विद्या-मंदिर योजना के मकान की नींव रखी व ट्रेनिंग स्कूल का उद्घाटन किया। वह थके हुए मालूम हुए।

२२-४ ३८, वर्धा

बापू से सेगांव में दिल खोलकर स्पष्ट तौर से मन की स्थिति व कमजोरी का वर्णन किया। बापू ने जवाब दिया व अपनी स्थिति का वर्णन किया। किशोरलालभाई, राजकुमारी प्यारेलाल मीराबहन वगैरा मौजूद थे। मन थोड़ा हल्का भी हुआ व दुःख भी हुआ।

२३-४ ३८, वर्धा

बापू ने जो नोट तैयार किये थे राजकुमारी अमृतकौर ने पढ़कर सुनाये। प्यारेलाल ने बापू का स्टेटमेंट जो उन्होंने जिन्ना की मुलाकात के बारे में दिया था सुनाया।

२८ ४-३८, बम्बई

पू बापूजी को लेने दादर-स्टेशन गया। गाड़ी करीब डेढ़ घंटा लेट थी। दादर से बापू को लेकर जुहू आया। बापू अपने यहां ठहरे। घूमने गये स्नान वगैरा किया।

बापू जिन्ना से मिलकर आये उसका हाल कहा।

शाम की प्रार्थना में लोग ज्यादा थे।

२९ ४ ३८, जुहू

बापू से जयपुर व सीकर के मामले की बात। उन्होंने भी मेरा वहां जाना पसन्द किया। बापू ने उड़ीसा व मैसूर पर स्टेटमेंट लिखवाए। लेर से बातचीत।

फ्रंटियर-मेल से बापू के साथ रवाना। साथ में जानकीदेवी उमा रामकृष्ण दामोदर व विट्ठल थे।

३०-४ ३८, सवाई माधोपुर-जयपुर

रतलाम में बापूजी के डिब्बे में गया। जयपुर प्रजा-मंडल के लिए संदेश

लिया। जिना से समझौते की जो बात चल रही है, उस बारे में बापू ने अपने विचार कहे। मिनिस्टरी के बारे में विचार-विनिमय। फ्रंटियर के बारे में महादेवभाई का लेख पढ़ा। थोड़ा दुःख हुआ।

बापू के पास ही नाश्ता किया। बापू अपनी निराशा की बातें करते थे मैं अपनी।

सवाई माधोपुर में हीरालालजी शास्त्री जयपुर से आये। बापू से थोड़ी बातें।

७-५-३८, जयपुर

पू बा देवदासभाई, कांति सरस्वती दिल्ली से आये। जयपुर प्रजा मंडल की तरफ से प्रोसेशन बहुत सुंदर ढंग से उत्साहपूर्वक व धूमधाम के साथ निकला। शाम को प्रदर्शनी का उद्घाटन पू कस्तूरबा ने किया। देवदास ने भी भाषण दिया।

मि यंग भी आये थे। उनसे वहीं पर देर तक बातचीत। कल फिर मिलने का निश्चय।

८-५ ३८ जयपुर

यंग के साथ बहुत देर तक राजनैतिक खासकर सीकर के संबंध में विचार-विनिमय होता रहा। वहां से आकर पू बापूजी को व जमनालाल को तार करना पड़ा—जमनालालजी के जयपुर आने से रुकने के बारे में।

११-५-३८, सीकर

पू बा जानकीदेवी और पार्वतीदेवी दोपहर की गाड़ी से जयपुर से सीकर पहुंचे। जनता ने उनका स्वागत किया।

१२-५ ३८, सीकर

पू बा जानकीदेवी पार्वतीदेवी मुकाबलाई वगैरा रानी साहेब से मिलकर आये। उन्हें अपना दृष्टिकोण साफ-साफ समझाकर बताया।

पू बा पार्वतीदेवी वगैरा काशी-का-बास जाकर आये।

१५-५ ३८ जुहू (बंबई)

बापू के पास वर्किंग कमेटी के सदस्य जमा हुए थे। विचार-विनिमय में मैं भी शामिल हुआ। दोपहर को बम्बई में भूलाभाई के घर वर्किंग कमेटी की बैठक हुई।

बापू के साथ घूमना प्रार्थना व मिलना-जुलना। सीकर की हालत बापू से कही।

१६-५ १८ बम्बई

बंकिम कमेटी ८ से ११॥ तक व शाम को २ से ५॥ तक भूलाभाई के यहां हुई। शाम को बापू के साथ जुहू में घूमना व प्रार्थना।

१७-५ १८ जुहू

प्रार्थना। पू बापूजी के पास बंकिम कमेटी के काम की चर्चा व विचार विनिमय ११॥ बजे तक होता रहा।

बंकिम कमेटी भूलाभाई के घर २ बजे से ५॥ तक हुई। सी पी० के बारमें ने मिलना।

जुहू में बापू के साथ घूमना व प्रार्थना।

१८-५ १८ जुहू

प्रार्थना घूमना। सुबह बापू के साथ पास बंकिम कमेटी के लोग आये। उनसे बातचीत। जुहू में प्रार्थना बापू के साथ।

१९-५ १८ जुहू

बापू के पास बंकिम कमेटी के खास-खास लोग देर तक चर्चा विचार विनिमय करते रहे—काठियार मैसूर सीकर, जयपुर आदि प्रश्नों पर।

२०-५ १८ जुहू

पू बापू के पास सुभाषबाबू सरदार, मौलाना जयरामदास कृपलानी आदि आये। देर तक विचार-विनिमय। मैसूर, फंटियर, सी पी कम्यूनिस्ट आदि प्रश्नों पर चर्चा।

सरदार व किशोरलालभाई के साथ बातचीत। सरदार, राजाजी मौलाना आदि मिलो का सी पी की जवाबदारी लेने का मुझसे आग्रह। मैंने अपनी कमी व स्थिति साफ बताई।

आज बंकिम कमेटी की बैठक मैं की मेरी समझ ४ बजे की रह गई। इसका दुःख हुआ और आश्चर्य भी हुआ। बापू के पत्र दे दिये।

बापू से प्रार्थना जवाहरलालजी यवनगी से आये। डा पट्टाभि बनेरा के साथ भोजन।

२१-५ १८ जुहू

बापू

११ बजे तक विचार-विनिमय करते रहे। सीकर-जयपुर के बारे में सुभाषबाबू स्टेटमेंट देंगे।

सी. पी. मिनिस्ट्री की चर्चा में मैंने अपनी कठिनाई साफ तौर से बतलाई।

बापूजी जिन्ना व राजेन्द्रबाबू से मिलकर वर्धा जाने के लिए सीधे स्टेशन गये।

२३-५-३८, वर्धा-नागपुर

सेगांव में बापू से मिलकर आया। बापूजी व राधाकृष्ण साथ में थे। बापू ने कहा कि पंचमढ़ी जाना जरूरी है। बम्बई के पारसी मित्र ने जो पत्र दिया था वह उन्हें दे दिया।

बापूजी से नागपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय।

२५-५-३८, नागपुर-वर्धा

काफी चर्चा के बाद छहों मिनिस्टरों ने आपस में बैठकर फैसला किया। एक बार तो टूटने का मौका आ गया था। बाद में दुर्गाशंकर मेहता व खरे ने मिलकर एक नया फार्मूला दिया। मैंने उसमें दुरुस्ती की। वह सबोंने स्वीकार की। पार्टी में एक बार तो मामला सुलझ गया। सबोंने अच्छा स्वागत किया पर भविष्य ठीक नहीं दीखता था।

२७-५-३८, पंचमढ़ी

सरदार के साथ बापूजी के पास सेगांव गया। सरदार ने पंचमढ़ी की चर्चा व सारी स्थिति का वर्णन बापूजी से किया व स्टेटमेंट की बात की। डॉ. खरे व शुक्ला को तार भेजा। मुझे जहां दुरुस्ती करनी थी की।

२८-५-३८, वर्धा

सरदार वल्लभभाई व महादेवभाई जल्दी भोजन कर पू. बापूजी के पास सेगांव गये। बापूजी ने स्टेटमेंट बनाया। पं. रविशंकर शुक्ल व मिश्र ने उसे देखा व कुछ शब्दों में हेर-फेर किया। सरदार बम्बई गये।

सेगांव गया। बापूजी ने पेरीनबहन व सुभाषबाबू का पत्र पढ़ाया। मुझे जो कुछ कहना था वह कहा।

३१-५-३८ वर्धा

सेगांव गया। चि. राधाकृष्ण की नालवाड़ी के काम बढ़ाने की योजना

पर बापूजी से विचार-विनिमय। बापूजी ने उसकी जिम्मेवारी लेना उचित समझा। मैंने कहा कि चालीस हजार के आसपास की जरूरत होगी। विनोबा व बापूजी की लिखित स्वीकृति होना जरूरी है। बापूजी मुझसे भी सलाह व मदद की आशा रखते हैं।

बापूजी से श्री सरदार आंग्रे टाटा श्री बारी जयप्रकाशनारायण व सरदार आदि के संबंध में बातें हुईं।

१६-५-३८, जुहू

महादेवभाई का पत्र पढ़ा। पू. बापू के मन की स्थिति के हाल पढ़कर आश्चर्य व दुःख हुआ। मन में विचार चलने लगा।

१८-५-३८, वर्धा

भूलाभाई व राजेन्द्रबाबू के साथ सेगांव। १ से ४। तक भूलाभाई ने यूरोप के राजनीतिज्ञों से जो बातचीत हुई, वह बापू से कही।

बापू से डॉ. खरे व शरीफ मिल गए, इसका थोड़ा हाल कहा। विट्ठलभाई पटेल के विल के बारे में विचार-विनिमय।

२१-५-३८, वर्धा

जानकीदेवी व मां के साथ सेवाग्राम गया। वहां बा, बापूजी से मिलना।

श्री धनुस्कर ने एक नवयुवक को वहां सत्याग्रह के लिए बैठा दिया था। उसे समझाया।

बालकोबा के पास थोड़ी देर बातचीत करने से मन को थोड़ी शान्ति मालूम हुई। बा के पास प्रसाद लिया। जानकी से कहा कि बापू से बातचीत करके मन हलका करले परन्तु वैसा नहीं हो सका।

२४-५-३८, वर्धा

सुभाषबाबू, मौलाना, सरदार, कृपलानी, राजेन्द्रबाबू के साथ विचार विनिमय। जिन्ना-प्रकरण, नागपुर-मिनिस्टरी-प्रकरण, विट्ठलभाई-विल आदि के बारे में। बाद में मौलाना व मेरे साथ सुभाषबाबू की बातचीत।

सेगांव में सुभाषबाबू, मौलाना, सरदार, राजेन्द्रबाबू, कृपलानी और मैं बापू से मिले। जिन्ना (मुस्लिम लीग) के बारे में तथा बंगाल के कैदियों के बारे में चर्चा।

२८-६-१८, वर्धा

सेगांव में बापू से मिलकर आया। जवाहरमल हैदराबादवाले के बारे में पूछा। उन्होंने कहा कि एक वर्ष के लिए रख लिया जाय। महिला-आश्रम ५ रमा-रामकृष्ण ५ ऐसे कुल मिलाकर सौ रुपये मासिक दिये जायें। बापू की चिन्ता का कारण सुना। सरस्वती (कांति गांधी की पत्नी) का बंगलौर का आग्रह। प्यारेलाल वगैरा से बातें।

२९-६-१८, वर्धा

डॉ. खरे नागपुर से आये। उनसे बातचीत।

डॉ. खरे सेगांव बापू से मिलकर वापस आये और बाद में देर तक मुझे कुछ कागज व पत्र-व्यवहार दिखाते रहे। मैंने उन्हें मेरे विचार भली प्रकार समझाने की कोशिश की व पत्र न भेजने को कहा। आपस में सफाई करना ठीक रहेगा यह जोर देकर कहा। आखिर उनके साथ नागपुर गया।

५-७-१८, वर्धा

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की साधारण समिति की बैठक का कार्य सुबह ८॥ से ११॥ व दोपहर २॥ से ६ बजे तक। बाद में ८ से १ ॥ तक हिन्दी-प्रचार का काम भी हुआ। श्री टंडनजी से व मेरी बापूधाम से गरमागरम बहस। थोड़ा दुःख पहुँचा। मेरी भी थोड़ी गलती थी।

पू. बापूजी साहित्य सम्मेलन की बैठक के लिए वर्धा आये। ३ से ५ तक बैठे।

शिमला-अधिवेशन प्रचार-समिति के अधिकार आदि पर विचार विनिमय। नियमावली वगैरा के संबंध में।

८-७-१८, वर्धा

जयपुर से हीरालालजी शास्त्री का तार, वहां जल्दी आने के बारे में आया। सेगांव गया। बापूजी की सलाह हुई कि वहां जाना जरूरी है।

१५-७-१८, वर्धा

जयपुर से लौटकर घर पहुंचते ही मुझे सेगांव जाना पड़ा। बापू ने डॉ. खरे को भली प्रकार समझाने का प्रयत्न किया। एक बार तो उन्होंने बापू से कह दिया कि जैसा आप कहें वैसा करूंगा पर बाद में बदल गए।

२६-७-३८, वर्धा

वर्किंग कमेटी का कार्य सुबह ८॥ से ११ व तीसरे पहर २ से ८ बजे तक चला। पूज्य बापूजी २॥ से ८ बजे तक बैठे। सी पी मिनिस्ट्री का प्रस्ताव सर्वानुमति से खूब सोच-समझकर विचार-विनिमय के बाद पास हुआ। मन में बुरा तो लगता था परन्तु दूसरा कोई उपाय कांग्रेस की प्रतिष्ठा की दृष्टि से दिखलाई नहीं दिया।

वर्किंग कमेटी के प्रायः सभी सदस्यों की राय हुई कि अगर श्री बाजूजी स्वीकार करलें तो उनका नाम लीडर के लिए सुझाया जाय। मैं श्री बाजूजी से किशोरीलालभाई के साथ मिला। हम दोनों ने खूब समझाया। बाद में उन्हें शरदबाबू, मौलाना सरदार आदि से मिलाया। फिर सुभाषबाबू से भी मिलाया। सुभाषबाबू ने बड़ी ही अच्छी तरह प्रेमपूर्वक व जोर देकर समझाने का प्रयत्न किया। आखिर सुबह बापू के पास जाकर शंकाओं का समाधान होने पर विचार करने का निश्चय हुआ।

२७-७-३८, वर्धा

सुबह ४ बजे उठकर श्री बाजूजी को लेकर बापूजी के पास सेगांव गया। किशोरलालभाई साथ थे। बापूजी ने उनकी शंकाओं का भली प्रकार समाधानकारक उत्तर दिया। एक बार तो मालूम हुआ कि वह मुख्यमंत्री-पद के लिए तैयार हो जायंगे। मैंने भी काफी जोर लगाया। बाद में वर्धा वापस आये तो उन्होंने यह जवाबदारी लेने से इनकार कर दिया। मैंने सुभाषबाबू को सब हालत बता दी। मुझे भी निराशा हुई।

३१-७-३८, वर्धा

राजेन्द्रबाबू के साथ सेगांव गया। बापूजी को नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कमेटी में जो खास ठहराव पास हुए वे बतलाये। डॉ० खरे के बारे में राय ली। हिंगनघाट-मिल की पिकेटिंग व कानपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय। बापू ने कहा कि हिंगनघाट की पिकेटिंग इस प्रकार बिलकुल नहीं हो सकती। वह जल्दी बन्द होनी चाहिए। मेरा कर्तव्य बतलाया। श्री महर्षि रमण के पास जाने को कहा।

१-८-३८, वर्धा

श्री काकासाहब बाबा आठवले काकासाहब कालेलकर के साथ विनोबी-

कार्यकर्ता पांडुरंग बाबके सबनीस व श्रीपाद ने परसों सेवाग्राम से आयी हुई मीरा पी थी। उससे उनको हैजा हो गया। सबकी हालत चिन्ताजनक हो गई है व वातावरण एकदम गंभीर है। सेवाग्राम बापू से मिलकर आया। उन्हें काकासाहब आदि की स्थिति कही। बीमारों की व्यवस्था आदि में रात के साढ़े ग्यारह बज गए। कई बार जाकर उन्हें देखा।

१५-८-३८ पांडिचेरी

सुबह जल्दी निवृत्त होकर अरविन्द-आश्रम में नाश्ता। बाद में करीब सवा आठ बजे जानकीदेवी व चि. शान्ता रानीवाले के साथ श्री अरविंद व श्री मां के अच्छी तरह से दर्शन किये। श्री अरविंद फोटो की अपेक्षा प्रत्यक्ष देखने में विशेष प्रभावशाली व तेजस्वी दिखे। श्री टैगोर से मिलते-जुलते थे। दर्शन के बाद वहां नीचे सवा घंटे बैठा।

घर हैदरी से परिचय। दोपहर को अरविंद-आश्रम में भोजन। १ आने रोज के हिसाब से देना पड़ता है। मैंने जो मालाएं दी थीं वे उत्साह व पवित्रता प्राप्त करानेवाली प्रतीत हुईं।

१८-८-३८ तिरुवण्णामलै (मद्रास)

श्री अरुणाचलम् पहाड़ के चारों तरफ घूमा। कई स्थान जहां रमण महर्षि ने तपश्चर्या की, देखे। बहुत सुन्दर व रमणीक पहाड़ है। 'स्कन्द आश्रम' में स्नान, भोजन व आराम। स्थान बहुत ही सुन्दर है। यहां रहने की इच्छा होती है।

१९-८-३८ तिरुवण्णामलै

रमण भगवान के पास ३ बजे से ४॥। बजे तक रहा। उनका साग काटना रसोई का काम करना वगैरा देखा। देखकर संतोष हुआ। थोड़ी बातें भी कीं। बाद में कुछ देर आराम किया। उसके बाद शाम को ५ बजे से ६ बजे तक फिर रमण महाराज के पास बैठा।

२२-८-३८ वर्धा

सेवाग्राम गया। बापू के पास जाकर उन्हें रमण महर्षि श्री अरविन्द व श्री मां के दर्शन का व उनके आश्रम का इतिहास कहा। बापू का मौन था। प्यारेलाल ठीक था।

१९-८-३८, वर्धा

सेगांव गया। काकासाहब को बापू के पास ले गया। बीमारी के बाद पहली बार बापू से उनकी बातचीत हुई। प्यारेलाल ठीक था।

२१-८-३८, वर्धा

सेगांव गया। रात को सुभाषबाबू का फोन आया। बापूजी से उसका हाल कहा। बापू ने कहा कि वर्धा में ता. २ अक्तूबर के बाद वर्किंग कमेटी व ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक रखी जा सकती है। वह उस समय तक फ्रंटियर से आ जायंगे। पहले रखना हो तो दिल्ली रखी जाय।

५-९-३८, वर्धा

सेगांव गया। बापू से बाहिर सभा के बारे में तथा ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी में रखने के प्रस्ताव के बारे में विचार-विनिमय।

१०-९-३८, वर्धा

सेगांव गया। बापूजी से कांग्रेस-प्रेसिडेंटशिप के बारे में उनके विचार जाने। जयपुर व सीकर की परिस्थिति, हैदराबाद व सर हैदरी का स्टेटमेंट, जिसका हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हरिजन-सत्याग्रह वगैरा के सम्बन्ध में भी बापू से चर्चा। काकासाहब, गोपालराव, कमल व दामोदर भी थे।

२१-९-३८, दिल्ली

बापू के पास ३ बजे से ५ बजे तक वर्किंग कमेटी के मित्रों के साथ विचार-विनिमय।

२२-९-३८, दिल्ली

बिड़ला-हाउस में वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। बापू के साथ वर्किंग कमेटी के लोग ३ से ५ बजे तक बैठे।

२७-९-३८, दिल्ली

चरखा-संघ की बैठक बापू के पास सुबह ९ से ११ तक हुई।

वर्किंग कमेटी की बैठक दोपहर को बापू के पास २ से ५॥ तक हुई।

२८-९-३८, दिल्ली

वर्किंग कमेटी सुबह बापूजी के पास ८॥ से ११ तक। शाम को बिड़ला-हाउस में ४॥ से ६॥ तक।

चरखा-संघ की बैठक दोपहर को बापू के पास हुई।

१०-९-३८, दिल्ली

हरिजन-कॉलोनी में बापूजी के पास वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। ८॥ से ११ तक आसाम की परिस्थिति पर खास चर्चा हुई।

सं. वल्लभभाई व घनश्यामदासजी बिड़ला आये। मुझे बिड़ला-हाउस ले गए। आसाम के बारे में सुबह वर्किंग कमेटी में मैंने जो कुछ कहा उस संबंध में बातचीत। सरदार को मेरे व्यवहार से दुःख व नाराजी थी। मुझे भी उनके व्यवहार से पूरा असंतोष था। कल बापू के पास बैठकर आखिरी फैसला करने का निश्चय हुआ। रात में राजेन्द्रबाबू से थोड़ी बातें हुईं, पर मन हल्का नहीं हुआ।

१ १०-३८, दिल्ली

बापू के पास वर्किंग कमेटी ८॥ से ११। तक हुई।

बापू के पास सरदार व घनश्यामदासजी १ बजे से ५॥ बजे तक रहे। सरदार वल्लभभाई पटेल का व मेरा जो मतभेद था उसका आखिर में खुलासा हुआ। मतभेद काफी तीव्र व दुःखदायक था। दूसरे और कारण तो थे ही किन्तु यह भी एक महत्त्व का कारण था जिससे वर्किंग कमेटी से मुझे निकलना आवश्यक मालूम हुआ। पू. बापू ने स्वीकृति दी। मेरे त्यागपत्र के मसौदे में बापू ने थोड़ी दुरुस्ती की।

९-१०-३८, दिल्ली

वर्किंग कमेटी की बैठक बापूजी के यहाँ ८॥ से ११॥। तक होती रही। अगर वर्किंग कमेटी चाहे तो मैं बारे को और समय दे सकती है।

मैंने आज ही वर्किंग कमेटी की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। बापूजी ने मेरी अच्छी तरह से व साफ तौर से वकालत की। मैंने भी जो कहना था थोड़े में कहा। मेम्बर लोग इसीलिए स्वीकार नहीं करना चाहते थे पर बापू ने विश्वास दिलाया कि यह सब ठीक कर लेंगे।

पू. बापूजी से वापस जाने की इजाजत ली। राजेन्द्रबाबू से देर तक बातचीत। मानसिक स्थिति व सरदार की बातचीत का सारांश कहा। उन्हें मेरे वर्किंग कमेटी से निकल जाने का रंज था।

१७-१०-३८, वर्धा

सुभाषबाबू से देर तक बातचीत। उनका आग्रहपूर्वक कहना था कि

वर्किंग कमेटी का मेरा त्यागपत्र स्वीकार करने से बहुत ज्यादा गलतफहमी फैलेगी। कई उदाहरण भी दिये। कमल से जो बातचीत हुई थी वह कही। वर्किंग कमेटी के सभी मेम्बरों की इच्छा है कि मुझे त्यागपत्र नहीं देना चाहिए। मैंने अपनी मानसिक स्थिति समझाकर कही। उन्होंने आराम देने व छुट्टी देने को कहा। उन्होंने कहा कि वे पू. बापू को भी पत्र लिखेंगे।

१९.१०-३८, वर्धा

सेगांव में भी मंगाळी व बालकोबा को देखा। मंगाळी अच्छे हो जायेंगे। बालकोबा की हालत ठीक नहीं दिखी।

२६.१०-३८, वर्धा

सेगांव में बहुत-से लोग बीमार पड़ गए हैं। सिविल सर्जन डॉ. नर्मदा प्रसाद को वहां भिजवाया। उन्होंने आकर रिपोर्ट दी। थोड़ी चिन्ता हुई। पारनेरकर को वर्धा-अस्पताल में लाये।

२९.१०-३८, वर्धा

बोत्रे व किशोरलालभाई से बातचीत। बापू का पत्र। गांधी-सेवा-संघ से त्यागपत्र देने के बारे में किशोरलालभाई के पत्र से थोड़ी गैरसमझ हुई। महिला-आश्रम के काम में बोत्रे मदद करें, यह निश्चय हुआ। सुभाषबाबू को पू. बापूजी के नाम लिखे पत्र की नकल भेजी।

४-११.३८, वर्धा (अस्वस्थ)

पू. बापू, सरदार, जानकीदेवी व कमलनयन को हृदय में जो कुछ व मंथन चल रहा है, उसके संबंध में पत्र लिखे। कुछ महत्त्व के पत्र विनोबा ने देखे। राधाकृष्ण ने नकलें कीं।

११.११.३८, वर्धा

जवाहरलालजी इन्दिरा वगैरा आये।

इन्दिरा व अगाथा हैरिसन के साथ बापू के पास सेगांव गया। थोड़ा विनोद रहा। हैदराबाद के बारे में हाल बताये।

१७-११.३८, वर्धा

बापू से बात करने के लिए नोट तैयार किये। सेगांव गया। बापू से

करीब सवा घंटे बातचीत। मेरे जन्मदिन पर लिखा मेरा पत्र[1] उन्हें (बापू) नहीं मिला था। आश्चर्य हुआ।

प्यारेलाल से बातचीत। उसे भी पत्र नहीं मिला। मेरे त्यागपत्रों के बारे में बापू से खुलासा। मैंने पूछा—वर्किंग कमेटी यहाँ हो उस समय मैं बाहर रह सकता हूं। उन्होंने कहा—"हां। जयपुर की जिम्मेवारी नहीं छोड़ी जा सकती। नागपुर की भी नहीं। परन्तु नागपुर की तो शायद छोड़ी-सी भी जा सकती है अगर वहां के लोग मेरा कहना मान लें तो। राजकोट का उदाहरण जयपुर, उदयपुर व हैदराबाद को नहीं लागू करना चाहिए। बापू ने साफ तौर से कहा।

सेगांव में नये कुएं पर टी-पार्टी।

४-१२-३८ वर्धा (सेगांव)

बापू से मिलकर सरदार किबे के बारे में विचार-विनिमय। अगर वह नागपुर रहना चाहते हों तो रह सकते हैं। बापू ने मेरे प्रश्नों के उत्तर दिये—

१ हैदराबाद स्टेट के बारे में सरोजिनी नायडू का पत्र पढ़कर जवाब भेजने को कहा।

२ जयपुर प्रजा-मंडल के बारे में संघ का तार बताया। बोले कि अभी गिरफ्तारी की संभावना कम मालूम होती है।

३ राजकोट वगैरा के संबंध में हरिजन के अगले अंक में वे लिखने वाले हैं। इस अंक में भी स्टेटों के बारे में लिखा है। उन्होंने मेरे संबंध के खुलासे का मसविदा दिया है।

४ नागपुर म्युनिसिपल कमेटी की स्थिति के बारे में उन्होंने कहा कि डबले व पटवर्धन को त्यागपत्र देना ही चाहिए। सामंत-गुप्त को खुलासा करना चाहिए व भूल कबूल करनी चाहिए।

५ नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के बारे में कहा कि वे लोग अब तुम्हारी बात न मानें तो जिम्मेवारी छोड़ देना ठीक होगा। ज्यादा दिन तक एक्सप्लाइट (अनुचित लाभ) नहीं होने देना चाहिए।

६ बम्बई जा सकता हूं। वहां से जयपुर जा और नहीं आराम के

---

[1] देखिये 'बापू के पत्र' पृष्ठ-संख्या १५७ और २ ४।

किए जा सकता हूं। वर्धा में न्यू रेस्ट हाउस बनाने के बारे में मेरा पत्र नहीं मिला।

बापू जनवरी में बारडोली होंगे।

नागपुर म्युनिसिपल-प्रकरण पर विचार-विनिमय।

७-१२-३८, वर्धा-नागपुर

स्टेशन मेल पर गया। औंध के राजासाहब बालासाहेब चिरंजीव अप्पासाहब व दीवान वगैरा की पार्टी आई। जापान की पार्लमेंट के एक सदस्य भी आये। सुरेश बनर्जी भी आये।

सेगांव जाकर पू. बापूजी के पास से इन सबों का समय निश्चित किया।

९-१२-३८, वर्धा

बापू से मिलकर सर हैदरी के पत्र का जवाब तैयार किया। बम्बई जाने का विचार।

२५-१२-३८, वर्धा

सेगांव गया। बापू से बातचीत—सुभाषबाबू के आने के बारे में बापू का प्रोग्राम व स्वास्थ्य।

२६-१२-३८, वर्धा

पू. बापू को जन्म-दिन के रोज लिखे हुए पत्रों की नकलें व असली पत्र पढ़ाये। बापू, सरदार व जानकीदेवी के नाम के पत्र व उसका व राजाहुज्म का जवाब आदि। बापू कल पत्र लिखकर भेजेंगे।

२७-१२-३८, वर्धा

मेल से आज सुभाषबाबू आ गए। देर तक बातचीत। जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय। उन्होंने बापू की राय ठीक बताई। राजकोट का फैसला होने के समाचार सुभाषबाबू ने कहे। खुशी हुई।

बापू का (सेगांव से) जानकी पत्र मिला। उमा ने उसकी नकल की। उन्हें जवाब भेजा।

सुभाषबाबू बापू से मिलकर आये। बुखार आजाने के कारण उनका आज का मद्रास जाने का प्रोग्राम स्थगित रहा।

प्रो. रंगा भी आये।

२८-१२-३८, बंबई

सरदार वल्लभभाई से सुबह फोन से व बाद में मिलकर राजकोट के बारे में पूरी बात समझ ली। बाद में जयपुर की स्थिति पर देर तक विचार-विनिमय हुआ। बापू ने जो सलाह दी वह कही।

३०-१२-३८, नई दिल्ली

हीरालालजी शास्त्री हरिभाऊजी उपाध्याय वगैरा आये। निषेधाज्ञा व जयपुर प्रजामंडल की स्थिति पर बहुत देर तक विचार-विनिमय होता रहा। बारडोली में ता० ४ को बापू से मिलकर फैसला करने का निश्चय। प्रेस स्टेटमेंट आदि। शास्त्रीजी की बातचीत से दुःख पहुंचा। मेरी भी गलती थी।

डायरी के अंश

१९३९

४ १ ३९, सूरत-बारडोली

बापू से भोजन के समय बातचीत हुई। उसमें मि   मन से सवाई माधोपुर में जो बातें हुई थी उसका जिक्र किया तथा घनश्यामदासजी की सर ब्लेम्सी के साथ की मुलाकात का हाल बताया। उन्होंने वाइसराय को पत्र लिखा है। मिस अगाथा हैरिसन भी सर ब्लेम्सी तथा वाइसराय को मिलनेवाली हैं। इन सारी बातों से बापू को परिचित कराया।

शाम की प्रार्थना के बाद बापू का करीब १। घंटा जयपुर के मामले में जयपुर के मित्रों के साथ विचार-विनिमय। बापू ने स्थिति समझी। मित्रों को थोड़ा निरुत्साह हुआ परन्तु उनकी अवस्था थी।

सरदार से मिलकर उन्हें स्थिति समझाई। लड़ने के सिवाय और दूसरा उपाय नहीं रहता यह जोर देकर कहा। बापू से स्वीकृति व आशीर्वाद प्राप्त करने की दृष्टि से भी सरदार को सारी स्थिति से परिचित कराना आवश्यक है।

५ १ ३९, बारडोली

पाटीदार बोर्ड प्रेस में आज जयपुर के मित्रों के साथ हुइडा जाना व आपस में जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय किया। मैंने मेरी स्थिति उन्हें बहुत ही साफ तौर पर बतलाई। हम सबों का आग्रह था कि सब प्रकार की जोखिम उठाकर भी लड़ाई लड़नी ही चाहिए। हम सब पूरी तरह से तैयार हैं। आपकी आज्ञा का पूरा पालन करेंगे। आप हमारे सत्याग्रह के नेता रहेंगे वगैरा।

६-१ ३९, बारडोली

सुबह ३ । बजे के करीब नींद खुल गई। जयपुर-लड़ाई के बारे में विचार व योजना चलती रही। बापू के साथ सवेरे घूमा। भोजन के समय

बापू से बातें। बाद में २ बजे से करीब ३॥ तक बापू के पास जयपुर के मित्रों के साथ स्टेटमेंट व मसविदे वगैरा तैयार किये। प्रेसिडेण्ट कौंसिल ऑव स्टेट के नाम पत्र तैयार किया गया। परंतु देर होने से रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जा सका। कल भेजने का निश्चय। वर्तमान परिस्थिति में सीकर के बारे में मैं क्या कर रहा हूं, इस संबंध में भी पब्लिक स्टेटमेंट तैयार करना है।

सरदार बंबई गये। उनसे बातें। चिरंजीलाल मिश्र भी बंबई गये। हंसराज भालचंद, हरलालसिंह घासीराम शाम की गाड़ी से गये।

शाम को बापू के साथ घूमा। प्रार्थना। बाद में थोड़ी देर तक विचार-विनिमय।

७-१ ३९, बारडोली

बापू के साथ प्रार्थना। बापूजी का ब्लडप्रेशर आज २२ तक हो गया। बापू से २ बजे थोड़ी देर मुलाकात। लीलावती से बातचीत। बापू की स्थिति के बारे में विचार-विनिमय। मैंने बापू को थोड़ा-सा इशारा किया—सरदार, जयपुर-निषेधाज्ञा घनश्यामदास और जयपुर के बारे में।

राजकुमारीजी ने जयपुर-सीकर की फाइल पढ़ी व प्रेसिडेण्ट, कौंसिल ऑफ स्टेट के नाम का मसविदा तैयार किया। बापू ने उसे सुधार कर ठीक कर दिया। यह ता. ९ सोमवार को बारडोली से भेजने का निश्चय हुआ। प्रेसिडेण्ट कौंसिल ऑफ स्टेट के नाम जयपुर-निषेधाज्ञा के बारे में बापूजी ने जो पत्र कल तैयार किया वह आज छोटूभाई के मार्फत रजिस्ट्री द्वारा भेजा गया। जयपुर-लड़ाई की रचना के संबंध में शास्त्रीजी हरिभाऊजी शंकरलाल वर्मा आदि के साथ बापू से २ बजे मिला। प्रेस को पब्लिक स्टेटमेंट भेजा।

शाम को बंबई के लिए रवाना।

१२ १ ३९, बारडोली

वर्किंग कमेटी की बैठक में रहा।

बापू ने मेरे गुण-दोषों के व मानसिक स्थिति के बारे में पूछा। उन्होंने जो पूछा उसका अच्छा व साफ जवाब दिया। देवदासभाई से बहुत देर तक बातचीत व विचार-विनिमय।

१३-१ ३९, बारडोली

बापू से बातें। मानसिक-शारीरिक कमजोरी की स्थिति शोष आदि के बारे म चर्चा। देवदासभाई, प्यारेलाल व सरदार वल्लभभाई से भी मानसिक हालत का परिचय दिया।

वर्किंग कमेटी म जयपुर के बारे में प्रस्ताव[1] पास किया।

१४ १ ३९, बारडोली

बापू से व सरदार से जयपुर के बारे में बातचीत।

हैदराबाद स्टेटवालों को बापू से मिलाया व उनकी बातचीत कराई।

राजकोट के बारे में भी ढेबर, नानाभाई, जमनीलाल जीवन पुजारी आदि की बापू से व सरदार से जो बातचीत हुई, वह सुनी। चर्चा में थोड़ा भाग भी लिया। बापू से बातें।

जवाहरलालजी से जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय।

१५-१ ३९, बारडोली

सुबह पू बापू से जयपुर व अपनी मनःस्थिति के संबंध में थोड़ी चर्चा। बाद में सरदार से बापू की बातचीत। उन्हें बैरिस्टर भुडमर का पत्र ठीक मालूम हुआ। सीकर के रावराजा का केस कमजोर है। अपनी लड़ाई में उसे न मिलाने का निश्चय।

भुडमर नवसारी से मोटर द्वारा आ गए। उनसे बातचीत। उनकी सीकर के रावराजा कुंवर हरदयालसिंह व जयपुर में सर बीचम सेंट जॉन से जो बातचीत हुई, वह सब समझी। उन्होंने मेरे नाम एक पत्र लिखकर दिया है। वह पत्र बापू को दे दिया।

---

[1] प्रस्ताव निम्न प्रकार है—

"The Working Committee deplores the ban placed on the entry into th Jaipur State of Seth Jamnalalji by the *Jaipur authorities* whilst he was on his way *to Jaipur*, his native place for famine relief work and to attend the meeting of the Jaipur Rajya Praja Mandal of which he is the President The Working Committee hope that wiser counsels will prevail and the authorities will withdraw the ban and prevent an agitation both in the Jaipur State and outside."

१६-१ ३९, बापू (बंबई)

बाहरा उतरकर बापू गया। घूमते समय जानकीदेवी से बारडोली में बापू से व अन्य मित्रों से जो बातचीत हुई, वह थोड़े में कही।

२०-१ ३९, वर्धा-नवनार

बारडोली में पू बापूजी महादेवभाई व देवदास से जो बातें हुई, उन पर जानकीदेवी के साथ विचार-विनिमय। भविष्य में भी पहले-जैसे संयम व निश्चय करने में ही शांति व उत्साह बना रह सकता है इत्यादि।

२६ १ ३९, वर्धा

सुबह प्रार्थना। गांधी-चौक में झंडा-वंदन सेवाग्राम में भी झंडा-वंदन हुआ भाषण देना पड़ा। स्वतंत्रता-दिन मनाया गया।

जयपुर के लिए विदायगी का समारंभ उत्साहजनक व भावपूर्वक हुआ। मंदिर में उत्सव

रात में ऐक्सप्रेस से शुभ मुहूर्त मे रवाना। मन में उत्साह।

२७-१ ३९, बारडोली

स्टेशन पर सरदार आये।

बापू को व सरदार को सुभाष व मौलाना की बातचीत का साराश कहा।

२८ १ ३९, बारडोली-बंबई

बापू से सुबह घूमते समय जयपुर, मन स्थिति दीपक आदि के बारे में बातें। बापू ने थोड़े में मन स्थिति के बारे मे समझाया। मैने भी कहा कि उत्साह व विश्वास तो होता है। बापू ने शुद्ध सत्याग्रही के उदाहरण आदि दिये।

बापू ने स्टेटमेंट बनाकर दिया। सबको पसंद आया।

जयपुर में मुसलमानों व जयपुर-सरकार के बीच लड़ाई हुई, उसमें गोली लगने से ७ आदमी मरे, कई घायल हुए। बापू को रात में टेलीफोन द्वारा यह सारा हाल कहा। इस हालत में भी १ फरवरी का मेरा जयपुर जाना निश्चित।

जयपुर-सत्याग्रह कौंसिल की रचना। अन्य विचार-विनिमय।

१-२-१९, आगरा

रात के १२ बजे तक कई जगह टेलीफोन करते रहना पड़ा । जयपुर सूचना कर दी थी कि (जयपुर-सरकार की निषेधाज्ञा को तोड़ते हुए) कल रात को सीकर के लिए फुलेरा होकर जाने का प्रयत्न करूंगा । लेकिन घनश्यामदास व महादेवभाई ने कहा कि अभी और कुछ रोज नहीं जाना चाहिए । जयपुर कौंसिल को पत्र देना चाहिए, इत्यादि उनकी राय थी । मुझे यह पसंद नहीं आया । बापू का तार आ गया कि मुझे जाना न हिए । उससे संतोष हुआ । बापू को लगा होगा कि मैंने देर क्यों की परंतु हाल उन्हें मालूम होने पर संतोष मिलेगा ।

४-२-१९, आगरा

महादेवभाई का पत्र लेकर आदमी आया । पढ़कर चोट लगी । आखिर में मेरा मन हो, उस मुताबिक करने की बापू की इजाजत आ गई । उससे सुख मिला ।

जवाहरलाल नेहरू गोविन्दवल्लभ पंत काटजू घनश्यामदास व महादेवभाई को व वर्धा दो बार फोन किया ।

९-२ १९, आगरा

महिला-आश्रम वर्धावासी श्री उर्मिला वर्धा गई । उसके हाथ बापूजी के नाम पत्र भेजा ।

वर्धा से फोन पर बापूजी का संदेश आया । बापू ने कहलाया कि जानकीदेवी अभी स्वास्थ्य के कारण जयपुर नहीं जा सकती ।

१०-२-१९, आगरा

आज रोजाना का प्रोग्राम बदलने के कारण सिर थोड़ा भारी मालूम देने लगा ।

बापू के नोट में पत्र के बारे में गोलमाल खबर छपी उसके बारे में तार व पत्र भेजे ।

१८-२ १९, मोरांसागर (जयपुर-जेल)

'सर्वोदय' अंक १ पृष्ठ १२ पर बापू का बा के नाम लिखा एक पत्र छपा है वह पढ़ा । बापूजी १९ ८ की दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह की लड़ाई

बापू के प्रेम व उदारता का खयाल करता हूं तो अपनेको बहुत नीचा नालायक समझने लगता हूं। बापू को समय बहुत कम मिलता है इसलिए उनसे भी कई बार न्याय के मामले में गलतियां होती दिखाई देती हैं। परन्तु उनके मन में द्वेष ईर्ष्या व किसीका बिगाड़ हो ऐसी वृत्ति न होने से उसका परिणाम ज्यादातर ठीक ही आता है।

१-३-३९, मोरांसागर

पू. बापूजी राजकोट पहुंच गए। अब आशा होती है कि वहां का मामला सुलझ जायगा।

२-३-३९, मोरांसागर

बापूजी का राजकोट-प्रकरण का वर्णन व स्टेटमेंट देखा। राजकोट का फैसला जितना जरूरी है, उतना ही बापूजी का त्रिपुरी जाना भी जरूरी है।

३-३-३९, मोरांसागर

ता. २५-२ का 'हरिजन' पूरा पढ़ा। A Good Samaritan Dr Chesterman नामक लेख में पढ़ा—प्रतिवर्ष २ लाख स्त्रियों की मृत्यु प्रसव से १ लाख की चेचक से और १९ लाख की सब प्रकार के बुखारों से। देश में १ लाख कोढ़ी हैं, ६ लाख अंधे हैं।

त्रावणकोर की स्थिति पूरी पढ़ी। लीमड़ी की खबर पढ़कर तो आश्चर्य व दुःख हुआ। जयपुर पर बापू का छोटा नोट था।

८-३-३९, मोरांसागर

कई दिन के अखबार आज एक साथ मिले। बापू के उपवास करने व छोड़ने की तथा राजकोट का मामला सुलझने की खबरें पढ़कर सुख मिला। दो-तीन रोज से जो निरुत्साह था वह चला गया।

१०-३-३९, मोरांसागर

पू. बापू को दिल्ली भेजने के लिए पत्र तैयार किया।

जयपुर से यंगसाहब का पत्र ता. ९-३ का नोटिफिकेशन व अखबार लेकर सवार डेरे पर आया। रात को ३ बजे तक पढ़ता रहा। बाद में आराम।

श्री यंग को पत्र लिखा। बापू के पत्र के साथ नोटिफिकेशन भेजा।

१८-१-३९, मोरांसागर

रात को ९ बजे रामप्रसाद अर्दली श्री यंग का पत्र, पू. बापूजी का सीलबंद पत्र, चिरंजीव राधाकृष्ण का पत्र व अन्य पत्र और अखबार लेकर आया। पहले सब पत्र पढ़े, बाद में देर तक अखबार पढ़ता रहा।

राजकोट बापूजी को ठीक हैरान कर रहा है। शायद उन्हें वापस फिर राजकोट जाना पड़े।

बापूजी के स्वास्थ्य का विचार आया। परमात्मा सब ठीक करेगा।

बापू की सूचनाओं पर सोते समय देर तक विचार व चिंतन। शांति मिली।

२२-१-३९, मोरांसागर

शाम को ता. २१ के 'हिंदुस्तान टाइम्स' व 'स्टेट्समैन' अखबार आये। जयपुर-सत्याग्रह कौंसिल ने पू. महात्माजी की आज्ञा से सत्याग्रह स्थगित किया। वैसे अब झट फिट बराबर बैठता है।

२३-१-३९, मोरांसागर

चि. राधाकृष्ण, दामोदर, मुक्ताबाई, हरगोविंद, रामप्रसाद पुलिस सार्जन्ट के साथ श्री यंग का पत्र लेकर आये। सबसे मिलकर प्रसन्नता हुई। देर तक बातचीत। सारी स्थिति पूरी तरह से समझी। पू. बापू ने जिस उद्देश्य से सत्याग्रह स्थगित किया, वाइसराय से जो बातें हुईं, भविष्य में अगर सत्याग्रह चालू करना पड़ा तो उस संबंध में बापू के विचार, उसमें आनेवाली कठिनाइयां वगैरा समझी।

आज की मुलाकात लाभदायी थी।

२४-१-३९, मोरांसागर

बापूजी ने सत्याग्रहियों के बारे में जो नई प्रतिज्ञा बनाई है उस संबंध में मेरे विचार राधाकृष्ण के मार्फत उन्हें कहला भेजे। इस प्रतिज्ञा का पालन तो मेरे लिए भी संभव नहीं है। मेरी समझ से तो बापू के सिवाय शायद ही कोई इसका पालन कर सके।

२६-१-३९, मोरांसागर

अखबार देखा। जयपुर की स्त्री-कैदियों को छोड़ दिया गया। और सत्याग्रहियों को छोड़ने के समाचार भी पढ़े। बापूजी प्रयाग गये।

१-४-३९, मोरांसागर

बाज चार रोज बाद अखबार आया।

बापू का ब्लडप्रेशर फिर बढ़ गया। जानकर चिन्ता हुई। बापू दिल्ली में ही हैं। राजकोट का फैसला ठीक हो गया ऐसा मालूम होता है। बापू का ब्लडप्रेशर ता. २७ मार्च को २२०-११२ था। राजकोट के उपवास के बाद १९०-९ हो गया था जो ठीक समझा जाता था। कांग्रेस व देशी रियासतों की चिन्ता के कारण ऐसा हुआ दीखता है।

३-४-३९, मोरांसागर

बापू ने जयपुर, रचनात्मक कार्य तथा सत्याग्रह की शर्तों पर 'हरिजन' में लिखा है।

१०-४-३९, मोरांसागर

राजकोट का फैसला पढ़कर सुख व समाधान मिला। बापूजी फिर वाइसराय से मिले व राजकोट गये।

११-४-३९, मोरांसागर

ता. ११ का अखबार आया। उसमें बापू का लेख पढ़ा। उसमें वाइसराय से मुलाकात, राजकोट के बारे में उपवास, त्रिपुरी न जाना, फेडरल कोर्ट के चीफ जज से फैसला करवाना, दिल्ली इतने रोज बैठे रहना इत्यादि का बापू ने खुलासा किया था। उपवास के बारे में बापू की नकल दूसरे कोई न करें तो अच्छा है।

१३-४-३९, मोरांसागर

राजकोट का ठाकुर फिर गड़बड़ी कर रहा है, यह देखकर आश्चर्य व चिन्ता हुई। विश्वास होता है कि आखिर में सब ठीक हो जायगा। बा का स्वास्थ्य ठीक होने के समाचार मिले।

१४-४-३९, मोरांसागर

रामदुर्ग स्टेट (कर्नाटक) में जनता की ओर से भयंकर हिंसा के समाचार पढ़कर दुःख व चिन्ता हुई। इस घटना पर विचार करने से तो लगता है कि स्टेटों का सत्याग्रह स्थगित किया गया वह ठीक ही हुआ अन्यथा ऐसा द्रुत व उसकी ज्यादा फैल जाती जिसे बाद में संभालना कठिन हो जाता।

१५ ४ ३९, मोरासागर

अमरसिंह के हाथ पत्र भेजे—पू. बापूजी को राजकोट व महादेवभाई को दिल्ली। रास्ते में घूमते हुए बापू को जो पत्र लिखा उसका चिन्तन चलता रहा। हृदय भर आया। श्री भरतजी की चौपाई याद आई—

हृदय हेरि हारेउ सब ओरा। एकहि भाँति भलेहि भल मोरा।
गुरु गुसाईं साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिनामू।

१६ ४ ३९, मोरासागर

'सर्वोदय' अंक ८, पृष्ठ ११ पर गांधीजी का वचन पढ़ा

'जिसने बंधुत्व की भावना को हृदयस्थ कर लिया है वह यह नहीं कहने देगा कि उसका कोई शत्रु है।

१८-४ ३९, मोरासागर

राजकोट में—मुस्लिम (जमात) लोगों ने प्रार्थना के समय १६ ४ को जो भद्दा प्रदर्शन किया वह पढ़कर दुःख व आश्चर्य हुआ। मुझे तो अब विश्वास हो रहा है कि राजकोट के ठाकुर का व वीरावाला का विनाश-काल नजदीक आ रहा है। वहाँ के मुसलमानों को लीग (जिन्ना) ने भड़काया मालूम देता है। राजकोट का मामला काफी पेचीदा बन गया है। इसका बुरा असर सारी स्टेटों में पहुँचेगा।

१९ ४ ३९, मोरासागर

राजकोट की हालत खराब होती जा रही है। अखबारवालों ने बापू को कोसना शुरू कर दिया है। प्रजा में दरारें डाली जा रही हैं। मुझे तो इसमें वहाँ के पोलिटिकल एजेंट व वाइसराय की नीति पर संदेह होने लगा है—जयपुर के कारण भी।

२१ ४ ३९, मोरासागर

ता. २१ ४ का 'हिन्दुस्तान' देखा। बापूजी को राजकोट में बुखार आ रहा है। राजकोट तो बापूजी की पूरी ताकत ले रहा है। मि. जिन्ना व डॉ. अम्बेडकर भी जाल फैलाने वहाँ पहुँच गए हैं। उधर राजाजी ने भी मद्रास से चिल्लाना शुरू कर दिया है। बापूजी ता. २६ को कलकत्ता पहुँचने वाले हैं।

२६-४-३९, मोरांसागर

ता. २५ के अखबार आए। राजकोट का फैसला नहीं हुआ। बापू कलकत्ते रवाना हो गए।

२८-४-३९, मोरांसागर

राजकोट के मामले पर बापू ने दुखी हृदय से जो स्टेटमेंट दिया वह पढ़ा। एक बार तो बुरा लगा और दुख भी पहुंचा पर यह विश्वास होता है कि परमात्मा ने किया तो जल्दी ही कोई समाधानकारक रास्ता निकलेगा। बापू को व सरदार को खूब कष्ट व दुःख पहुंचना स्वाभाविक है। उधर सुभाष बाबू के कारण कलकत्ते का वातावरण खूब गंदा हो रहा है। सरदार ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक में नहीं जावेंगे। बापू का स्टेटमेंट देखा। एक तरह से यह ठीक है। वर्तमान में कांग्रेस की देशी रियासतों की भारत की व दुनिया की जो हालत हो रही है उसे देखते हुए मेरे लिए तो कैद में रहने में ही मेरा सब प्रकार का लाभ दिखाई देता है—स्वास्थ्य की दृष्टि से भी।

१-५-३९, मोरांसागर

बापू का जयपुर के बारे में 'हरिजन' में लिखा लेख देखा। उसमें मेरा भी उल्लेख किया है।

इन दिनों मेरा स्थान बदलने या मेरे लिए साथी रखने के संबंध में विचार चल रहा है। मेरी तो इस समय में यही इच्छा रही है कि कोई कोशिश न हो तो ठीक। किंतु लगता है कि मुझे यहां से जल्दी ही दूसरे स्थान पर ले जावेंगे।

७-५-३९, मोरांसागर

जयपुर से अखबार व डाक आई। जयपुर में सत्याग्रहियों को छोड़ना शुरू कर दिया है।

राजकोट का कोई रास्ता नहीं बैठ रहा है।

वृन्दावन (चम्पारन) का बापू का भाषण पढ़ा।

११-५-३९, करतारजी का बाग (जयपुर-जेल)

अखबारों में बापू के स्टेटमेंट, राजेन्द्रबाबू व सुभाष के भाषण वगैरा

पढ़े। ता० १०-५ के 'हिंदुस्तान' में सरदार का भाषण है। उसमें जयपुर की भी चर्चा है।

१९-५-३९, कलकत्ते का वास

पत्रों के जवाब मदनलाल के पास लिखवाये। बापूजी व खानसाहब को भी पत्र लिखे।

२०-५-३९, कलकत्ते का वास

ता० १९-५ के अखबार में बापू के व राजकोट-ठाकुर के स्टेटमेंट देखे।

पू० बापू ने वृन्दावन (चम्पारन-बिहार) में गांधी-सेवा-संघ के सम्मेलन के समय जो भाषण दिया वह ता० १३ मई के 'हरिजन' में पढ़ा। उसमें बापू ने कहा—

"सत्याग्रही की ईश्वर में जीवित श्रद्धा होनी चाहिए। यह इसलिए कि ईश्वर में अपनी अटल श्रद्धा के सिवाय उसके पास कोई दूसरा बल नहीं होता। बगैर उस श्रद्धा के सत्याग्रह का अस्त्र वह किस प्रकार हाथ में ले सकता है! आप लोगों में से जो ईश्वर में ऐसी जीवित श्रद्धा न रखते हों उनसे तो मैं यही कहूंगा कि वे गांधी-सेवा-संघ को छोड़ दें और सत्याग्रह को भूल जायें।

२२-५-३९, कलकत्ते का वास

राजकोट प्रकरण का आखिर ता० २०-५ को अन्त हुआ। बापूजी भी दरबार में शामिल हुए। जुलूस में भी ठाकुरसाहब के साथ रहे। राजकोट के लिए सुधार कमेटी बनी। वीरावाला उसके प्रेसीडेण्ट हुए।

२५-५-३९, कलकत्ते का वास

ता० २५-५ के 'हिंदुस्तान' में राजकोट की आम सभा में दिया बापू का भाषण छपा है। उसमें निम्न अंश बड़े महत्त्व का है—"There is not a single person in the whole world who does not deserve our love To achieve unity of soul is the greatest purushartha I am after

२८-५-३९, कलकत्ते का वास

ता० २७ व २८ के अखबार पढ़े। कृपलानीजी का भाषण पढ़ा।

पं. जवाहरलाल के लेख जो उन्होंने 'नेशनल हेरल्ड' में लिखे वे देखे। इस पर से उनकी मन की स्थिति का साफ पता लगता है। राजकोट की स्थिति के बारे में समझना तो सबीके लिए कठिन है। सरदार को भी बहुत कड़वा घूंट पीना पड़ रहा है, आखिर में परिणाम ठीक आ गया। अब तो सब बातें भूलकर व परिणाम की तरफ देखकर बापू के प्रति श्रद्धा और बढ़नी चाहिए, अन्यथा देशी रियासतों का मामला पहले तो पेचीदा था ही अब और ज्यादा हो जायगा।

२-१-३९, करनाक्सों का बाग

महादेवभाई का राजकोट का भाषण पढ़ा। वीरवाला राजकोट सुधार कमेटी के प्रेसिडेंट होंगे यह पढ़कर आश्चर्य हुआ।

बापू से राधाकिसन दामोदर, मूलचंद, कालकीवाल आदि मिले। राधाकिसन बापू के साथ बंबई गया।

रामेश्वर, मीरां, मृदुला मदन कोठारी मिलने आये। मीरां ने राजकोट की पढ़ाई पूरी करली। मृदु को देख खुशी हुई। राधाकिसन से बापूजी के स्वास्थ्य तथा प्रोग्राम के बारे में तथा वृन्दावन-सम्मेलन वगैरा का वर्णन सुना। प्रार्थना व भजन के बाद लोग वापस गये। मौन रखा।

५-१-३९, करनाक्सों का बाग

देशी रियासतों के बारे में बापूजी का स्टेटमेण्ट पढ़ा। जयपुर के अधिकारी इसका एक बार तो जरूर मतलब लगायेंगे लेकिन बापूजी जब जयपुर के बारे में खुलासा करेंगे तब साफ हो जायगा।

८-१-३९, करनाक्सों का बाग

पू. बापूजी आज सेगांव (वर्धा) पहुंच गए होंगे।

१५-१-३९, करनाक्सों का बाग

राधाकिसन आज मिला। उसने बापूजी व अन्य मित्रों के समाचार कहे। जयपुर के बारे में बापूजी का स्टेटमेण्ट पढ़ा। चरखा काता।

२२-१-३९, करनाक्सों का बाग

रामेश्वरलालजी के पत्र में पू. बापूजी को छोटा-सा नोट भेजा। उसमें लिखा—

"राधाकिसन मिला। मेरी चिन्ता का कारण नहीं। मुझे जितना ज्यादा यहां रहने को मिलेगा उतना ही मेरा तो काम है। साथ ही रचनात्मक कार्य को भी लाभ पहुंचेगा।

२५-६-१९, करनावतों का बाग

बूल के 'सर्वोदय' में बापू के भाषण से—

१ 'अपने प्रतिपक्षी से जल्दी समझौता करो।

२ "अगर किसीके बारे में तुम्हारे दिल में गुस्सा है तो उसपर सूर्य को न डूबने दो। सूर्यास्त के पहले ही उसके पास चले जाओ और उससे बातचीत कर लो।"

मेरे लिए यह वाक्य वेद-वाक्य से कम कीमती नहीं है। यही अहिंसा की जड़ है। अहिंसा को हिंसा के मुंह में चले जाना है।

ता २५ ६ के अखबार देखे। राजेन्द्रबाबू का भाषण फारवर्ड ब्लाक के प्रस्ताव बापू का स्टेट के बारे में खुलासा अ भा कांग्रेस कमेटी के प्रस्ताव वगैरा पढ़े। जानकीदेवी के दौरे का वर्णन भी पढ़ा।

५-७-१९, करनावतों का बाग

किशोरलालभाई का पत्र मिलना दिया। दामोदर मिल गया। बापू के लिए हरिष दिया। डॉ मिल्लिमन्यन का बयान तथा दिल्ली वगैरा के बारे में बातें हुई।

९-८ १९, करनावतों का बाग

आज दोपहर को स्वप्न आया कि महादेवभाई व पू बापू मुझे देखने आये। स्वास्थ्य व जयपुर की स्थिति पर बातचीत। बाद में वह ए जी जी (राजपूताना रेजीडेन्ट) से मिलने जाने की तैयारी करने लगे। इतने में आंख खुल गई।

९-८ १९, करनावतों का बाग

बापू का तार आया। उन्होंने डॉ भरुचा को[१] महादेवभाई के साथ

---

[१] कमलनयनजी ९-८ १९ को ही नजरबंदी से छूट गए थे पर ११ ता तक करनावतों के बाग में ही रहे थे।

भेजने को लिखा। इजाजत मांगकर रखने का लिखा है। मैंने तार भिजवा दिया कि अभी न भेजें।

१२-८-३९, करमापतों का बास

करीब १॥ बजे कपूरचंदजी पाटनी व देशपांडेजी आये। वर्धा से बापू का फोन आया है। उन्होंने मुझे वहां जल्दी बुलाया है। बापू मुझे डॉ. विधान को दिखलाना चाहते हैं। सरदार, राजेन्द्रबाबू भी वहीं हैं।

१३-८-३९, वर्धा

वर्धा-स्टेशन पर राजेन्द्रबाबू (राष्ट्रपति) सरदार, कृपलानी पट्टाभि देव शंकरलाल पू. बा महादेवभाई तथा कांग्रेस म्युनिसिपल कमेटी महिला विद्यालय आदि के मित्र लोग प्रेम से आये। मन में भावना जागृत हुई। किशोरलालभाई व जाजूजी आदि भी थे। प्रोसेशन की तैयारी की थी। मैंने इन्कार कर दिया।

सरदार, महादेवभाई व बा के साथ सेगांव गया। प्रार्थना में शामिल हुआ। बाद में पू. बापू को स्वास्थ्य तथा जयपुर की स्थिति आदि का थोड़े में वर्णन सुनाया। रास्ते में सरदार तथा महादेवभाई को भी सुनाया। वापस घर आया।

आज यहां बहुत दिनों के बाद बरसात होने से सबको खुशी हुई, बापू को भी। वर्किंग कमेटी ने सुभाषबाबू बोस के बारे में प्रस्ताव किया। लड़ाई के समय कांग्रेस की नीति क्या होगी, इस बारे में भी। जवाहरलाल का पूरा सहयोग था। जवाहरलाल सुभाष बोस के लिए एक वर्ष चाहते थे। लड़ाई के प्रस्ताव का मसविदा जवाहरलाल का था। सुभाष बोस के संबंध का बापू का। देर तक बात होती रही। मेरा त्यागपत्र स्वीकार नहीं हुआ।

१४-८-३९, वर्धा

जवाहरलाल को कमल के बारे में पत्र भेजा। जयपुर प्रोग्राम आदि का पत्र भेजा। बापू ने कमल को चीन जाने की सलाह नहीं दी।

१८-८-३९, वर्धा

होमियोपैथीवाले डॉ. रात से देर तक बातचीत। उन्होंने कहा कि

में उनकी दवा के सुई दो मुझे लाभ पहुंच सकता है। बापू से सलाह करके एक महीना लेकर देखने का विचार है।

१९-८ ३९, वर्धा

बापूजी के पास सेगांव गया। बापूजी ने डॉ॰ भरूचा डॉ॰ जीवराज व डॉ॰ मेहता की रिपोर्ट ध्यानपूर्वक सुनी। विचार-विनिमय के बाद पूना रहकर डॉ॰ मेहता की देखरेख में इलाज कराने की सलाह बापू ने दी। जयपुर जाना जरूरी है। इसलिए एक महीने तक इच्छा हो तो डॉ॰ दास का होमियोपैथी के इलाज करके देख लूं। बापू ने कहा कि अनाज खाना एक बार बंद कर दो। फल साग और दूध लेने की सलाह दी।

आज से यह शुरू किया है।

२०-८ ३९, वर्धा

बापू के पास जाकर आया। १॥ बजे २ बजे तक जयपुर व स्वास्थ्य के संबंध में बातचीत।

जयपुर के बारे में (प्रजामंडल के) नाम में थोड़ा परिवर्तन करना जरूरी मालूम दे तो कर लिया जाय। जयपुर राज्य प्रजा-मंडल के पदाधिकारी दूसरी राजनैतिक संस्था के मेंबर न हों यह बात बिलकुल स्वीकार न की जाय। अगर अधिकारी लोग झगड़ना ही चाहें तो अपन लड़ेंगे। थोड़े चुने हुए साथियों को लेकर मुझे (जमनालाल को) स्वास्थ्य व संचालन के लिए बाहर रहना जरूरी होगा। त्रावनकोर में सत्याग्रह करने की बापू इजाजत देनेवाले हैं। बाहर के लोगों की सलाह सहायता देने के विरोध न है यह मैंने बापू से कहा। दीपक-राजा आदि व मेरे त्यागपत्र, कांग्रेस-सभापति गांधी-सेवा-संघ-सभापति आदि विषयों पर भी विचार विनिमय।

२१-८ ३९, वर्धा

सेगांव गया। रानी विद्यादेवी व उनकी लड़की तारादेवी से वर्किंग में परिचय करवाया। बापू से जयपुर, उमा की सगाई, नागपुर बैंक महाराजा बीकानेर, बालकोबा वगैरा के बारे में व कलकत्ता होकर जयपुर जाने के बारे में बातचीत।

२५-८ ३९, वर्धा

बाबासाहबके श्री राजनारायण विनोबा के पास कमल के साथ गये। बाद में बापू से उन्हें व उमा को मिलाकर लाया। बापू ने राजनारायण को उमा के लिए उपयुक्त समझा। वहां पू बा राजकुमारी मीराबेन व आशाबहन ने भी देख लिया। जानकी साथ में थी। पूज्य किशोरलाल भाई व काजूजी ने देखा था।

बाद दूध-फल पर सातवां रोज है। तीन रोज से प्राय: भूख बंद-सी हो गई है। बापू ने दो रतल मौसम्बी का रस एक रतल अंगूर का रस कम-से कम दो रतल दूध खजूर बीस व साग-फल लेने को कहा। सोडा दूध में भी ले सकते हैं।

बापू से हैदराबाद की वर्तमान स्थिति कही। श्री काशिनाथ राव के बारे में भी कहा कि अब वही वहां के नेता रहेंगे।

श्री राजनारायण व उमा की आज ठीक से बातचीत हो गई। उमा ने कहा मुझे पूरा संतोष हो गया है। बाद में पू विनोबा व बापूजी की राय जानी। उन्हें भी पसंद आ गया।

विनोबा व बापूजी के समक्ष संबंध निश्चित हो गया। उन्होंने आशीर्वाद दिया। बाद में रात को कुटुंब के लोगों ने देख लिया। गुड़ वगैरा बांट दिया।

२९-८ ३९, कलकत्ता

शरत बोस से करीब एक घंटे तक दिल खोलकर बातचीत। सुभाषबाबू किस प्रकार गलत रास्ते जा रहे हैं वह उनसे कहा। उन्होंने भी मेरे विचार व योजना पसंद की कि वे बापू से दिल खोलकर बात कर लें व उनकी आज्ञा के अनुसार व्यवहार रखें। उन्हें खुद प्यारेलाई स्वाक पर विश्वास नहीं है। सर सुल्तान और विधान राय वगैरा के बारे में कहा।

२-१०-३९, जयपुर

गांधी-जयंती के निमित्त बाजार चौक में आम सभा। २ ह की थैली प्रजा-मंडल के लिए मिली। बापू के जीवन से हम क्या ले सकते हैं, इस संबंध में भाषण।

३-१०-३९ दिल्ली

सरदार वल्लभभाई व राजेन्द्रबाबू से देर तक बातचीत करता रहा। पं. जवाहरलाल और मौलाना से मिलना व विनोद।

बापू से जयपुर के प्राइम मिनिस्टर व वहां की हालत के बारे में बातचीत।

राजेन्द्रबाबू व जवाहरलालजी वाइसराय लार्ड लिनलिथगो से करीब सवा दो घंटे मिलकर आये। उन्होंने उसका हाल सुनाया।

सुभाष बोस ने बैरिस्टर जिन्ना से बात करते समय बापू के चरित्र पर जो दोष लगाया वह जिन्ना ने अन्य मित्रों से कहा। बापू से यह जानकर दुःख हुआ व चोट पहुंची।

४-१०-३९ दिल्ली

बापू से बातचीत—जयपुर के प्रोग्राम के बारे में मार्च महीने में जाने का निश्चय। जयपुर के दीवान के बारे में सर जगदीश से जो बातें हुईं, वे बताईं। सर जगदीश तो देशी रियासत में जाना पसंद नहीं करते। सर मोर भोपाल में हैं। वह नहीं जायगे यह कहा। व्यक्ति अच्छे व योग्य हैं। इसके अलावा ई. राघवेन्द्रराव गोपालस्वामी आयंगर—ये नाम भी उन्होंने पसंद किये। वह सर मॉरिस ग्वायर से बात करेंगे।

लड़ाई के बारे में सर जगदीश को बापू की नीति पसंद थी।

मौलाना ने वाइसराय से मिलने के बारे में बापू से इनकार कर दिया। बापू को बुरा लगा। बापू ने मौलाना को समझाया। मुझे तो मौलाना के कहने में सार मालूम हुआ।

बापू से शाम की प्रार्थना के बाद खानगी में अपनी कमजोरी का पूरा चित्र खोलकर कहा। उन्होंने हिम्मत व उत्साह दिया।

५-१०-३९ दिल्ली से वर्धा जाते हुए

बापू से बातचीत। जुगलकिशोरजी व घनश्यामदासजी से बातें। घनश्यामदासजी का आग्रह रहा कि मुझे रहने का मुख्य स्थान जयपुर बना लेना चाहिए। बापू की भी राय तो यही रही परंतु पहले तो स्वास्थ्य का प्रश्न है।

बापूजी वाइसराय से मिलकर आये। बापूजी सरदार, जवाहरलाल राजेन्द्रबाबू, मौलाना हमसाथी के साथ वर्धा रवाना।

६-१०-३९, रेल में

भेलसा में उठा। भोपाल में मुएब कुरेशी व उनकी पत्नी बापू से मिलने आये।

बापू व जवाहरलालजी से इलाज के बारे में बातचीत। बापू ने तो मक्खनबारी (मालिश) के बारे में मना किया। बड़ौदा के मालिशरामजी वाले तथा अन्य मसाज के लिए भी मना किया। डाक्टरों के याने ऐलोपैथिक इलाज के लिए भी इनकार किया।

उनकी राय डाक्टर मेहता का या दिल्लीवाले महादेवभाई के परिचित वैद्य आमनदस्वामी का इलाज करके देखने की है। जवाहरलालजी ने अपने भाई से जो अभी यूरोप से आये हैं और आजकल शायद पीलीभीत में हैं, पूछने को कहा।

बापू की वाइसराय से जो बात हुई, उससे कोई सतोषकारक परिणाम निकलने की आशा नहीं मालूम हुई। शाम को वर्धा पहुँचे।

७-१०-३९, वर्धा

वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह ९ से ११ तक। दोपहर को २ से ७॥ तक हुई। कई मेम्बरों से जयपुर-जेल के बाद पहली बार मिलना हुआ। प्रेमानुभूति। दोपहर की बैठक म बापू से युद्ध तथा वर्किंग कमेटी की नीति के बारे में चर्चा व खुलासा। बापू के जाने के बाद की चर्चा से मालूम हुआ कि बापू का समर्थन करनेवाले जयरामदास दौलतराम शंकरराव देव व प्रफुल्ल घोष ही रहे होंगे। राजेन्द्रबाबू भी थोड़े थे। सरदार, भूलाभाई वगैरा तो प्रस्ताव के पक्ष में थे माने बापू सरकार को पूरी मदद करें। बापू ने वाइसराय से जो कुछ कहा सरदार तो उसपर से दुखी भी मालूम हुए।

८-१०-३९, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ व १२ से २ तक हुई। दोपहर की वर्किंग कमेटी में बापू का खुलासा ठीक रहा। लड़ाई के समय अगर ब्रिटिश सरकार ने वर्किंग कमेटी की मांग मंजूर कर ली तो बापू का व्यवहार क्या रहेगा इस

बाद का खुलासा ठीक हुआ। बापू को चोट तो खूब पहुँच रही है, परंतु उपाय क्या !

देशी राज्य प्रजा-परिषद् की कार्यकारिणी जवाहरलालजी के सभापतित्व में हुई। वहाँ दस बजे रात तक बैठना पड़ा। जवाहरलाल का स्टेटमेंट ठीक हुआ। मेरे बारे में भी उन्होंने जिक्र किया कि वर्किंग कमेटी यह कार्य मुझे सौंपना चाहती है। बापू ने मुझे जब यह कहा था तो मैंने कहा कि मेरी अभी तैयारी नहीं है।

११-१०-३९, वर्धा

बापू के पास वल्लभभाई के साथ सेगांव गया। वल्लभभाई से जयपुर वगैरा की बातें।

बापू से स्टेट के मामलों पर वर्किंग कमेटी की थोड़ी चर्चा। बापू स्टेट पीपुल्स की स्टैंडिंग कमेटी के साथ एक घंटा बैठे।

१३-१०-३९, वर्धा-नागपुर

हीरालालजी शास्त्री सीतारामजी सेकसरिया सीतारामजी पोद्दार व मदालसा के साथ सेगांव जाकर बापू से मिला। बापू ने मेरे लिए कहा कि डॉक्टर लक्ष्मीपति की राय लेना बहुत जरूरी है। उन्हें भी दिखाया।

१४-१०-३९, वर्धा

बापू से मिला। जानकी व जयरामदास भी साथ थे। डॉक्टर लक्ष्मीपति की रिपोर्ट पढ़ी। डॉक्टर मेहता का ही इलाज कराने की बापू की राय रही।

१५-१०-३९, वर्धा

राजाजी दिल्ली से आये। उनके साथ बापूजी के पास सेगांव गया। जयरामदासजी भी साथ थे। राजाजी दिल्ली में वाइसराय से दो बार मिले। उसका हाल उन्होंने सुनाया। उन्हें कांग्रेस से झंझट न हो इस बारे में २५ टका उम्मीद है। आगे चलकर तो उन्हें संघर्ष आता दिखाई देता है। असेम्बली के प्रस्ताव में थोड़ी दुरुस्ती वाइसराय ने बताई। वह स्वीकार हुई। उसके अनुसार सरदार वल्लभभाई को व श्रीकृष्णसिंह, मुख्यमंत्री बिहार, को टेलीफोन कर दिये गए।

४-११-३९ पूना

रेडियो व अखबार की खबरें सुनीं। बापू व जिन्ना आज वाइसराय से फिर मिले। बापू वर्धा रवाना हुए। थोड़ी उम्मीद दिखाई देती है।

५-११-३९ पूना

आज १२ बजे वर्धा से दामोदर का तार आया। आशादेवी आर्यनायकम् का लड़का बब्बी कल शाम को एकाएक चल बसा। तार पढ़कर दुःख हुआ। चोट पहुंची। सरलाबहन यहीं थी। शाम को उसे भी समझाया। बापू का तार भी मिला। आशाबहन को तार दिये। पत्र भी लिखा। बापू को भी पत्र लिखा। मन में थोड़ा विचार चलता रहा।

९-१२-३९ पूना

राजकुमारीजी का लिखा हुआ बापू का पत्र आया—जयपुर की स्थिति के बारे में। तार भेजा।

पत्र का मसविदा तैयार हुआ।

१०-१२-३९ पूना

वर्धा से कमलनयन व हीरालालजी शास्त्री आये। बापू से जयपुर के बारे में उनकी जो बातचीत हुई, वह सुनी।

डायरी के अंश

१९४०

२४-१-४० वर्धा

राजकुमारी अमृतकौर से बातचीत। बापू का मौन।

बापू के पास गया। उन्हें स्वास्थ्य आदि के समाचार कहे। किशोरलालभाई, जयरामदास कृष्णदास परचुरे शास्त्री आर्यनायकम् वगैरा मित्रों से मिला और बातचीत की।

२६-१-४० वर्धा (स्वतंत्रता-दिन)

स्वतंत्रता-दिन के निमित्त ध्वज-वंदन। गांधी-चौक में महादेवभाई का व्याख्यान ठीक हुआ।

बापू से मिला। उन्हें जयपुर का तार बताया। वह वाइसराय से बात करेंगे। गांधी-सेवा-संघ के बारे में व सेगांव की जमीन ग्रामोद्योग-संघ आदि पर विचार-विनिमय।

किशोरलालभाई से गांधी-सेवा-संघ आदि के बारे में विचार-विनिमय। जयरामदास दौलतराम आर्यनायकम् आदि से मिलना व बातें।

२७-१-४० पूना

सरलाबहन का इलाज व क्लीनिक का खर्च फीस वगैरा के बारे में बापूजी जो फैसला करेंगे वह ठीक रहेगा।

२९-१-४० पूना

जयपुर के बारे में बापूजी को पत्र भेजा।

३१-१-४० पूना

हीरालालजी के नाम का जयपुर का पत्र पढ़ा। राजा ज्ञाननाथ का व्यवहार व वकीलों का नीतियुक्त जवाब पढ़कर दुःख व चिन्ता। जयपुर जाकर बैठना ही कर्तव्य दिखाई देता है। बापू को तार भेजा। डॉक्टर से बातचीत।

१-२-४ पूना

बापू का तार आया। उन्होंने अभी जयपुर जाने को मना किया है। चिन्ता छोड़कर इलाज करने को लिखा। फिर भी जयपुर जाने का विचार मन से निकाल नहीं सका। कल हीरालालजी आयंगे। बापू का पत्र भी आयगा। तभी अधिक सोचा जा सकेगा।

२-२ ४ पूना

हीरालालजी शास्त्री आये। उनके साथ जयपुर की स्थिति के बारे में देर तक विचार-विनिमय। पू बापू का पत्र पढ़ा। जयपुर अभी न जाने के बारे में उनकी आज्ञा का पालन करना पड़ेगा परन्तु उससे मन में संतोष नहीं हुआ।

६-२ ४ पूना

बापूजी की व वाइसराय की मुलाकात संतोषकारक नहीं हुई। हीरालालजी शास्त्री का तार आया कि मेरा पत्र व स्टेटमेंट बापू ने पसन्द किया।

२१-२-४ पूना

जयपुर के प्राइम मिनिस्टर को तार भेजा। बापूजी व घनश्यामदासजी को भी तार भेजे। जयपुर प्रजामंडल को भी।

२६ २-४ वर्धा

सेवाग्राम गया। राजकुमारी अमृतकौर व सुशीला से मिलकर वहां की स्थिति समझी। इनकी तो राय थी कि बापू यहां न आकर उधर ही आराम करते तो ठीक था।

२८ २-४ कलकत्ता

पू बा किशोरलालभाई, गोमतीबहन सुरेन्द्रजी व प्यारेलाल से सोमलका-हाउस में मिलकर आया। बा को आज ज्वर नहीं है। किशोरलाल-भाई को टी बी का संशय सुना। उससे चिन्ता हुई। उनसे गांधी-सेवा-संघ की तथा अन्य बातें की।

२९ २-४ पटना

पहुंचते ही बापू से मिलकर जयपुर की स्थिति पर बातचीत की। उनकी राय में भी मेरा जयपुर शीघ्र चला जाना ही ठीक रहेगा। कहा कि यहां की

स्थिति देखकर वहां रहना जरूरी मालूम दे तो वहां रहूं। रामगढ़ न जाऊं तो भी हर्ज नहीं। अपनेको आगे होकर तो लड़ाई शुरू नहीं करनी है। स्टेटवाले लड़ना ही चाहते हों तो कोई उपाय नहीं इत्यादि।

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११॥ व २ से ६ व ७ से ८॥ तक होती रही। सबों से मिलना हुआ। बापूजी व जवाहरलालजी के प्रस्ताव पर ठीक तौर से विचार-विनिमय हुआ। कल व आज की चर्चा के बाद जवाहरलालजी दूसरा प्रस्ताव बनाकर लाये।

१ ३-४ पटना

बापूजी से मिलकर थोड़ी बातें की।

वर्किंग कमेटी की बैठक ८॥ से ११ तक हुई। मुख्य प्रस्ताव एकमत से स्वीकार हुआ। पू. बापू को भी पूरा संतोष रहा। शाम को भी थोड़ी देर वर्किंग कमेटी की बैठक हुई।

बापूजी सीतारामजी हीरालालजी कलकत्ता गये।

१४ ३ ४ रामगढ़-कांग्रेस

सुबह निवृत्त होकर बापू के पास उनके थर्ड क्लास के डिब्बे में गया। बापू से बातें—

(१) अभ्यंकर-स्मारक नागपुर की इमारत के बारे में पूनमचंदजी रांका यह समझे थे कि आपने अभी न बनाने की राय दी है। मैंने उन्हें सब स्थिति समझाई, तो उन्होंने बनाने की इजाजत दे दी।

(२) जयपुर रहना हो सके तो वहां रहना ठीक रहेगा। बापू ने मेरे प्रश्न का खुलासा किया व देशी रियासतों के बारे में अपनी कल्पना कही। वाइसराय लार्ड लिनलिथगो से जयपुर के दीवान के लिए योग्य व्यक्ति की नियुक्ति के बारे में जो बातें हुईं वे उन्होंने कहीं। मैं जयपुर रहना निश्चित करूं तो उन्हें पसन्द है।

(३) कॉमर्स कालेज के प्रिंसिपल के लिए बापू बलरामी को लिखेंगे। बापू को शंकर (मनीम) शानेलकर ज्यादा पसन्द है। बापू समझते हैं कि यह ठीक काम कर सकेगा।

(४) महिला-आश्रम के लिए राजकुमारीजी को समझाने का बापू ने कहा।

(५) अपनी मनःस्थिति के बारे में मैंने कहा कि उसमें विशेष सुधार नहीं। खुलासेवार बातें बाद में करने का तय हुआ।

१५-३-४ रामगढ़-कांग्रेस

बापू के साथ घूमते हुए देर तक बातचीत। सरदार व भूलाभाई भी साथ थे। भूलाभाई ने दिल्ली का अनुभव व वहाँ का वातावरण बतलाया।

१६-३-४ रामगढ़-कांग्रेस

पू. बापू से सुबह घूमते समय एक घंटे बातचीत। उनके विचार जाने।

१७-३-४ रामगढ़

बापू के साथ घूमते हुए एक घंटा बातचीत। विचार-विनिमय।

१८-३-४ रामगढ़

कल वर्किंग कमेटी की चर्चा का मुझ पर जो असर हुआ वह बापू से घूमते समय कह दिया।

दोपहर को बापू की उपस्थिति में वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। बापू को जवाबदारी से मुक्त करने के प्रस्ताव का मौलाना सरदार, जवाहरलाल वगैरा ने विरोध किया। मैं मुक्त करने के पक्ष में था। प्रफुल्लबाबू, देव पट्टाभि राजाजी की राय भी मेरे साथ थी।

सब्जेक्ट कमेटी की बैठक हुई। मुख्य प्रस्ताव अच्छी तरह वाद विवाद व चर्चा होने के बाद भारी बहुमत से पास हुआ। सब्जेक्ट कमेटी में बापू का भाषण हुआ।

१९-३-४ रामगढ़

बापू के यहाँ २ से ३ बजे तक हिन्दी-प्रचार की कार्यकारिणी की बैठक हुई।

हैदराबाद-डेपुटेशन बापू से मिला। बोर व रामनाथ पोद्दार बापू से मिले। उन्होंने 'आनन्दीलाल पोद्दार आयुर्वेद विद्यालय' खोलने की इजाजत बापू से ले ली।

बापू के कहने से रात की ८ बजे की गाड़ी से वर्धा रवाना हुए। वर्षा जोरों की थी।

२२-१-४ वर्धा

बापू रामगढ़ से आये। उनके साथ बंगले तक पैदल आया। घुटने में थोड़ा दर्द तो था ही। बापू ने मां के कान पकड़े मां ने बापू के कान पकड़े। खूब हँसी-विनोद रहा।

२४-१-४ वर्धा

सेवाग्राम में बापू से मिलना व बातचीत। फातिमा इस्माइल ने कुरान की आयतें पढ़कर सुनाईं। रेहानाबहन ने भजन गाये।

२८-१-४ वर्धा

बापू से सेवाग्राम जाकर मिल आया। जयपुर व बम्बई की चर्चा। दोपहर को घनश्यामदासजी व राजाजी बापू के पास गये।

३०-१-४ वर्धा

सेगांव जाकर बापू से जयपुर के बारे में खुलासेवार बातचीत व विचार विनिमय। व्यक्तिगत सत्याग्रह की जरूरत हो तो करने की इजाजत।

तारा मशरूवाला-संबंधी चर्चा। किशोरलालभाई, गोमतीबहन भी मौजूद थीं। मैंने अपने मन की बात कही। बापू के साथ घूमने में और लोग भी साथ हो गए थे इसलिए साफ बातें न हो सकीं। मन में विचार रहा।

प्रार्थना के बाद बापू का भाषण खादी-यात्रा में हुआ।

२४-४-४ जयपुर

महाराजसाहब जयपुर से ११ बजे मिलना हुआ। पत्रों के सेंसर, पुलिस व व्यवहार के बारे में बातें हुईं। ज्ञाननाथजी ने बजट बराबर नहीं निकाला। पंचायत-रिपोर्ट आतातीन वगैरा पर मुकदमे वापसी जोधपुर महाराजाजी को जलसे में बुलाना आदि के विषयों पर अपने मन के भाव स्पष्ट तौर से कहे। महाराजसाहब ने नोट करा लिये। ता. १ को २ बजे फिर मिलने पर इनके बारे में जवाब देने को कहा। राजा ज्ञाननाथजी के साथ पटरी नहीं बैठती दिखाई देती यह भी मैंने कह दिया।

२-५-४ जयपुर

१२॥ से १॥ तक महाराजसाहब से मिलना हुआ। मैंने नोट्स लिख

कर दे दिये। उन्होंने पढ़ लिये। उसपर ठीक से खुलासा किया गया। नीचे लिखे प्रश्नों पर चर्चा हुई—

१ पत्र अमीतक सेंसर होते हैं। आज से नहीं होंगे ऐसा रेसिडेंट कहते हैं—ऐसा प्राइम मिनिस्टर ने कहा। उनसे वे बात कर लेंगे।

२ प्राइम मिनिस्टर से जो वाद-विवाद चल रहा है—उसे आप निपट लेंगे।

३ मातादीन वगैरा पर जो झूठे मुकदमे चल रहे हैं, उनकी वे जांच करेंगे। प्राइम मिनिस्टर ने कहा कि कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए।

४ *प्राइम मिनिस्टर की दमन-नीति कई उदाहरण लेकर बताई।* महाराजासाहब ने नोट कर लिया। उनसे बात करेंगे।

५ अकाल-रिपोर्ट मंजूर होना जरूरी है। इसे नोट कर लिया। इस संबंध में सहानुभूति दिखाई।

६ खादी-खरीद में सहायता देना। प्राइम मिनिस्टर से बात हो गई है। सब डिपार्टमेंटों में सूचना भेजी जायगी—जयपुर की बनी हुई खादी महंगी होगी तो भी।

७ जोधपुर-समझौते के संबंध में अभी जवाब नहीं आया।

८ महात्माजी को बुलाने के संबंध में और उनको स्टेट का गेस्ट बनाने में पोलिटिकल डिपार्टमेंट को आपत्ति है।

९ रामराजाजी को छोड़कर भेजने के बारे में नोट कर लिया। रेसिडेंट से बात करके जवाब देंगे।

११-९-४० वर्धा

सेवाग्राम में भोजन करते समय बापू को जयपुर की सारी स्थिति समझाई। आखिर में जमनालालजी की सलाह से डॉ. कैलाशनाथ काटजू व रामेश्वरी नेहरू को बापू ने तार भेजा। महादेवभाई को भेजने की भी बातचीत हुई। शाम को वापस वर्धा आया। दिन-भर वहीं रहा। आराम किया।

१२-९-४ वर्धा

बापू से सेवाग्राम जाकर मिल आया। जयपुर के लिए सन्देश लाया

डॉ. काटजू का जयपुर-मर्यादित लोगों का तार आया। बाबूजी राधाकिसन आदि से खादी-कार्य खासकर राजपूताना की स्थिति समझी।

१५-५-४ , जुहू-बम्बई

घूमते समय बालचन्द हीराचन्द व सर होमी मोदी से बातचीत हुई। मोदी से गांधीजी का व मेरा सम्बन्ध कैसे बढ़ा उस बारे में भी बातें हुईं।

बंबई खादी-भंडार में सरदार से मिलना हुआ।

२०-५-४ जुहू

डॉ. डेमली ने दोनों कान साफ किये। तीन बार के २) रुपये फीस ली। मैंने उन्हें कहा कि हिन्दुस्तान के रचनात्मक कार्य में आप लोगों को महात्माजी की सहायता करनी चाहिए।

५-६ ४ जुहू

रामेश्वर के साथ किशोरलालभाई से मिला। बापू के उपवास की बात उन्होंने कही। राधाबहन का पत्र किसीने फाड़कर फेंक दिया। गांधी-सेवा-संघ की चर्चा। आश्रम का तमभुल मट्ट मिला।

१५-६ ४ वर्धा

वर्धा के कॉमर्स कालेज के बारे में आज का प्रायः बहुत-सा समय विचार-विनिमय में गया। टंडनजी बापूजी जाजूजी आदि से अलग भी विचार-विनिमय हुआ।

सेवाग्राम गया। बापू को सर पुरुषोत्तमदास की स्कीम दी। थोड़ी बातें हुईं। जाजूजी साथ में थे। वहां से जल्दी ही लौट आया।

१७-६ ४ वर्धा

जवाहरलालजी स्वरूप (विजयालक्ष्मी पंडित) राजेन्द्रबाबू आदि १८ लोग आये। बापूजी २ बजे आये।

वर्किंग कमेटी ३॥ से ८ तक हुई। बापू आदि के साथ पैदल दो मील घूमना हुआ। बापू कांग्रेस से उसके सलाहकार के रूप में अलग होना चाहते हैं।

१८ ६-४ वर्धा

वर्किंग कमेटी ७॥ से १ ॥ और २॥ से ७ तक होती रही। बापूजी २॥ से ७ बजे तक रहे। सुबह राजाजी से बिना कारण बोलचाल हो गई। शाम को बापू ने अपने विचार कहे।

बापू के साथ १॥ मील पैदल घूमना हुआ। वर्ड-सिंडिकेट के बारे में बातचीत। उन्होंने कहा कि इसमें नैतिक दोष नहीं है। स्वरूप पंडित भी साथ थीं।

१९ ६-४ वर्धा

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से शुरू हुई। शाम को २॥ बजे से। पू बापूजी की इच्छा के अनुसार उन्हें मुक्त करने का निश्चय।

२ ६-४ वर्धा

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से १ ॥ व दोपहर को २॥ से ७ बजे तक होती रही। मुख्य प्रस्ताव पर महत्व की चर्चा व विचार-विनिमय। काफी गंभीर स्थिति पैदा हुई। आज चरखा नहीं चला।

२१-६ ४ वर्धा

बापूजी का गांधी-सेवा-संघ व चरखा-संघ की बैठक में ७ से ९ बजे तक व्याख्यान हुआ।

वर्किंग कमेटी ९ से १ ॥। तक हुई। मैंने कहा कि इस समय हम लोगों का अलग होना ठीक नहीं। बापू की योजना जब अमल में आयगी तब जिसकी जितनी तैयारी हो, वह उसमें शामिल हो जाय। मैंने प्रस्ताव में कोई भाग नहीं लिया। शाम को बापूजी बैठक में आये। मुख्य प्रस्ताव पास हुआ। हिन्दू-मुस्लिम-एकता की चर्चा। मौलाना से जो बातचीत हुई, वह कही।

२२-६ ४ वर्धा

बापू ने चरखा-संघ व गांधी-सेवा-संघ की बैठक में दो घंटे से ज्यादा देर तक अपने विचार रखे। बाद में चर्चा होती रही। मैंने भी वर्किंग कमेटी की ओर से थोड़ा खुलासा किया। मेरी समझ से वह महत्व का था।

राष्ट्रभाषा हिन्दी-प्रचार-सभा की बैठक हुई। बापूजी राजेन्द्रबाबू काकासाहब आदि उपस्थित थे। मैंने कहा कि काकासाहब न तो अलग संस्था बनाते हैं और न ही बनी हुई यहां की प्रोसीजर से सम्बन्ध रखते हैं। इससे आगे चलकर पक्षपात या झगड़ा का डर है। बापू वगैरा ने कहा कि नाम (हिन्दुस्तानी) के बारे में कोई झगड़ा नहीं होनेवाला है।

२६-६-४ वर्धा

बैरिस्टर सईद, होम-मिनिस्टर इन्दौर व डॉ. काटजू के साथ सेवा

शाम में बापू से मिलना हुआ। बातचीत। वापस आते समय मोटर कीचड़ में फंस गई। सबको दो मील के करीब पैदल चलना पड़ा।

२७-६-४ वर्धा

पू. बापूजी बैरिस्टर रशीद, महादेवभाई, कनु, प्यारेलाल व सुशीला दिल्ली व शिमला को रवाना हुए। बापू से बातचीत।

९-७-४ दिल्ली

बिड़ला-हाउस में ठहरे। बापू को बताया कि गोविन्दराम सेकसरिया से कॉमर्स कालेज के लिए सवा लाख मिल गया। पचीस हजार और मिल जायगा उन्हें खुशी हुई। घनश्यामदासजी को आश्चर्य हुआ व खुशी भी हुई।

१-७-४ नई दिल्ली

बापू के साथ घूमना हुआ। स्टेट पीपुल्स कान्फ्रेंस में जो नये मेम्बर लिये वे उन्हें बताये। सेक्रेटरी के बारे में बातचीत। बलवंतराय मेहता को तो नाममात्र ही रखना है। बापू ने दामोदर का नाम भी सुझाया। देर तक चर्चा होती रही। सरदार भी चर्चा में शामिल थे। ओरियंटल बीमा कंपनी व खादी-सहायता तथा चुनाव आदि के बारे में बातें हुईं। भूलाभाई व खादी-सहायता के बारे में बापू बात करेंगे।

पू. मालवीयजी महाराज को बहुत समय बाद आज देखा। उनके पास आध घंटा बैठा।

वर्किंग कमेटी सुबह इन्फार्मल ९ से १ ॥ व दोपहर को २ से ५॥ तक होती रही। वाइसराय व बापू की मुलाकात का हाल उसपर तथा वर्तमान स्थिति पर विचार-विनिमय।

प्रतापनारायणजी अग्रवाल (आगरावाले) मिलने आये। उमा का विवाह इसी ता. ११ को करने को तैयार। बापू से उनको मिलाया। उन्होंने भी कहा कि कर दिया जाय।

५-७-४ नई दिल्ली

वर्किंग कमेटी ८॥ से १ ॥ और २ से ७ तक हुई। बापू, राजाजी व जवाहरलाल के विचारों पर विचार-विनिमय होता रहा। निश्चित फैसला नहीं हो सका।

६-७-४० नई दिल्ली

सुबह बापू के साथ घूमा। वर्किंग कमेटी ८॥ से १ ॥ व २ से ६॥ तक। राजाजी के प्रस्ताव पर खूब विचार-विनिमय। मेम्बर तथा निमंत्रित सज्जनों की राय ली गई।

आज वर्धा जाने के लिए इजाजत तो मिल गई, परन्तु मेरे जाने के बारे में पू० बापू की इच्छा कम थी। जवाहरलालजी व राजाजी की तो साफ राय थी कि मैं न जाऊं। सामान स्टेशन से वापस मंगवाना पड़ा।

७-७-४० नई दिल्ली

बापू के साथ सुबह घूमना हुआ। वर्किंग कमेटी व राजाजी के प्रस्ताव के बारे में विचार-विनिमय। बाद में सरदार भी आ गए थे।

वर्किंग कमेटी की मीटिंग में कल राजाजी के प्रस्ताव[1] के पक्ष में ये लोग थे—राजाजी राजेन्द्रबाबू डॉ॰ घोष डॉ॰ महमूद बैरिस्टर आसफ-अली सरोजिनी नायडू, भूलाभाई और मैं।

विरोध में थे—सरदार वल्लभभाई, जवाहरलाल शंकरराव देव खानसाहब कृपलानी।

गोविन्दवल्लभ पंत गैरहाज़िर थे किन्तु वह राजाजी के पक्ष में थे। मौलाना राजाजी के पक्ष में विचार रखते थे।

निमंत्रित लोगों में—डॉ॰ पट्टाभि राजाजी के पक्ष में थे और अच्युतराव व नरेन्द्रदेव विरोध में थे।

आज की मीटिंग में राजाजी के प्रस्ताव के पक्ष में—सरदार वल्लभभाई, राजाजी भूलाभाई, आसफअली डॉ॰ महमूद और मैं।

---

[1] प्रस्ताव निम्न प्रकार है—

"The Working Committee have noted the serious happenings which have called forth fresh appeals to bring about a solution of the deadlock in the Indian political situation and in view of the desirability of clarifying the Congress position, they have earnestly examined the whole situation once again in the light of latest developments in world affairs."

विरोध में—जवाहरलालजी खानसाहब और मौलाना।

तटस्थ—राजेन्द्रबाबू कृपलानी, शंकरराव देव डॉ. घोष सरोजिनी। निर्णयितों में—पट्टाभि राजाजी के पक्ष में नरेन्द्रदेव व अच्युत पटवर्धन विरुद्ध। पू. मालवीयजी राजाजी के पक्ष में राय रखते थे।

ग्रांड ट्रंक से वर्धा में बापू के डिब्बे में वर्धा के लिए रवाना।

८-७-४ वर्धा

वर्धा पहुंचे। बापू का मौन वर्धा में खुला। स्टेशन से बंगले तक बापू के साथ पैदल। बापू ने मां के कान पकड़े मां ने बापू के दोनों कान पकड़े। विनोद।

१२-७-४ वर्धा

सेवाग्राम म रात को सियार ने बंगाली मुन्नालाल बाबला व पुलिस सिपाहियों को बड़ी तरह से काट खाया। उनको अस्पताल में लाकर इंजेक्शन दिलवाया।

"The Working Committee are more than ever convinced that the acknowledgment by Great Britain of the complete Independence of India is the only solution of the problems facing both India and Britain and are therefore of opinion that such an unequivocal declaration should be immediately made and that as an immediate step in giving effect to it, a provisional National Government should be constituted at the Centre which though formed as a transitory measure should be such as to command the confidence of all the elected elements in the Central Legislature and secure the closest cooperation of the Responsible Governments in the provinces.

The Working Committee are of opinion that unless the aforesaid declaration is made and a National Government accordingly formed at the Centre without delay, all efforts at organising the material and moral resources of the country for Defence cannot in any sense be voluntary or from free country and will therefore be ineffective. The Working Committee declare that if these measures are adopted it will enable the Congress to throw in its full weight in the efforts for the effective organisation of the Defence of the country.

१३-७-४ वर्धा

उमा का विवाह-कार्य ७।। बजे शुरू हुआ। वर्षा हो रही थी तो भी उपस्थिति ठीक थी। मंडप ठीक बना था। पू. बापूजी व बा ने आकर आशीर्वाद दिया। उमा व राजनारायण के लिए यह बड़े भाग्य व सुख की बात थी।

१४-७-४ वर्धा

सेवाग्राम गया। बापू से बातें—खासकर खुरशीद पचमार, मारवाड़ी के बारे में।

विनोबा से बातें। प्रार्थना।

१५-७-४ वर्धा

खुरशीद बहन के साथ घूमने गया। उनसे कांग्रेस फ्रंटियर, बापू, अहिंसा व उनके खुद के सम्बन्ध में बातचीत।

१८-७-४ वर्धा

सेवाग्राम गया। लक्ष्मणप्रसादजी वगैरा साथ में थे। बापू से उनको मिलाया। बापू से बातचीत। थोड़ा खुरशीदबहन आने का प्रोग्राम अपनी मनःस्थिति वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव आसपास काम का खर्च आदि विषयों पर देर तक विचार-विनिमय। बा आशाबहन व सरलाबहन से भी मिलना हुआ।

२८-७-४ पूना

ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी ८।। से ११। तक व २ से ८।। तक हुई। आज काम समाप्त हुआ। दिल्लीवाले प्रस्ताव पर मत लिये गए। पक्ष में ९५, विरोध में ४७। तटस्थ नहीं गिने गए। कुल मिलाकर उपस्थिति १९ के करीब होनी चाहिए। प्रस्ताव पास तो हुआ परन्तु मन में समाधान नहीं मिला। जवाहरलाल का भाषण ठीक हुआ। राजाजी का भाषण व जवाब तो ठीक था, परन्तु बापू के बारे में अव्यावहारिक आदि होने की जो समालोचना इन्होंने व सरदार ने की वह थोड़ी बुरी मालूम दी। क्योंकि इन लोगों के मुंह से इन बीस वर्षों में पहली बार ही इस प्रकार के वाक्य सुनने को मिले। वैसे मेरी भी राय इनके साथ ही थी परन्तु वह तो कमजोरी आदि के कारणों को लेकर थी।

६-८-४ जुहू

बापू से मिला। काकासाहब व श्रीमन् साथ में थे। राष्ट्रभाषा हिन्दी के स्वरूप प्रचार और व्यवस्था आदि के बारे में देर तक बातचीत व विचार-विनिमय।

७-८-४ वर्धा

चि. मुन्नी (सुमन) का आज जन्मदिन था। मकान पर (बच्छराज भवन में) बालकों के खेल-कूद हुए। पू. बा वगैरा आये थे। बाद में बा व दुर्गाबहन को सेवाग्राम पहुंचाया।

८-८-४ वर्धा

सेवाग्राम गया। जानकीदेवी व शान्ताबाई साथ में। बापू से वाइसराय के पत्र और स्टेटमेंट पर विचार-विनिमय। राजेन्द्रबाबू को जयपुर के जाने के बारे में भी।

मीराबहन व पृथ्वीसिंह के बारे में बापू ने कहा कि यह सम्बन्ध कराना हम सबोंका धर्म हो गया है। अन्य बातें।

१०-८-४ वर्धा

सेवाग्राम गया। बापू से खादी-योजना के बारे में जो शान्तिकुमार व गज्जाभाई पटेल कर रहे हैं बात की। वे एक अपील तैयार करेंगे। उस पर मेरी सही भी लेनेवाले हैं।

बापू के साथ वर्किंग कमेटी जयपुर, मीराबहन आसन्ती वगैरा के बारे में बातचीत।

हैदराबादवालों की बापू से जो बातचीत हुई वह सुनी व समझी।

११-८-४ वर्धा

मीराबहन मिलने आई। पृथ्वीसिंह के साथ अपना विवाह-सम्बन्ध करने का निश्चय बताया। न हुआ तो मृत्यु वगैरा की बात कही।

सेवाग्राम गया। बापूजी से बातें। वर्किंग कमेटी की बैठक होने के बाद जयपुर जाने का निश्चय। पृथ्वीसिंह व मीराबहन के बारे मे उन्होंने बताया।

१४-८-४ वर्धा

पू. बापूजी सेवाग्राम से आये। बापू रास्ताने किशोरलालभाई, राजेन्द्र बाबू आदि से मिले। देर तक ठहरे।

१५-८-४ वर्धा

बालासाहब खेर, उनकी पत्नी बहू व पूनावाली पार्टी से मिलना हुआ। उनकी व्यवस्था। साथ में भोजन।

पू. बापूजी सेवाग्राम से वर्धा आये। ३ बजे से ५ बजे तक पूना के मित्रों के प्रश्नों के उत्तर उन्होंने दिये। प्रश्न विशेषतया अहिंसा को लेकर थे।

१६-८-४ वर्धा

सेवाग्राम गया। बापू को पृथ्वीसिंह की बातचीत का सारांश सुनाया। भाभासाहब व सरलाबहन दीक्षित के साथ की बातों का हाल भी कहा।

१८-८-४ वर्धा

सुबह घूमना हुआ। जानकीदेवी साथ में थी।

पृथ्वीसिंह ने उनकी व बापूजी की जो बातचीत हुई वह सारांश में कही। मैंने उन्हें अभी बापू के पास रहने के बारे में समझाया।

किशोरलालभाई से मिला। उनसे पृथ्वीसिंह-संबंधी आदि बातें।

सरदार, भूलाभाई, राजाजी, सरोजिनी, कृपलानी, सुचेता, देव, पट्टाभि वगैरा सुबह की गाड़ी से आये और जवाहरलाल व महमूद ४॥ की गाड़ी से। वर्किंग कमेटी २ बजे से शुरू हुई। बापूजी सेवाग्राम से आये। देर ७॥ बजे तक बातचीत व विचार-विनिमय होता रहा।

१९-८-४ वर्धा

सुबह पैदल घूमना हुआ। पृथ्वीसिंह से बातचीत।

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ व २ से ७ तक हुई। वाइसराय को पत्र भेज दिया गया। बापूजी के पास से उसे मैंने ठीक करवा लिया था।

२०-८-४ वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ और २। से ७॥ तक हुई। दोपहर की मीटिंग में बापूजी आये। ठीक बातचीत व खुलासा।

बापूजी के साथ सेवाग्राम रेलवे-स्टेशन से करीब ढाई मील तक पैदल गया। बापूजी से वर्तमान वर्किंग कमेटी व कांग्रेस-स्थिति पर बातचीत विचार-विनिमय। अहिंसक दल के बारे में मैंने अपने विचार बताये। सेना-रहित राज्य के बारे में बातें हुईं।

२१-८-४ वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ व २ से ५॥ तक हुई। बापू दोपहर को १। बजे के करीब आये व ५ बजे के करीब सेवाग्राम चले गए। बापू का मसविदा पसन्द नहीं हुआ। मुझे लगा कि उसमें थोड़ा फर्क करना संभव होता तो ज्यादा ठीक मालूम देता।

२२-८-४ वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११॥ तक हुई। अंत में मुख्य प्रस्ताव मंजूर हुआ। वर्तमान स्थितिवाले प्रस्ताव पर अच्छी तरह विचार-विनिमय।

शाम को २। से ६। बापू आये। आज बातचीत के सिलसिले में उन्होंने संकोच व दुःखी हृदय से अपनी अनोखा विचार व भावी योजना (उपवास के बारे में) कहा। उसे सुनकर सब-के-सब चकित व किंकर्तव्य-विमूढ़ बन गए। मन में चिंता व विचार शुरू हुए।

सुशीलाबहन से मिलकर सेवाग्राम में बापू से खासकर महादेव भाई से बापू की भयंकर योजना समझी। सरदार व राजेन्द्रबाबू से बातचीत। चिन्ता में ही सोया।

२३-८-४ वर्धा

मौलाना सरदार, जवाहर व मैं सेवाग्राम गये। बापू से बातचीत। चित्त को थोड़ा समाधान मालूम हुआ।

पवनार गया। विनोबा से मिलकर उन्हें स्थिति कही। शाम को विनोबा का बंगले आने का निश्चय। उनकी मदद मिलेगी।

स्टेशन पर सर बद्रीदासजी गोयनका से मिला। अम्बालालभाई नहीं आये। आसफअली दिल्ली गये।

नेशनल प्लानिंग की बैठक बंगले पर हुई। बापू आये।

बापू ने किशोरलालभाई के घर विनोबा, किशोरलालभाई, जाजूजी काकासाहब आदि से अपनी भावी योजना (उपवास) के बारे में विचार विनिमय किया। विनोबा की राय ठीक पड़ी। पर वर्किंग कमेटी की मंजूरी से ही बापू यह विकट मार्ग स्वीकार कर सकते हैं, यह तय हुआ। बापू ने वर्किंग कमेटी के आगे अपने विचार रखे। वर्किंग कमेटी की सर्वानुमति से प्रेसीडेंट

मौलानासाहब ने बापू को पत्र लिखकर दिया। उसमें प्रार्थना की गई थी कि यह मार्ग स्वीकार न करें। बापू ने मंजूर किया।

२४-८-४ वर्धा

सुबह मौलाना कलकत्ते जाने की तैयारी करके बापू से बिदा लेने सेवाग्राम गये। मैं भी साथ में था। बापू से बातचीत होती रही। बातचीत में ऐसा लगा कि बापू चाहते हैं कि और अधिक बातचीत होना जरूरी है इसलिए मौलाना ने कलकत्ते जाना मुल्तवी कर दिया। मेरे कहने पर बापू ने एक मसविदा बनाकर दिया।

वर्धा आकर सरदार, राजेन्द्रबाबू भूलाभाई को वह दिखाया गया। मौलाना ने उसे जवाहरलाल को दिखाया। वह स्वीकार नहीं हो सका। दोपहर को मौलाना जवाहरलाल राजाजी सरदार, भूलाभाई, मैं डा महमूद वगैरा फिर बापू से मिलने सेवाग्राम गये। बातचीत के सिलसिले में यह निश्चय हुआ कि मौलाना जवाहरलाल और सरदार बापू से मिलकर नया मसविदा बनावें। वर्किंग कमेटी के बाकी के मेम्बर जो वर्धा में रह सकें वे उसमें भाग लें। इसलिए विचार-विनिमय शुरू हुआ। राजाजी भूलाभाई, कृपलानी तो आज चले गए।

२५-८-४ वर्धा

बापू सेवाग्राम से ९। बजे करीब आये। सुबह ११ बजे तक व दोपहर को २॥ से रात के ९ बजे तक बापू के साथ रहे। मौलाना आजाद पं जवाहरलाल सरदार वल्लभभाई की खासतौर से व राजेन्द्रबाबू सरोजनी नायडू, डॉ सैयद महमूद व मेरी बातचीत बापू से हुई। आखिर में संतोषकारक परिणाम आया। बापू को संतोष हुआ। यह जानकर सुख मिला।

बापू व मौलाना जो निर्णय पर आये उस बारे में सरदार से थोड़ी बातचीत हुई।

सरदार व जवाहरलाल रात की ऐक्सप्रेस से बम्बई रवाना हुए।

२६-८-४ वर्धा

नागपुर-मेल से नागपुर तक राजेन्द्रबाबू और मैं मौलाना आजाद के साथ सैकंड में बैठे।

बाद में राजेन्द्रबाबू भी वर्धा में ही रहे। उनकी तबीयत ठीक थी। मौलाना आजाद ने भी राजेन्द्रबाबू को एक माह तक के लिए इधर रहने की इजाजत दे दी। कल जो बापू (महात्माजी) से निर्णय हुआ उसपर मौलाना ने संतोष प्रकट किया।

२८-१ ४ नई दिल्ली

घनश्यामदासजी ने शिमला, बम्बई, देवदास गांधी को फोन किये। मेरे बारे में भी। रात को शिमला का हाल महादेवभाई ने कहा।

बापू का तार आया। शिमले में ठंड बहुत ज्यादा है ऐसा लिखा। दिल्ली ठहरने की इच्छा भी लिखी।

१ १-४ नई दिल्ली

शिमला से फोन द्वारा मालूम हुआ कि वाइसराय से फैसला नहीं हुआ। लड़ाई होगी। बापू मोटर से दिल्ली आ रहे हैं। भूलाभाई व जालानजी से बातें। जालानजी ने जयपुर जाना स्वीकार कर लिया।

१ १ ४ नई दिल्ली

सुबह करीब ५ बजे बापूजी मोटर द्वारा शिमला से दिल्ली पहुंचे। साथ में राजकुमारी व महादेवभाई थे।

बापूजी के साथ घूमना। बापूजी ने शिमला की बातचीत का सारांश कहा। बापूजी ने वाइसराय से जयपुर के बारे में जो बातें कहीं वे सुनीं। वाइसराय का खुलासा भी सुना। मुझे जयपुर-स्थिति सुलझाने में ही विशेष समय लगाने की सलाह दी। राजा ज्ञाननाथ चिढ़कर छोड़ जावें तो ठीक ही है। राजेन्द्रबाबू को सीकर में ही आराम लेने देना चाहिए। वर्किंग कमेटी की बैठक में न आवें तो कोई हर्ज नहीं होगा। जो खादी-रकम बम्बई में जमा हुई उसमें राजस्थान की रकम राजपूताना के लिए इस्तेमाल करने का मैंने कहा। इसे उन्होंने सुन लिया उसका विरोध नहीं किया। यह रकम अन्दाजन एक लाख तक होगी। खादी प्रोग्राम की थोड़ी रूपरेखा समझी। आसाम का दौरा कायम रखने का कहा। वर्धा राष्ट्रभाषा प्रचार की बैठक पर भी न जाय तो हर्ज नहीं ऐसा कहा।

बापू के साथ हरिजन-आश्रम गया। वहां आधा घंटा चरखा-कताई हुई।

२ १०-४ जयपुर-सीकर

घनश्यामदासजी बिड़ला की लिखी हुई 'बापू' पुस्तक पढ़ी। भूमिका महादेवभाई की लिखी हुई है।

सीकर पहुंच तांगा किराये पर करके कमरे पहुंचा। प्रोग्राम वगैरा के संबंध में पू राजेन्द्रबाबू से बातें।

बापू का जन्म-दिवस मनाया गया। राजेन्द्रबाबू बोले। देर तक चरखा चलाया।

११ १०-४ वर्धा

वकिंग कमेटी २ बजे से शुरू हुई। पू बापू आये। तेरह मेम्बर हाजिर थे केवल राजेन्द्रबाबू व डॉ महमूद गैरहाजिर थे। बापू ने वाइसराय से हुई बातचीत का हाल कहा व अपनी व्यक्तिगत सत्याग्रह की योजना बताई। विनोबा को प्रथम सत्याग्रही की उनकी कल्पना है ऐसा कहा।

बापू के साथ सेवाग्राम गया। मोटर में बापू से जयपुर की स्थिति कही।

१२ १०-४ वर्धा

वकिंग कमेटी सुबह ८ से १ ॥। तक व शाम के २ से ७ बजे तक हुई। दोपहर को बापू आये। व्यक्तिगत सत्याग्रह का खुलासा। चर्चा में ही अधिक समय गया।

बापू को पहुंचाने सेवाग्राम गया। रास्ते में बातचीत। पानी बहुत जोर का आया। मोटर गीली हो गई। वापस आने पर कपड़े बदलने पड़े।

जवाहरलाल से देर तक खानगी व सार्वजनिक बातें बन्द कमरे में होती रहीं।

१३-१०-४ वर्धा

घूमने गया। वकिंग कमेटी की मीटिंग सुबह ८॥ से १ ॥ बजे तक व शाम को २ बजे से ५॥ बजे तक होती रही। पू बापू ने शंकाओं का समाधान किया—जितना उनसे किए संभव था उतना। मौलाना व जवाहरलाल का पूरा समाधान नहीं हुआ। डिसिप्लिन (अनुशासन) पालन करने का उनका निश्चय।

बापू के साथ पवनार गया। विनोबा से बातचीत। प्रथम सत्याग्रही के नाते विचार-विनिमय। विनोबा अपना बयान तैयार करेंगे। [illegible]

आये राजेन्द्रबाबू भी वर्धा में ही रहे। उनकी तबीयत ठीक रही। मौलाना आजाद ने भी राजेन्द्रबाबू को एक माह तक के लिए इधर रहने की इजाजत दे दी। कल को बापू (महात्माजी) से निर्णय हुआ उसपर मौलाना ने संतोष प्रकट किया।

२८-९-४ नई दिल्ली

घनश्यामदासजी ने शिमला, बम्बई, देवदास गांधी को फोन किये। मेरे बारे में भी। रात को शिमला का हाल महादेवभाई ने कहा।

बापू का तार आया। शिमले में ठंड बहुत ज्यादा है ऐसा लिखा। दिल्ली ठहरने की इच्छा भी लिखी।

३०-९-४ नई दिल्ली

शिमला से फोन द्वारा मालूम हुआ कि वाइसराय से फैसला नहीं हुआ। लड़ाई होगी। बापू मोटर से दिल्ली आ रहे हैं। भूलाभाई व आसफअली से बातें। आसफअली ने जयपुर जाना स्वीकार कर लिया।

१-१०-४ नई दिल्ली

सुबह करीब ५ बजे बापूजी मोटर द्वारा शिमला से दिल्ली पहुंचे। साथ में राजकुमारी व महादेवभाई थे।

बापूजी के साथ घूमना। बापूजी ने शिमला की बातचीत का सारांश कहा। बापूजी ने वाइसराय से जयपुर के बारे में जो बातें कहीं वे सुनीं। वाइसराय का खुलासा भी सुना। मुझे जयपुर-स्थिति सुलझाने में ही विशेष समय लगाने की सलाह दी। राजा ज्ञाननाथ लिखकर जेल आदि भेजें तो ठीक ही है। राजेन्द्रबाबू को सीकर में ही आराम लेने देना चाहिए। वर्किंग कमेटी की बैठक में न आवें तो कोई हर्ज नहीं होगा। जो सारी रकम बम्बई में जमा हुई उसमें राजस्थान की रकम राजपूताना के लिए ईयरमार्क करने का मैंने कहा। उस उन्होंने सुन लिया उसका विरोध नहीं किया। यह रकम अन्दाजन एक लाख तक होगी। भावी प्रोग्राम की थोड़ी रूपरेखा समझी। आसाम का दौरा कायम रखने का कहा। वर्धा राष्ट्रभाषा-प्रचार की बैठक पर भी न आयें तो हर्ज नहीं ऐसा कहा।

बापू के साथ हरिजन-आश्रम गया। वहां आधा घंटा चरखा-चर्चा हुई।

विनोबा का मुकदमा हुआ। मैजिस्ट्रेट श्री कुंठे ने तीन अपराधों पर तीन-तीन महीने की सादी सजा दी। तीनों सजाएं साथ-साथ चलेंगी।

४-११४ नागपुर से वर्धा

नागपुर में ग्रांड ट्रंक बदलकर नागपुर-मेल में मौलानासाहब के साथ बैठा। बापू के उपवास की बात नागपुर में जोरों से चल रही थी।

सेवाग्राम जाकर बापू से मिला। जयपुर की स्थिति का हाल व उनके उपवास वगैरा की थोड़ी बातें कीं।

आज तारीख के अनुसार मेरा जन्मदिन था। ५१ वर्ष पूरे हो गए। *बापू को प्रणाम किया।*

सुबह मौलाना के साथ थोड़ी दूर घूमा। वह सेवाग्राम गये।

५-११४ वर्धा

वकिंग कमेटी की सुबह खानगी में आपस में चर्चा। राजेन्द्रबाबू व कृपलानी ११ बजे आये। वर्को की मीटिंग २ बजे से हुई। पू बापू भी आये। ठीक तौर से चर्चा व विचार-विनिमय हुआ। आसफअली व सरदार में झड़प हो गई। बुरा मालूम दिया। असेम्बली में बजट का विरोध करने के लिए जाने का निश्चय हुआ। बापू ने अपना प्रोग्राम कल तय करने को कहा।

६-११४ वर्धा

बापू ने फिलहाल तो उपवास करने की बात छोड़ दी—किशोर लालभाई ने यह जानकारी दी। मौलाना व पंतजी से बातचीत। वर्किंग कमेटी की बैठक सुबह व शाम को हुई। बापू ने वर्किंग कमेटी के सदस्यों, ऑल इंडिया कमेटी के सदस्यों व असेम्बली के मेम्बरों को कुछ शर्तों के साथ इजाजत देने का विचार प्रकट किया।

७-११-४ वर्धा

सेवाग्राम—डॉ सौन्दरम् (ब्राह्मण) का श्री जी रामचन्द्रम् (नायर) त्रावनकोरवाले के साथ विवाह हुआ। सौन्दरम् के माता-पिता की आज्ञा नहीं मिली थी। उनका आशीर्वाद भी नहीं मिला था। पू बापूजी व बा ने कन्यादान किया। श्री परचुरेशास्त्री ने विवाह करवाया। राज

गोपालाचारी और मीठाभाई मौजूद थे। माता-पिता का आशीर्वाद न मिला यह देखकर बुरा लगता रहा।

वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह व शाम को होकर आज समाप्त हुई। बापू ने प्रेस-रिपोर्टरों को संदेश दिया। सरदार, भूलाभाई, राजेन्द्रबाबू, शंकरराव वगैरा गये।

८-११-४ वर्धा

सेवाग्राम जाकर बापू से चरखा-संघ-संबंधी थोड़ी बातें कीं।

शरद पारनेरकर का विवाह उम्मेदवाले भाणजे के साथ हुआ बापूजी की उपस्थिति में। चरखा-संघ की बैठक में सुबह व दोपहर में गया। आज चरखा-संघ की बैठक में कोशिश करने पर ट्रस्टी का व खजांची का व राजस्थान के एजेंट-पद का मेरा त्यागपत्र बहुत चर्चा के बाद बापूजी की मदद से स्वीकार हुआ। गंगाधररावजी देशपांडे का भी स्वीकार हुआ। बापूजी से मिला। ग्राम-सेवासंघ-संबंधी बातचीत।

९-११-४० वर्धा

चरखा-संघ की बैठक में बापूजी आये। मैं भी कुछ समय के लिए गया। बापूजी के साथ रेलवे-फाटक तक पैदल गया। उन्होंने सतीशबाबू व अप्पा पटवर्धन से जो बातें कीं वे समझीं।

१०-११-४ वर्धा

सेवाग्राम गया। विजयालक्ष्मी सिंघानी रविशंकरजी शुक्ल और गोपाल-राव काले साथ थे। बापू की शर्तों का खुलासा। संस्थाओं का खुलासा।

११-११-४ वर्धा

आज मीरा बहन सत्याग्रह करनेवाली थी। बाद में मालूम हुआ कि मीरा के दो दिन बढ़े हुए हैं। जानकर आश्चर्य हुआ। इसमें गोपालराव काले की लापरवाही मालूम दी। दामोदर की भी पूरी भूल रही। बापू को फोन किया। उन्होंने कहा "इस हालत में तो जेल नहीं भेज सकते। बापू के पास जाकर खुलासा किया। इस घटना से बापू को व मुझको दोनों को बुरा लगा लोगों की लापरवाही के कारण।

देवी तिथि से मेरा जन्म-दिन था। बा और बापू को प्रणाम किया।

२१-११-४ बंबई

बापू का तार मिला। बहुत जल्दी में रात की ऐक्सप्रेस से दामोदर व विट्ठल के साथ थर्ड क्लास में ही वर्धा रवाना।

२२-११-४ वर्धा

सेवाग्राम जाकर बापू से मिला। उन्होंने कर्नाटकवाले दिवाकर से की बातें की वे समझीं। चीन के दो बड़े लोग आनेवाले हैं उनकी व्यवस्था। चीन का डेपुटेशन (हिज ऐक्सेलेंसी ताई-ची-ताऊ वगैरा सात चीनी) पांच ट्रंक से बापू से मिलने आया। उनका स्वागत किया। इन्हें घर पर ठहराया। भोजन वगैरा साथ में नीचे बैठाकर किया। बातचीत। चीन की स्थिति जापान के बर्ताव पर बातें। ताई-ची-ताऊ का परिचय वगैरा।

ये लोग २१ की शाम को पांच ट्रंक से वापस गये।

२४-११-४ वर्धा

श्री राजगोपालाचारी मद्रास से आये। उनसे बातचीत। उन्होंने बापू से बातें की। उस समय मैं भी थोड़ी देर उपस्थित था। बापू से मुझे भी बातें करनी थी। परन्तु उनका ब्लड-प्रेशर बहुत ज्यादा बढ़ जाने के कारण बात नहीं कर सका।

२५-११-४ वर्धा

सेवाग्राम से फोन आया कि बापू का स्वास्थ्य खराब है, सिविल सर्जन को लेकर आयें। व्यवस्था करने के बाद फिर फोन आया कि अभी नहीं आयें। ब्लड-प्रेशर कम हुआ है।

बापू के स्वास्थ्य की चिन्ता हो गई। अनसूया के साथ सेवाग्राम गया। बापू से थोड़ा विनोद। उन्हें हंसाया। ब्लड प्रेशर कम था। पूरा आराम लेने का करार किया। महादेवभाई से बातचीत।

२७-११-४ वर्धा

डॉ० गिल्डर व डॉ० जीवराज मेहता बम्बई से पू० बापू को देखने आये। वे सेवाग्राम गये। बापू को देखकर मेल से वापस बम्बई गये।

सेवाग्राम गया। बापूजी का हृदय वगैरा की स्थिति व ब्लडप्रेशर ठीक था। कमजोरी थी। कुछ समय तक आराम से रहना जरूरी बताया। मेरे प्रोग्राम के बारे में बापू से बातचीत। उन्होंने कहा तुम्हें प्रान्त में घूमना व

मीटिंग करना जरूरी मालूम होता हो तो तुम खुशी से वैसा कर सकते हो। सत्याग्रह करना हो तो सेवाग्राम से या जहां से तुम्हारी इच्छा हो वहां से कर सकते हो।

९-१२-४ वर्धा

पवनार व सेवाग्राम मुन्ना बहन के साथ गया। प्रार्थना में शामिल हुआ। बापू का मौन था।

३-१२-४ वर्धा

सेवाग्राम जाकर बापू से मिला। रमा व श्रीनिवास का विवाह (१ १) व भेंट। मुन्नाबहन-वगैरा मिले। बापू से व्याख्यान के विषय व पृथ्वीसिंह के बारे में बातचीत।

७-१२-४ वर्धा

सेवाग्राम जाकर बापू से थोड़ी देर बातचीत। जमीन आर्यनायकम्, प्रभा का दौरा आदि।

देवदास गांधी वगैरा मिले।

८-१२-४० वर्धा

बापू ने सेवाग्राम बुलाया। जलियांवाला बाग-ट्रस्ट के बारे में विचार विनिमय। मैंने ट्रस्ट में नाम बदलने का कहा।

सेवाग्राम-जमीन की बिक्री आपकी (बापू की) इच्छा के मुताबिक करने का नायकम् को कह दिया है, यह बापू को कहा। नायकम् की एक आदर्श ग्राम प्यारेलाल के सत्याग्रह आदि के बारे में बातें। बंगले पर का पत्र मुखर्जी के लगाये हुए जलियांवाला बाग के आरोपों पर सही की। बापू का पत्र देखा। 'महिला-आश्रम' व 'शिक्षा-मंडल' के कालेज के बारे में देर तक विचार-विनिमय।

९-१२-४ सेवाग्राम

सेवाग्राम पैदल गया। जमना दामोदर साथ में। चि. आनन्द नायकम् की समाधि का स्थान टेकड़ी पर देखा। श्री आशाबहन व नायकम् की भावना व प्रेम देखकर थोड़ा आश्चर्य भी हुआ। उनसे मिला व बातचीत की। मैंने अपने मन के भाव कहे। नायकम् की भूल बताई। मेरी समझ से ठीक खुलासा हो गया। मेरा भी दिल भर आया था। मुझे भी अपने विचारों में

परिवर्तन करना पड़ा। इन दोनों को यहाँ समाधि-स्थल पर आने से शान्ति मिलती है।

१५-१२-४ वर्धा

जल्दी तैयार होकर नवभारत विद्यालय में गया। महादेवभाई का भाषण सुना। श्रीमती सरोजिनी नायडू महादेवभाई, काकासाहब गोपालराव काले के साथ सेवाग्राम गया। वहीं भोजन। बापू को अपने दौरे का सार कहा। सेवाग्राम के चौक से ता २१ को सुबह ९ बजे सत्याग्रह करने का निश्चय हुआ।

श्री परचुरेशास्त्री अन्न व जल के बिना उपवास कर रहे हैं। उनसे मिला।

१६-१२-४ वर्धा

शाम को सेवाग्राम-प्रार्थना में। प्रार्थना के बाद बापूजी से सत्याग्रह वगैरा के बारे में बातचीत।

सेवाग्राम में मेरे लिए अलग मकान बनाने के बारे में विचार व विनोद।

मोटर से भंडारावाले अखबारवार वकील आये। उन्हें बापू से मिलाया। प्रार्थना में शामिल हुए। बापू ने जो मसविदा बना दिया था उसे वे सही करके मुझे दे गए और भंडारे से तार भेजने को कह गए।

१९-१२-४ वर्धा

घूमते समय दमयन्तीबाई व दादा धर्माधिकारी ने गत वर्ष नवम्बर में श्री किशोरलालभाई को जो पत्र लिखा था वह मुझे पढ़ाया। पू बापू ने उसका जो जवाब दिया वह भी पढ़ा। थोड़ी और बातें। बाद में पंजाब के सुदर्शनदास व जगन्नाथ ने पंजाब की हालत सुनाई।

सेवाग्राम में परचुरेशास्त्री को देखा। बापू से पंजाबवालों के बारे में उनका कहना सुनाया। महिला सत्याग्रही भेजने तथा मेरे व्याख्यान स्टेटमेंट आदि के बारे में बातें।

गांधी चौक में जाहिर व्याख्यान ठीक हुआ। सरदार पृथ्वीसिंह मुसाफिर अहिंसा पर ठीक बोले। सरदार सम्पूर्णसिंह से बातचीत।

२०-१२-४ वर्धा

सेवाग्राम में शाम की प्रार्थना। बाद में पू बापूजी से पहले

सीतारामजी सेकसरिया के प्रोग्राम की चर्चा। स्लोगन पर विचार-विनिमय। नीचे लिखे अनुसार सुझाया—

It is wrong to help the British war effort with men or money. The only worthy effort is to resist all war with nonviolent resistance.

इस अंग्रेजी लड़ाई में आदमी या पैसे से मदद देना हराम है। लड़ाइयों का सही विरोध अहिंसा से ही हो सकता है।

कविता में—

ब्रिटिश युद्ध-प्रयत्न में जन-धन देना भूल है।
सकल युद्ध-प्रतिरोध का सत्य अहिंसा मूल है।

२१-११-४० वर्धा-जेल

सुबह ४ बजे उठा। प्रार्थना में शामिल हुआ। बापू से बातचीत। उन को जो विचार सूझते थे उस बारे में तथा आज की सभा के स्टेटमेंट वगैरा के बारे में चर्चा। इतने में खबर आई कि पुलिस गिरफ्तार करने मोटर लेकर आई है। बापू ने महादेवभाई को भेजा। गिरफ्तारी का सैक्शन डिफेंस ऑफ इंडिया ऐक्ट में देखा। बराबर पता नहीं लगा। वहां पुलिस अधिकारियों की बात से मालूम हुआ कि मुझे नजरबंद करेंगे। पू. बापू, बा व मझार हरिमन ने अपने हाथ के सूत का हार पहनाया। खूब प्रेम पूर्वक आशीर्वाद। प्रणाम। सब लोग मोटर तक आये। पू. बा ने वंदेमातरम् गीत गाया। कलेजा भर आया। आश्रम की बहनों बच्चों से नमस्कार आदि, वे सब मिलीं। वहां से अपनी मोटर में वर्धा। बंगले पर मुंह-हाथ धोया। बाद में मजिस्ट्रेट श्री कुरैशी के घर ले गए। उन्होंने धारा १२१ समझाई। जेल में पैदल गया।

कोर्ट का काम १२ बजे चला। मेरा स्टेटमेंट वगैरा रेकार्ड हो गया। २। बजे जज ने ९ महीने कैद, पांच सौ जुरमाना। जुरमाना वसूल न हुआ तो सजा ज्यादा नहीं। 'ए' क्लास की सिफारिश। मैंने धन्यवाद देते हुए कहा कि सजा कम दी गई।

२७-११-४० नागपुर-जेल

श्री रविशंकरजी शुक्ल मिलने आये। उन्होंने कहा कि वह तथा श्री

द्वारकाप्रसाद मिश्र कल सुबह सिवनी-जेल में ट्रांसफर होनेवाले हैं। देर तक बातचीत। इनका लड़का भगवती व कुमारी पुष्पा भी पहुँच गए। बापू को तार भेज दिया। मैंने विवाह करा देने की सलाह दी।

१०-१२-४ नागपुर-जेल

आज से विनोबा का भाषण शुरू हुआ। विनोबा ने बापू की ट्रस्टीशिप की कल्पना की सुन्दर व्याख्या की। कबीर का दोहा समझाया—

पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम॥

डायरी के अंश

१९४१

१ १-४१ नागपुर-जेल

रात को नींद कम आई। स्वप्न में विचार शुरू हुए। पू बापू तथा किशोरलालभाई ने मेरी कमजोरियों की छानबीन की। श्री जानकीदेवी मंजुबेन्या इत्यादि गवाह थे। विट्ठल नौकर थी। इस प्रकार की विचार धारा के स्वप्न में ही मेरी समझ से रात का बहुत-सा हिस्सा चला गया।

आज से नई डायरी शुरू की। मन में ही विचार-विनिमय होता रहा।

४-१ ४१ नागपुर-जेल

मुलाकात के लिए चि शान्ता मदालसा और श्रीमन्नारायण आये। प्यारेलाल की मुलाकात का बापू का सन्देश मिला।

जानकीदेवी सेवाग्राम में है। बापू ने उसे उपवास पर रखा है।

६ १ ४१, नागपुर-जेल

डॉ दास के बारे में सुपरिंटेंडेंट से पूछा तो उन्होंने कहा उन्हें नहीं बुला सकते और न ही उनसे जांच करा सकते हैं। वह मुझसे मिलकर बात करना चाहें तो कर सकते हैं। बाद में उन्होंने थोड़ी विचित्र-सी बातें कीं— जैसे आप तो इनवैलिड (अपंग) हैं। महात्माजी ने सत्याग्रह की इजाजत कैसे दी? यह कोई 'रेस्ट क्यूअर' स्थान थोड़े ही है। अगर आपको बाहरी ट्रीटमेण्ट चाहिए या इलाज के लिए बार-बार मेयो अस्पताल भेजना पड़ा तो सरकार आपको रिहा कर देगी इत्यादि। मैंने उन्हें कहा कि डॉ दास वाघकर के तापमान-वगैरा बतलानेवाले थे। यदि आप मंजूर करते तो इसका अमल होता रहता। महात्मा गांधी ने इजाजत कैसे दी यह प्रश्न सरकार की ओर से आपको पूछने का कोई कारण नहीं। सरकार को पूछना होगा तो पूछेगी। और मैं तो जेल के गेट से बाहर—मेयो अस्पताल वगैरा जाना भी नहीं चाहता। यह मैंने पहले ही कह दिया था। इसपर

उन्होंने कहा कि आपके स्वास्थ्य की जिम्मेवारी सरकार की है। तब मैंने कहा कि ठीक है। मैं अपने खर्च से खाने का जो सामान मंगाता हूं वह बन्द कर देता हूं। जब आपपर जिम्मेवारी है तो आप जैसा ठीक समझें करें। उन्होंने कहा कि ठीक है। बाद में मैंने डा दास को न भेजने के बारे में इनकी इजाजत से पत्र लिखकर भेज दिया। प्यारेलाल से भी देर तक बातचीत होती रही।

१०-१ ४२, नागपुर-जेल

रामनरेश त्रिपाठी की लिखी हुई अपनी जीवनी पढ़ना शुरू की। देर तक आंखों से पानी बहता रहा—खुद की कमजोरियों का खयाल आकर, विशेषतया मेरी जीवनी लिखने की बापू की स्वीकृति का जिक्र पढ़कर।

११ १ ४१ नागपुर-जेल

चार बजे के बाद कमलनयन सावित्री रामकृष्ण व सुशील मवटिया आदि को मेरे स्थान पर ही एक आफिसर मुलाकात के लिए लेकर आये। बाद में जेलर भी पाठक आ गए।

जानकीदेवी को आज उपवास का दसवां रोज है। बापू ने चाय देखा। पृथ्वीसिंह मालिश देते हैं। उमा खूब सेवा करती है। सब बातें सुन व समझ कर समाधान मिला।

खोटा पैसा व खोटा बालक समय पर काम आते हैं जानकी का यह सन्देश मिला। खुश हुआ।

१३ १-४१ नागपुर-जेल

सुपरिटेंडट पहले राउंड पर आ गए। स्वास्थ्य आदि के समाचार पूछ गए। बाद में दुबारा फिर आये। उनकी माताजीकी मृत्यु हो गई। उनसे समवेदना प्रकट की।

बापू ने मेरे बारे में महादेवभाई के जरिये यह पत्र लिखवाया कि कमलनयन के मिलने पर मुझसे कहा जाय कि मैं जो ज्यादा दूध फल वगैरा ले रहा था वह चालू रखूं। यह पत्र सुपरिटेंडेंट ने मुझे पढ़ाया। मेरे साथ देर तक चर्चा की। मुझे अपने खर्च से दूध-फल लेना चाहिए, आदि समझाने लगे। पहले उनसे जो बात हुई थी वह मैंने दोहराई। जिसमान विद्यार्थी प्यारेलाल मौजूद थे। शाम को विनोबा से भी इस सम्बन्ध में विचार

विनिमय हुआ। उन्होंने भी कहा कि धूप-स्नान लेना शुरू कर देना ठीक रहेगा।

१४-१-४१ नागपुर-जेल

विनोबा १॥। से २॥ तक आये। बातचीत। बापू को अपनी शारीरिक व मानसिक स्थिति का समाचार उनके मार्फत भेज दिया।

विनोबा कल जेल से छूटनेवाले हैं इस कारण कई मित्रों ने चरखा-संघ के सूत-सदस्य होने का निश्चय किया।

१५-१-४१ नागपुर-जेल

विनोबा आज छूटनेवाले हैं, इसलिए जल्दी ही उनके पास गया। करीब ८॥। बजे उनके साथ थोड़ा घूमना व मामूली बातचीत हुई—स्वास्थ्य, शिवकाल जानकीदेवी आदि के बारे में। वह अन्दर के फाटक के बाहर गये। विनोबा के वियोग से थोड़े समय के लिए ही मालूम देता है, दुःख मालूम दिया। विनोबा के प्रति दिन-दिन श्रद्धा बढ़ती ही जाती है। परमात्मा अगर मुझे इस देह से उनकी श्रद्धा के योग्य बना सकेगा तो वह दिन मेरे लिए धन्य होगा। मुझे दुनिया में बापू पिता का और विनोबा गुरु का प्रेम दे सकते हैं अगर मैं अपनेको योग्य बना सकूं तो।

अकोलावाले श्री दादा गोले से देर तक बातचीत। मथुरादास पीपाजदास के मामले में इनपर पू० बापूजी की भेंट का परिणाम समाधानकारक हुआ।

१८-१-४१, नागपुर-जेल

मेरे खानपान के बारे में डॉ० दास पू० बापू से सलाह कर लिख भेजेंगे। मेरा ब्लडप्रेशर १ २ व १४८ है। और सब ठीक है।

२५-१-४१, नागपुर-जेल

विनोबा से मुलाकात हुई। बापू, जानकी आदि के समाचार मालूम हुए।

८-२-४१ नागपुर-जेल

राजकुमारी अमृतकौर, श्री आर्यनायकम् और चि० मदालसा मुलाकात के लिए आये थे। सामान संभालनेवाले रामेश्वर भी आ गया था। बापू का स्वास्थ्य ठीक है। बापू का ब्लडप्रेशर सुबह १५१ व ९६ था। दोपहर को कम हो जाता है। वजन १ ८ है। बापू का 'हरिजन' का प्रकाशन

शुरू करने का विचार नहीं है। सरकार से समझौते की कोई आशा नहीं है। आज के 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया' में इस संबंध में अग्रलेख है। बापू की कड़ी टीका है। मेरे नाम का भी गलत उपयोग किया है।

सेवाग्राम के पानी की जाँच कराई थी। वह ठीक निकला। मीराबहन और अम्तुल वापस सेवाग्राम आगए हैं।

शाम की प्रार्थना के बाद विनोबा ने बापू का सन्देश सुनाया।

१-२-४१ नागपुर-जेल

जेल के राजनैतिक सत्याग्रही को विनोबा ने कल बापू के जो विचार सुनाये थे उसपर आज विचार-विनिमय टीका-टिप्पणी व मजाक होता रहा वह सुना।

१५-२-४१ नागपुर-जेल

आचार्य कृपलानी श्रीमन्नारायण व दामोदर मुलाकात के लिए आये। कृपलानीजी ने कहा कि जवाहरलाल को पूरा समाधान व संतोष है। राजाजी के विचारों में विशेष फर्क नहीं है। समाधानवालों को सरकार की ओर के व्यवहार से संतोष नहीं है। जानकीदेवी अभी एक संतरे, अंगूर व सब्जी के रस पर है। तीन-साढ़े तीन मील रोज घूम लेती है। बापू खूब आनन्द में हैं। मदालसा सेवाग्राम रहती है।

बापूजी पर टाइम्स ऑफ़ इंडिया ने जो टीका की थी उसका खुलासा आज छपा है—

Civil Disobedience will certainly be withdrawn if free speech is genuinely recognised and status-quo restored."

(अगर भाषण की स्वतंत्रता सच्चे तौर पर मान ली गई और यथा स्थिति कायम कर दी गई तो सत्याग्रह जरूर वापस कर लिया जायगा।)

२८-२-४१, नागपुर-जेल

पू. गांधीजी को नीचे लिखे अनुसार जवाब तार दिया—

Pray Hospital prov worthy Kamla's memory Agreeable Narialwallas proposals regarding accounts Suggest another treasurer appointment preferably Allahabad "[1]

—Jamnalal

[1] कमला नेहरू-अस्पताल के उद्घाटन के अवसर पर।

विनिमय हुआ। उन्होंने भी कहा कि सूत-कम लेना शुरू कर देना ठीक रहेगा।

१४-१-४१ नागपुर-जेल

विनोबा १॥। से २॥। तक आये। बातचीत। बापू को अपनी शारीरिक व मानसिक स्थिति का समाचार उनके मार्फत भेज दिया।

विनोबा कल जेल से छूटनेवाले हैं इस कारण कई मित्रों ने चरखा-संघ के सूत-सदस्य होने का निश्चय किया।

१५-१-४१, नागपुर-जेल

विनोबा आज छूटनेवाले हैं, इसलिए जल्दी ही उनके पास गया। करीब ८॥। बजे उनके साथ थोड़ा घूमना व मामूली बातचीत हुई—बजाजवाड़ी, विश्वनाथ, जानकीदेवी आदि के बारे में। वह अन्दर के फाटक के बाहर गये। विनोबा के वियोग से थोड़े समय के लिए ही मालूम देता है, दुःख मालूम दिया। विनोबा के प्रति दिन-दिन श्रद्धा बढ़ती ही जाती है। परमात्मा अगर मुझे इस देह से उनकी श्रद्धा के योग्य बना सकेगा तो वह दिन मेरे लिए धन्य होगा। मुझे दुनिया में बापू पिता का और विनोबा गुरु का प्रेम दे सकते हैं अगर मैं अपनेको योग्य बना सकूं तो।

अकोलावाले भी दादा धोत्रे से देर तक बातचीत। मथुरादास गोपालदास के मामले में इसपर पू. बापूजी की भेंट का परिणाम समाधानकारक हुआ।

१८-१-४१ नागपुर-जेल

मेरे खानपान के बारे में डॉ. दास पू. बापू से सलाह कर लिख भेजेंगे। मेरा ब्लडप्रेशर १ २ व १४८ है। और सब ठीक है।

२५-१-४१ नागपुर-जेल

विनोबा से मुलाकात हुई। बापू, जानकी आदि के समाचार मालूम हुए।

८-२-४१ नागपुर-जेल

राजकुमारी अमृतकौर, श्री आर्यनायकम् और चि. मदालसा मुलाकात के लिए आये थे। खादान संवादवाले दामोदर भी आ गया था। बापू का स्वास्थ्य ठीक है। बापू का ब्लडप्रेशर सुबह १६३ व ९९ था। दोपहर को कम हो जाता है। वजन १ ८ है। बापू का 'हरिजन' का प्रकाशन

२९-३-४१, नागपुर-जेल

शान्ताबाई, रामकृष्ण चिरंजीलाल और दामोदर मुलाकात करने को आये। रामकृष्ण ने कहा कि बापूजी ने उसे सत्याग्रह की इजाजत दे दी है। राम के विचार व निर्णय की शक्ति आदि देखकर सुख व समाधान मिला। पढ़ाई के बारे में उसे पढ़ाई कॉमर्स कालेज वर्धा में ही करने की मैंने राय दी जो उसने भी पसन्द की।

३१-३-४१ नागपुर-जेल

ब्रिजलाल बियाणी ने बापू से मेरा परिचय किस प्रकार हुआ व मुझपर भिन्न-भिन्न बातों का प्रभाव पड़ा इस बारे में आज से नोट लेना शुरू किया।

४-४-४१ नागपुर-जेल

मैंने विनोबा से कहा कि अगर आप मेरी पूरी जवाबदारी लेने को तैयार हों तो आपकी देखरेख में मैं काम करने को तैयार हूं। मेरी कमजोरियां योग्यता अयोग्यता देखकर मुझे काम सौंपा जाय। उन्होंने कहा कि मुझे भी तो बापू ने खूंटे से बांध रखा है। मैं तो स्वयं ही उड़ना चाहता हूं बन्धन से मुक्त होना चाहता हूं।

५-४-४१ नागपुर-जेल

राधाकिसन मुलाकात के लिए आया। लक्ष्मीनारायण मंदिर के प्लान पर उससे विचार-विनिमय किया। मैंने कहा कि बापू, श्री मेहता, गुलाटी व तुम्हें, जैसा ठीक लगे वैसा करो।

१५-४-४१ नागपुर-जेल

आज मेरा मन किस प्रकार के संबंध मानना चाहता है यह विचार बना—पिता—बापूजी (गांधीजी) पुत्र—विनोबा माता—मां व बा (कस्तूरबा) भाई—जाजूजी किशोरलालभाई बहन—गुलाब श्रीमती-बहन लड़के—राधाकिसन श्रीमन्नारायण राम लड़कियां—चि शान्ता (रानीवाला) मदालसा।

२१-४-४१ नागपुर-जेल

विनोबा के आश्रम तक जाकर आया तो आज जाते समय थकावट काफी मालूम दी। पहले इतनी नहीं मालूम दी थी। विनोबा से 'टाइम्स

(भगवान् से प्रार्थना है कि अस्पताल कमला की मारफत के योग्य बन। हिसाब के बारे में नारियलवाला के सुझाव से सहमत हूं।) मेरा सुझाव है कि एक दूसरे कोषाध्यक्ष की नियुक्ति की जाय। वह इलाहाबाद का हो तो अच्छा। —जमनालाल

८-१-४१ नागपुर-जेल

बापूजी आज इलाहाबाद से यहीं पहुंच गए। जवाहरलालजी लखनऊ-जेल ले जाए गए।

९-१-४१, नागपुर-जेल

"मेरी सलाह तो यह है कि हमें देहातों में जाकर व्यक्तियों की सेवा करने की तरफ अपना खयाल रखना चाहिए, न कि सारे समाज की तरफ।"

"बापूजी के लेख मुझे कम ही याद आते हैं, लेकिन उनके हाथ का परोसा हुआ भोजन मुझे हमेशा याद आता है और मैं मानता हूं कि उससे मेरे जीवन में बहुत परिवर्तन हुआ है।"

—'विनोबा के विचार' में से।

९-१-४१ नागपुर-जेल

निर्भयता के बारे में बापू और विनोबा के विचार समझे।

बापू बताते हैं कि निर्भय सेवक का कर्तव्य यह है कि हमें सुकरात की तरह जीना और मरना सीखना चाहिए।

विनोबा निर्भयता के प्रकार में बताते हैं कि (१) जिस निर्भयता वह निर्भयता है, जो खतरों से परिचय प्राप्त करके उनका इलाज जान लेने पर निर्माण होती है। (२) ईश्वर-निष्ठ निर्भयता मनुष्य को पूर्ण निर्भय बनाती है। (३) विवेकी निर्भयता—मनुष्य को ऊटपटांग और अनावश्यक साहस नहीं करने देती।

११-१-४१ नागपुर-जेल

विनोबा का लेख 'आत्मशक्ति का मार्ग' पढ़ा। उसमें लिखा निम्न विचार पसन्द आया "गांधीजी का जन्मदिन है। आइये हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारे देश में सत्पुरुषों का ऐसा ही अखंड प्रवाह चलता रहे।"

२१ ३-४१ नागपुर-जेल

शान्ताबाई, रामकृष्ण चिरंजीलाल और दामोदर मुलाकात करने को आये। रामकृष्ण ने कहा कि बापूजी ने उसे सत्याग्रह की इजाजत दे दी है। राम के विचार व निर्णय की शक्ति आदि देखकर सुख व समाधान मिला। पढ़ाई के बारे में उसे पढ़ाई कॉमर्स कालेज वर्धा में ही करने की मैंने राय दी जो उसने भी पसन्द की।

३१ ३-४१ नागपुर-जेल

ब्रिजलाल बियाणी ने बापू से मेरा परिचय किस प्रकार हुआ व मुझपर किन-किन बातों का प्रभाव पड़ा इस बारे में आज से नोट लेना शुरू किया।

४ ४-४१ नागपुर-जेल

मैंने विनोबा से कहा कि अगर आप मेरी पूरी जवाबदारी लेने को तैयार हों तो आपकी देखरेख में मैं काम करने को तैयार हूं। मेरी कमजोरियां योग्यता अयोग्यता देखकर मुझे काम सौंपा जाय। उन्होंने कहा कि मुझे भी तो बापू ने खूंटे से बांध रखा है। मैं तो स्वयं ही छूटना चाहता हूं बन्धन से मुक्त होना चाहता हूं।

५ ४-४१ नागपुर-जेल

राधाकिसन मुलाकात के लिए आया। लक्ष्मीनारायण मंदिर के मकान पर उससे विचार-विनिमय किया। मैंने कहा कि बापू, श्री मेहता पुलाटी व तुम्हें जैसा ठीक जंचे वैसा करो।

१५ ४-४१ नागपुर-जेल

आज मेरा मन किस प्रकार के संबंध मानना चाहता है यह विचार चला—पिता—बापूजी (गांधीजी) गुरु—विनोबा माता—मां व बा (कस्तूरबा) भाई—जाजूजी किशोरलालभाई बहन—गुलाब गोमती बहन लड़के—राधाकिसन श्रीमन्नारायण राम लड़कियां—चि० शान्ता (रानीवाला) मदालसा।

२२ ४ ४१, नागपुर-जेल

विनोबा के आश्रम तक जाकर आया, तो आज आते समय थकावट काफी मालूम दी। पहले इतनी नहीं मालूम दी थी। विनोबा से 'टाइम्स

ऑफ इंडिया' के लेख व बापू के स्टेटमेंट पर विचार-विनिमय हुआ।

२६-४-४१ नागपुर-जेल

चि. सावित्री सेवाग्राम में इस गर्मी में कुछ दिन रह गई, जानकर सुख मिला। वह कल बंबई जानेवाली है। बंबई का वातावरण कौमी दंगों के कारण थोड़ा ठीक नहीं दीखता। कुछ दिन ठहर जायगी तो ठीक रहे। परन्तु सन्देश भेजने का मौका नहीं रहा।

२६-४-४ नागपुर-जेल

लक्ष्मीनारायण गाडोदिया दिल्लीवाले रामकिसन और दामोदर मुलाकात के लिए आये।

बापू के तीन दिन के उपवास के बारे में व अहमदाबाद तथा बम्बई के दंगों के बारे में बापू की मनोव्यथा आदि जानकर चिन्ता होना स्वाभाविक था। ईश्वर सहायक है।

२७-४-४१ नागपुर-जेल

कल बापू ने ऐसोसी. के बयान में जो वक्तव्य दिया वह विनोबा के साथ सुना। उसपर थोड़ी चर्चा हुई। हम सबोंको वक्तव्य बहुत पसन्द आया। बापू के हृदय की जलन व दुःख उसमें प्रकट होता था। बहुत ही स्पष्ट था।

१-५-४१ नागपुर-जेल

पू. राजेन्द्रबाबू, पूनमचंद, दिलीप और हरगोविन्द मुलाकात को आये। प्रो. त्रिवेदी का आखिर बुधवार को प्रातः २ बजे शरीर छूट ही गया। बापूजी व जानकी ने रात को ही उनकी स्त्री व पुत्र मधुभाई से मिलकर उन्हें सान्त्वना दी। जानकीदेवी दूसरी बार भी मिल आई। मेरी इच्छा थी कि उनकी अग्नि-संस्कार क्रिया अपने खेत में करते तो ठीक रहता। उनका एक छोटा-सा स्मारक वर्धा में बनाने की इच्छा है।

९-५-४१ नागपुर-जेल

कमिश्नर श्री राव जेल के राउंड पर आये। स्वास्थ्य वगैरा की पूछताछ की। बाद में मैंने नागपुर के डिप्टी कमिश्नर ने व्यापारी-मंडल को जो अनुचित जवाब दिया उस बारे में बताया और कहा कि गुंडों का जोर बढ़ता जा रहा है। व्यापारियों को तंग किया जा रहा है। व्यवस्था ठीक नहीं हो रही है। हिन्दू-मुस्लिम दंगे की भी सम्भावना हो सकती है। आप हिन्दुस्तानी हैं और

बड़े अधिकारी हैं। ठीक व्यवस्था रहनी चाहिए। अगर ऐसा ही गया तो महात्माजी का यहां आकर दंगे के बीच आना संभव है, इत्यादि बातें समझाईं। उन्होंने कहा कि डिप्टी कलेक्टर ने खुलासा किया है कि उसने ऐसा नहीं कहा है। वह इस बारे में पूरा खयाल रखेंगे वगैरह।

१४-५-४१ नागपुर-जेल

आज प्रायः सारी रात नींद नहीं आई। पहले हवा का जोर रहा बाद में विचार चालू हो गए। वर्धा-जेल में मुझे भेज दें तो मुझे भारी तकलीफ रहेगी पर डॉ. दास बापूजी जानकी आदि की तकलीफ व चिंता कम हो जायगी। पहले तो मेजर ने कहा था कि वर्धा जाना चाहोगे तो जा सकोगे। परन्तु अब कहते हैं कि देखेंगे। वर्धा जेल जाना अगर संभव न हो तो फिर मुझे कुछ समय के लिए मेयो अस्पताल (नागपुर) ही जाना स्वीकार कर लेना चाहिए।

बापूजी और विनोबा भी मुझपर इतना प्रेम क्यों करते हैं? बापूजी को मेरी इस बीमारी के कारण दो-तीन रोज बहुत चिंता व परेशानी रही ऐसा डॉ. दास कहते थे। वह तो यहां मुझे देखने के लिए आने को भी तैयार थे। परन्तु मेरे मना करने पर व डॉ. दास के यह कहने पर कि जरूरत नहीं है रुके। रात को बड़ी देर तक मेरे मन में यही विचार चलता रहा कि मैं पापी हूं, विश्वासघाती हूं। क्या मैंने अपना असली रूप बापू व विनोबा को बता दिया है? एक मन तो कहता था कि कई बार तो बता दिया है, पर दूसरा कहता था कि नहीं साफ तौर पर बिल्कुल नग्न रूप में सामने नहीं रखा है। इसके पहले विचार से बापू के पास कई बार जाना हुआ, परन्तु वहां पूरा मौका ही नहीं मिल पाया, इस कारण वह अधूरा ही रह गया। तीन वर्ष पहले बजाजवाड़ी से जो पत्र बापू को मैंने टाइप कर भेजा था वह भी उन्हें नहीं मिला। उनके कहने पर बाद में पत्र की नकल उन्हें वर्धा आने पर दे दी थी। अब जैसे ही मौका लगेगा एक बार अपनी आत्म-हत्या के विचार को व अपनी मन की स्थिति खूब स्पष्ट रूप से बापू से अवश्य कहूंगा। तभी मानसिक शांति मिलेगी। अन्यथा हृदय व मन पर यह कुछ चलता ही रहेगा। मैंने यह प्राकृतिक उपचार भी मुख्यतः मानसिक शांति की दृष्टि सामने रखकर ही स्वीकार किया है अन्यथा इस समय ज्यादा उत्साह नहीं था क्योंकि पूना में एक

प्रयोग हो ही चुका था। परमात्मा से प्रार्थना करता रहता हूँ। देखें क्या परिणाम आता है। इस जन्म में सद्बुद्धि प्राप्त हो जायगी व स्वच्छ तथा पवित्र सेवामय जीवन बिताते हुए यह शरीर छूट सकेगा तो चित्त को समाधान हो सकेगा। अन्यथा जैसे कर्म किये हैं वैसा फल भोगना बाकी है ही। ईश्वर की माया अपरंपार है। विनोबा से तो यहाँ थोड़ी ही बात कर पाया। देखें कोई राजमार्ग निकलता है क्या! मुझसे बड़ी उमर का कोई शुद्ध भक्त हृदयवाला भाई या बहन इस दुनिया में मिल सकता हो और जो मुझे अपने आश्रय में लेकर बालक की तरह प्रेम-भाव से मेरे व्यथित हृदय में कुछ जीवन पैदा कर सके तो मुझे शांति मिल सकती है। ईश्वर की इच्छा होगी तो यह भी संभव हो जायगा।

रात में प्रायः इसी प्रकार के विचार कई घंटों तक चलते रहे। बीच-बीच में आँखों से पानी भी बहता रहा। बालकपन का व तरुण अवस्था का मेरा संकोची, शरमीला व डरपोक मन का स्वभाव पूरी तौर से आजतक कायम रहता तो कितना अच्छा होता! बुरी संगत का अच्छा परिणाम व अच्छी संगत का बुरा परिणाम। यह कैसी ईश्वरी माया है! मेरा तो सदा चिंतन यही रहता है—

मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।

तथा

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।

१७-५-४१ नागपुर-जेल

डॉक्टर दास शर्मा से आये। उन्होंने मेरे स्वास्थ्य की जाँच की। वजन १४ नाड़ी ७२, टैंपरेचर ९७.८, पेशाब में दर्द कम। नींद ठीक आई। आज से मंगलवार तक ४४ औंस रस—संतरे, मोसम्बी, अननास, सेब आदि का चार ग्लास दूध छोड़कर व एक शाम यह खुराक लेने को कहा। रोज एनीमा व दो बार टब-बाथ लेता हूँ। यह भी कहा कि बापू की इच्छा है कि मैं वर्धा-जेल में आ जाऊँ तो ठीक रहेगा। महादेवभाई, गुलजारीलाल नंदा व दामोदर मुलाकात को आये। महादेवभाई ने बम्बई व गुजरात की स्थिति कही। बापू की इच्छा यहाँ आने की है, परन्तु सरकार वगैरा इस समय बापू का आना ठीक नहीं समझते। बम्बई-गवर्नर से लिखा-पढ़ी इत्यादि चल रही

है। गुलजारीलाल नंदा ने बताया कि चरखा-संघ के एक आदमी ने रुपयों की गड़बड़ी की है। श्री शंकरलाल बैंकर के स्वास्थ्य के बारे में भी बताया।

२१-५-४१ नागपुर-जेल

डॉ दास व जानकीदेवी मिलने आये। कल व परसों पानी कम पिया गया उसका डॉ दास को बहुत बुरा मालूम दिया। आज से रस बढ़ाया गया है। दूध १२ औंस व आम तीन। डॉ दास का सेवाग्राम से फोन भी आया था। बापू ने यहीं (नागपुर) रहकर मेरा इलाज चालू रखने को कहा है। डॉ महोदय ने आज की रिपोर्ट दी।

२२-५-४१ नागपुर-जेल

सुपरिटेण्डेण्ट मि गुप्ता आये। स्वास्थ्य के बारे में कहने लगे कि कमजोरी बहुत हो गई है। बम्बई के श्री मकवाना या डॉ जीवराज को दिखाना चाहिए। डॉक्टर दास का इलाज थोड़ा वजन घटे, वहाँतक तो ठीक था पर अब तो वजन ज्यादा कम हो रहा है। मैंने महादेवभाई का नोट उन्हें दिया।

२३-५-४१ नागपुर-जेल

बापूजी ने ब्रजलाल व शिवराजसिंह—इन दो सत्याग्रहियों के बारे में पूछताछ करवाई है।

१-६-४१ वर्धा

आज जेल से छूटे। सेवाग्राम जाकर बापू को प्रणाम किया। विनोद। स्वास्थ्य की थोड़ी तकलीफ नहीं। नये अतिथि-घर में ठहरा।

४-६-४१ सेवाग्राम

आज तीन महीने बाद प्रथम बार दो खाखरा साग-पानी-कढ़ी दो कौर व दो आम लिये। साग व खाखरा बहुत ही स्वादिष्ट लगा। गांधीबाबा की जय! शाम को दूध और रस लिया।

५-६-४१ सेवाग्राम

बापू दो बार देखने आये। डॉ दास से बातचीत।

८-६-४१, सेवाग्राम

बापूजी डॉ दास डॉ सुशीला वगैरा से बातचीत।

९-६-४१, सेवाग्राम

आज से चर्खा शुरू किया। बापू का स्वास्थ्य आज खराब हो गया। ज्वर आ गया और अतिसार भी हुआ। प्रयोगों का प्रताप बताया जाता है।

१०-६-४१ सेवाग्राम

बापू का स्वास्थ्य ठीक नहीं। शाम को उनसे थोड़ा विनोद।

११-६-४१ सेवाग्राम

डॉ. सुशीला से उसके कल नागपुर जाते समय के व्यवहार के संबंध में कहा-सुनी हुई। बाद में उसे समझाया। उसका पत्र आया। रात को उसका समाधान किया व उसकी गलती समझाई।

बापू का स्वास्थ्य आज भी ठीक नहीं हुआ।

१२-६-४१ सेवाग्राम

केशव (जापानी) जो आश्रम में रहते हैं, उसे एक पागल ने बहुत बुरी तरह पीटा। केशव ने भजन की शान्ति व अहिंसा का परिचय दिया।

१४-६-४१ सेवाग्राम

मेरा स्वास्थ्य साधारण ही है। मानसिक स्थिति पर विचार-विनिमय। घूमते समय जानकीदेवी व शान्ताबाई से मन स्थिति कही। जेल में ता. १४ मई को डायरी में जो नोट किया था वह पढ़कर समझा दिया।

जेल से आने के बाद बापूजी से आज पहली बार शान्ति में बातचीत। किशोरलालभाई, राजकुमारी अमृतकौर, गोमतीबहन, डॉ. सुशीला वहीं थे। मैंने अपनी मानसिक स्थिति कही। ता. १४ मई को नागपुर-जेल में डायरी में जो नोट किया था वह पढ़कर सुनाया। अन्य विचार-विनिमय। बापू को डायरी सुनाने के बाद मन थोड़ा हल्का हुआ।

१५-६-४१ सेवाग्राम

कमला व सरला सिंघानी अकोला से आईं। बापूजी से उनको मिलाया और परिचय करा दिया।

हीरालालजी शास्त्री, कपूरचन्दजी पाटनी, हरलालसिंहजी, लादूराम जी, रतनबहन वगैरा से जयपुर की स्थिति के बारे में देर तक विचार-विनिमय। बापूजी से भी मिलना हुआ। उनको स्थिति समझाई व उनकी राय समझी।

शाम को मीराबहन से शान्ति प्राप्त करने के उपाय पर चर्चा ।

१६ ६ ४१ सेवाग्राम

देर तक जयपुर के सम्बन्ध में विचार-विनिमय । बापू को बातचीत का सारांश लिखकर भेजा ।

१७-६-४१ सेवाग्राम

सुबह घूमते समय शान्ताबाई से महिलाश्रम के बारे में चर्चा । डॉ दास से स्वास्थ्य-सम्बन्ध में विचार-विनिमय । हिमालय या काश्मीर जाने के संबंध में विचार । पू बापूजी आये । उनसे भी विचार-विनिमय । उनकी राय हुई कि जुलाई बाद जाना ठीक रहेगा ।

१८ ६-४१ सेवाग्राम

बापू ने चन्द्रभाल जौहरी के बारे में पुछवाया । मैंने अपनी राय बताई । मीराबहन अपनी स्थिति थोड़ी ही देर कहने पाई कि इतने में डॉ दास मोटर लेकर आगए ।

१९ ६ ४१ सेवाग्राम

बापू से स्वास्थ्य प्रोग्राम मन स्थिति आदि के संबंध में थोड़ी देर बातचीत । उनकी इच्छा रही कि अभी तो मुझे यहीं रहना चाहिए । मैंने बापू से कहा कि संभव हो तो जब भी आपको अनुकूल हो मुझे रोज १५ २ मिनिट अपना एकांत का समय दें ।

२०-६-४१ सेवाग्राम

बापूजी के साथ २॥ बजे चरखा-संघ की बैठक में पहुंचा । पांच बजे तक वहां रहा । ठीक चर्चा व विचार-विनिमय ।

२१ ६ ४१ सेवाग्राम

चरखा-संघ की बैठक में पू० बापू के साथ गया ।

२२-६ ४१ सेवाग्राम

पू बापू के साथ चरखा-संघ की बैठक में गया । आज की बैठक बहुत ही गंभीर हुई । पू बापूजी अपना दुःख कहते-कहते रो पड़े । पू बापूजी को भी कल देशपांडे के वचन व व्यवहार से चोट पहुंची । मुझे भी चोट लगी । देर तक चर्चा व विचार-विनिमय ।

२५-६-४१ सेवाग्राम

पू. बापूजी से घूमते समय मनःस्थिति पर काफी विचार-विनिमय हुआ। कल फिर बातचीत होगी। चि. राधा (गांधी) के बारे में मैंने अपने विचार बापू को बताये।

२६-६-४१ सेवाग्राम

पू. बापूजी से आज घूमते समय व बाद में १ से ११ तक एकान्त में अपनी मनःस्थिति पर साफ-साफ बातें। मैं अपनी स्थिति ज्यादा स्पष्ट तौर से समझा सका। अब मुझे विश्वास हो गया कि बापू मेरी स्थिति पूरी तौर से समझ गए हैं। परमात्मा ने चाहा तो शांति का कोई-न-कोई मार्ग निकल जायगा।

पू. बापूजी की आज्ञा लेकर बम्बई रवाना हुआ।

५-७-४१, नासिक रोड

पू. बापूजी का तार मिला। राजकुमारी बहन का शिमला आने का निमंत्रण आया है। मुझे वर्धा बुलाया है। मैंने सोम या बुधवार तक पहुंचने का लिखा।

६-७-४१ वर्धा

बापू से मिला। बातचीत हुई। ता. १५ को शिमला जाने का निश्चय हुआ।

९-७-४१ वर्धा

सुबह ४ बजे घूमने निकला। सरदार पृथ्वीसिंह व शान्ताबाई साथ में थे। पैदल सेवाग्राम गया। बापू रास्ते में मिले। उनसे थोड़ा विनोद।

पू. बापू से ३ से ४ बजे तक बातचीत। बापू ने बताया कि राजकुमारीजी को शिमला मेरी मानसिक स्थिति पूरी तौर से बता दी है। राजकुमारी का आया हुआ पत्र भी पढ़ा। बच्छराजवाला बाग के बारे में बापू डॉ. गोपीचन्द को लिखेंगे। पृथ्वीसिंह के बारे में अपने विचार बापू से कहे। मुझे यह योजना आवश्यक मालूम देती है।

डॉ. सुशीला की मातुश्री में व्यवस्था करने के लिए प्रह्लाद को समझाया। महेश का इलाज उसे बैंक में जाने की इजाजत नहीं देता।

वासन्ती के बारे में बापू ने कहा 'वीरेन्द्र नहीं है इसलिए खुलासा नहीं हो सकता इत्यादि।

१ -७-४१, वर्धा

सुबह ४। बजे उठा और पैदल सेवाग्राम गया। राजकिशन शान्ताबाई व जानकीदेवी से बातचीत। पू. बापू से स्टेटमेंट के बारे में चर्चा। मेरे जेल जाने के बारे में विचार-विनिमय। जेल जाने की निकट-भविष्य में इजाजत नहीं मिली। मानसिक व शारीरिक शक्ति आने पर ही विचार होगा। स्टेटमेंट निकालने की जरूरत नहीं।

११-७-४१ वर्धा

शाम को थोड़ी वर्षा खुली। मोटर में सेवाग्राम गया। खानसाहब साथ में थे। डॉ. दास, महेश, जानकीदेवी व मदू से बातें। वापसी में महादेवभाई साथ आये। देहरादून-जेल में जवाहरलालजी से जो बातें हुईं, वे महादेवभाई ने सविस्तार कहीं। सुनकर सुख व समाधान मिला। मुन्नाभाई तथा मौलाना के विचार व स्थिति समझी। कोई आश्चर्य नहीं हुआ। सरदार, मुंशी वगैरा के बारे में बातें हुईं।

१२-७-४१ वर्धा

महादेवभाई दिल्ली गये। सेवाग्राम व बापू से मिला। जानकीदेवी व मदालसा से बातचीत।

१३-७-४१ वर्धा

सेवाग्राम पैदल गया। वहां बापू के साथ घूमना। स्वास्थ्य के बारे में तथा शिमला के बारे में पूछना। विनोबा व काकासाहब से अखाड़े, लाठी, तलवार सिखाने आदि के संबंध में ठीक चर्चा। बम्बई हिन्दी-प्रचार के बारे में काकासाहब व नानावटी की भूल पर बापू ने उलहना दिया।

१४-७-४१ वर्धा

विनोबा ने शाम को ६ बजे नालवाड़ी में सत्याग्रह किया। पौन घंटा भाषण हुआ। भाषण अच्छा था। सेवाग्राम में प्रार्थना। बापू ने मनःस्थिति पूछी। मैंने बताया कि कोई विशेष सुधार नहीं हुआ।

रामकृष्ण व दुर्गाबहन से बातचीत।

विनोबा गिरफ्तार कर लिये गए।

१६-७-४१ आगरा-दिल्ली

आगरा से मथुरा तक रामकृष्ण डालमिया से बातचीत। कुछ औ बातों की भी उसीपर विचार-विनिमय। गो-सेवा-संघ के बारे में पू बापूजी की इच्छा व आज्ञा के अनुसार काम करना तय हुआ।

१७-७-४१ शिमला वेस्ट (मैनर विला)

शिमला पहुंचा। राजकुमारी बहन व डॉ धर्मवीरजी व उनकी स्त्री मिले। स्नान भोजन बातचीत। बापू को तार व पत्र भेजा।

१८-७-४१ शिमला

बापू का हृदय-स्पर्शी पत्र मिला। उसका जवाब भेजा। प्रभावती के पत्र का भी जवाब भेजा।

२४-७-४१ शिमला

राजकुमारी बहन से देर तक बातचीत—सेवाग्राम के संबंध में खासकर बहनों के संबंध में। चरखा काता। साढ़े नौ बजे सोने चला गया। पर नींद नहीं आई। जयपुर के संबंध में और वहां के बारे में बहुत देर तक विचार चलते रहे। कई भोजनालयों व सुधारों पर विचार चलता रहा। बाद में मानसिक स्थिति पर विचार शुरू हो गए। अगर जानकी में उदारता विश्वास व निःस्वार्थ प्रेम बढ़ सके तो बहुत-कुछ शान्ति मिल सकती है, अन्यथा पू बापू जानकी से बातें करें। राजकुमारी बहन की संगत तो हमेशा मिलना संभव नहीं तथा वह व्यवहार्य भी नहीं है। इसलिए अगर चि जान्ता मदालसा रेहाना गुलाब इनमें से कोई मेरे साथ रहे तो मुझे शांति मिल सकती है। क्योंकि इनके हृदय में मेरे प्रति उदारता व प्रेम विशेष रूप से दिखाई देता है। वैसे तो प्रभा व सुशीला में भी है परन्तु वह संभव नहीं। बापू से बात करना होगा।

एक बजे अन्दाज बाकर नींद आई।

२६-७-४१ शिमला

दिल्ली से रघुनन्दन सरन के भेजे हुए फल कुम्भ लाकर आये। आगरा जेल में जो नजरबंद भूख-हड़ताल कर रहे हैं, उनके बारे में राजकुमारी बहन लिखा-पढ़ी कर रही हैं। आज उन्हें भी संतोषजनक जवाब मिला। भूख-हड़ताल बन्द हो गई।

आसफअलीजी ने जेल से १६ पेज का लम्बा पत्र भेजा। सरकार ने उसका फोटो ले लिया। पत्र शायद मौलाना को भेजा हो। डॉ. चोइथराम बापू के बहुत विरुद्ध हैं और भी लोग प्रायः मुंशी-जैसे विचार रखते हैं। पंजाब में बहुत थोड़े लोग हैं जो बापू की अहिंसा की व्याख्या को मानते हैं। देवदास गांधी को जयपुर के बारे में पत्र भेजा।

५-८-४१ शिमला

साढ़े चार बजे उठा। प्रार्थना की। जयदेव ने माता आनन्दमयी का जो परिचय बोर्ड में लिखा वह पूरा पढ़ा। इनसे मिलकर कुछ समय इनके पास रहने की इच्छा हुई। बापू ने भी इनसे मिलने के लिए लिखा था।

७-८-४१ शिमला

गुरुदेव टैगोर की मृत्यु की खबर १ बजे करीब लगी। आज १२।१ पर वह चले गए। राजकुमारी बहन को बहुत ही बुरा लगा। दुःख तो मुझे भी हुआ परन्तु [illegible] की दृष्टि से तो ठीक ही हुआ है ऐसा भी लगा। रात को रेडियो पर उनके समाचार सुने। हुगली के किनारे उनका दाह संस्कार हुआ। बंगाल के गवर्नर, महात्माजी आदि के संदेश सुने। कलकत्ता में हाईकोर्ट वगैरा बन्द हुए। सरकारी झंडा आधा झुकाया गया था। जबरदस्त श्मशान-यात्रा निकली।

९-८-४१ शिमला

सुबह उठने के बाद और विचार चलते रहे। जयपुर के बारे में सर फ्रांसिस वायली दौरे से आ गए हों तो मिलना चाहिए या नहीं? सर गिरजाशंकर बाजपेयी से तो खुलकर बातें हो ही गई थीं। उनकी राय राजकुमारी बहन जवाहरलाल व बापू को तो मालूम थी ही। आखिर जब मैं फैसला नहीं कर सका तो परमात्मा का स्मरण कर चिट्ठी डाली। चिट्ठी उनसे मिलने के प्रयत्न के पक्ष में आई। राजकुमारी बहन से कहा। श्री शिवराव के जरिये प्रयत्न शुरू किया।

जब कभी जमनालालजी के सामने किसी प्रश्न के संबंध में समान महत्त्व का होने के कारण निर्णय पर पहुंचने में [illegible] होती तो वे चिट्ठी डालकर निर्णय कर लिया करते थे।

१६-७-४१ आगरा-दिल्ली

आगरा से मथुरा तक रामकृष्ण डालमिया से बातचीत । कल की बातों की भी उसीपर विचार-विनिमय । गो-सेवा-संघ के बारे में पू. बापूजी की इच्छा व आज्ञा के अनुसार काम करना तय हुआ ।

१७-७-४१ शिमला मैनर (मैनर विला)

शिमला पहुँचा । राजकुमारी बहन व डॉ. शमशेरसिंग व उनकी स्त्री मिले । स्नान भोजन बातचीत । बापू को तार व पत्र भेजा ।

१८-७-४१ शिमला

बापू का हृदय-स्पर्शी पत्र मिला । उसका जवाब भेजा । प्रभावती के पत्र का भी जवाब भेजा ।

२४-७-४१ शिमला

राजकुमारी बहन से देर तक बातचीत—सेवाग्राम के संबंध में खासकर बहनों के संबंध में । चरखा काता । साढ़े नौ बजे सोने चला गया । पर नींद नहीं आई । जयपुर के संबंध में और यहां के बारे में बहुत देर तक विचार चलते रहे । कई योजनाओं व सुधारों पर विचार चलता रहा । बाद में मानसिक स्थिति पर विचार शुरू हो गए । अगर जानकी में उदारता विश्वास व निःस्वार्थ प्रेम बढ़ सके तो बहुत-कुछ शान्ति मिल सकती है अन्यथा पू. बापू जानकी से बातें करें । राजकुमारी बहन का संपर्क तो हमेशा मिलना संभव नहीं तथा वह व्यवहार्य भी नहीं है । इसलिए अगर चि. शान्ता मदालसा रेहाना गुलाब इनमें से कोई मेरे साथ रहे तो मुझे शांति मिल सकती है । क्योंकि इनके हृदय में मेरे प्रति उदारता व प्रेम विशेष रूप से दिखाई देता है । वैसे तो प्रभा व सुशीला में भी है परन्तु वह संभव नहीं । बापू से बात करना होगा ।

एक बजे बरसात आकर नींद आई ।

२५-७-४१ शिमला

दिल्ली से रघुनन्दन शरण के भेजे हुए श्री कृष्ण नायर आये । आगरा जेल में जो नजरबंद भूख-हड़ताल कर रहे हैं, उनके बारे में राजकुमारी बहन लिखा-पढ़ी कर रही है । आज उन्हें भी संतोषजनक जवाब मिला । भूख-हड़ताल बन्द हो गई ।

आसफअलीजी ने जेल से १६ पेज का लंबा पत्र भेजा। सरकार ने उसका फोटो ले लिया। पत्र शायद मौलाना को भेजा हो। डॉ. चौइथराम बापू के बहुत निकट हैं और भी लोग प्रायः मुंशी-जैसे विचार रखते हैं। पंजाब में बहुत थोड़े लोग हैं जो बापू की अहिंसा की व्याख्या को मानते हैं। देवदास गांधी को जयपुर के बारे में पत्र भेजा।

५-८-४१ शिमला

साढ़े चार बजे उठा। प्रार्थना की। अभयदेव ने माता आनन्दमयी का जो परिचय थोड़े में लिखा वह पूरा पढ़ा। इनसे मिलकर कुछ समय इनके पास रहने की इच्छा हुई। बापू ने भी इनसे मिलने के लिए लिखा था।

७-८-४१, शिमला

गुरुदेव टैगोर की मृत्यु की खबर १ बजे करीब लगी। आज १२ १ पर वह चले गए। राजकुमारी बहन को बहुत ही बुरा लगा। दुख तो मुझे भी हुआ परन्तु गुरुदेव की दृष्टि से तो ठीक ही हुआ है, ऐसा भी लगा। रात को रेडियो पर उनके समाचार सुने। हुगली के किनारे उनका दाह संस्कार हुआ। बंगाल के गवर्नर, महात्माजी आदि के संदेश सुने। कलकत्ता में हाईकोर्ट वगैरा बन्द हुए। सरकारी झंडा आधा झुकाया गया था। जबरदस्त श्मशान-यात्रा निकली।

९-८-४१ शिमला

सुबह उठने के बाद और विचार चलते रहे। जयपुर के बारे में सर ऑलिस बायकी धीरे से आ गए हों तो मिलना चाहिए या नहीं? सर गिरजाशंकर बाजपेयी से तो पूछकर बातें हो ही गई थी। उनकी राय राजकुमारी बहन जवाहरलाल व बापू को तो मालूम थी ही। आखिर जब मैं फैसला नहीं कर सका तो परमात्मा का स्मरण कर चिट्ठी डाली। चिट्ठी उनसे मिलने के प्रयत्न के पक्ष में आई। राजकुमारी बहन से कहा। श्री सिवराज के जरिये प्रयत्न शुरू किया।

जब कभी जमनालालजी के सामने किसी प्रश्न के संबंध में समान महत्त्व का होने के कारण निर्णय पर पहुँचने में उलझन होती तो वे चिट्ठी डालकर निर्णय कर लिया करते थे।

११-८-४१ शिमला

सुबह घूमते समय सरदार उमरावसिंह शेरगिल को बापू की गीता तथा विनोबा का परिचय।

शाम को तारादेवी की ओर घूमने निकला। मुंशीजी नहीं आ सके। मिस वरिल साथ में थीं। सुबह बापू के परिचय का हाल व बाद में अहिंसा के संबंध में बातें। विनोबा का ठीक परिचय कराया। मेरे विचारों पर चर्चा होती रही। बहुत ही दयालु हृदय की महिला हैं।

१६-८-४१ देहरादून

स्नान-आदि से निवृत्त होकर माता आनन्दमयी (कमला नेहरू की गुरु) से रायपुर में मिलना हुआ। इनसे मिलने के लिए बापू ने भी लिखा था। १ । से १२। तक दो घंटे करीब वहां ठहरा व बातचीत की। इनके प्रति आकर्षण हुआ। अपनी मनःस्थिति कही—सभीके सामने। बाद में एकान्त में भी। उन्होंने प्रेमपूर्वक कुछ समझाया। मेरे सिर पर हाथ फेरा। बालक गोद में सुलाने का भाव हो। गोद की इजाजत दी। जाने के पहले फिर मिलने की इच्छा। स्थान रमणीय व सुन्दर मालूम दिया।

जवाहरलाल व रणजीत पंडित से जेल में मिला। वहां कृष्णा व राजा हठीसिंह भी मिलने आये थे। देर तक बातचीत व विनोद। उनके विचार जान। रूस, बापू, व सुभाष के बारे में बातें। फल लाये। जेकर भी कामनी सज्जन पुरुष हैं।

१९-८-४१ रायपुर-देहरादून

बापू को तार व पत्र लिखा।

२०-८-४१ रायपुर

मां आनंदमयी से एकान्त में मनःस्थिति पर विचार-विनिमय। मां पर ठीक श्रद्धा बढ़ती जा रही है। परमात्मा की बड़ी दया है। बापू सरीखे 'पिता' व माता आनन्दमयी का 'मां' के प्रेम का सौभाग्य मुझे इसी जन्म में प्राप्त हो रहा है। अब भी मैं नालायक रहा तो मेरा ही दोष या पाप समझना चाहिए। संभव है कि अब मेरा जीवन शुद्ध हो जाय।

२१-८-४१, रायपुर-देहरादून

बापू का तार मिला। Glad stay at will' (खुशी है। जब

तक इच्छा हो (मां के पास) ठहरो। मां से एकान्त में बातचीत। १४ मई की जो डायरी नागपुर-जल में लिखी थी और बापू को वर्धा में सुनाई थी वह उन्हें पढ़कर सुनाई व समझाई। वैसे उसका सार तो पहले कहा ही था।

२१-८-४१ रायपुर

बापू का तार आया। महेश को वहीं रखना ठीक रहेगा। शान्ताबाई को वह पसन्द करे तो भेजने का लिखा है।

२६-८-४१ रायपुर

मां का प्रेम प्रसाद अमृत-पान मिला। इससे खूब सुख व समाधान मिला। आशा हो गई कि बाकी जीवन समाधानकारक व शांतिपूर्वक बीतेगा।

२८-८-४१ रायपुर

श्री गौरीशंकर हांवर के साथ उनके घर भोजन। उनकी पुत्री कुमारी शीलावती शंवर, एम ए बी टी से पारमार्थिक चर्चा। उनके आध्यात्मिक गुरु श्री सियाधरशरणजी मां आनन्दमयीजी व महात्मा गांधीजी के बारे में चर्चा। उन्होंने कहा कि गांधीजी के बारे में आकाशवाणी सुनी गई थी कि वह पूर्वजन्म म सीताजी थे। देवताओं की प्रार्थना से यहां जन्म लिया है, इत्यादि।

३१-८-४१, कनखल-हरिद्वार

पू बापू का तार आया। मां (आनन्दमयी) के साथ आने को लिखा। मां की इच्छा विन्ध्याचल वगैरा होकर बाद में आने की है।

२१-९-४१, वर्धा-सेवाग्राम

रात को नींद नहीं आई, बहुत खांसी आती रही। कोई २ बजे से पहले से बापू से फैसला करने के बारे में विचार चलते रहे। स्वास्थ्य मानसिक स्थिति सत्याग्रह जयपुर-संबंधी कर्तव्य हरिजन-संघ खादी गो-सेवा-संघ पर आजकल देर तक विचार चलता रहा। जयपुर-सुधार पर भी।

सेवाग्राम जाकर बापू को प्रणाम किया। भोजन के समय व ११ बजे बातचीत हुई। सुभाषबाबू व जवाहरलाल के बारे में खानगी बातें भी हो गईं। मेरे प्रोग्राम के बारे में अने चार प्रस्ताव रखे—

१ सत्याग्रह करके जेल जाना। बापू ने कहा—बिलकुल नहीं।

२ जयपुर का बाकी रहा कार्य करना। बापू ने उसके लिए भी 'नहीं' कहा।

३ पवनार या अन्य स्थान में चरखा, भजन व वाचन में समय बिताना। बापू ने कहा कि 'यह भी ठीक नहीं।

४ गो-सेवा का कार्य अगर आप इस समय उपयुक्त व जरूरी समझते हों तो करना। बापू ने कहा—'यह कार्य मुझे पसन्द है, अवश्य किया जाय।

२९-९-४१, वर्धा

श्रीमन् से बातें। वह आज श्रीनगर (काश्मीर) शिक्षण-परिषद् में भाग लेने गया।

चि॰ बासन्ती को देखकर पू॰ काकासाहब की कल बापू से जो बातें हुईं, वे कहीं। उनको हरिजनों के सम्बन्ध में पहले के अनुसार सवर्णों में काम करने की ज्यादा आवश्यकता मालूम दी। वह बापू को लिखेंगे।

चि॰ राधाकिसन से देर तक बातचीत। वह गो-सेवा का कार्य महत्त्व का, जरूरी व करने योग्य समझता है।

२३-९-४१ वर्धा

सेवाग्राम गया। साथ में रेहाना व गोपीकृष्ण थे। बापू से थोड़ी देर बातचीत। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की चर्चा।

२८-९-४१ वर्धा

गो-सेवा-संघ, लक्ष्मीनारायण मंदिर-ट्रस्ट वगैरा के बारे में नोट्स लिखे।

पू॰ बापू से मिला। गो-सेवा-संघ के प्रोग्राम के संबंध में विचार विनिमय।

१-९-४१, वर्धा

गो-सेवा-संघ के कार्य का बापू के हाथ से मुहूर्त हुआ। पू॰ बापूजी ने गो-सेवा-संघ के कार्य का उद्घाटन किया। मेरी जिम्मेदारी पर सुन्दर विचारपूर्ण भाषण व आशीर्वाद। नालवाड़ी के ऊपरवाले खाली प्रस्तर आप का नाम 'गोपुरी' रखा गया।

११-१०-४१, वर्धा

पू॰ बापूजी, राजेन्द्रबाबू, राधाकृष्ण, काकासाहब, स्वामी आनन्द, परमेश्वरी वगैरा की हाजिरी में गो-सेवा-संघ का विधान निश्चित हो गया।

गांधी-जयन्ती के निमित्त गांधी-चौक में ५॥ से ६। तक सामुदायिक कताई में चरखा कता। पू. राजेन्द्रबाबू भी साथ में थे।

२-१०-४१ वर्धा

सेवाग्राम गया। पू. बापू का जन्म-दिन था। उनको प्रणाम किया बातचीत व चर्चा। बापू ने महिला-आश्रम की बहनों को उपदेश दिया—विनोद भी किया। रिषभदास रांका के मन में जो हलचल चल रही थी, उसकी सारी स्थिति समझकर बापू ने उसे मेरे पास ही गो-सेवा का कार्य करने की आज्ञा दी।

३-१०-४१ वर्धा

चि. मदू के पास बैठा। उसके पास पद्माबाई, कृष्णाबाई, सत्यभामा व कांती थी। प्रार्थना की। मदू को सुबह ५.४८ पर लड़का हुआ। वजन ६॥ रतल। बालक व मदू प्रसन्न थे। बापू को फोन किया।

पू. बापू से मिलना हुआ। पू. बा व जौ. साथ आये। बापू के हाथ के खद्दर व पानी की चूरी पू. बा ने दी।

४-१०-४१ वर्धा

सेवाग्राम गया। बापू से फिरोज गांधी को मिलाया। कल इतवार को सुबह इनसे तालमी में बात करेंगे।

फिरोज गांधी से साफ-साफ बातचीत खुलासा व शंका-समाधान होता रहा।

५-१०-४१ वर्धा

सेवाग्राम गया। बापू से फिरोज गांधी की बातचीत कराई।

खादी-कार्य के लिए जाजूजी के साथ जगह देखी। कालेज के लिए भी जमीन देखी।

फिरोज गांधी से बापू की बात हुई। मैंने उसे कहा कि जवाहरलाल व बापू के आशीर्वाद प्राप्त करने का पूरा आग्रह रखना ही चाहिए। समय लगेगा तो लगाऊंगा।

११-१०-४१ वर्धा

मुक्ताबहन से गो-सेवा-संघ व खादी-कार्य के बारे में सविस्तार लंबी चर्चा। विचार-विनिमय होता रहा। बापूजी के समागम में ज्यादा

२ जयपुर का बाकी रहा कार्य करना। बापू ने उसके लिए भी 'नहीं' कहा।

३ पवनार या अन्य स्थान में करना भजन व वाचन में समय बिताना। बापू ने कहा कि 'यह भी ठीक नहीं।

४ गो-सेवा का कार्य अगर आप इस समय उपयुक्त व जरूरी समझते हों तो करना। बापू ने कहा—'यह कार्य मुझे पसन्द है अवश्य किया जाय।

२२-९-४१ वर्धा

श्रीमन् से बातें। वह आज श्रीनगर (काश्मीर) शिक्षण-परिषद् में भाग लेने गया।

चि वासन्ती को देखकर पू काकासाहब की कल बापू से जो बातें हुईं, वे कहीं। उनको हरिजनों के सम्बन्ध में पहले के अनुसार सवर्णों में काम करने की ज्यादा आवश्यकता मालूम दी। वह बापू को लिखेंगे।

चि राधाकिसन से देर तक बातचीत। वह गो-सेवा का कार्य महत्त्व का जरूरी व करने योग्य समझता है।

२३-९ ४१, वर्धा

सेवाग्राम गया। साथ में देहाना व श्रीकृष्ण थे। बापू से थोड़ी देर बातचीत। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की चर्चा।

२८-९-४१ वर्धा

गो-सेवा-संघ लक्ष्मीनारायण मंदिर-ट्रस्ट वगैरा के बारे में नोट्स लिखे।

पू बापू से मिला। गो-सेवा-संघ के प्रोग्राम के संबंध में विचार विनिमय।

३०-९-४१ वर्धा

गो-सेवा-संघ के कार्य का बापू के हाथ से मुहूर्त हुआ। पू बापूजी ने गो-सेवा-संघ के कार्य का उद्घाटन किया। मेरी जिम्मेदारी पर सुन्दर विचारशील भाषण व आशीर्वाद। नालवाड़ी के ऊपरवाले मकान सहित माल का नाम 'गोपुरी' रखा गया।

१ १०-४१ वर्धा

पू बापूजी राजेन्द्रबाबू, राधाकृष्ण काकासाहब स्वामी आनन्द, परमेश्वरी वगैरा की हाजिरी में गो-सेवा-संघ का विधान निश्चित हो गया।

मैंने अपने विचार कह सुनाये। राजाजी सरदार, कृपलानी महादेवभाई मौजूद थे।

२५-१०-४१ वर्धा

सेवाग्राम जाते समय बैल-टांगे में विनोबा के कुछ पत्र पढ़े।

बापू के पास राजाजी राजेन्द्रबाबू, कृपलानी गोविन्दवल्लभ पंत गंगाधरराव देशपांडे सरदार, महादेवभाई, किशोरलालभाई व मैं। राजनीतिक विचार-विनिमय होता रहा।

२६-१०-४१ वर्धा

सेवाग्राम गया। चि ओम्, प्रमीला देशपांडे मोहन बालकृष्ण की स्त्री साथ में थे। बापूजी ने पहले तो भीतभर खादी-विचार की बापूजी से बातें की। बाद में हम लोगों को यानी राजाजी सरदार, राजेन्द्रबाबू कृपलानी को अपनी अहिंसा की दृष्टि समझाई।

२८-१०-४१ वर्धा

सेवाग्राम गया। बापू ने लम्बा स्टेटमेंट बनाया। वह पढ़ा। उसपर थोड़ी चर्चा हुई। उसमें सुधार हुआ।

३०-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया। गो-सेवा के विधान में जो सुझाव आये थे उनके अनुसार जो थोड़ा परिवर्तन किया था वह बापू को पढ़कर सुनाया। राजेन्द्र बाबू, बापूजी राधाकिसन जयप्रकाश रामनारायणजी किशोरलालभाई वगैरा हाजिर थे। बापू ने अपनी स्वीकृति दे दी। नियम लेने के बारे में प्रतिज्ञा में जो फरक किया वह भी स्वीकार किया। कल जन्म-दिन होने के निमित्त बापू व बा को आज ही प्रणाम कर लिया।

३१-१०-४१, पवनार

चरखा कांता। आज के 'नागपुर टाइम्स' में बापू का स्टेटमेंट आया। वह फिर से सुना।

९-११-४१ वर्धा

मदालसा व सरला को बापू के आशीर्वाद का महत्त्व समझाया। कमला भी उपस्थित थी।

रहने के लिए उन्हें समझाया। स्वीकार तो कर लिया है, रहे अब की बात।

१९-१०-४१ वर्धा

चार बजे उठा। निवृत्त हुआ। शिवबालकजी बियाणी ने विनोबा की जो जीवनी लिखी है, वह भी पोथे को देखने को दी। बापू से भी बातचीत की।

सेवाग्राम गया—जानकी, दामोदर साथ में। घूमते समय बापू ने तीन बातों पर विचार करने का कहा—

१ रामकृष्ण डालमिया व बीकानेर-मामला तथा अन्य दिक्कतें। थोड़ी चर्चा के बाद मैंने कहा कि कई कारणों से मैं खुद ही इन बातों पर विचार कर रहा हूं।

२ मेहमानों का भार ज्यादा पड़ता होगा, इसकी व्यवस्था के बारे में देर तक चर्चा। सेवाग्राम तथा वर्धा के बारे में भी।

३ महेश मिश्र के लिए पत्ती की सब्जी व अंगूर की व्यवस्था।

४ मथुरादास विक्रमजी की बीमारी का हाल कहा।

५ गो-सेवा-संघ के बारे में भी थोड़ी चर्चा हुई।

६ मेरे घुटने के दर्द व एक्स-रे की चर्चा। मक्खन-मसाज (मालिश) के बारे में कहा कि कराके देखो।

२३-१०-४१ वर्धा

१ बजे बापू ने सेवाग्राम बुलाया। राजेंद्रबाबू का फोन आया था। गोपुरी होते हुए जानकी के साथ बैल-टांगे में गया। बापू सिवनाके मस्तावस्त से बातें करते रहे।

बापू, सरदार, राजाजी, राजेन्द्रबाबू, कृपलानी, महादेवभाई व मैं देर तक वर्तमान राजनैतिक स्थिति पर विचार-विनिमय करते रहे। महादेवभाई ने जवाहरलालजी व मौलाना के विचार कहे। राजाजी के विचार पूना में जो थे, उससे ज्यादा दृढ़ हुए।

सरदार से थोड़ी देर बातचीत हुई।

२४-१०-४१ वर्धा

गंगाधरराव देशपांडे के साथ सेवाग्राम गया। पू. बापूजी को साथ

के दिन जो भाषण दिया वह नहीं मिला तो वे फिर से लिख देंगे। ईकनिकल आदमी पन्नालाल झवेरी व दिवाकरजी के बारे में भी बातें हुईं।

२४ ११ ४१ पौनुरी-सेवाग्राम

सेवाग्राम गया। दयावती बीरा साथ में। बापू के पास बैठा।

२९ ११ ४१ पौनुरी-सेवाग्राम

सेवाग्राम गया। प्रार्थना आज ठीक मालूम हुई। सरदार से देर तक बातचीत। सरदार सोमवार को व बापू ९ को बारडोली जानेवाले हैं।

१ १२-४१, पौनुरी-सेवाग्राम

सेवाग्राम गया। बहुत दूर तक पैदल बाद में साइकल पर। आज गो-शिक्षण-विद्यालय का मुहूर्त व कार्य शुरू हुआ। मेरी इच्छा न होते हुए भी पू बापूजी की आज्ञा के कारण गो-पूजा मैंने भी व परचुरे शास्त्री ने करवाई।

२-१२-४१ पौनुरी

नागपुर से कुमारी राजू मिलने व काम के बारे में बातें करने आई। उसे पू बापूजी का आशीर्वाद प्राप्त करने को कहा।

१ १२-४१ पौनुरी-सेवाग्राम

सुबह झोंपडी में व बाद में शाम को सेवाग्राम में बापूजी के साथ गो-सेवा-संघ का कार्य होता रहा।

राजकुमारी बहन से सेवाग्राम में घूमते समय ठीक बातें हुईं। बम्बई से बापू के नाम पर्चनम काल मारव्हन् ने लिखा। बहादुरखांजी मौलाना व सत्याग्रही कब छूटेंगे।

५ १२ ४१ पौनुरी

पू विनोबा व गोपालराव के साथ बैल-टांगे में सेवाग्राम गया। विनोबा ने गो-सेवा-संघ के व संचालक-मंडल के सदस्य होना स्वीकार कर लिया। जाते-जाते रास्ते में ठीक बातें हुईं। पू बापूजी से भी विनोबा व खेरसाहब के प्रोग्राम के बारे में ठीक बातें हुईं।

७-१२-४१ पौनुरी

विनोबा के साथ बैली में सेवाग्राम जाना-आना। जाते समय गो-सेवा संघ की चर्चा। आते समय राजनैतिक परिस्थिति पर चर्चा। बापू ने अपना

१३-११-४१ पोनुरी-वर्धा

इंडियन स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेंस की स्टैंडिंग कमेटी व इमरजेंसी कमेटी की मीटिंग हुई। मैंने सूचना की कि इमरजेंसी कमेटी की अब जरूरत नहीं रह जाती क्योंकि इस संबंध में श्री व्यासजी आदि का व्यवहार ठीक नहीं रहा। अन्य कारणों से भी उसे एक बार बन्द करना ही जरूरी समझा।

श्री अमृतलाल सेठ के व्यवहार की चर्चा हुई। भावी नीति के बारे में भी विचार-विनिमय। अपने त्यागपत्र के बारे में भी मैंने ठीक तौर से समझाया किया।

पू. बापूजी सेवाग्राम से ४ से ५ बजे तक इस बैठक में आये। उन्होंने अपने विचार कहे। उन्हें तो इमरजेंसी कमेटी की जरूरत मालूम होती है।

१५-११-४१ सेवाग्राम-पोनुरी

स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेंस के सम्बन्ध में बापू से बातें। बलवन्तभाई भी मौजूद थे। बापू ने व बलवन्तभाई ने कार्यालय वर्धा लाना व हरिभाऊजी उपाध्याय को एक मंत्री बनाने का प्रस्ताव ठीक समझा। बलवंतराय के बारे में पट्टाभि से व बलवंतराय से बात करके निश्चय करेंगे। मेरे त्यागपत्र के बारे में आखिरी फैसला तो मुझपर ही छोड़ा गया। मैं रहूं तो बापू को भी पसन्द होगा।

गो-सेवा-संघ के बारे में बापू पत्र लिखकर देंगे।

श्री रतनम्मा पर इतना कर्ज होते हुए भी सिफारिश की यह पू. बापू ने अपनी व काकासाहब की भूल मानी।

१६-११-४१ पोनुरी

रामनारायणजी ने जयनारायण व्यास व अमृतलाल सेठ के बारे में बातें कीं। अगर ये दोनों बापू के नजदीक सच्चाई से आ जायें तो अच्छी बात है।

१९-११-४१ पोनुरी

सेवाग्राम गया। रेलवे-फाटक से हिन्द साइकल पर गया। बापू से बातें। 'विशालभारत' वाले श्रीरामजी शर्मा को भी गो-सेवा-संघ का सदस्य बनने में कठिनाई आती है। उनसे बातचीत। वह सदस्य बन गए। बापू ने उनसे

पत्र लिखा उसीमें मैंने थोड़ा-सा लिख दिया। मैंने जो दो पत्र लिख रखे थे वे फाड़ डाले। काशीबहन गांधी ने जो भ्रम फैलाया था उसके बारे में किशोरलालभाई ने कहा कि वह क्षमा मांगती है, इत्यादि। उनका समाधान हो गया।

१०-१२-४१, गोपुरी

मीराबहन सेवाग्राम से आई। गोपुरी देखी। गो-सेवा-संघ का विधान व उद्देश्य उनको समझाया। उनके साथ में भोजन व बातचीत। उन्होंने व्रत लेने में थोड़ी कठिनाई बताई। उन्होंने अपनी योजना बताई। बापू से स्वतंत्रता लेकर हरिद्वार, सहारनपुर, गंगा हिमालय के नजदीक स्त्रियों का छोटा-सा आश्रम बनाकर वहां कार्य करने का निश्चय-सा किया आदि बातें बताई। मैंने कई सूचनाएं उन्हें दी।

स्टेटमेंट बनाया। ग्यारसमान का सुकामा। अम्बुजम्मा के समर्थ की योजना। प्यारेलाल ने जेल की घटना कही।

९-१२-४१ चौपुरी

स्नान वगैरा करके सेवाग्राम गया। रेलवे-स्टेशन से साइकल पर। बापू से बातें। बेरी एक्सपर्ट सरदार सर दातारसिंह का पत्र पढ़वाया। उसका जवाब लिखाया। महिला-आश्रम व अम्बुजम्मा बहन द्वारा प्राप्त सहायता की योजना बापू को दी। वहीं पर बापू के साथ भोजन। किशोरलालभाई, राजकुमारीबहन से बातचीत। कु. कमला व कस्या से थोड़ी बातें। बैली में भी बापूजी बंगले आये। वह बारडोली गये।

१२-१२-४१, चौपुरी

विनोबा के दक्षिण (मद्रास) में अधिक रोज ठहरने के बारे में तथा वहां के लोगों को बापू की दृष्टि समझाने के बारे में बातें हुईं। उन्होंने इसके लिए (वहां) ज्यादा ठहरने की आवश्यकता नहीं बताई।

२४-१२-४१ चौपुरी

श्री राजकुमारी बहन का पत्र वर्धा में ए. आई. सी. सी. के बारे में मिला। ऐक्सप्रेस तार किया कि वहां होने में कठिनाई है। बापू का पत्र मिला। बाद में शाम को किशोरलालभाई सेवाग्राम से इसीलिए आये। उन्होंने बारडोली टेलीफोन से महादेवभाई से बातें की। वहां व सेवाग्राम में करने में कठिनाई बतलाई। वह कल तार से सूचना करेंगे। बापू के सुन्दर पत्र का जवाब भी भेजा।

२७-१२-४१ चौपुरी

पू. बापूजी का पत्र ता. २४-१२ का लिखा हुआ मिला। इससे मुझे दुःख ही पहुंचा। मैंने उसका जवाब तो लिखा परन्तु सन्तोष नहीं हुआ। इसलिए भेजा नहीं। किशोरलालभाई से मिलकर भेजने का निश्चय किया। सेवाग्राम जाने के लिए बैली-टांगे की व्यवस्था नहीं हो सकी।

२८-१२-४१, चौपुरी

सेवाग्राम गया। राष्ट्रीय ध्वज-वन्दन में शामिल।

किशोरलालभाई को बापू का पत्र दिखाया। उन्होंने व महादेवभाई ने टेलीफोन पर बापू के दुःख के जो समाचार कहे थे वे कहे। उन्होंने बापू को

१३ १ ४२ सेवाग्राम

वर्किंग कमेटी सुबह ९ से ११ व दोपहर २। से ६। तक हुई। दोपहर की मीटिंग में बापूजी भी आये। ठीक चर्चा व विचार-विनिमय हुआ। मेरे त्याग-पत्र के बारे में बापूजी ने कहा—"मौलाना तथा अन्य सदस्यों की इच्छा त्यागपत्र स्वीकार करने की नहीं है। अतः मुझे इस समय आग्रह नहीं करना चाहिए। मैं अपने मन पर बोझ नहीं रखूं।" इत्यादि।

१४ १ ४२, सेवाग्राम

वर्किंग कमेटी ९ से ११ व शाम को २। से ६। तक हुई। शाम की मीटिंग में बापूजी आये। रचनात्मक कार्य की अच्छी चर्चा हुई। मुझे भी बोलना पड़ा। लड़ाई की परिस्थिति पर विचार।

१५ १ ४२, सेवाग्राम

ए आई सी सी २। से ७ तक हुई। बीच में पौन घंटा चाय पानी। मौलाना का भाषण थोड़ा लंबा व पुनरावृत्ति के साथ हुआ परन्तु वह बहुत स्पष्ट मुआफिकवार नम्रता से भरा हुआ व बापू के प्रति श्रद्धा से भरा हुआ था। भाषण के बीच में मेरी आंखों में तो पानी आ गया। बापू ने भी परिस्थिति स्पष्ट कर दी। उन्होंने खास तौर से कहा कि "मैं बनिया हूं व बनिया ही मरना चाहता हूं। मैं आपको व्यावहारिक समझता हूं। हवा में उड़नेवाला नहीं हूं। मैं तो ऐरोप्लेन में भी नहीं बैठा हू। दूर से ही देखें हैं। जवाहरलालजी का भी भाषण ठीक हुआ। उन्होंने कहा 'बापू सौ फीसदी व्यावहारिक हैं यह मेरा अनुभव है। हां यह ठीक है कि मैं हवा में उड़नेवाला हूं। यह मुझ मालूम है। इत्यादि। सब ठीक रहा।

१७-१ ४२, सेवाग्राम

बजाजवाड़ी में वर्किंग कमेटी की मीटिंग ९ से ११ तक हुई। स्वयं सेवकों के बारे में व सुभाषचन्द्र बोस की योजना के बारे में बातचीत। दादा धर्माधिकारी व राष्ट्रीय युवक-संघ के नाम के कारण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्बन्ध रखनेवाले किसी व्यक्ति ने बमकी-भरा के जो पत्र आये वे दिखाये। इस बारे में थोड़ी चर्चा वर्किंग कमेटी में व बापूजी से हुई। रामू के साथ सेवाग्राम गया। पू बापूजी से नारायणदासजी बाजोरिया

डायरी के अंश

१९४२

१-१-४२, गोपुरी

बापू कांग्रेस से अलग हुए। यह सब पढ़ा। थोड़ा बुरा तो मालूम दिया परन्तु विचार करने पर ठीक ही हुआ ऐसा लगा।

७-१-४२, गोपुरी

विनोबा से डेरी-ऐक्सपर्ट श्री कोठावाला के पत्र पर विचार-विनिमय।

राजेन्द्रबाबू के स्टेटमेंट, वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव, बापू के स्टेटमेंट तथा मैंने जो स्टेटमेंट दिया उसपर विचार-विनिमय। वहीं बजाजवाड़ी में प्रार्थना।

९-१-४२, गोपुरी

बजाजवाड़ी में मेहमानों की व्यवस्था पर विचार-विनिमय। बापू कल सुबह ५ बजे आयेंगे।

१०-१-४२, गोपुरी

गाय-बैलों की प्रदर्शनी देखी। पू. बापूजी की गाड़ी लेट आई।

बजाजवाड़ी से रेलवे-फाटक तक जाते हुए बीच-बीच में बापू से बात-चीत होती रही। बापू ने कैम्प देखा। मदू से मिलकर व महिला-आश्रम होते हुए कोठी से मोटर में बैठे।

गो-सेवा-संघ का जल्सा १ से ४ फरवरी तक करने के बारे में बापू से चर्चा। मालवीयजी का पत्र। वे गो-सेवा-संघ के सदस्य बने। डॉ. भगवानदास भी धर्म के साथ सदस्य बने। कोठावाला का पत्र [illegible]। रचनात्मक काम के ११ मुद्दों में गो-सेवा का उल्लेख भी नहीं है। स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेंस व श्री राजकुमारीजी को जनरल सेक्रेटरी बनाने के बारे में अन्नपूर्णा सुजानी वनिक के बारे में भी चर्चा। बापू यज्ञ-मंडप का उद्घाटन ता. ७ जनवरी को करेंगे।

बजट का विचार बाद में कर लेना होगा। कोठावाला को गो-सेवा-संघ के संबंध में बापू के नाम से तार भेजना। महावीरप्रसादजी पोद्दार के बारे में बातचीत।

२७-१-४२, गोपुरी

बजाजवाड़ी में मोगावाले डाक्टर रा ब० मथुरादास ने आँखों की बीमारी की जिस प्रकार छंटनी की व आपरेशन किया वह देखकर ताज्जुब हुआ। पू बापूजी भी चार बजे आकर देख गए।

२८-१-४२, गोपुरी

डा मथुरादास को लेकर सेवाग्राम गया। बापूजी से अच्छी तरह परिचय व बातचीत।

३०-१-४२, गोपुरी

बापूजी ने प्रार्थना के बाद चरखा-संघ के विद्यार्थियों को उपदेश दिया। उसके बाद बापूजी से थोड़ी बातें।

३१-१-४२ गोपुरी

विनोबा व राधाकिसन के साथ गो-सेवा-संघ की बातें करते हुए बैलों में सेवाग्राम जाना-आना। बापू से गो-सेवा-कान्फ्रेंस के सम्बन्ध में बातें कीं। घनश्यामदास बिड़ला को सेवाग्राम के आसपास की खेती व कुओं की योजना पर उन्होंने अपने जो विचार कहे वे मुझे बताये।

१-२-४२, गोपुरी

ठीक २ बजे परिषद् शुरू हुई। वन्देमातरम् बापू ने बैठकर गवाया। गो-सेवा-कान्फ्रेंस में बापू का भाषण भावपूर्ण दुःख से भरा हुआ व विस्तार के साथ हुआ। सदस्य बनने पर जोर। विनोबा का भाषण विद्वत्तापूर्वक, गो-सेवा-संघ के नामकरण का खुलासा करनेवाला व महत्वपूर्ण था। सदस्यों की शंकाओं का निरसन तथा अन्य खुलासे।

२-२-४२, गोपुरी

सुबह ही गो-सेवा-संघ के बारे में पू बापूजी को पत्र लिखकर गोपी के साथ सेवाग्राम भेजा जो जवाब मिला वह समझ में नहीं आया।

३-२-४२, गोपुरी

बजाजवाड़ी में २ से ५। तक संचालकों की व गो-विचारकों की बैठक

को मिलाया। उनका लेटर व पांच हजार का चेक बापूजी को दिलाया।

पू. बापूजी ने ३ बजे से ५ बजेतक कार्यकर्ताओं को रचनात्मक कार्य का खुलासा समझाया।

१८-१-४२, गोपुरी

जवाहरलालजी पट्टाभि बलवंतराय सेवाग्राम से आये। उन्होंने कहा बापू ने आखिर फैसला कर दिया कि बलवंतराय यहां रहेंगे। मैंने सरदार से जो बात हुई, वह कही कि उनकी इच्छा तो इन्हें भावनगर (काठियावाड़) रखने की है। इतने पर भी बलवंतराय अपनी जिम्मेदारी पर जो निश्चय करना हो वह करें। वर्धा (सेवाग्राम) में शामिल रहे।

१९-१-४२, गोपुरी

बापूजी आज बनारस गये। राम भी साथ गया।

२२-१-४२, गोपुरी

राधाकृष्ण व महावीरप्रसाद पोद्दार के साथ विनोबा से मिला। विनोबा से महावीरप्रसादजी का परिचय करवाया। शिवाजी गो-सेवा-संघ विनोबा की आत्मकथा बापू की इजाजत पर चर्चा। श्री लक्ष्मीनारायण का निजी मंदिर हटाने का प्रश्न श्री मेहता इंजीनियर ने फिर उठाया। राधाकिसन की इच्छा भी हुई। पर विनोबा का कहना हुआ कि नहीं हटाना चाहिए।

२५-१-४२, गोपुरी

रेलवे-फाटक से साइकल पर सेवाग्राम गया। महावीरप्रसाद पोद्दार भी साथ हो लिये। महादेवभाई ने बनारस की सफल यात्रा, मानपुर चौका मेला छात्रालय में उपद्रवी बच्चों ने जो पत्थर फेंके और उससे कइयों को चोट लगी वा उन्हें अस्पताल भेजे गए आदि की जानकारी दी।

बापू ने कहा कि पू. मालवीयजी का स्वास्थ्य बहुत ही कमजोर हो रहा है। आज उन्हें आने का कष्ट करने की उन्होंने ही मनाही कर दी है। उन्हें पत्र लिखा। मेल-ट्रेन में बापूजी ४ बजे पहुँचे। स्टेट्स कान्फ्रेन्स का दफ्तर सेवाग्राम लाया जाय व बलवंतराय मेहता भावनगर ही रहें।

अमल का विचार बाद में कर लेना होगा। कोराबाला की गो-सेवा-संघ के संबंध में बापू के नाम से तार भेजना। महावीरप्रसादजी पोद्दार के बारे में बातचीत।

२७-१-४२ गोपुरी

बजाजवाड़ी में मोगावाले डाक्टर रा. ब. मथुरादास ने आँखों की बीमारी की जिस प्रकार छंटनी की व आपरेशन किया वह देखकर ताज्जुब हुआ। पू. बापूजी भी चार बजे जाकर देख गए।

२८-१-४२, गोपुरी

डा. मथुरादास को लेकर सेवाग्राम गया। बापूजी से अच्छी तरह परिचय व बातचीत।

३०-१-४२, गोपुरी

बापूजी ने प्रार्थना के बाद चरखा-संघ के विद्यार्थियों को उपदेश दिया। उसके बाद बापूजी से थोड़ी बातें।

३१-१-४२, गोपुरी

विनोबा व राधाकिसन के साथ गो-सेवा-संघ की बातें करते हुए पैदल सेवाग्राम जाना-आना। बापू से गो-सेवा-सम्मेलन के सम्बन्ध में बातें कीं। घनश्यामदास बिड़ला की सेवाग्राम के आसपास की खेती व कुओं की योजना पर उन्होंने अपने जो विचार कहे वे मुझे बताये।

१-२-४२ गोपुरी

ठीक २ बजे परिषद् शुरू हुई। वन्देमातरम् बापू ने बैठकर गवाया। गो-सेवा-सम्मेलन में बापू का भाषण भावपूर्ण दुःख से भरा हुआ व विस्तार के साथ हुआ। [illegible] समय पर भार। विनोबा का भाषण विद्वत्तापूर्ण गो-सेवा-संघ के नामकरण का खुलासा करनेवाला व महत्त्वपूर्ण था। मन्त्रियों की घोषणा का निवेदन तथा अन्य खुलासा।

२-२-४२, गोपुरी

सुबह ही गो-सेवा-संघ के बारे में पू. बापूजी को पत्र लिखकर माली के साथ सेवाग्राम भेजा। जो जवाब मिला वह समझ में नहीं आया।

३-२-४२ गोपुरी

बजाजवाड़ी में २ से ५। तक सभासदों की व गो-विज्ञानशाला की बैठक

हुई। पू. बापूजी ने काम व मेल का खुलासा किया। ठीक चर्चा विचार व ठहराव हुए।

४-२-४२, गोपुरी

गो-सेवा-संघ के संचालक-मंडल की बैठक ८ से ११ तक हुई। शाम को संचालक-मंडल व ऐक्सपर्ट लोगों की बैठक २ से ५ तक हुई। पू. बापूजी से ठीक चर्चा व खुलासा हुआ। कार्य व उत्साह ठीक रहा।

५-२-४२ गोपुरी

मॉंटगुमरी वाले सर दातारसिंह के साथ मोटर में सेवाग्राम जाते समय उन्होंने मद्रास में कमीशन के सामने जो बयान वगैरा हुए, वे बतलाये। बम्बई में ७ मार्च से इसकी मीटिंग का काम शुरू होगा। बापू से भी भोजन करते समय व बाद में कमीशन के बारे में बातें हुईं। वापस आते समय उनके कौटुम्बिक हाल व विचार आदि जाने। ठीक परिचय व दोस्ती हो गई।

सेवाग्राम में घनश्यामदास बिड़ला, नारायणदास बाजोरिया वगैरा से बातें। गो-सेवा-संघ की योजना अमल में लाने के बारे में देर तक विचार-विनिमय हुआ।

६-२-४२ गोपुरी

डा. महोदय ने बापू से जो बातें हुईं, वे बताईं।

७-२-४२, गोपुरी

जानकी व शान्ता के साथ घोड़ेवाले टांगे में सेवाग्राम गया। बापू से नीचे-अनुसार बातें हुईं—

(१) बच्छराज कम्पनी में जो सार्वजनिक रकम जमा है, वह वहां से उठा लेने के बारे में श्री [illegible]देवजी का पत्र। बापू ने पूछा कि फिर उसे कहां जमा रखा जाय? मैंने कहा कि चरखा-संघ में।

(२) श्री प्रभाकर जैन का पत्र। उन्होंने कहा कि तीन लाख रुपये मिलने चाहिए। इस पर विनोद भी हुआ। तय हुआ कि मैं उन्हें लिखूं।

(३) डॉ. महोदय के बारे में बापू की राय यह रही कि उन्हें यहां रकम जमा नहीं करना चाहिए। मैंने कहा कि प्रभु (किशोरी) से बात कर मैं फैसला करूंगा।

(४) अम्बुजम्मा के रुपयों के बारे में कहा कि रकम महिला-आश्रम को दी जाय।

(५) चरखाई-फंड का उपयोग हिन्दी पढ़नेवाली बहनों को छात्र-वृत्ति देने के रूप में किया जाय।

(६) जानकी व शान्ता ने बापू के साथ बहुत बातें कीं। बापू के साथ घूमना।

९-२-४२, गोपुरी

सार्वजनिक फंड के व दूसरे रुपए चरखा-संघ में जमा रखने के बारे में जाजूजी से देर तक बातचीत। उन्होंने अपनी कठिनाई बताई। डॉ. महोदय के बारे में बातचीत बापू से हुई थी वह तथा मेरे विचार उन्हें कहे। महोदय भी आ गए थे।

वर्धा से सेवाग्राम गया। रास्ते में जानकी व विजया से बातें। भाई घनश्यामदास बिड़ला ने मिलने बुलाया था। उन्होंने कहा कि टेकड़ी पर उनके लिए व नारायणदासजी के लिए बंगले बनें।

सेवाग्राम में बनमाला ज्यादा बीमार है।

११-२-४२

११ फरवरी १९४२ को जमनालालजी का वर्धा में देहावसान हो गया।

जानकीदेवी बजाज को
जमनालाल बजाज द्वारा लिखे पत्रों में से
गांधीजी-संबंधी उल्लेख

●

पर महात्माजी के सिद्धान्त के मुताबिक स्वराज्य के कार्य में पूरी बाधा पैदा होगी।

बाबा रामचंद्र नाम के एक प्रसिद्ध नेता इस प्रांत (यू. पी.) में हैं खासकर किसानों में। उन्हें भी सरकार ने काशी में महात्मा गांधीजी का व्याख्यान होते समय ही गिरफ्तार कर लिया। सभा में बहुत भारी भीड़ थी पर बड़ा पूर्ण शांति रही। गिरफ्तारी के समय मैं भी वहां मौजूद था। लोगों को शांत व प्रसन्न रखने का उद्योग किया गया तथा एकत्र लोगों ने खूब ही शांति तथा आनंद का प्रदर्शन किया। महात्माजी (पूज्य बापूजी) की वजह से जमाना (समय) एकदम बदल गया है। मुझे इस बारे में बहुत ही आनंद तथा लाभ हो रहा है। परमात्मा ने चाहा तो अवश्य जीवन की उन्नति होवेगी। तुम्हारी कई बार याद आया करती है। आशा है कि अब तुम किसी तरह से भी पीछे नहीं रहोगी। धैर्य के साथ तथा शांति व सत्य के साथ कार्य करती रहोगी। मेरी समझ से कम-से-कम भी साल तक कोई भी दागीना (गहना) नहीं पहनने का तुम व्रत ले लो। नथ छोड़कर पांव की कड़ी भी निकाल देनी चाहिए, व स्वदेशी कपड़े ही उपयोग में लाना चाहिए। कपड़ों के बारे में तो तुमने निश्चय-सा कर ही लिया है।

पूज्य बापूजी का साथ छोड़ते हुए भी दुःख पाता हूं। उनका भी हृदय से बहुत ही ज्यादा प्रेम है। आगे उनकी आज्ञा-मुताबिक आना होवेगा।

बंबई, ६.१.१९२१

सविनय प्रेम! अबके पूज्य बापूजी (महात्माजी) के साथ जो यात्रा हुई, उससे बहुत फायदा हुआ। बहुत करके शनिवार को वर्धा पहुंचना होवेगा।

बंबई २९.६.२१

पत्र लिखने का बहुत दिनों से विचार था परन्तु 'तिलक स्वराज्य फंड' के काम के कारण नहीं लिख सका। परमात्मा की कृपा से पू. महात्मा गांधीजी और हिन्दुस्तान की बात रह जावेगी ऐसे लक्षण

मालूम होते हैं। मुझे बहुत करके पूज्य बापूजी (महात्माजी) के साथ मद्रास लखनऊ, कलकत्ते की तरफ जाना पड़ेगा।

— —

पटना के नजदीक (रेल में)
१५-८-२१

मैं अभी दो-ढाई घंटे बाद ही पूज्य बापूजी (महात्माजी) के पास पहुंच जाऊंगा। कल यहांपर (पटने में) कमेटी का कार्य होगा। बाद में मुझे तो ऐसा दीखता है कि पूज्य बापूजी के साथ कलकत्ता आसाम मद्रास आदि स्थानों में जाना होगा। वह तो मुझे पहले ही से जाना चाहते थे परंतु बंबई के मित्रों ने नहीं जाने दिया। बापूजी के साथ रहने से मुझे तो बहुत समता पहुंचने की आशा है। मेरी इच्छा तो ऐसी होती है कि तुम और मैं दोनों इनके साथ भ्रमण में रहा करें, जिससे इनकी सेवा करने का मौका भी मिले तथा कई बातों का ज्ञान हो। ईश्वर करेगा तो यह भी इच्छा पूर्ण हो सकेगी। देश में भी एक बार जाने का बहुत मन होता है। पूज्य बापूजी छुट्टी देंगे तो वहां भी तुम्हें साथ में ले जाने का विचार है।

गोहाटी २-८-२१

यहां के मारवाड़ी व्यापारियों ने भविष्य में विदेशी सूती कपड़ा नहीं मंगाने की प्रतिज्ञा कर ली। यह कार्य तो बापू के ही प्रताप से हुआ परन्तु बिना विशेष उद्योग किये ही मौका मिल गया इसमें मुझे भी मिल गया। यहां के कार्यकर्ता बहुत प्रसन्न हो गए। गौहाटी में विदेशी कपड़ों की होली भी अच्छी हुई। भारी-भारी कीमती कपड़े भी जलाये गए। यहां के लोग बौड़े भोले हैं और बापूजी पर इनकी बहुत श्रद्धा व प्रेम है तथा त्याग भी है। गौहाटी में पहाड़ के ऊपर कामाख्यादेवी का प्राचीन मंदिर है वहां भी मैं गया था। इधर प्राकृतिक दृश्य देखने-योग्य और बहुत ही सुन्दर हैं। चित्त प्रफुल्लित हो जाता है। एक तो बापू का समागम दूसरे नाना प्रकार के दृश्य तथा मनुष्यों से भेंट का लाभ। हमारे साथ पू० मौलाना मुहम्मदअली साहब की धर्मपत्नी भी हैं। वह बुर्का ओढ़ती हैं पर बापूजी तथा हम

लोगों से मुझे धीरे-धीरे ही बोलनी है। गोहाटी में स्त्रियों की तीन सभाएं हुई थीं। इनमें एक मारवाड़ी स्त्रियों की भी थी। उसमें करीब १५ स्त्रियां होंगी। उसमें शोरगुल तो था पर स्वदेशी-प्रचार का असर ठीक हुआ। उस सभा में मुझे बापूजी के भाषण का अर्थ मारवाड़ी भाषा में बताना पड़ा था।

तेजपुर (आसाम) २२-८-२१

गोहाटी (आसाम) ता. १८को पहुंचे। उस दिन श्रावणी पूर्णिमा थी। रास्ते में (रेलवे) स्टेशन पर ही स्नान करके पूज्य बापूजी (महात्माजी) के हाथ से ही नई जनेऊ पहनी व उसी रोज शाम को उनसे राखी बंधवाई। कलकत्ते से हाथ का कता हुआ और कसुंबे में रँगा हुआ सूत का तार साथ ले आये थे। उन्होंने बहुत प्रेम तथा प्रसन्नता से राखी बांधी। मैंने राखी बांधने की दक्षिणा के लिए उनसे पूछा तो उन्होंने उनकी विरासत संभालने को कहा तो मैंने कहा कि आप अपने आशीर्वाद के द्वारा मेरा आत्मिक बल बढ़ा दें। यह बात तुम्हारे ध्यान में रहे इसलिए लिखी है। रक्षा-बंधन का दिन खाली नहीं गया। मेरी समझ से तो बापूजी ने इस भाव से अभीतक और कोई राखी नहीं बांधी होगी। जिस तरह हम लोगों की जिम्मेदारी बढ़ती जाती है उसी तरह परमात्मा हमारी ताकत भी बढ़ायेगा ऐसा मुझे भरोसा है।

सिलहट (आसाम) २९-८ १९२१

तेजपुर (आसाम) से लिखा हुआ पत्र तुम्हें समय पर मिल गया होगा। आसाम के भ्रमण में नई नई बातें देखने में आईं। इधर भी पूज्य बापूजी पर बहुत श्रद्धा व भक्ति है। आसाम में मारवाड़ी व्यापारी भाइयों के घर बहुत हैं। गांव-गांव में और जंगलों व बगीचों में भी इनकी दूकानें हैं। डिब्रूगढ़ में मारवाड़ियों की तरफ से अच्छा स्वागत हुआ। मैं यहांपर एक रोज पहले पहुंच गया था। मारवाड़ी स्त्रियों की सभा भी हुई। महात्माजी ने विदेशी वस्त्र त्यागने के बारे में तो कहा ही उसके साथ ही अपने समाज में गहने-गांठीने पहनने की प्रथा

भी बहुत बुरी है, इस बारे में भी कहा। इससे सुन्दरता नष्ट होती है। जहां तक हो सके जेवर न पहने जायं। अगर पहने ही जायं तो बहुत थोड़े। और कपड़ा भी साफ-स्वच्छ सफेद रंग का काम में लाया जाय कि जिससे मारवाड़ी बहनें भी आसाम की बहनों के मुताबिक सीताजी के समान स्वच्छ दिखने लग जायं। यह बात इस तरह का भाव समझाकर, उन्होंने कही और मुझसे कहा कि जिस तरह से हो गहने और रंग-बिरंगे अधिक कपड़े पहनने की चाल कम करने का प्रयत्न करना चाहिए। स्टेशनों पर हजारों लोग जमा हो जाते हैं और 'जय-जय' पुकारा करते हैं। महात्माजी के दर्शन कराने के लिए खूब प्रार्थना करते हैं। मैं बापूजी के डिब्बे में ही रहता हूं। बहुत बार मुझे ही यह कठोर कार्य करना पड़ता है और लोगों को दर्शनों से वंचित रखना पड़ता है। आज बापूजी के मौन का दिन (सोमवार) है। यहां सिलहट में नदी के किनारे एक शौकामरी मारवाड़ी ओसवाल सज्जन के घर में बापूजी शांति से ठहर रहे हैं। यहां से ही यह पत्र मैं तुम्हें लिख रहा हूं।

बापूजी इतना भारी कार्य करके भी खूब आनन्द में रहते हैं। कभी-कभी तो खूब हंसा करते हैं और मुझसे तो कहते हैं "कि मुझे अगर फांसी का हुक्म होगा तो भी मैं तो सब कार्य करते-करते और हंसते हुए ही फांसी चढ़ जाऊंगा" ऐसा मेरा मन कहता है। ये सब बातें तुम्हें इसलिए लिखी हैं कि तुम बहुत ज्यादा फिकर किया करती हो। सो अब भविष्य के लिए जितना आनन्द का लाभ लिया जाय उतना लेने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। ज्यादा फिकर करने और उदास रहने की आवश्यकता नहीं। हमें तो अपने चरित्र शुद्ध बनाते हुए और आनन्द से हंसते-हंसते सब शारीरिक कष्ट सहते हुए मृत्यु प्राप्त करनी है।

एक बात लिखनी रह गई। गौहाटी में बापू जिनके घर उतरे थे वह श्रीयुत फूकनबाबू विलायत से बैरिस्टरी पास किये हुए हैं तथा बड़े ही शौकीन व्यक्ति हैं। उन्होंने अपने यहां के तमाम विदेशी कपड़े जिनमें के सुन्दर-सुन्दर भारी-से-भारी कपड़े बापू की मौजूदगी पर आग में जला दिये। करीब साढ़े तीन हजार के कपड़े थे। और भी कई लोगों ने जलाये।

कलकत्ता ११ ९ २१

तुम्हारे दो पत्र मिले। तुम्हारे पहले पत्र का जवाब जल्दी देने का विचार था परन्तु महात्माजी के यहां रहने के कारण और वर्किंग कमेटी में अधिक समय लगने के कारण पत्र नहीं लिख सका। तुमने लिखा कि मंदिर में प्रायः सब स्वदेशी कपड़ा होगया और अपने देश जाने का विचार तो मेरे वर्धा आने पर किया जायगा। क्योंकि अब तो प्राण ही बापू के अर्पण हैं। सपने में भी बापू ही दिखते हैं, सो यह सब पढ़कर बहुत ही समाधान और प्रसन्नता हुई। परमात्मा तुम्हारी इस तरह की सद्‌बुद्धि बनाये रखे। परमात्मा अवश्य ही सफलता और शक्ति प्रदान करेगा।

अवकाश मिलने पर फिर पत्र लिखूंगा। अभी तो बापूजी आ रहे हैं। उनके साथ जाना है।

कलकत्ता १७-९-२१

तुमने लिखा कि पहले पत्र के जवाब में देरी हुई, इससे तुम्हें चिंता हो गई थी। सो इस तरह चिंता होना ठीक नहीं है। कठिन परीक्षा का समय तो अब आनेवाला है। हम लोगों का तो बहुत जल्दी जेल में जाना संभव हो सकता है। अगर इस तरह की छोटी-छोटी बातों से चिंता हुआ करेगी तो पीछे असली ध्येय प्राप्त करने में देर लगेगी और बाधा होवेगी। मन को सदैव खूब शांत और आनंद में रखने की पूरी चेष्टा रखनी चाहिए। जब हम लोगों का परमात्मा पर पूरा विश्वास है तथा बापू का आशीर्वाद है, पीछे हमें चिंता क्या होनी है यह बिल्कुल भूल जाना चाहिए।

कलकत्ते में जो कार्य होता है उसका हाल समाचारपत्रों में पढ़ लिया करती होगी। मुझे यहां से अजमेर, करांची, अमृतसर, भागलपुर आदि से आने के लिए तार व पत्र आ रहे हैं। यहां का कार्य समाप्त होने पर दो-चार रोज में ही बापू की वहां जाने की आज्ञा होवेगी वहां जाने का विचार है अथवा वर्धा आकर वहां से वहां जाना है यह निश्चय किया जायगा।

लाहौर, १०-९ २१

बलहरे के बाद आजतक तुमको पत्र नहीं लिख सका। इसका कारण यह है कि इस दौरे में अवकाश कम मिला। आज करांची से अभी रात को ९॥ के करीब यहां लाहौर (पंजाब) में पूज्य लाला लाजपतरायजी के घर पर पहुंचे हैं और दीपावली की रात इस पवित्र घर में बिताई जायगी। यहां कल रहकर ता १ को अमृतसर और ता १ को दिल्ली जाने का विचार है। वहां से बहुत करके बंबई होकर वर्धा जाना होगा। अगर पू बापूजी दूसरी आज्ञा देंगे तो उसका पालन करना होगा।

कानपुर जाते हुए (रेल में)
१२ १ २१

सप्रेम वंदेमातरम्। अजमेर जाने का बिल्कुल निश्चय हो चुका था परंतु कानपुर से कई तार आये उनपर से महात्माजी ने पहले कानपुर जाने की आज्ञा दी जिससे यहां जाना पड़ा। कानपुर दो रोज ठहरकर अजमेर जाने का विचार है।

वर्धा २ १-२२

बापूजी का बारडोली वाले समय का संदेश हमेशा विचार करने लायक है।

साबरमती-आश्रम २०-१-२२

सप्रेम वंदेमातरम्। पूज्य श्री बापू के मुकदमे का हाल सब समाचार पत्रों में पढ़ा ही होगा। मुझे इस समय यहां आने से बहुत लाभ हुआ। बापू से खूब बातें हुई। बापू ने हमेशा के लिए समझ के योग्य एक बहुत ही सुन्दर पत्र लिखकर दिया है। किसी समय शांति मालूम हो तो उस पत्र से बहुत लाभ पहुंचेगा। कोर्ट का दृश्य विचित्र था। ऐसा मालूम होता था जज तथा उनके साथी दोषी हैं तथा बापू उनको दोष से मुक्त होने का प्रेम से उपदेश कर रहे हैं। जज आदि अंग्रेज होते हुए भी उनपर खूब असर

हुआ। ता० १८ मार्च का दिन हमेशा याद रखने योग्य है। यह दिन भी हमारे भविष्य के इतिहास में बिजली की तरह चमकता रहेगा। अच्छा होता तुम भी आ जातीं। खैर, कोई बात नहीं। बापू ने मुझे खूब जोर से पीठ में धप्पा लगाकर आशीर्वाद दे दिया। अब मुझे पूरा विश्वास है कि हम लोग अपनी उन्नति अवश्य कर सकेंगे। जिम्मेदारी खूब बढ़ गई है। अब जेल जाने की बाहर के कार्य की दृष्टि से बिलकुल जरूरत नहीं मालूम होती। हां शांति तथा विश्रांति के लिए जाने की इच्छा होना संभव है। परंतु उसे रोकना होगा। कार्य करते हुए ही वैसा मौका आ गया तो आनंद की बात है, तथापि जान-बूझकर नहीं जाना है। बंबई में तथा यहां मेरे गिरफ्तार होने की चर्चा बहुत जोर से थी परंतु उस चर्चा में कम-से-कम हाल में कोई दम नहीं है। अगर मुझे गिरफ्तार होना ही पड़ता तो उस हालत में हिन्दी 'नवजीवन' में प्रकाशक की हैसियत से मेरी जगह तुम्हारा नाम दिया जाय ऐसा मेरा विचार हुआ था। और इस बारे में मैंने महात्माजी से पूछा भी था। उन्होंने भी कहा था ऐसे मौके पर तुम्हारा नाम रख सकते हो। खैर, फिलहाल तो यह मौका है नहीं जब आयेगा तब देखा जायेगा।

बंबई, १४-२१

जो कार्य-भार पूज्य बापू ने तथा वर्किंग कमेटी ने दिया है वह बराबर व्यवस्था से होने से शांति मिलेगी। तुम शांति से अपना कर्तव्य करती रहना। बापू को सभा हुई, उस दिन से मेरे मन में ऐसी इच्छा थी कि जहांतक हो सके थोड़ी देर चरखा अवश्य कातना चाहिए। परंतु कई कारणों से यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी इससे भी मन में थोड़ी अशांति रहती है। यहां सूबे का कार्य ज्यादा रहता है। कम-से-कम तुम ही रोज एक घंटा चर्खा कातने का प्रयत्न किया करो।

बापू के जेल में जाने के बाद कार्य की जवाबदारी ज्यादा मालूम होती है। परन्तु बापूजी जाते समय जो उपहार, अपने हाथ का लिखा हुआ उपदेश दे गए, उससे शांति मिलती है और जवाबदारी पर प्रकाश पड़ता है।

बंबई, ९ १०-२२

पूज्य बापूजी बच्चों की व तुम्हारी याद करते थे। तुम्हारे ऊपर उनका बहुत प्रेम-भरा है ऐसा उनकी बातचीत पर से मालूम होता था। उनका स्वास्थ्य ठीक है।

बॉम्पक १०-१-२४

दक्षिण प्रांत में अंदाजन एक मास घूमना पड़ेगा। यहां खादी का कार्य खूब हो सकता है। कई गांवों को देखने का मौका मिला। यहां सूत कातनेवाली स्त्रियां तथा बुननेवाले जुलाहों की संख्या खूब है। इन्हें ठीक प्रकार रुई देकर सूत तथा कपड़ा लेने व बेचने की बराबर व्यवस्था हो जाय तो लाखों रुपये की खादी बना सकता है। पूज्य बापूजी का खादी पर जोर देने का महत्व यहां घूमने से अधिक ध्यान में आया। अब तो चरखा रोज काते बिना शांति नहीं मालूम होती।

वीरुपट्टी १८ १-२४

अभी यहां पूज्य राजगोपालाचारीजी के साथ आया हूं। इधर के लोगों में पूज्य बापू के लिए खूब भक्ति है। खादी का प्रचार भी गांवों में ठीक है और दिन-दिन खूब बढ़ने की आशा है।

पूज्य बापूजी का आपरेशन तो ठीक हो गया। एक बड़ी घाटी में से बचाव हुआ। अब तो ऐसा मालूम होता है कि शायद सरकार इन्हें छोड़ दे। देश की हालत व खिलाफत की हालत दिन-दिन खराब होती जाती है। सरकार भविष्य का विचार करेगी तो उसे महसूस होगा कि छोड़ने में ही उसे एक प्रकार से लाभ है। परंतु अगर बापू हम लोगों के माने अपने देश की जनता के भार से छूटें तो विशेष शांति की बात है। खैर, जो होगा ठीक ही होगा।

दिल्ली २१-०-२४

मेरे यहां पहुंचने की सूचना तार तथा पत्र के द्वारा भेज चुका हूं। पूज्य बापूजी से मिला। बातें हुईं। बापू ने व्रत (तप) आरंभ किया है। बापू का

आत्मिक बल तथा परमात्मा पर जो श्रद्धा है उसे देखते विश्वास होता है उपवास पार पड़ जायेंगे। वा भी आज आगई है, मेरे पास ही ठहरी है। बापू की तपश्चर्या देख मन में बहुत-सी कल्पना आया करती हैं। परंतु अपनी खुद की कमजोरी देखकर लज्जा होती है। बापू के इस मौके से हम लोगों के जीवन के रहन-सहन व आचरण में फर्क हो तो भविष्य का जीवन सुखकर बीतना संभव है। मेरी राय तो है कि तुम अहमदाबाद-आश्रम में जाने का विचार रखना। वहां रहने से जरूर अध्यात्मिक काम होना संभव है।

चरखा घर-भर में बराबर चालू रहे। बापू के लिए हृदय से प्रार्थना होती रहे इसका ख्याल रखना।

पटना २१-९ २५

पत्र तुम्हारे दो मिले पढ़कर संतोष हुआ। तुमने अपने विचार या जो शंका थी वह पूज्य बापूजी को कह दी यह जानकर अधिक खुश हुआ। मेरी हाल में पूज्य बापूजी से घरेलू मामले के बारे में बात नहीं हो पाई है। कारण कि वह बहुत कामों में लगे हुए हैं। जब होगी तब तुम्हें मालूम हो जायगा।

मलकापुर (बिहार) २०-९ २५

तुम्हारे पत्र मिले थे। पहले में पत्र लिखा था सो मिला होगा। पूज्य बापूजी तुम्हारे बारे में बात करते थे। तुम्हारी बातचीत का उनपर बहुत ही अच्छा असर हुआ ऐसा दिखाई देता है। तुमसे वे बहुत आशा रखते हैं।

चि कमला का विवाह बंबई में करने के बारे में पूज्य बापू की इच्छा मालूम हुई। इस बारे में और विचार करना पड़ेगा।

बंबई, १०-१-२६

चि कमला के विवाह के बारे में चि मणिबहन का पत्र मिला।

वर्धा में विवाह करने में सुख मिलता अगर दोनों ओर से सिद्धान्त के माफिक विवाह होने का पूरा सुभीता होता। वह नहीं है। सामनेवालों को वर्धा में इस प्रकार विवाह करने में बहुत बाधाएं होनी संभव है। एक बार तो आश्रम का ही निश्चय रखना उचित है। कुछ रोज बाद मेरा साबरमती जाने का विचार है। तब पू बापूजी से और खुलासा बात करनी जावेगी। पू बापूजी ने पू काकासाहब आदि को पहले से ही कमला का विवाह आश्रम में करने का विचार लिख दिया है। यह मुझे पूना में मालूम हुआ।

बंबई, १०-१-२६

पूज्य बापूजी को ज्वर १ ४ डिग्री तक हो गया था और उनका वजन तो हाल में ९७॥ रतल रह गया है। इसलिए यहां जाना पड़ा कि दूसरी जगह बदली जावे या अन्य इंतजाम किया जावे। इसका विचार करने पर डाक्टरों की राय हुई कि अभी दूसरी जगह ले जाने की जरूरत नहीं। वर्धा में ले जाया जावे। आश्रम में ही आराम से रह सकें थोड़ी विश्रांति लेते रहें तो जल्दी वजन बढ़ जावेगा। उनके एक हाथ में जो दर्द रहता है, वह भी इससे कम हो जावेगा। पूज्य बापू ने दवाई और विश्रांति लेना स्वीकार कर लिया है। परमात्मा ने किया तो जल्दी ठीक हो जावेंगे। बाकी आश्रम में सब ठीक है।

पूज्य बापू की बीमारी के कारण तथा मित्रों के आग्रह की वजह से फिर से इस प्रश्न पर विचार करना जरूरी हो गया था कि विवाह आश्रम में किया जाय या बंबई में। वर्धा में भी केशवदेवजी ने तो कह दिया था कि अब विवाह आश्रम में ही करना उचित होगा। तो भी पूज्य बापूजी के फिर विचार जानना जरूरी था। उन्होंने कहा है कि सब तरह का विचार करते हुए मुझे तो आश्रम में ही विवाह करना ठीक मालूम होता है। तथापि चि रामेश्वरप्रसाद की इच्छा क्या है यह देख लो। वह भी यहीं आ गया है। और उसने तो कहा है कि मुझे तो आश्रम में ही विवाह करना सब तरह से पसंद है। उसने आश्रम में विवाह करने के जो कारण बतलाये उससे पूज्य बापूजी को व मुझे बहुत ही संतोष हुआ। अब विवाह आश्रम में ही हो यह निश्चय हो गया है।

चि. मणिबहन को कह देना कि बापू की ओर से पत्र न आने से चिंता न करें।

साबरमती १-११-२६

प्रणाम

कल बापूजी की वर्षगांठ है। लोग कहते हैं कि पिछले वर्ष जयन्ती के बाद बीमारी बढ़ी थी। कदाचित् इस वक्त भी बुखार जोर करे। पांच-छः बच्चों को आ गया है। आशा है, ज्यादा जोर तो न होगा। मीराबहन को यहां आने दें तो ठीक।

जानकी

वर्धा ६-११-२६

आशा है तुम पूज्य बापूजी के उपदेश तथा सत्संग से अधिक उदार तथा ध्येयपूर्वक जीवन बिताने का निश्चय करके यहां आओगी। सच बात तो यह है कि तुमसे मुझे मेरे और अपने घर के सुधार व परिवर्तन में पूरी सहायता मिलनी चाहिए। अब थोड़े वर्ष मानसिक सुधारों की बागडोर तुम अपने हाथ में ले सको तो मुझे कितना सुख और संतोष मिले इसका तुम खुद ही विचार कर सकती हो। तुम चाहो तो पूज्य बापूजी व विनोबाजी की सहायता से अपने जीवन को और घर को ठीक कर सकती हो। मेरी कमजोरी भी दूर करा सकती हो। पर यह बात तभी हो सकती है कि जब तुममें आत्म-विश्वास पैदा हो और तुम आदर्श त्याग का भार अपने ऊपर लो। मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

श्री शान्तिनाथजी साधु, जो बंगाली हैं और आबू में अपने यहां भोजन के लिए आते थे आजकल यहांपर हैं। घर पर ही थे। कल से बगीचे में रहने लगे हैं। दो-तीन मास रहनेवाले हैं। [श्री सोनीरामजी रामेश्वर व पू बापूजी के पत्र उन्हें दे देना।

ही नहीं। पर उसको मालूम होगा। मालूम होके इच्छा न करे तो मत जावे। मुख्य आपको शांति व आराम मिले और मिलना दीखे तो फिर कोई विचार करने की जरूरत नहीं है। बापूजी से तो मैंने कहा था कि अगर यहां अच्छा कहीं भी आपको उसकी जरूरत दीखे तो कह दें। यह जरूरी नहीं कि आपका घर जाना ही चाहिए। बापू जी कहते थे कि जरूरी नहीं है, वरना तो मैं कहता ही। सो अब जाना हो तो काम की फिक्र छोड़ दें। यहां बालकों को तो रसोड़े में मजे से छोड़ देंगे। बापू को गंगा भुला लेंगे। नहीं तो कहीं जाने की जरूरत नहीं है। आप डाक्टर को दिखाकर लिखना।

जानकी

कोचीन स्टेट (मलाबार) १ -२-२९

हिन्दी-प्रचार का कार्य ठीक चल रहा है। अगर तुम इस सफर में मेरे साथ आतीं तो तुम्हें दूसरी दुनिया देखने का अनुभव होता। खैर, फिर सही। बरमा मैं नहीं जाऊंगा पूज्य बापू का इन्कार आ गया है।

साबरमती ५ ४ २९

पू मगनलालभाई (गांधी) की लड़की चि रुक्मिणी का संबंध कल यहां पर चि बनारसीलाल बजाज से हो गया। यह विवाह इस वर्ष नहीं तो अगले वर्ष होवेगा। कल यह संबंध करके पूज्य बापूजी आंध्र के लिए बंबई रवाना हो गए। वर्धा में गरमी ज्यादा पड़ने लग गई होगी।

छगनलालभाई गांधी से तथा पू बा से रुपयों-पैसों के मामले में जो गफलत हुई, वह दुनियादारी की दृष्टि से कोई बहुत भारी कसूर नहीं समझा जाता। पर ऐसी गलती या कसूर पर पूज्य बापूजी अपने हृदय में कितना दुःख अनुभव करते हैं वह इस बार के 'नवजीवन' में उन्होंने लिखा है। तुम उसे भली प्रकार पढ़ने का प्रयत्न करना। यहां आश्रम में रहनेवालों की कमजोरियों से पूज्य बापूजी को बहुत दुःख व कष्ट हुआ करता है। अपने पास इसका कोई उपाय नहीं दिखाई देता।

श्रीनगर (काश्मीर) ५-७-२९

मेरा बर्मा ता. २ तक पहुँचना होवेगा। यहाँ का बाहर-भंडार ता. ४ को खुलनेवाला था, वह राज्य की सुविधा के कारण ता. ११ को खुलने का निश्चय हुआ है। यहाँ थोड़ा घूम-फिरकर देखने का विचार भी कर लिया है। पू. बापूजी तो बहुत जोर देकर लिख रहे हैं कि मैं यहाँ ज्यादा दिन रहूँ। परंतु बिना काम के मन नहीं लगेगा और तुम सब लोग व बालकों के बिना देखने में विशेष आनंद तथा शांति नहीं मिलती।

साबरमती-आश्रम ता. १५-२-३१

पू. बापूजी आजकल खूब उत्साह व जोर में हैं व लड़ाई की पूरी तैयारी कर रखी है। यहाँ का वातावरण पूरे जोश तथा उत्साह से भरा-पूरा हो रहा है। छोटे-छोटे बच्चों ने भी जेल जाने की इच्छा कर रखी है। तुम इस समय यहाँ रहती तो तुम्हें ठीक फायदा मिलता, व पूज्य बापूजी तुम्हारा नाम भी जेल की फेहरिस्त में अगर तुम्हारा उत्साह और इच्छा होती तो, लिखा देते।

नासिक रोड सेन्ट्रल जेल २१-६-३२

तुम्हें समय मिलता हो तो जेल के रहन-सहन के संबंध में व नियमों के बारे में पू. बापूजी की 'यरवडा़ना अनुभव' काकासाहब व राजाजी की लिखी हुई किताबें व जिन्हें जेल का ठीक अनुभव हो, उनसे पूरी हालत जान लेने का प्रयत्न करना। ईश्वर की अपने पर पूर्ण दया व पूज्य बापूजी का आशीर्वाद है, जिस कारण ही अपनेको इस प्रकार की बुद्धि होकर सेवा करने का माने अपनी कमजोरी कम करने का मौका मिला। तुम्हारी बहादुरी और हिम्मत देखकर मन में खुशी होती है।

नासिक रोड जेल ७-७-३२

कमल से कहना कि वह जरा अधिक नम्रता व मधुरता का व्यवहार करने का ख्याल रखे। अब वह सत्याग्रह-दल में पू. बापूजी की टुकड़ी का स्वयंसेवक है। उसपर ज्यादा जिम्मेवारी है। शुरू में से एक-एक बात ध्यान

न तोड़कर निकलनी चाहिए, जिससे आगे चलकर वह जिम्मेदारी के साथ काम कर सके।

नासिक रोड सैंट्रल जेल २२-९-१

पैंसठवां बारस गत बुधवार को हम लोगों ने भी खूब चरखा कातकर पू. बापूजी के गुणगान करके व ईश्वर से प्रार्थना करके बिताई। तीनों वर्गों में खूब चरखे चले। बी में तो तीन चरखे ६१ घंटे तक रात-दिन चलते रहे। सी वर्ग वालों ने भी खूब चलाये। हम लोगों ने तो २४ घंटे तक चरखा चलाया। उस रोज मैंने १ ॥ घंटे सूत काता। खूब प्रेम व उत्साह होने से ठीक काता गया। (जीवन में पहली बार इतना काता) २५१ तार, यानी १४११ बार काते। सूत उतारने आदि का समय अलग रखा। सुबह ३ बजे उठकर प्रार्थना वगैरा करके रात में १२ बजे निवृत्त हो गया था। बीच-बीच में दूसरे काम भी किये। पू. बापूजी पर छोटा-सा लेख भी लिखना पड़ा।

नासिक रोड सैंट्रल जेल ८-१०-१

तुम्हारा बिना मिती-तारीख का पत्र मिला। पू. बापूजी का पत्र तुम्हारे नाम का पढ़कर सुख मिला। पत्र मेरे पास है। तुम जब आओगी तब तुम्हें दे दिया जायगा। ये सब पत्र संभालकर रखना। अब यरवदा जाने की इच्छा कम हो गई है। यहां मन भी लग गया है। आब-हवा भी अनुकूल पड़ गई है। मित्र लोग भी हैं। अधिकारियों से भी प्रेम व मित्रता का संबंध हो गया है। दूसरे मेरी इच्छा यह है कि पूज्य बापूजी के पास अब या तो प्यारेलाल चला जावे या देवदासभाई चले जावें। मेरी यह इच्छा तुम श्री नारायणदास भाई (गांधी) की मारफत पू. बापूजी को लिखवा देना या अपनी चिट्ठी में इतना उतारकर बापूजी को भेज देना।

तुमने पू. बापूजी को मेरे बारे में पत्र नहीं भेजा यह बहुत ठीक किया।

नासिक रोड सैंट्रल जेल
१४-१०-१

आज पू. बापूजी का पत्र वापस भेजा है संभालकर रखना।

(यह पत्र १०-१२ १ को मिला)

श्रीयुत

आपने 'वकील-बारिस्टरों से बात कर लेती हो' लिखा सो नई बात नहीं है। निर्भयता व अक्ल में तो 'पास' भी हो। बापूजी के सहवास से काम लेना व उनके विचारों को ध्यान देने से काम चल रहा है और काम को काम सिखा देता है।

यहां का काम ठंडा पड़ा है। नेताओं में भी फूट है। बापूजी के सेक्रेटरी कृष्णदासजी कोशिश कर रहे हैं। इनकी फूट अगर मिट जाय तो कुछ काम हो।

जानकी का प्रणाम

कलकत्ता २१-१२ १

काम की कीमत होने से शंका वगैरा कम हो गई। निश्चय करना भी आ गया। किसी जगह महात्माजी की बात तो किसी जगह आपकी बातें काम करना देती है। परंतु घर का काम तो मुझे करना ही नहीं चाहिए।

चिट्ठी पूरी सही अधूरी

जानकीदेवी

(दिसंबर-अंत या पूर्व-जनवरी ३१)

मेरी बहुत दिनों से इच्छा थी कि तुम्हारी व बालकों की इज्जत व कदर मेरे कारण न होकर तुम लोगों की पवित्र सेवा के काम के कारण होवे तो उसमें तुम्हारा व बालकों का भी श्रेय था व हमारा प्रेम व गौरव था। यह कार्य अब जल्दी ही परमात्मा की दया से व पूज्य बापू के आशीर्वाद से देखने को मिल रहा है।

नासिक रोड सैंट्रल जेल

८ १ ३१

परमात्मा के व पूज्य बापूजी के आशीर्वाद से हम लोगों का अपने जीवन के आदर्श प्राप्त करने में सफलीभूत होना बहुत संभव दिखाई देता है। अगर

हम अपनी कमजोरियों को बराबर पहचानते रहें व उन्हें निकालने का थोड़ा-थोड़ा प्रयत्न करते रहेंगे तो जीवन पूरी तौर से नहीं तो कुछ अंश में तो अवश्य सार्थक बना सकेंगे।

बंबई, २७-१ ११

आखिर कल एक बार जेल छोड़ना ही पड़ा। आज सुबह यहां आ गया। पू बापूजी के साथ आज रात को प्रयाग जा रहा हूं। वहां से अगर हो सका तो एक रोज कलकत्ते आने का प्रयत्न करूंगा या तुम्हें वहां बुलाने की जरूरत समझूंगा तो तुम्हें बुला लूंगा। चि कमल मेरे साथ है। चि कमला मेरे साथ पूज्य बापूजी से मिलती है।

प्रयाग १४-२ ११

पू बापूजी रफ्ता (चोवर) देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा मैं इसे दो वर्ष और चला सकूंगा। तुम्हारी भेजी हुई पूनी उन्होंने आज कातकर देखी। उन्होंने कहा है रुई तो अच्छी है, परंतु पूनी ठीक नहीं बनी। कभी ज्यादा है व पोली भी है। आगे से बहुत अच्छी पूनी बना सको तो बापूजी को भेजने का प्रबंध करेंगे।

(८-८ ११ से ४ १०-११ के बीच)

पूज्य बापूजी को बहुत संभव है लंदन जाना पड़े। श्री बालजीभाई को पू बापूजी अलमोड़ा भेज रहे हैं। कमल भी वहीं चला जायगा। अलमोड़ा की आबहवा तो बहुत ही उत्तम है। पू बापूजी ने पूना रखने की भी आज्ञा दे दी थी परंतु मुझे वहां का वातावरण व्यवस्था व पढ़ाई पूरी जंची नहीं।

नासिक-जेल ११ ३-१२

मुझे तो हमेशा जेल में भी नये मित्रों का परिचय करने का ईश्वर की दया से व पूज्य बापू के आशीर्वाद से मौका मिल ही जाता है। इससे मुझ बड़ा संतोष मिलता है।

यरवडा-मंदिर १२-१ ३३

तुम लोगों की प्रसन्नता के समाचार तो पूज्य बापू से सुन लिया करता करता हूं।

रोटी मुझे भी (ब्राउन ब्रेड) एक खास बजन की जो यहां जेल में ताजा बनती है लेता हूं। पू. बापू की सलाह-मुजब उसका टोस्ट बनाकर दोनों वक्त लेता हूं।

मेरी दिनचर्या सुंदर चलती है। पू० बापूजी से मिलने की तो बंबई सरकार की परवानगी आ गई है। अभीतक मैं उनसे सात बार मिल चुका हूं। पत्र-व्यवहार भी यहां-का-यहीं होता रहता है। अस्पृश्यता-निवारण के कागजात व पत्र-व्यवहार की फाइल मेरे पास आती रहती है। मैं अब इस कार्य से पूर्णतया वाकिफ रहता हूं। मुझे जो उचित मालूम होता है बापू को लिखकर या मिलने पर कहा करता हूं। प्रायः रोज में पांच-छः घंटे हरिजनों के काम का विचार, अध्ययन पढ़ने-लिखने आदि में लगा रहता हूं। इससे मन को खूब सुख व संतोष रहता है।

तुम्हें आनेवाली १६ तारीख को याने माघ-बदी पंचमी सोमवार को बराबर ४ वर्ष पूरे होकर ४१वां वर्ष चालू होता है। उस रोज मैं भी परमात्मा से प्रार्थना करूंगा कि तुम्हें सद्‌बुद्धि प्रदान करे व तुम्हारा स्वास्थ्य उत्तम रखते हुए तुम्हारे शरीर व मन में सेवा-कार्य खासकर बापूजी द्वारा तुम्हें पहले लिखे मुताबिक हरिजन-कार्य करने की सब प्रकार से योग्यता प्रदान करे।

चि. मदालसा के पत्र का हाल पू. बापूजी ने मुझे कहा था।

वर्धा, १०-८ ३३

पू. बापूजी ने तुमको वहीं रहने को कहा है, सो एक तरह ठीक ही है। अगर तुम उनके कहने से वहां बनी रही और सुधा-न-वास्ता प्लेग की शिकार हो गई तो मुझे तो संतोष इतना रहेगा कि ऐसी हालत में पू. बापूजी का आशीर्वाद मिल जाय और उसके साथ स्वर्ग भी मिल जाय। इससे अब मुझे तुम्हारी तरफ की चिंता कम है।

क्या तुम बापूजी को यहां ला सकती हो या भिजवा सकती हो?

पटना २१ ६ ३४

पूना की दुर्घटना से पू बापूजी तो बचे ही साथ में चि ओम् वगैरह भी बच गई। जिसको ईश्वर बचानेवाला है उसे कौन मार सकता है। इस प्रकार की घटनाओं से ईश्वर की शक्ति (अस्तित्व) में विश्वास बढ़ता है।

बंबई, १६-११ ३४

पू बापूजी अगर मेरी चिंता करना छोड़ दें तो मुझे कम तकलीफ हो। वह वल्लभभाई को समाचार लिखते हैं। उनका टेलीफोन आता है तो फिर मुझे वहां जाना पड़ता है। सरदारसाहब को मेरे पास बुलाने की अभी ताकत नहीं आई है। वह प्रेम तो खूब करते हैं परंतु जो ज्यादा प्रेम करता है उसे हुकुम करने का भी अधिकार होता है।

बंबई, २१ १ ३५

मुझे पू बापू ने ठीक प्रमाणपत्र (सर्टिफिकेट)[१] भेजा है तुम भी इस प्रकार के कामों में मदद करो तो कितना ठीक होवे।

वर्धा २८ १०-३५

आज भैयादूज के शुभ अवसर पर चि राधाकृष्ण का संबंध पू बापूजी की लड़की चि अनसूया से होना निश्चित हुआ है। शाम को ६ बजे पू बापूजी बा इत्यादि सब लोगों के सामने सगाई की विधि हो जायगी। पू मां को इस संबंध से संतोष है।

वर्धा ९ ११ ३५

इन दिनों पू बापू का स्वास्थ्य कुछ नरम रहा है। बंबई से डॉ जीवराज मेहता भी कल आगए। ब्लड-प्रैशर बढ़ गया था। अब तबीयत साधारण गुजर रही है। आराम की जरूरत है। इस समय भी राजकुमारी अमृतकुंवर नर्सिंग (सेवा) कर रही हैं। परन्तु वह ता १७ तक रह सकेंगी। आगे के नर्सिंग का सवाल उपस्थित हुआ तब तीन नाम सामने

[१] देखिये बापू के पत्र पृष्ठ १२१।

आये हैं। मेरा राधाकृष्ण का व तुम्हारा। अभी कुछ निश्चित नहीं हो पाया है। अच्छा हो यदि तुम भी इस बीच यहां आ सको।

लखनऊ, ४-४-३६

यहां बापूजी के साथ कांग्रेस से करीब ३।।-४ माइल दूरी पर रहना होता है। अबकी बार की प्रदर्शनी अच्छी व देखने-योग्य है।

वर्धा २७-८-३६

आज पू० बापूजी सेगांव से आये हैं। सभा अपने यहां बीच के कमरे में हुई है।

वर्धा १७-९-३६

पू० बापूजी का स्वास्थ्य अच्छा है। चिंता की कोई बात नहीं है। तुमको दूध पचने लगा है यह जानकर खुशी हुई। कल मैं सेगांव गया था। पू० बापू ने तुम्हारे बारे में पूछा था मैंने उनको दूध के बारे में नहीं कहा। फिर जब आज या कल जाऊंगा तो कहूंगा। तुम्हारी कमजोरी तो निकल जायेगी।

वर्धा, १८-९-३६

पूज्य बापू-संबंधी भविष्यवाणी जैसी आशा थी पूरी तरह से झूठ साबित हुई। कल ता० १७ की शाम को सिविल सर्जन को ले जाकर भली प्रकार से तलाश कर लिया था। ब्लडप्रेशर, हार्ट बहुत ठीक था। बापू खूब विनोद करते थे। आज सुबह स्नान करके मैं तो चि० अनसूया के साथ वर्धा-बाजार की पेठी व फंड मांगने गया था। वहां से २ बजे बाद रवाना होकर आया हूं। यहां से ११ बजे बाद श्री महादेव को वर्धा से तुम्हें तार देने भेजा था। वह तार तुम्हें मिल ही गया है। बापू का मैंने आने के करीब ।।। घंटा यह बात नहीं। उन्होंने मुझसे खूब विनोद किया। औरों से ज्यादा चर्चा नहीं की। अब कल खूब विनोद करेंगे। सरदार भी कल आ जायेंगे।

जगन्नाथदासजी आज आ जायँगे। दो-तीन दिन थोड़ा-बहुत विनोद रहेगा। अब आगे से भविष्यवाणियों पर ज्यादा विश्वास नहीं रखना।

बनारस २३-१०-३६

कल पू॰ बापूजी भी यहाँ आयेंगे। शायद लक्ष्मणप्रसादजी तथा सावित्री भी आ जावें। उन्होंने इच्छा प्रकट की है।

बनारस २६-१०-३६

विनय के बारे में बापू ने सब स्थिति कही। तथा इंजेक्शन कमला की बहादुरी आज वहीं के हाल मालूम हुए।

वर्धा ६-११-३६

यहाँ आ जाना अच्छा हुआ। कल बापू से मिल लिया। यहाँ विद्यालय का उत्सव है सभाएँ हैं।

जुहू ११-१०-३७

पू॰ बापूजी आ गए। यह तो हिन्दुस्तान के सबसे बड़े अनुभवी डाक्टर हैं।

जुहू १५-१०-३७

तुम्हारे नाम की पू॰ बापूजी की चिट्ठी आई है वह भेज रहा हूँ।

बिलासपुर, २९-१०-३७

बापूजी और पार्टी कलकत्ते जा रहे हैं।

वर्धा १०-११-३७

शाम को सेगाँव जाऊँगा। बापूजी के जाने के बाद अवसर हो तथा तो कुछ रोज सेगाँव रहने का विचार है।

वर्धा २०-११-३७

बापू का स्वास्थ्य बहुत कमजोर हो गया है। बहुत संभाल रखने की जरूरत है।

वर्धा २२-११-३७

पूज्य बापूजीका स्वास्थ्य बहुत नरम है। ईश्वर की जैसी मरजी होवेगी वह काम आवेगी। ईश्वर सद्बुद्धि व आत्मविश्वास प्रदान करता रहे। म तुम्हें क्या लिखूं।

वर्धा, १८-४-३८

मेरा जाना ता. २४ या २५ तक बम्बई होना दिखता है। बापूजी से भी बातें करती हूं।

जुहू १९-४-३८

पूज्यश्री

बापूजी का समय लेने का भी समय आ गया है। मैं पूछूं न पूछूं समान है। खांसी तो कम होता दिखता ही था। प्रणाम।

जानकी

नई दिल्ली ११-१-३९

मैंने पू. बापूजी से भी बातें ही कह दिया था और उनकी भी यही राय रही कि अभी आराम लेकर बाद में काम करना ही ठीक रहेगा। बापूजी ता. २ को यहां आनेवाले ही हैं।

मीरांसागर

पू. बापूजी का स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। तुम्हारी क्या हालत है?

बापू के पत्र भी पढ़ने योग्य हैं (सर्वोदय के) और अंकों में भी काका साहब वगैरा के मननीय लेख रहते हैं।

मोरंगाबाद, ९ ३-३९

सात रोज के बाद कल शाम को मुझे पांच तार व पत्र व अखबार वगैरा मिले। इन सात दिनों तक मुझे दुनिया का क्या या यहां से दो कोस दूर तक का भी कुछ पता नहीं था। पू. बापूजी के उपवास करने की व छोड़ने की व राजकोट के फैसले की खबर कल साथ ही मिली।

वर्धा ११ १०-३९

अब १५ १६ तक बंबई जाने का इरादा है। वहां जाकर तय करना है कि इलाज के लिए २ ३ माह के लिए कहां पर रहना है—बंबई या पूना। तुम अपने कार्यक्रम से मुझे वाकिफ करती रहना। पू. बापू से भी इलाज के बारे में बातें हुई थीं। श्री दीनशा के पास दो-तीन रोज जाकर रहना है व सारी बातें तय करनी हैं।

वर्धा १५-१०-३९

पू. बापू से दिल्ली में खुलकर बात करने का मौका मिल गया था। वह मेरी स्थिति पूरी तौर से जान गए हैं।

वर्धा में तुम्हारे लिए जितना आदर प्रेम व श्रद्धा है, वह और कहां मिलनेवाली है! बापू, विनोबा आदि सभी तो यहीं हैं। तुम्हें सीधे विचार करने चाहिए, उल्टे नहीं।

१०-३-४

पूज्यश्री

कल मेरा मन ठीक न होने से पत्र राधाकृष्ण के नाम का दे ही दिया पर पीछे दादाबाई ने कहा कि बापूजी वहीं हैं और भी सब समाचार जानकर मन शांत है। दूध आनंद से चलता है।

कांग्रेस जाने की बापूजी से ठीक सलाह मिल ही जायेगी। दर्द हलका नहीं पड़े तब तो वहां आराम कैसे मिलेगा? और आपका कैसा उत्साह!

कमली का प्रणाम

वर्धा ११ ३-४

तुम्हारे दोनों पत्र मिले। जयपुर में परिश्रम तो हुआ परंतु रास्ता बैठ जायेगा ऐसा मालूम देता है। पू. बापूजी के यहां होने के कारण पहले यहां आना पड़ा।

वर्धा ६ ११ ४

मुझे यहां स्टेशन पर ही मालूम हुआ कि तुम एक रोज पहले पू. बापूजी के कहने से आपरेशन कराने के लिए बंबई चली गईं। तुम्हारे साथ कोई जवाबदार घर का आदमी नहीं गया जानकर मुझे दुःख तो मालूम दिया।

पू. बापूजी बहुत करके उपवास अब नहीं करेंगे। आज निश्चय हो जायगा। जवाहरलाल तो ठिकाने अर्थात् जेल पहुंच ही गए हैं।

सेवाग्राम २४ ६ ४१

मीरा मिलन पर पू. बापू स. में ही अपने क्रोध आदि आने का व मेरा व्यवहार तुम्हें प्राय: कठोर देखने में आता है, इत्यादि के बारे में कहने की इच्छा है। तुम्हें तो कहने का पूर्ण हक व अधिकार है ही। कोई रास्ता निकल सके तो सुधार ही होगा। ज्यादा क्या लिखूं।

अपने पुत्र-पुत्रियों को
जमनालाल बजाज द्वारा लिखे पत्रों में से
गांधीजी-संबंधी उल्लेख

बंबई, २५ १०-२९

चि कमल

पू बापूजी (महात्माजी) यहां दक्षिण अफ्रीका के डेपुटेशन से मिलने गये। इतवार को आये थे। उनको पहुंचाने हम लोग स्टेशन गये थे। वापस आते समय दो मोटरों का आपस में बहुत जोर से टक्कर खाने का डर हो गया था परंतु ड्राइवर ने मोटर को एकदम घुमाया जिससे मोटर उलट गई। इसमें हम सात जने थे—श्री केशवदेवजी (कमला के ककिया ससुर) श्रीगोपाल चि गंगाबिसन जानकी गिरधारी मैं और ड्राइवर। परमात्मा की दया से और पू बापूजी के आशीर्वाद से प्राय सब बच गए। श्री केशवदेवजी के थोड़ी चोट आई और मेरे। अब मेरी छाती में थोड़ा दर्द है। चार पांच रोज में ठीक हो जाने की आशा है।

बंबई, ८-८ ११

चि कमल

खूब विचार करने के बाद मुझे तो यही लगा कि तुम्हारी अंग्रेजी की संतोषकारक पढ़ाई अलमोड़ा में श्री जालजीभाई के साथ रहकर ठीक होवेगी और तुम्हें भी शांति व सुख मिलेगा। पू बापूजी ने भी जालजीभाई को लिखाया है। कब जाने का विचार रहा? तुम्हें वहां जाने के लिए गरम कपड़े वगैरा यहां अथवा वहां बनाने पड़ें वह बना लेना।

बंबई, १८-१२ ११

चि कमल

किराये के बारे में तुम अभी कुछ चर्चा न करना। पू बापूजी के आने पर उनसे बातचीत करके सब ठीक हो जावेगा।

श्री जालजीभाई से कहना कि लड़ाई के आसार फिर नजर आने लगे हैं। देखें पू बापूजी के आने पर क्या होता है और उनके आने के पहले क्या हो जाता है!

बंबई, ५ १ ३२

चि. कमल,

पू. बापूजी, सरदार वल्लभभाई, श्री राजेन्द्रबाबू तो पकड़े ही गये हैं। वर्किंग कमेटी नाजायज़ क़रार दी जा चुकी है। मैं किसी भी समय पकड़ा जा सकता हूं। वैसे आज डाक से वर्धा जाने का विचार कर रहा हूं। वहांतक जाने दिया जाय या नहीं, यह बात दूसरी है।

धुलिया-जेल १९ ४ ३२

चि. कमल,

आशा है, मेरा भायखला-जेल से लिखा हुआ पत्र तुम्हें मिला होगा। मेरा मन व स्वास्थ्य उत्तम है। यहां पूज्य विनोबा के साथ दोनों समय प्रार्थना आदि में संतोष से समय बीतता है। तुम अपना जीवन पवित्रता व नीति के साथ बिताने का ख़याल रखना। जेल में जहांतक हो सके भूख-हड़ताल (हंगर स्ट्राइक) नहीं करना चाहिए, इसका ख़याल रखना। अपना स्वाभिमान तो रखना ही चाहिए।

२१ ९ ३२

चि. मदालसा,

पू. बापू के पत्र की नक़ल तुम्हारी माता के नाम की तुमने भेजी, वह पढ़कर सुख मिला। तुम्हारी माता को कह देना, उस मुताबिक पूरी तैयारी करने में लग जावे व यह बापू की परीक्षा में इस जन्म में (देह से) पास हो जावे तो उससे खूब सुख व लाभ मिलेगा। पू. बापू ने २१ ९ को मुझे जो पत्र भेजा है। उसकी नक़ल इस प्रकार है:

तुम किसी प्रकार की परेशान मत होना। तुम्हें तो मानना ही चाहिए कि तुमने जिसे बाप माना है, वह तुम्हारे प्रिय काम के लिए पूर्णाहुति दे, यह तुम्हारे लिए उत्सव ही होना चाहिए।

जानकी मैया के साथ मेरा विनोद चल रहा है। सरदार और महादेव तुम्हें याद करते हैं।

बापू की इस भीष्म-प्रतिज्ञा ने तो हम सबों की अस्पृश्यता-निवारण

की जवाबदारी बहुत ज्यादा बढ़ा दी है। परमात्मा से ही रोज मैं तो प्रार्थना करता हूं। तुम सब भी किया करो, जिससे हम सब लोग अपना कर्तव्य व जवाबदारी पूर्णतया समझते रहें व उसे पूर्ण करने के लिए जी-जान से उद्योग करते रहें।

अल्मोड़ा १-५ ३३

चि. कमला

तुम उपवास के समय पू. बापूजी को जाकर कष्ट मत देना।

पूना ३०-५ ३३

चि. कमला

तुम्हारी ता. २८-५ ३३ की चिट्ठी व श्री वकीलजी की चिट्ठी कल मिली। प्रार्थना के बाद दोपहर को १२-२५ पर पू. बापूजी ने नारंगी के रस से उपवास छोड़ दिया। वे कमजोर व थके हुए होने पर भी प्रसन्न थे। डाक्टरों ने उन्हें कम-से-कम दो सप्ताह तक पूर्ण विश्रांति लेने को कहा है।

खंडवा-अजमेर के रास्ते ७-१२ ३३

चि. कमला

चि. उमा तो बापू के साथ खूब अनुभव ले रही है। उसे थोड़ी सर्दी हो गई है परंतु जल्दी निकल जायेगी। उसे कोई परवा तो है ही नहीं। बापूजी को बीच-बीच में बहुत हँसाया करती है।

मोरिमा २१-१ ३४

चि. कमला

तुमने अपने विचार साफ-साफ लिख दिये यह जानकर बहुत खुशी हुई। मैं ता. २१ १ को वर्धा पहुंचा। वहां से उनकी एक नकल पू. बापूजी के पास भेज दूंगा और इस विषय में उन्हें पत्र भी लिखूंगा। तुम भी संक्षेप में अपना इरादा उन्हें लिख भेजना।

बिहार में बहुत हानि हुई। वहां जाकर कुछ सेवा करने की इच्छा तो जरूर होती है, परन्तु हाथ में लिया हुआ काम छोड़कर जाने में संकोच

हो रहा है। पू. बापूजी को तार दिया है। वर्धा जाकर विचार करूँगा। बम्बई से जो-कुछ सहायता वहाँ भिजवाई जा सके वह पू. राजेन्द्रबाबू के पास भिजवाने का खयाल तुम भी रखना समय मिले तब।

बंबई, १४-११-३४

चि. मदालसा

तुमने पू. बापूजी की आज्ञानुसार प्रयोग शुरू किया सो ठीक है। यदि पुराने प्रयोग से वजन बढ़ता था तो उसे ही चालू रखना ठीक था। अब भी यदि इस प्रयोग से वजन आदि न बढ़े तो पू. बापूजी को बराबर सब बातें लिखती रहना व जैसा वे कहें, उसी प्रकार चलना।

बंबई, २४-१२-३४

प्रिय कमल

तुम्हारा ता. २१-१२-३४ का लिखा पत्र मिला। सब दृष्टि से विचार करते हुए तुम्हारा कोलंबो जाना ही मुझे ठीक मालूम देता है। वहाँ जाने से तुम्हारी अंग्रेजी भी काफी सुधर जायगी। तुम जो निश्चय करो मुझे लिखते रहना। पू. बापू और विनोबा का आशीर्वाद जरूर प्राप्त कर लेना।

बम्बई, १-१-३५

चि. कमल

आज बापूजी का पत्र आया है कि सीलोन में मलेरिया बंद हो जाने के बाद तुम्हें भेजेंगे सो ठीक है। तुमने अपनी तैयारी तो करना शुरू कर ही दी होगी।

चि. ओम् के कान का क्या हाल है? अगर अभी तक बिल्कुल ठीक नहीं हुआ हो तो उसे यहाँ भेज देना ठीक होगा। बापूजी ने भी लिखा है कि मैंने वर्धा तार भेजा है ओम् को बंबई भेजने के बारे में। मुझे पूरी हालत लिखना।

बंबई, १६ १ ३५

चि मदालसा

तुम पांच-छ मील घूम लेती हो तथा कार्यक्रम ठीक चल रहा है लिखा सो जाना संतोष हुआ। आहार के बारे में बापू का पत्र आने पर मुझे लिखना।

तुम्हारी माता अगर रोज दिन में दो बार ही बापू के माफक या मेरे माफक कई बार मन में आनंद लेने की आदत अपनेमें लाने का प्रयत्न करें तथा ईश्वर पर अधिक श्रद्धा बढ़ावे तो उसका मन और स्वास्थ्य तो ठीक होवेगा ही आत्मा भी सुखी और शांत रहेगी।

कानपुर, ६ १ ३५

प्रिय कमल

तुम्हारे गत पत्र में तुमने सीकोन के बारे में लिखा है। तुम्हें मालूम होगा कि उस समय में कान के आपरेशन के कारण अखबार आदि बहुत कम पढ़ता था और सीलोन के हालात से पूर्णतया वाकिफ नहीं था। मेरा खयाल है कि पू महात्माजी ने इस बारे में पत्र-व्यवहार किया है। उनका शायद यह मानना है कि सीलोन का ऑर्गेनाइजेशन भी बराबर नहीं था और वहां एफीशेंट काम नहीं हो पाता था। मैं समझता हूं तुम इस विषय में पू बापूजी से पत्र-व्यवहार करो। वहां से कई लोगों ने बापू को यह भी लिखा था कि बाहरी मदद की जरूरत नहीं। ऐसी मेरी समझ है निश्चित मालूम नहीं।

बिसर, अल्मोड़ा २४ ९ ३५

चि कमल

आज बापूजी का जन्म-दिन है। दादा धर्माधिकारी का अभी सुन्दर प्रवचन शुरु होनेवाला है।

वर्धा १-२-३६

चि कमल

मुझे भी यह मास प्रायः चिंता में ही बिताना पड़ा। पहले पू बापूजी

के स्वास्थ्य की चिंता थी। बाद में तीन-चार विवाहों की व्यवस्था वगैरह की रही।

तुम्हारे संबंध के बारे में तुम मेरी राय तो जानते ही हो कि विवाह करके ही तुम्हें यहां से यूरोप जाना चाहिए। मेरी इस राय में प्रायः सब ही गुरुजनों की राय भी शामिल है, जैसे पू. बापू, काकासाहब जाजूजी विनोबा आदि।

साबरमती-आश्रम १९-२-३६

चि. कमल

विवाह-संबंध के बारे में मैं तुमसे विशेष आग्रह नहीं करता और एक प्रकार से तुमको स्वतंत्रता देने के लिए भी मैं तैयार हो जाता परंतु मेरे सामने जिन होनहार लड़कियों का ऑफर है उसको देखते हुए व अन्य गुरुजनों की सलाह पर ख्याल करते हुए मैं तुम्हारे हित की दृष्टि से ही इस बात को सामने रख रहा हूं। सतीश भी तो संबंध करके ही यहां से गया है। बाकी मेरा तो प्रश्न अभी रहने दो। यदि पू. बापू एवं विनोबा को तुम संतोष दिला सकोगे तो मेरा अधिक कुछ कहना नहीं रहेगा।

सारी बातों का विचार करते हुए मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि छुट्टियों में तुम इधर आ सको तो ठीक होगा। कांग्रेस में हाजिर रह सकोगे। इसकी बार प्रदर्शनी का भी एक नया रूप रहेगा। वातावरण भी नया रहेगा। तुम उस तरफ घूमना चाहते हो तो इधर भी घूम सकते हो। पू. बापू एवं विनोबा से बातें हो सकेंगी। भविष्य का प्रोग्राम निश्चित करने में सहायता मिल सकेगी। मौसम गर्मी का होने की वजह से धूप की कुछ तकलीफ तो रहेगी परंतु इससे तुम नहीं डरोगे।

कैम्प सावली २-३-३६

चि. कमलनयन

मैं यहां गांधी-सेवा-संघ की वार्षिक परिषद् के लिए आया था। पू. बापूजी व सरदारसाहब भी यहीं हैं। पू. बापू व सरदार ७ तारीख को दिल्ली जा रहे हैं। मेरा विचार इस महीने के मध्य से रवाना होकर

बने दिन को हार्टफेल की गलत खबरें। इसका तो समाधान है परंतु उनकी भविष्यवाणी से तुम्हारी मां बहुत चिंतित रही। मुझे भी थोड़ी चिंता-व्यथा रखनी पड़ी। बिना कारण तार-खर्च भी हुआ। मुझे तो विश्वास नहीं था। भविष्य में तुम भी ख्याल रखना।

वर्धा १७-११-३६

चि. मदालसा

दिसंबर के आखिरी सप्ताह में यहां फेलोशिप (भ्रातृसंघ) के लोग आयेंगे—करीब पचास से ज्यादा अंग्रेज। सभी पुरुष रहेंगे। पांच दिन यहां रहेंगे। प्रायः सब व्यवस्था अपनको ही करनी होगी। तुम्हें या तुम्हारी मां को याद होगा जब हम लोग साबरमती रहते थे तब ये लोग वहां आये थे। वहां तो बापूजी ने बंटवारा कर दिया था। भोजन के लिए अपने घर भी आया करते थे। इनका सम्मेलन देखने-योग्य होगा।

जानकी-कुटीर, जुहू ३-१-३७

प्रिय कमल

बापूजी को विवाह का आग्रह करने का उत्साह नहीं होता है। वह तो कलकत्ते जाना वैसे ही पसंद नहीं करते हैं।

वर्धा २-१२-३७

प्रिय कमल

पू. बापूजी का स्वास्थ्य इन दिनों ज्यादा नरम रहता है। ब्लड प्रेशर सुबह २ ०-११४ हो जाता है। दोपहर को कभी-कभी १५ ९ भी हो जाता है। इतना हर-हमेश रहे तो बहुत ठीक हो। डाक्टर लोगों को भी थोड़ी चिंता है। इन्हें पूरा आराम मिले इसका ख्याल तो रखा जाता है। मैं प्रायः रहता तो सेगांव में ही हूं। मुलाकात वगैरा बंद है। यहां आराम नहीं हुआ तो फिर इन्हें समुद्र-तट पर ले जाना पड़ेगा। वे तो जाना नहीं चाहते हैं। तुम चिंता नहीं करना। ईश्वर को इनसे सेवा लेनी होगी तो कोई जोखम होनेवाली नहीं है।

जुहू १४ १२ ३७

चि कमल

पू बापूजी का स्वास्थ्य इन दिनों में काफी कमजोर हो गया था। प्रेशर बहुत बढ़ा हुआ रहने लगा था। डाक्टरों ने उन्हें समुद्र की हवा में रहने की सलाह दी और सात दिन हुए, पू बापूजी और हम सब लोग यहां जुहू में आये हुए हैं। आते ही तो पू बापूजी अपने झोंपड़े ही में ठहरे थे पर बाद में नर्सिंग के सुभीते के विचार से डॉक्टर ने उन्हें बिड़ला-कॉटेज में रक्खा है। डॉ जीवराज मेहता डॉ गिल्डर व दिनशा मेहता उनकी संभाल लेते हैं। पू बापूजी को यहां की हवा से काफी लाभ पहुंच रहा है। दिसंबर आखिर तक तो अभी यहां रहने का विचार है। वह तो सेगांव जाने को कहते रहते हैं पर अभी तो यहीं रहना उनके लिए लाभकर है। यहां का मौसम भी इस वक्त बहुत अच्छा है। मेरा विचार भी पू बापूजी यहां हैं तबतक यहीं रहने का है।

वर्धा २४ १ ३८

प्रिय कमल

मुझे इन महीनों में कार्य ज्यादा रहा—बापू के स्वास्थ्य के कारण व प्रांतिक कांग्रेस के चुनाव के कारण भी। अब हरिपुरा तक तो यों चलता रहेगा। बापूजी का स्वास्थ्य पहले से ठीक है। लार्ड लोथियन यहां तीन रोज रह गए। सेगांव में अपनी झोंपड़ी में रहे थे।

वर्धा ८ १ ३८

चि मदालसा

तुम्हारे पत्र मिले। मैं आज ही रांची जा रहा था। परंतु श्री सुभाष बाबू आज नागपुर से फिर वापस यहां बापूजी से मिलने आये और मुझे टेलीफोन से रहने को कहा। इसलिए मैं कल रवाना होकर ता १ को रांची पहुंच जाऊंगा।

पू बापूजी की इच्छा बालकोबा को जुहू भेजने की हो रही है। क्या

उनके लिए बाहर दो आदमी रहें, ऐसी झोंपड़ी बनाना ठीक रहेगा या पक्की इमारत ?

मोरारीसागर, २२-२-

प्रिय कमल

मेहमानों की मैं अब क्यों चिंता करूं ! तुम समर्थ हो मेहमानों बापूजी को बराबर संभालोगे ही ।

नासिक २१ १

चि मदालसा

पू बापूजी से कह देना यहां मुझे ठीक आराम मिलना संभव है । उन ठीक मालूम होता है । मैं बंबई से दूसरे ही दिन चला आया यह भी । से कह देना । आशा है, अब जल्दी ही तुम्हारे यहां बरसात आ जावेगी

नासिक रोड १-७-

चि मदू,

मुझे कई अनुभवी लोग कह रहे हैं कि नासिक में थोड़ी ठंड में भी मु में दर्द का डर है तो शिमला में तो बरसात भी ज्यादा होती है व ठंड भ सो तुम बापूजी से बात कह देना । वैसे शांति तो यहां भी है । उन शिमला भेजने का ही विचार हो, तब तो मैं यहां से अबके मंगलवार निकलकर बुधवार को वर्धा पहुंच जाऊंगा । जल्दी में सोमवार को भी प सकूंगा । अगर उनकी इच्छा हो कि मैं नासिक ज्यादा दिन रह सकता तो मुझे जल्दी सूचना मिल जाने से मैं यहां एक-दो महीने के लिए । छोटा-सा बंगला किराये का ले लूंगा व रसोइया की व्यवस्था कर लूं अभी तो मैं मीमोसाजी सेकटिया का मेहमान हो रहा हूं ।

जमनालाल का आशीर्वाद

शिमला वेस्ट, ११-७-

चि मदू

तुम्हारा १०-७ का पत्र अभी मिला । वर्णन पढ़कर खुशी हु

वजन सचमुच में तीन पौंड बढ़ा होगा । पू० बापू को विश्वास होगया होगा ।

यहां एक लोळूबाई है । इसको घर के सब इतनी ज्यादा प्रेम व सेवा करते हैं कि देखकर आश्चर्य होता है । तुम्हारी मां व बाप इतना प्रेम व सेवा पू० बापू या विनोबा या अन्य गुरुजनों की या बालकों की कर सकें तो कितना अच्छा हो ! यह लोळूबाई कौन है, पू० बापू से पूछ लेना । वह जानते हैं । उनकी गोद में भी बैठने का इसे सौभाग्य मिला है ।

शिमला वेस्ट २४-७-४१

चि० मनु,

पू० बापूजी से कह देना कि उनका ता० २१-७ का पत्र मिल गया है । पू० बहन राजकुमारी व उनके परिवार के प्रेम-व्यवहार से ठीक लाभ उठाने का प्रयत्न कर रहा हूं । मैंने अपनेको राजकुमारी बहन के सुपुर्द कर रखा है । जो वह देती है खाता हूं । भूख ज्यादा लगती है तो प्रेम के साथ मीठी लड़ाई लड़ लेता हूं । उनके भाई कर्नल भी मेरे लिए बहन से लड़ते रहते हैं कि मुझे भूखा क्यों मारती है । ठीक लड़ने में आनंद आता है । बहन खान-पान का बापू की लिखावट के मुताबिक पूरा खयाल रखती है । मैं भी खयाल तो रखता ही हूं पर थोड़ा क्योंकि दो जने चिंता क्यों करें ! जब एक समझदार नर्स अपने कर्तव्य का ठीक पालन करती हो तब फिर मरीज (बीमार) को चिंता रखने की क्या जरूरत ! ऐसे तो फिर नर्स व डाक्टर से विनोद की लड़ाई लड़ने में ही आनंद आना चाहिए । बाकी खाने-पीने की फिकर तो भुलाना चाहिए । यहां फल व शाक तो ताजे व अच्छे आते ही हैं, इनके बाग में से भी निकलते रहते हैं । बापू को पत्र इसलिए नहीं लिखता कि उन्हें जवाब लिखना पड़े । बहन तो रोज लिखती ही है । बापूजी उन्हें लिखते रहते हैं । फिर बापू का काम दुहरा क्यों बढ़ाऊं ! तुम कह ही देती होगी ।

मुझे तो ज्वारपाटे का शाक बापू खिलाते हैं । मुझे पेट भरकर रोटी भी नहीं देते । क्या यह इंसाफ है (मिठाई-खटाई की तो बात ही कहां !)

शिमला वेस्ट, २७/२९-७-४१

चि० मनु,

तुम्हारा ता० २५-७ का पत्र बहन के पत्र में साथ मिला। बापू का पत्र भी मिला। उन्हें मैंने जवाब बहन के पत्र में ही लिख भेजा है। तुम बापू से मांगकर पढ़ लेना जिससे मेरी इच्छा मालूम हो जायेगी।

तुम्हें चेंज से मन को शांति मिलती है, तो जरूर बापूजी से पूछकर बीच-बीच में चेंज कर लिया करो।

तुम्हारी भाभी राजी रहती है तुम्हारा उसका ठीक जम रहा है, जानकर मुझे सुख मिल रहा है। परमात्मा ने किया तो थोड़ी उदारता और बढ़ जायेगी जैसी कि आशा है तो सभीको संतोष हो जायेगा। उसमें गुण तो बहुत ज्यादा है, परंतु हम लोगों को चाहिए उतने समझ में नहीं आये हैं। तुम कोई रास्ता व्यावहारिक ढूंढ निकालो जिससे उसे खूब आनंद सुख व संतोष मिल सके। मेरे मन में ये विचार तो प्रायः आते रहते हैं व चिंता भी बनी रहती है। परंतु कोई राज-मार्ग अभी तक निकाल नहीं पाया। इसका मुख्य कारण तो मेरे विचार करने की पद्धति व उसके विचार करने की पद्धति में बहुत ज्यादा फरक है। अब यह फरक तो शायद पू० बापू ही निकाल सकेंगे।

उससे ज्यादा उदारता की आशा रखना शायद मेरे लिए उचित भी न हो। हां एक बात अगर वह कर सके यानी पू० बापू पर हृदय से पूरी श्रद्धा रख सके तो मुझे आशा है उसे खूब लाभ पहुंचेगा। बीच-बीच में उसे बापू से बात करने का मौका मिलता रहेगा तो ठीक रहेगा। तुम भी इस बात का खयाल रखना। मैंने भी बापू को सूचित तो कर दिया है। बापू पर बोझ न पड़ते हुए उनके अनुभवों से हम लोगों को लाभ अवश्य उठाना चाहिए। बापू से ज्यादा (शुद्ध) प्रेम और कहां से मिलनेवाला है।

शिमला वेस्ट, १-९-४१

चि० मनु,

दुनिया कुछ कहे व रंग की गुलाटीजी बना सकें तो यह देखना। आखिर तो बापू की इच्छा होगी वैसी ही बनेगी।

डॉ. दास को बापूजी ने इजाजत नहीं दी तो उन्होंने सोचकर ही ऐसा किया होगा। डॉ. दास के खाने-पीने आराम का खयाल रखना, उनके क्रोध का ज्यादा विचार नहीं करना। सरल-हृदय सज्जन पुरुष हैं, मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारी मां को बापूजी लिखते हैं, कहते हैं कि 'बछड़े के पीछे गाय की तरह ही सदा साथ रहना देखो' सो ठीक परंतु बछड़ा बड़ा होने पर वह भी अपनी मां को भूल जाता है और मां भी ऐसा करते हैं। सो तुम्हारा दोनों का यों न होने पावे इसकी संभाल रखना।

पू. बापूजी से कहना पत्र उनका ता. १०-७ का मिल गया है। अभी तो मैं यहांपर हूं ही। आये बहन की सलाह से कार्यक्रम बनाने की इच्छा होगी तब बना लूंगा। यहां पर भी कैद में हूं ही। यह कैद अमीरी माने स्टेट-गेस्ट की तरह की है।

बापू से कहना अगर देहरादून जाना हुआ और मां आनंदमयी से मुगमता से मिलना हो सका तो खयाल रखूंगा।

शिमला वेस्ट ५.९.४१

चि. मनु,

तिलक-जयंती पर बापू का खादी-विद्यालय का उद्घाटन-भाषण स्पष्ट (हृदय की आवाज) मन से बोले सो थोड़ा तो पत्रों में पढ़ा है। बाकी 'खादी-जगत्' या 'सर्वोदय' में देखने को मिल जायेगा।

पू. राजकुमारी बहन का देहरादून से आये-बाद स्वास्थ्य थोड़ा नरम रहता है। पू. बापू से विनोद करना कि मुझे बीमार समझकर उनकी देख-रेख में भेजा है, परंतु बीमार तो सचमुच में वह हैं। मुझे उन्हें हँसाना पड़ता है। उनके दिल-बहलाव के लिए भी पत्ते, शतरंज व नाना तरह के खेल रात को प्राय: रोज खेलना पड़ता है। वह शायद समझती हैं मेरे मन बहलाव के लिए। यह भी ठीक हो सकता है। हां यह बात जरूर है कि उनको हराने में हम बाकी के सबोंको ठीक आनंद आता है। क्योंकि वह बहुत होशियार, तेज बुद्धि की व खेलने में ऐक्सपर्ट समझी जाती हैं।

शिमला वेस्ट, १४-९-४१

चि. मनु,

वर्षा जाने के बाद सीकर जाने का बापूजी की आज्ञा से निश्चय होवेगा ।

चि. प्रभावती के पत्र का जवाब मैंने बापू के पते से भेजा था वह उसे मिल गया होवेगा ।

डेढ़ सौ रुपये पू. बापूजी को देने के लिए राजकुमारी बहन की भतीजी कु. बेमरित्न ने दिये हैं। सो मेरे हस्ते खाते नाम लिखाकर दुकान से मंगा लेना व बापूजी को दे देना और उनके पास से इन्हें पहुंच भिजवा देना याद रखकर।

देहरादून १९-९-४१

चि. मनु,

परसों ही मैं यहां की आनंदमयी माताजी (बंगाली) (कमला नेहरू की गुरु) यहां से पांच मील रायपुर नाम के देहात में रहती है, उनसे मिल आया। पू. बापू ने इनसे मिलने के लिए लिखा था। करीब दो घंटे उनके पास रहा। ठीक बातचीत हुई। मुझे उनके पास बैठकर बातचीत करने से संतोष मिला। करीब आधा घंटा एकान्त में भी बातें हुई। मैंने उनसे कहा 'मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्टवत्। आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति। —इस प्रकार की मेरी भावना इस जन्म में जिस प्रकार हो सके, वह मार्ग बतावें। उन्होंने प्रेमपूर्वक कुछ बातें बताई हैं। मैं आज फिर उनके पास जा रहा हूं। वहीं दिन व रात रहने का विचार है। वहां स्थान आदि देख आऊंगा। बाद में पूज्य बापूजी की इजाजत लेकर कुछ समय वहां रहने की इच्छा हो रही है। सात्विक वातावरण दिखाई देता है।

पू. बापू को यह पत्र पढ़ा देना।

देहरादून २१-९-४१

चि. मनु,

मेरा पत्र तो बापू के नाम का पढ़ ही लिया होगा। मुझे यह स्थान व

यहाँ का वातावरण व पू. मां आनंदमयी का स्वच्छ प्रेम आदि के कारण यहीं ज्यादा समय तक रहने की इच्छा व उत्साह मालूम होता है। आज पू. बापू का तार भी मेरे तार के जवाब में मिल गया मेरी इच्छा हो वहां तक ठहरने के बारे में। तार पढ़कर सुख मिला। मुझे बाप तो बापू मिल ही गए थे मां आनंदमयी मिल गईं। अब भी मुझे शांति नहीं मिली तो मेरा ही कोई भारी पाप आड़े आना संभव होगा। मुझे आशा है, जरूर शांति मिल जावेगी। मां आनंदमयी से मिलने की सूचना तो पू. बापू ने ही की थी।

बापू को पढ़ा देना मां को कह देना।

डाक-बंगला अल्मोड़ा १०-९-४१

चि. मदू,

मैं रमा और रामनारायण नैनीताल से ता. ७ को सुबह निकलकर दो रात कौसानी के सरकारी स्टेट-बंगले में रहे। यह स्थान कौसानी गांधी-आश्रम से तीन मील आगे है। बहुत अच्छा स्थान मालूम हुआ। पू. बापूजी भी यहां ९-१० रोज रहे थे। उन्हें भी यह स्थान पसंद आया बताते हैं।

पू. बापूजी से मिलने पर आस-पास के बंधन थोड़े ढीले करने की इच्छा है। अन्यथा मुसाफिरी में थोड़ा कष्ट होता है। खर्च भी ज्यादा आता है। मौका लगे तो मेरे पत्र का सारांश पू. बापू से कह देना।

बापू जेल न नहीं भेजेंगे तो नेपाल जा-आने का विचार कर रहा हूं। पैदल भ्रमण का उत्साह व इच्छा बढ़ती जा रही है। रेल-मोटर की मुसाफरी का उत्साह कम होता जा रहा है। कैलास-मानसरोवर भी जाने का मन होता है। देखें क्या होनेवाला है!

बीकानेर, ५-१०-२५

श्री हरिभाऊजी

पूज्य बापूजी के पत्र की नकल मंत्री से भी पढ़ी। पू. बापूजी से बातचीत हुई। उन्होंने आपको सीधा पत्र लिखा ही होगा। 'नवजीवन' का दूसरी तरह से पूरा बंदोबस्त हो जाने से आप राजस्थान जा सकते हैं, ऐसी उनकी राय है। मुझे भी आपका विचार रुचिकर मालूम हुआ है। अतएव 'नवजीवन' किसी योग्य सज्जन को सौंपकर आप राजस्थान में जा सकते हैं। मेरी राय में वह सज्जन हिन्दी के विद्वान् होने चाहिए तथा उनकी शैली सरल होनी चाहिए। वह पूज्य बापूजी के जीवन तथा सिद्धान्तों को पूरी तौर से समझ गए हों या समझने का सतत प्रयत्न करते हों। बस जैसे पू. बापूजी के कार्य के लिए तैयार हो गए हैं, वैसे वह भी थोड़े दिनों में तैयार हो सकें ऐसे हों।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय

साबरमती।

बंबई, १०-१-२६

प्रिय हरिभाऊजी

पू. बापूजी की इच्छा है कि चरखा-संघ के आफिस का काम सब हिन्दी में चले। इसके लिए शंकरलालभाई को किसी आदमी की जरूरत है। अगर आप उस आफिस में रहना पसंद करें तो उनको दूसरा आदमी देखने की जरूरत न होगी।

चरखा-संघ के कार्यालय में अगर आप एक वर्ष तक कार्य करें तो मुझे विश्वास होता है कि बहुत-सी बातों का अनुभव हो जायगा। पू. बापूजी भी एक वर्ष तक आश्रम में रहनेवाले हैं इसलिए खादी के संबंध में उनके विचार, अनुभव तथा अन्य बातों का अनुभव हो जायगा। हम लोग समय समय पर वहाँ आते रहेंगे। अगर आप ठीक समझें तो मुझे व शंकरलाल-भाई को लिखें।

साबरमती १५-९-२९

प्रिय हरिभाऊजी

मेरा यह मानना है कि जनता के पैसे पर अपनी ताकत से बाहर जाकर प्रयोग नहीं करना चाहिए। इस बारे में पू. बापूजी की कार्य प्रणाली का हम सर्वथा अनुकरण नहीं कर सकते हैं। क्योंकि पू. बापूजी का देश में जो स्थान है और जिस योग्यता के साथ बापूजी जो कार्य अपने हाथ से करते हैं उसमें जितनी चिंता रख सकते हैं और उनके ध्यान में कार्य बिगड़ने न पावे और एक पाई का भी दुरुपयोग न हो उसका खर्च और ख्याल वह रखते हैं। ये तीनों बातें हम लोगों में नहीं हैं यह हमें भूलना नहीं चाहिए।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्
अजमेर।

साबरमती १८-९-२८

प्रिय हरिभाऊजी

आजकल बारडोली की लड़ाई खूब जोर से चल रही है। सरकार भी जोर से सामना कर रही है और भविष्य में और जोर से करेगी ऐसा संभव है। मैं वहां सात-आठ रोज घूम आया। वहां का किसान-वर्ग और वहां की जनता की तैयारी तो बड़ी अच्छी मालूम होती है। मुझे तो लगता है कि पू. बापूजी का संदेश सारे भारतवर्ष में और तमाम दुनिया भर में बारडोली के जरिये फैलना संभव है। बारडोली-युद्ध लंबा चला तो हम सबको तैयार रहना होगा। आप खूब बारीकी से बारडोली का अध्ययन करते होंगे।

वर्धा, ७-१२-२८

प्रिय भाई श्री जवाहरलालजी

लाहौर और लखनऊ में पुलिस ने जो अत्याचार किये हैं उनकी खबर पढ़कर और सुनकर दुःख होता है। एक तरफ लाहौर में पुलिस का कार्य और दूसरी तरफ लोगों की उदासीनता देखकर दुःख हुए बिना नहीं रह

सकता । लखनऊ में आपके ऊपर पुलिस की मार पड़ी लेकिन चोट ज्यादा न आई यह आपके पूज्य महात्माजी को लिखे पत्र से जानकर कुछ संतोष हुआ । लेकिन पुलिस और सरकार इस तरह अपनी मनमानी कर सके यह देश के लिए कम लज्जा की बात नहीं है ।

पं. जवाहरलाल नेहरू
इलाहाबाद ।

बंबई, २४ ४ २९

प्रिय हरिभाऊजी

रानीपरज की प्रजा में खूब जागृति हुई है । खादी प्रचार व शराब-विरोध का खास कार्य हुआ है । जिस समय वहां की स्त्रियां (बहिनें) सैकड़ों की संख्या में शुद्ध सफेद खादी पहने हुए राजनीतिक जागृति व बारडोली-संगठन करने का महत्व तथा अन्य सामाजिक सुधार के गीत व भजन मराठी भाषा में व गुजराती भाषा में गाती है उस समय किसी भी सहृदय भारतवासी के मन में उनकी इस प्रकार की जागृति देख आनंद का संचार हुए बिना नहीं रहता । ईश्वर ने चाहा तो इस पिछड़ी हुई जाति में जिसमें पूज्य बापूजी दरिद्रनारायण के दर्शन करते हैं अवश्य पूज्य बापू की तपश्चर्या के कारण स्थायी तौर पर नवजीवन स्थापित हो जायगा ।

बंबई १५-८ २९

प्रिय डॉक्टरसाहब

धन्यवाद । मैं चरखा-संघ की बैठक के लिए इस महीने के आखिरी सप्ताह में साबरमती जा रहा हूं । तब इस विषय में मैं महात्माजी से बात चीत कर लूंगा । उनकी जैसी सलाह होगी और मुनासिब होगा उनके अनुसार डॉ. जाकिर हुसेन को पत्र भी दे दूंगा । मुझे मालूम है आपने भी बापूजी को इस बारे में लिखा ही होगा ।

गत ११ तारीख को पू. बापूजी यहां थे तब डॉ. जीवराज मेहता ने उनके शरीर की जांच की थी । उनकी रिपोर्ट की एक प्रति इस पत्र के साथ आपके देखने के लिए भेज रहा हूं ।

श्री महादेवभाई का पत्र आज साबरमती से आया है। वह लिखते हैं कि गत मंगलवार से बापूजी को पेचिश की शिकायत है। बगैर पकाया हुआ खाना शायद इसका कारण है। मैं आशा करता हूं कि आप इस बारे में जरूर उन्हें उचित सलाह देंगे।

डॉ० एम० ए० अन्सारी
दिल्ली।

वर्धा २७-११

प्रिय राजाजी

इस समय बापूजी बहुत-कुछ दक्षिण अफ्रीका के ढंग पर सविनय अवज्ञा-आंदोलन शुरू करने की बात गंभीरता के साथ सोच रहे हैं। २४ ता० को वल्लभभाई बंबई आये थे। उनकी सलाह है कि हम लोग कांग्रेस कार्य-कारिणी की मीटिंग से दो-तीन दिन पहले ही से मिलें।

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य
सलेम (मद्रास)।

वर्धा १०-११

प्रिय नवाबसाहब

महात्माजी के साथ जब मैं भोपाल आया था तब आपसे मिलने और भोपाल-राज्य में खादी का काम शुरू करने की बाबत आपसे बात करने का मौका मुझे मिला था। आप मेरी राय से सहमत हुए थे। अगर आप मेहरबानी करके इस काम की शुरुआत के लिए किसी सरकारी अफसर को हिदायत दे दें तो मैं आपका आभारी होऊंगा। इस बाबत अगर आप जरूरत समझें तो मैं फरवरी या मार्च में फिर भोपाल आ सकता हूं। आपको यह जानकर खुशी होगी कि कई दूसरे राज्य खादी के उत्पादन के लिए अच्छे कदम उठा रहे हैं।

पत्र का उत्तर सुविधानुसार दीजियेगा।

श्रीमान् नवाबसाहब
भोपाल।

१११

घनश्यामदासजी बिड़ला
नई दिल्ली ।

बापूजी के पास से अभी लौटा । आपके और मालवीयजी के इस्तीफे से बड़ी प्रसन्नता हुई । यदि आप और मालवीयजी विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की ओर अपना पूरा ध्यान दें तो बापू बहुत सुखी होंगे । नमक के एकाधिकार को दूर करने के लिए भी स्वतंत्र रूप से काम करें ।
(अंग्रेजी तार का अनुवाद)

शिमला १५-५-३१

प्रिय श्री हरिभाऊजी

आपका १-५-३१ का पत्र पूज्य श्री बापूजी ने मुझे दिया है । बिजोलिया के बारे में उन्होंने आपको लिखा ही है कि वह वर्तमान हालत में इस मामले के बीच में नहीं पड़ सकते । परिस्थिति ऐसी ही है कि उनके लिए इस संबंध में इस समय कुछ करना ठीक नहीं होगा । मैं बंबई में बीकानेर के महाराजा से मिला था और उनके एक आदमी के साथ उदयपुर उनका पत्र भेजा है । देखा जाय उस पत्र का क्या असर होता है ।

वर्धा २२-५-३१

पूज्य गांधीजी के सिद्धान्तानुसार यह कार्य (अस्पृश्यता-निवारण) अहिंसा-वृत्ति से ही किया जा सकता है । इसलिए न्याय की दृष्टि रखनेवाले लोगों को घबराने का कोई विशेष कारण नहीं होना चाहिए ।

आपके लिख हुए प्रश्नों की चर्चा मैं पूज्य महात्माजी से नहीं कर सका । कारण इस बार उन्हें समय नहीं था । दूसरे, ऐसे प्रश्न कई बार हुए हैं और उनका जवाब उन्होंने लिखकर तथा जबानी दिया हुआ है । गत ता ९-८-३१ के 'नवजीवन' में अहमदाबाद में अस्पृश्यों के लिए एक मंदिर खोलने के अवसर पर भी उन्होंने अपने जो विचार प्रकट किये थे वे प्रकाशित हुए हैं ।
श्री अय्युनस्वामीजी ।

वर्धा २४-९-४१

प्रिय भाई घनश्यामदासजी

पू. बापूजी ने आज मुझसे साबरमती-आश्रम की जमीन व इमारतों के बारे में बातचीत की थी। सरकार ने उस जमीन व इमारतों का कब्जा नहीं किया तो फिर क्या किया जाय? इसपर अहमदाबाद में कई मित्रों ने कई प्रकार की योजनाएं उनके सामने रखीं। आश्रम की जमीन व इमारतों को जब सरकार के हवाले करने का निश्चय किया था तब तो यह विचार था कि जब कभी सरकार से समझौता हो जायगा तब या स्वराज्य मिलने पर इस जमीन तथा इमारतों का आश्रम के काम के लिए उपयोग किया जाय। परंतु अब बापू का यह विचार हुआ है कि इस जमीन व सब इमारतों का स्थायी तौर से हरिजन लोगों की सब प्रकार की उन्नति के काम में उपयोग किया जाय। अब सवाल यह पैदा हो रहा है कि यह सब जमीन, इमारतें अहमदाबाद के मित्रों के जो इस काम में रस लेते हैं, अधीन की जायें या हरिजन-बोर्ड के? मैंने तो यही राय दी कि यह ट्रस्ट हरिजन-बोर्ड (मध्यस्थ) के सुपुर्द करना ज्यादा ठीक रहेगा। इस चर्चा के बाद यह विचार हुआ कि श्री अमृतलालजी ठक्कर यहां तारीख २९ को आनेवाले हैं ही। अगर उस समय कुछ रोज के लिए आप भी यहां आ जायें तो इसका पूर्णतया संतोषकारक खुलासा हो सकेगा। सो अगर आप यहां इस मास के आखिर या अक्तूबर के प्रथम या दूसरे सप्ताह में आ सकें तो समझ में संतोषकारक निश्चय हो जायगा। इससे पूज्य बापू व हम सबोंको पूरा संतोष रहेगा। बापूजी लिखा-पढ़ी भी होना जरूरी है। पू. बापू इसका जल्दी ही फैसला कर लेना चाहते हैं। उनकी आज्ञा से ही यह पत्र मैं आपको लिख रहा हूं। आपको यहां आये भी बहुत दिन हो गए हैं।

इन्दौर, १२-८-४१

श्रीमंत महाराजासाहब

मैं कल सुबह सीकर के लिए रवाना हो रहा हूं। मेरे मित्र श्री मणिलाल कोठारी १५ ता. तक यहां ठहरेंगे। हमारे यहां के निवास के बीच आपके आतिथ्य और कृपा के लिए मैं और श्री कोठारी दोनों आपके आभारी हैं।

महात्माजी को हिन्दी प्रचार के लिए भेंट दी जानेवाली थैली के लिए आपने जो उदारतापूर्वक दान दिया उसके लिए हम दोनों की ओर से आपको अनेकानेक धन्यवाद! महात्माजी के प्रति आपकी श्रद्धा और हिन्दी-प्रचार के प्रति आपकी असीम सहानुभूति का हमपर बहुत असर पड़ा है।

श्रीमंत यशवंतराव होल्कर,
इंदौर।
(अंग्रेजी से अनूदित)

बंबई, ७-११-३७

प्रिय चिरंजीलाल

श्री मीराबहन का पत्र आया है। बापूजी का स्वास्थ्य इधर खराब है। वह १-११ तक वर्धा आवेंगे। उनके लिए मीराबहन मकान में थोड़ी दुरुस्ती कराना चाहती है वह उनसे मिलकर जरूर करवा देना। मीराबहन का पत्र उनके नाम जरूर भिजवा देना।

चिरंजीलाल बड़जाते
वर्धा।

कैंप देहली १-१-३८

प्रिय सर अकबर,

कांग्रेस-कार्यसमिति में आपके कई अच्छे साथी हैं। गांधीजी कितनी ही बार आपका उल्लेख एक दार्शनिक के रूप में करते हैं। वापस हिन्दुस्तान आते समय स्टीमर में उनकी प्रार्थना-सभाओं में आपके शामिल होने की बात उन्हें हमेशा याद रहती है।

श्रीमती सरोजिनीदेवी तो आपके परिवार की सदस्या ही हो गई। सरदार को आपके निमंत्रण का पूरा खयाल है।

सर अकबर हैदरी
हैदराबाद (दक्षिण)।
(अंग्रेजी से अनूदित)

जयपुर स्टेट जेल, ४-७-३९

प्रिय श्री किशोरलालभाई,

जैसे-जैसे मैं अपनी कमजोरियों का निरीक्षण करता हूं वैसे-वैसे ही मेरा मन साफ तौर से मुझे कहता है (पहले से कहता आया भी है) कि मैं गांधी-सेवा-संघ जैसी उच्च व पवित्र संस्था के योग्य नहीं हूं। ज्यादा नहीं लिख सकता एक बार तो आप मुझे मुक्त कर ही डालें। पूज्य बापूजी मेरा समर्थन करेंगे। वह मेरी स्थिति से वाकिफ भी हैं।

मुझे अपनी कमजोरियों का थोड़ा ज्ञान रहने के कारण मैंने बापू को 'गुरु' नहीं बनाया न माना 'बाप' अवश्य माना है। वह भी इसलिए कि शायद इन्हें बाप मानने से मेरी कमजोरियां दूर जायें। बीच में ठीक इन दिनों (यानी इन दो वर्षों में) तो मुझे काफी हैरान बेचैन निरुत्साही होना पड़ा। बापू के शब्दों में दुरित्रता भी तो है। वह बेचारा प्रसिद्ध हो गया मेरे सारे दोष छिपे हुए रहे। आपने लिखा—गांधी-सेवा-संघ को छोड़ना यानी बापू को छोड़ना है, यह मानने को मेरा मन तैयार नहीं है। बापू के दूसरे बाप जमके भी तो गांधी-सेवा-संघ में नहीं हैं। फिर मैंने ही क्या इतना पुण्य किया जिससे रह सकूं? उनकी गति सो मेरी गति! उनमें कई तो उच्च स्थिति में हैं। पहले मैंने अहंकारवश मान लिया था कि बापू को व उनके सिद्धान्तों को मैं थोड़ा समझ सका हूं परंतु ठीक विचार करने से यह साफ दिखाई दे रहा है कि न समझ पाया था न समझने की ताकत है। मैंने सत्य-अहिंसा की व्याख्या मेरे विचार के मुताबिक समझ ली थी परंतु वह मेरी गलती अब साफ दिखाई दे रही है। मेरी लिखने की तो और भी इच्छा होती है, परंतु जेल के अंदर से ज्यादा क्या लिखूं।

श्री किशोरलाल मशरूवाला
वर्धा।

प्रिय भाई घनश्यामदासजी

यदि पूरी कोशिश करके आप यहां एक ऊंचे दर्जे के हिन्दुस्तानी दीवान को भिजवा सके तो बहुत-सी कठिनाइयों का हल हो सकता है। मैं मेरी ओर से तो पूरी कोशिश करता हूं। पू बापूजी को भी लिखा है। सर बीकानेर

खेद प्रकट किया है और आपसे निष्कासन-आज्ञा उठा लेने के लिए प्रार्थना की है। इस पत्र की एक नकल मैं साथ में भेज रहा हूं।

मौलाना अबुलकलाम आज़ाद
कलकत्ता।

१ ११ ४१

प्रिय परमेश्वरी

पू बापूजी को भी कल तुम्हारा पत्र पढ़ाया था। उनकी साफ तौर से इच्छा व एक प्रकार से आज्ञा है कि तुम्हें पूरी शक्ति व तन-मन से मेरे साथ गो-सेवा के काम में लग जाना चाहिए। उनकी यह भी समझ है कि मेरे साथ तुम्हारा ठीक जम सकेगा क्योंकि मेरा प्रेम तो तुम्हारे प्रति है ही। बापूजी भली प्रकार जानते ही हैं। वह यह भी समझते हैं कि तुम्हारे स्वभाव में जो थोड़ी-बहुत जिद या अव्यावहारिकता दिखाई देती है वह भी मेरे साथ काम करने से निकल जावेगी। इतनी सब बातें खुल खुलकर उनसे नहीं हुई हैं, परन्तु समय-समय पर तुम्हारे बारे में जो बातें होती रहीं उसका सारांश है। वह (बापूजी) तुम्हें इस काम के लिए उपयोगी तो समझते ही हैं। अब तुम अपने बारे में जल्दी निश्चय कर सको तो शुरू से ही कार्य जमाने में सुभीता रहेगा।

श्री परमेश्वरीप्रसाद गुप्त
दिल्ली

वर्धा १९४१

प्रिय भाई रामेश्वरजी

पोषक भी यदि गाय के दूध-घी का इस्तेमाल आग्रहपूर्वक न करता हो तो फिर दूसरे के ऊपर उसका क्या प्रभाव पड़ सकता है।

यद्यपि पूज्य बापूजी की इसमें सैद्धान्तिक दृष्टि है और वह तो इस बात पर बहुत जोर देते हैं लेकिन मैं तो व्यावहारिक दृष्टि से ही इस बात को आवश्यक मानता हूं।

श्री रामेश्वर पोद्दार,
धूलिया

मार्च १ १९४१

भाई जुगलकिशोरजी

आपने खादी के काम के लिए कागज़ों की ओर रु १) के चर्खे वितरण करने को तथा २५) हज़ार वहां ऊनी और सूती खादी का काम करने के लिए और रु २०-२५ हज़ार पिलानी में खादी-काम के लिए देने को लिखा है। उस विषय में पंजाब के काम के बारे में डॉ गोपीचन्दजी का पत्र और पिलानी के काम के बारे में श्री जाजूजी का पत्र इसके साथ भेजता हूं। डॉ गोपीचन्दजी ने भी अपना पत्र श्री जाजूजी की सलाह से लिखा है। वह पंजाब के लिए चरखा-संघ के प्रतिनिधि (एजेंट) हैं। मैंने इस विषय में पूज्य बापूजी की सलाह ली। उनका कहना था कि काम तो आपकी इच्छा हो वहीं किया जावे परन्तु किस रीति से किया जावे यह बात चरखा-संघ पर छोड़नी चाहिए। संघ को अधिक जानकारी है। वह पैसे का ठीक उपयोग अधिक-से-अधिक कर सकेगा। मेरी भी ऐसी ही राय है।

श्री जुगलकिशोर बिड़ला
नई दिल्ली

बजाज-परिवार के व्यक्तियों द्वारा

गांधीजी-संबंधी संस्मरण

●

मार्गदर्शक की खोज और प्राप्ति

जमनालाल बजाज

जीवन सेवामय उन्नत प्रगतिशील उपयोगी और सादगी-युक्त हो यह भावना जबसे मैंने होश संभाला तबसे अस्पष्ट रूप से मेरे सामने थी। इसीकी पूर्ति के हेतु सामाजिक, व्यापारिक सरकारी और राजकीय क्षेत्रों में कुछ हस्तक्षेप करना मैंने प्रारम्भ किया। सफलता मेरे साथ थी। पर मुझे सदा यह विचार भी बना रहता था कि जीवन की संपूर्ण सफलता के लिए किसी योग्य मार्गदर्शक का होना जरूरी है। मैंने अपने विविध कार्यों म लगे रहने पर भी इस खोज को चालू रखा। इसी मार्ग-दर्शक की खोज में मुझे गांधीजी मिले और सदैव के लिए मिल गए।

मार्गदर्शक की खोज में मैंने भारत के अनेक व्यक्तियों से संपर्क स्थापित किया। महामना मालवीयजी कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सर जे सी बोस लोकमान्य तिलक आदि अनेक नेताओं तथा व्यक्तियों से मैंने कम-अधिक परिचय प्राप्त किया। उनके संपर्क में रहा। उनके जीवन का निरीक्षण किया। मेरी इस खोज में एक बात ने मेरे दिल पर सबसे बड़ा असर कर रखा था। वह थी समर्थ रामदासजी की उक्ति 'बोले तैसा चाले त्याची वंदावी पाउलें'। अनेक नेताओं से मेरा परिचय होने पर मुझे उनके जीवन में मेरे इस सिद्धान्त की प्राप्ति जिस परिमाण में होनी चाहिए, नहीं हुई। भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के भिन्न-भिन्न गुणों का मुझपर असर पड़ा। उनके प्रति मेरी श्रद्धा और आदर भी बना रहा पर अपने जीवन के मार्गदर्शक के स्थान पर किसीको आसीन नहीं कर सका।

जिस समय मार्गदर्शक की मेरी खोज चल रही थी गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में सेवा-कार्य कर रहे थे। उनके विषय में समाचार-पत्रों में जो आता उसे मैं गौर से पढ़ता था और यह स्वाभाविक इच्छा होती थी कि

यदि वह व्यक्ति भारत में आवे तो उससे संपर्क पैदा करने का अवश्य प्रयत्न किया जाय। सन् १९०७ से १९१५ तक इस खोज में रहा। और जब गांधीजी ने हिन्दुस्तान में आकर अहमदाबाद के कोचरब मोहल्ले में किराये का बंगला लेकर अपना छोटा-सा आश्रम आरंभ किया तब उनसे परिचय प्राप्त करने के हेतु मैं तीन बार वहां गया। उनके जीवन को मैं बारीकी से देखता। उस समय वह अंगरखा काठियावाड़ी पगड़ी और धोती पहनते थे। नंगे पैर रहते थे। स्वयं पीसने का काम करते थे। स्वयं पाकशाला में भी समय देते थे स्वयं परोसते थे। उनका उस समय का आहार केला मूंगफली जैतून का तेल और नींबू था। उनकी शारीरिक अवस्था को देखते हुए उनके आहार की मात्रा मुझे अधिक मालूम होती थी। आश्रम में प्रातः-सायं प्रार्थना होती थी। सायंकाल की प्रार्थना में मैं सम्मिलित होता था। गांधीजी स्वयं प्रार्थना के समय रामायण गीता आदि का प्रवचन करते थे। मैंने उनकी अतिथि-सेवा और बीमारों की सुश्रूषा को भी देखा और यह भी देखा कि आश्रम की ओर साथियों की छोटी-से-छोटी बातों पर उनका कितना ध्यान रहता है। आश्रम के सेवा-कार्य में रस और निमग्नता को भी मैंने देखा। गांधीजी ने भी मेरे बारे में पूछताछ करना आरंभ किया। धीरे-धीरे संपर्क तथा आकर्षण बढ़ता गया। ज्यों-ज्यों मैं उनके जीवन को समालोचक की सूक्ष्म दृष्टि से देखने लगा त्यों-त्यों मुझे अनुभव होने लगा कि उनकी उक्तियों और कृतियों में समानता है और मेरा "बोले तैसा चाले" वह आदर्श यहां विद्यमान है। इस प्रकार संबंध तथा आकर्षण बढ़ता गया।

महात्माजी के कार्य में मैं अपने-आपको विलीन हुआ पाने लगा। वह मेरे जीवन के मार्गदर्शक ही नहीं पिता-तुल्य हो गए। मैं उनका पांचवां पुत्र बन गया।

आज २४ वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो गया तबसे मैं महात्माजी के संपर्क में हूं। इन वर्षों में मैंने उनके जीवन के समस्त क्षेत्रों का अवलोकन किया। मैं उनके सहवास में घूमा उनके आश्रम-जीवन में भी रहा उनके उपवासों में उनके निकट रहा बीमारियों के समय उनकी शुश्रूषा में भाग

पैदा रहा। उनकी अनेक महान संस्थाओं का मैं साक्षी हूं, और उनके सार्वजनिक कार्य का भार मैंने यथाशक्ति उठाया। सारी अवस्थाओं में उनके अनेक गुणों का मुझपर असर होता ही गया। मेरी श्रद्धा बढ़ती गई। मैं अपने आपको उनमें अधिकाधिक विलीन करता ही गया और आज तो वह मेरे आदर्श हैं और उनकी आज्ञा मेरा जीवनादर्श है। उनका प्रेम मेरा जीवन है।

महात्माजी में अनेक अलौकिक गुण हैं। इस प्रकार के शब्दों से मैं अपने हृदय के सच्चे भाव प्रकट कर रहा हूं। पर विरोध की आशंका न करते हुए इतना तो अवश्य कह सकता हूं कि उनमें मनुष्योचित गुणों का बहुत बड़ा समुच्चय है। मानवीय गुणों के तो वह हिमालय हैं। उनकी नियमितता सार्वजनिक हिसाब रखने की सूक्ष्मता बीमारों की शुश्रूषा अतिथियों का सत्कार, विरोधियों के साथ सद्व्यवहार, विनोद-प्रियता आकर्षक स्वच्छता बारीक निगाह और दृढ़ निश्चय आदि गुण मुझे उत्तरोत्तर प्रकट होते हुए दिखाई दिये हैं। महात्माजी में मैंने विरोधी गुण भी देखे हैं। उनकी अविचल दृढ़ता और कठोरता अगाध प्रेम और मृदुता की बुनियाद पर खड़ी है। उनकी पाई-पाई की कंजूसी महान् उदारता के जल से सिंचित है और उनकी सादगी सौंदर्य से शोभित है।

महात्माजी के प्रति अगर मेरा खाली आदर-भाव ही रहता तो उनके विषय में मैं कुछ विशद लिख सकता। पर महात्माजी ने मुझे इस तरह से अपनाया है कि उनके प्रति मेरे मन में पिता और गुरु के समान ही भाव पैदा होता है।

बचपन से ही सार्वजनिक जीवन का प्रेम होने के कारण बहुत-से प्रतिष्ठित सरकारी कर्मचारी तथा देश के प्रख्यात नेताओं से मेरा परिचय हुआ। पूज्य लोकमान्य तिलक महाराज और भारतभूषण मालवीयजी जैसे महान् पुरुषों का परिचय मेरे लिए लाभदायक हुआ। लेकिन महात्माजी ने तो मेरी मनोभूमिका ही बदल दी। मेरे मन में कई बार त्याग के विचार पैदा हुआ करते थे। उन्हें कार्य रूप में लाने का रास्ता बता दिया। उनका निर्मल चारित्र्य शीतल तेजस्विता गरीबों की तरफ मनुष्य-मात्र से सत्य व्यवहार, अनुपम प्रेम और धर्म-श्रद्धा देखकर ही मेरा मन उनकी ओर खिचता गया। मेरे जीवन की त्रुटियां मुझे दिखाई देने लगीं और वह

महत्त्वाकांक्षा बढ़ने लगी कि इस जीवन में किस तरह महात्माजी के सहवास के योग्य बन सकूं।

मेरी राय में आज भारत में गरीबों के साथ यदि कोई एक-जीव हुआ है तो वह महात्माजी हैं। महात्माजी मानो कारुण्य की मूर्ति हैं। गरीबों के कष्ट दूर करने में अमीरों के साथ भी अन्याय न होने पावे और भिन्न-भिन्न धर्मों के बीच द्वेषभाव तनिक भी पैदा न हो इसकी वह हमेशा चिन्ता रखते हैं। इसीलिए भारतवर्ष के सब धर्म पंथ और वर्ग के लोग उनको आत्मीयता की दृष्टि से देखते हैं। चातुर्वर्ण्य का तो मानो उनमें सम्मेलन ही हुआ है। भारतवर्ष पर उनका जो असीम प्रेम है, उसके लायक यदि हम भारतवासी बनें तो भारत का उद्धार अवश्य हो जाय।

मेरी समझ में तो महात्माजी का सहवास जिसने किया हो या उनके तत्त्वों को समझने की कोशिश की हो वह कभी निरुत्साही नहीं हो सकता। वह हमेशा उत्साहपूर्वक अपना कर्तव्य पालन करता रहेगा क्योंकि देश की स्थिति के सुधरने में—स्वराज्य मिलने में—भले ही थोड़ा विलम्ब हो, परन्तु जो व्यक्ति महात्माजी के बताये मार्ग से कार्य करता रहेगा मुझे विश्वास है कि वह अपनी निजी उन्नति तो जरूर कर लेगा अर्थात् अपने लिए तो स्वराज्य वह अवश्य पा सकता है।

मुझे अपनी कमजोरियों का थोड़ा भान रहने के कारण मैंने बापू को 'गुरु' नहीं बनाया न माना 'बाप' अवश्य माना है। वह भी इसलिए कि शायद उन्हें बाप मानने से मेरी कमजोरियां छूट जावें।

मुझे दुनिया में बापू पिता का व विनोबा गुरु का प्रेम दे सकते हैं, अगर मैं अपनेको योग्य बना सकूं तो।

महात्माजी की अनुपम दया से आज मैं कम-से-कम अपनी कमजोरियों को थोड़ा-बहुत तो पहचानने लग गया हूं।

जिस दिन मैं महात्माजी के पुत्र-वात्सल्य के योग्य हो सकूंगा वही समय मेरे जीवन के लिए धन्य होगा।

'सवकुछ कृष्णार्पण'

जानकीदेवी बजाज

जमनालालजी पर लगी थी गांधी-भक्ति और मुझपर लगी थी पति-भक्ति इस तरह अनायास ही गांधी-भक्ति मुझपर आ गई। यों तो गांधीजी के संस्मरण बहुत हैं जो कमोबेश मेरी पुस्तक 'मेरी जीवन-यात्रा' में आगए हैं किन्तु कुछ विशेष घटनाएं ऐसी हैं जिन्होंने मेरे जीवन पर भी विशेष असर डाला। ऐसे ही कुछ संस्मरण यहां लिखती हूं।

गहनों और घूंघट का त्याग मैं अपने जीवन की सबसे बड़ी कमाई मानती हूं। बापूजी हरिजन-कार्य के सिलसिले में नागपुर जिले का दौरा कर रहे थे। जमनालालजी भी साथ थे। इस दौरे के बीच बापूजी ने एक भाषण में कहा "सोना कलि का रूप है। इससे दूसरों में ईर्ष्या पैदा होती है, चोरी का लालच उत्पन्न होता है, चोर आने का डर रहता है शरीर पर मैल जम जाता है" आदि-आदि। जमनालालजी के दिल में यह बात बैठ गई। लेकिन वह जो कुछ कहते थे उसकी शुरुआत घर से ही करते थे। इसलिए सबसे पहले मुझ-पर उनकी निगाह जाना स्वाभाविक था। उन्होंने फौरन मुझे एक पत्र लिखा कि बापू का आदेश है गहने त्याग दो। यह बात यह स्वयं कहते तो शायद मैं उनसे बहस भी कर बैठती। किन्तु उनकी चिट्ठी तो मेरे लिए वेद-वाक्य जैसी थी। गहनों का मोह था लेकिन उन्होंने लिखा वैसा करना भी तो कर्तव्य था। फिर भी ख्याल होता था लोग क्या कहेंगे। अजीब-सी स्थिति थी। चिट्ठी मेरे सामने थी और मैं एक-एक गहना उतारकर रखती जा रही थी।

मारवाड़ी समाज में स्त्रियों के पैर की चांदी की कड़ी खोली नहीं जाती थी। गरीब-से-गरीब के पैर में कड़ी तो रहती ही थी। वह तो मरने के बाद श्मशान में जाकर ही खोली जाती थी। अतः कड़ी खोलने में बहुत हिचक हो रही थी। लेकिन फिर विचार आया कि जब कोई गहना पहनना ही नहीं तो फिर कड़ी का ही क्या मोह! जी कड़ा करके उस झूठे मोह को भी त्याग

महत्वाकांक्षा बढ़ने लगी कि इस जीवन में किस तरह महात्माजी के सहवास के योग्य बन सकूं।

मेरी राय में आज भारत में गरीबों के साथ यदि कोई एक-जीव हुआ है तो वह महात्माजी है। महात्माजी मानो कारुण्य की मूर्ति हैं। गरीबों के कष्ट दूर करने में अमीरों के साथ भी अन्याय न होने पावे और भिन्न-भिन्न वर्गों के बीच द्वेषमात्र तनिक भी पैदा न हो इसकी वह हमेशा चिन्ता रखते हैं। इसीलिए भारतवर्ष के सब धर्म पंथ और वर्ग के लोग उनको आत्मीयता की दृष्टि से देखते हैं। चातुर्वर्ण्य का तो मानो उनमें सम्मेलन ही हुआ है। भारतवर्ष पर उनका जो असीम प्रेम है, उसके लायक यदि हम भारतवासी बनें तो भारत का उद्धार अवश्य हो जाय।

मेरी समझ में तो महात्माजी का सहवास जिसने किया हो या उनके तत्वों को समझने की कोशिश की हो, वह कभी निरुत्साही नहीं हो सकता। वह हमेशा उत्साहपूर्वक अपना कर्तव्य पालन करता रहेगा क्योंकि देश की स्थिति के सुधरने में—स्वराज्य मिलने में—भले ही थोड़ा विलम्ब हो, परन्तु जो व्यक्ति महात्माजी के बताये मार्ग से कार्य करता रहेगा मुझे विश्वास है कि वह अपनी निजी उन्नति तो जरूर कर लेगा अर्थात् अपने लिए तो स्वराज्य वह अवश्य पा सकता है।

मुझे अपनी कमजोरियों का थोड़ा ज्ञान रहने के कारण मैंने बापू को 'गुरु' नहीं बनाया न माना 'बाप' अवश्य माना है। वह भी इसलिए कि शायद उन्हें बाप मानने से मेरी कमजोरियां छूट जायें।

मुझे दुनिया में बापू पिता का व विनोबा गुरु का प्रेम दे सकते हैं, अगर मैं अपनेको योग्य बना सकूं तो।

महात्माजी की अनुपम दया से आज मैं कम-से-कम अपनी कमजोरियों को थोड़ा-बहुत तो पहचानने लग गया हूं।

जिस दिन मैं महात्माजी के पुत्र-वात्सल्य के योग्य हो सकूंगा, वही समय मेरे जीवन के लिए धन्य होगा।

बजाना मुझे नहीं जंचा तो मैंने उसे मगनवाड़ी के कुएं में डलवा दिया। यह सब गांधीजी के ही प्रभाव से संभव हुआ।

चरखा कातने की लगन स्वयं बापूजी के कहने से लगी। बम्बई में नरोत्तम मोरारजी के यहां पहले-पहल बापू के दर्शन हुए। वह चरखा कात रहे थे। एक आदमी को चरखा कातते हुए मैंने पहली बार ही देखा। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मैंने उनसे पूछा "चरखा कातना क्या अच्छा है?" बापू ने दृढ़ता व सरलता से सिर्फ इतना कहा "सूत कातना बहुत अच्छा है।" लेकिन यह बात उन्होंने कुछ ऐसे ढंग से कही कि वह मेरे मन में बस गई। वर्धा आकर सासूजी (जमनालालजी की जन्म-माता) से कहा कि मुझे कातना सिखा दो गांधीजी ने कहा है। मैंने एक चरखा मंगवाया। सात दिन में मैं सूत कातना सीख गई। फिर तो धीरे-धीरे आठ चरखे इकट्ठे कर लिये और कताई का वर्ग ही शुरू कर दिया। आज तो मुझे कताई में प्रार्थना से भी अधिक आनंद आता है। गांधीजी के एक वाक्य ने जो धुन लगा दी थी वह अबतक बराबर चल रही है।

राजस्थानी समाज में घूंघट प्रतिष्ठा सभ्यता और कुलीनता का चिह्न माना जाता था। घूंघट का संस्कार एक-दो दिन या एक-दो पीढ़ियों का थोड़े ही था। वह एकाएक छूटे कैसे! दूसरे, मैं सुंदर न थी इसलिए भी चाहती थी कि मुंह ढका रहे तो ठीक।

लेकिन जब खादी पहनना शुरू किया तो घूंघट में बड़ी कठिनाई होती थी। बातचीत में बापू से पूछा "और सब अड़चन तो मिट जायंगी पर घूंघट काढ़ने पर दीखना कैसे?"

बापू बोले "घोड़ों की आंखों की तरह आंखों की जगह जाली लगवा लो।" बापू की यह बात विनोदभरी थी। बड़ी हंसी आई। लेकिन कभी-कभी उनके इस विनोद का खयाल करती हूं तो सोचती हूं कि बापूजी ने उस समय केवल मेरी बात का जवाब दिया घूंघट हटा देने को नहीं कहा। बापूजी घूंघट के पक्ष में नहीं थे लेकिन वह जानते थे कि मानसिक रूप से उस समय मैं परदा छोड़ने के लिए तैयार नहीं थी। लेकिन आगे चलकर जब मेरा

घूंघट छूट गया तो मुझे दूसरी बहनों का घूंघट छुड़वाने की धुन लग गई। सन् १९३३ में कलकत्ता में मारवाड़ी महिला सम्मेलन हुआ। मुझे उसकी अध्यक्षता बनाया गया। उस अवसर पर बापूजी ने वर्धा से २९-१०-३३ को बड़ा सुंदर पत्र मुझे लिखा। वह पत्र इस प्रकार था

"आप बहनों से परदा छुड़वाने कलकत्ता जा रही हैं इसलिए धन्यवाद! परदा धर्म नहीं है उसमें मुझे पाप की बू आती है। परदा किससे रखें? क्या पुरुष-मात्र विषयासक्त रहते हैं? क्या स्त्री अपनी पवित्रता बगैर परदा नहीं रख सकती है? पवित्रता मानसिक बात है, सभी पुरुषों में सहज होनी चाहिए। यदि इस बुद्धि-प्रधान युग में स्त्री धर्म की रक्षा करना चाहती है तो उसे दरिद्र-नारायण की सेवा करनी होगी, शिक्षित बनना होगा। दरिद्रनारायण की सेवा करने का अर्थ है—खादी-प्रचार, कातना इत्यादि। हरिजन-सेवा का अर्थ है अस्पृश्यता-रूपी कलंक को धोना। ये भी भगवान् के बड़े कार्य हैं और शिक्षा पाने का कार्य परदा रखने के साथ कभी नहीं बन सकता है।

"परदा रखकर सीता रामजी के साथ जंगलों में भटकी होंगी? सीता से बड़ी पवित्र स्त्री जगत् में कभी हुई है? बहनों से कहो—परदा तोड़ो, धर्म रखो।"

यह पत्र पढ़ने के बाद तो दिल और जोश से भर गया और मैं लोगों में जाकर व्याख्यान भी देने लगी। जमनालालजी की माताजी कहतीं "पहलो करयां तो इस्यो करयां के कोई मख भी देख नहीं सके। और छोड़यो तो इस्यो छोड़यो के मोटयारां की सभा में व्याख्यान झाटे लगी।

११ फरवरी १९४२ को अचानक जमनालालजी की मृत्यु हो गई। सेवाग्राम में बापूजी को फोन किया गया। वह फौरन आये। आते ही उन्होंने जमनालालजी के सिर पर हाथ रखा। बापूजी को देखते ही मैं बोली "बापूजी आप इनके पास होते तो यह नहीं जाते। बस अब तो आप इन्हें जीवित कर दीजिये। क्या आप इन्हें जिला नहीं सकते?

और उस समय बापूजी के व्यक्तित्व का जो मैंने दर्शन किया उसका चित्र अबतक मेरे मानस पर अंकित है। वह गंभीर स्वर में बोले—"जानकी

तुम्हें अब रोना नहीं है। तुम्हें तो हँसना है और बच्चों को भी हँसाना है। जमनालाल तो जिन्दा ही है। जिसका यश अमर हो उसकी मृत्यु कैसी! उसकी मृत्यु तो तभी हो सकती है जब तुम उसके रास्ते न चलो। उसने परमार्थ की जिन्दगी बिताई। जो काम उसने अपने कंधों पर लिया था उसे अब तुम संभालो। मैं तुम्हें झूठा धीरज देने नहीं आया जमनालाल का शरीर मर गया पर असल जमनालाल तो जिंदा ही है और आगे के लिए उसे जिन्दा रखना हमारा काम है।

बचपन में सती होने की मेरी इच्छा थी। वह जग उठी। मैं बोली "बापूजी मैं सती होना चाहती हूँ। अनुमति दीजिये!" बापू बोले "शरीर को जलाने से क्या फायदा! वह तो तुच्छ है मिट्टी है। अपने सब दुर्गुणों को जला देना ही सच्चा सतीत्व है। अपने सब दुर्गुणों को चिता में होम दो। फिर बाकी बचेगा वह शुद्ध कंचन रहेगा। उसको कैसे जलाया जाय! उसे तो कृष्णार्पण ही किया जा सकता है!

मुझमें न जाने कहाँ से बल आ गया दृढ़ता आ गई। मेरे मुंह से उसी समय निकला "बस आज से मैं और मेरा सब-कुछ कृष्णार्पण!

पूज्य बापू के पुण्य-स्मरण

राधाकृष्ण बजाज

सन् १९२४ की बात है जब पूज्य बापूजी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए दिल्ली में उपवास किये थे। पूज्य काकाजी उनसे मिलने दिल्ली जाते समय संयोग से मुझे भी साथ ले गए। उस समय बापूजी मुहम्मद अली के घर पर ठहरे हुए थे। बाद में सिविल लाइंस के एक बंगले में उन्हें ले जाया गया। मैं भी नित्य आने-जाने लगा। इसी बीच एक घटना घटी। बंगाल के श्रीकृष्णदासभाई बीमार हो गए। वह बापूजी की सेवा में थे। उन्हें टायफायड हो गया। टायफायड के बीमार की विशेष सेवा का प्रबंध हो इसलिए बापूजी ने अपने पुत्र देवदासभाई गांधी को उनकी सेवा में लगा दिया। इस तरह बापू की सेवा में से दो व्यक्ति कम हो गए। सौभाग्य से उस कमी की पूर्ति का काम मुझे मिला और मैं उपवास के अन्त तक बापूजी की निजी सेवा में लग सका। मैं नित्य देखता था कि बापूजी स्वयं बैठ नहीं सकते थे। फिर भी चरखा काते बिना एक भी दिन नहीं रहते थे। चरखा देने और कातने तक पकड़े रहने का काम मेरा था। मैं नित्य देखता था कि चरखा कातने के लिए कहां से इतनी शक्ति आ जाती है। बापूजी के निकट परिचय का यह मेरा पहला ही अवसर था। बंगाल के कृष्णदासभाई की सेवा में अपने पुत्र को लगा देना और इस तरह अपने सेवक की सेवा का पुत्र से भी अधिक खयाल रखना यह जो मैंने दृश्य वहां देखा उसे आजतक नहीं भूल सका। मेरे जीवन पर उसका एक असर पड़ गया।

उसके बाद मैंने कितने ही प्रसंग देखे हैं जिनमें साथियों की सेवा में उन्होंने सर्वस्व लगाया। कुष्ठरोग से पीड़ित परचुरेशास्त्री की मालिश बापूजी स्वयं अपने हाथों से करते थे। यह दृश्य भी मैंने देखा है। जिस रोगी को स्पर्श करना भी गंदा माना जाय उसकी बापू स्वयं इस तरह मालिश करें यह एक दैवी घटना थी।

दिल्ली के बाद बापूजी कलकत्ता आये। वहां सी० आर० दास के घर

ठहरे। मेरे दिल में वहां भोजन करने में संकोच था वैसे बापूजी की पार्टी के लिए सारा भोजन शाकाहारी ही बनानेवाले थे लेकिन फिर भी मेरे सनातनी मन को विचित्र-सा कष्ट रहा था। एक मित्र के यहां अन्यत्र भोजन के लिए जाने की इच्छा प्रकट की पर बापूजी ने इजाजत नहीं दी। कहा कि श्रीमती को बुरा लगेगा। छोटी-छोटी बातों में दूसरे के भले-बुरे का बहुत ही अधिक ख्याल रखते हुए उन्हें देखा है और उतना ही सख्त अपने सेवकों के प्रति।

मुझे स्मरण है कि उनके साथ रहनेवालों में पूज्य बा प्यारेलालजी अम्तुल बेन कुसुमबेन और दो-तीन बहनें थीं। वे सब सेवा में लगी रहती थीं। सफाई का बापूजी को इतना ध्यान था कि रस पी लेने के बाद भी अन्त में कहीं जरा-सा कुछ रह गया तो याद रखकर उसका उलहना देते थे। आये हुए मेहमानों की सेवा बराबर हुई या नहीं इसका भरोसा सेवकों पर नहीं छोड़ते थे बल्कि एक-एक बारीक चीज उनसे पूछते थे ताकि कहीं भी कोई चूक न रहे। बा की तो कसौटी ही होती। मैंने सुन रखा था कि सतों का व्रत असिधारा होता है लेकिन आंखों देखा था का पहला। मेरे मन में उठता है कि बापू बड़े थे या उन्हें सहनेवाली पूज्य बा!

जीवन का सबसे बड़ा पाठ

कमलनयन बजाज

लगभग पच्चीस साल पहले की बात है। बापू गुजरात का दौरा कर रहे थे। एक-एक दिन में कई पड़ाव होते थे लेकिन कांग्रेस कार्य-समिति के लिए या कांग्रेस के कुछ नेताओं से विचार-विनिमय के लिए बोरसद में वह दो या तीन दिन रुके। पिताजी ने पांच-सात दिन के लिए मुझे उनकी निजी सेवा करने के लिए छोड़ दिया था। मेरी उम्र उस समय पंद्रह या सोलह वर्ष की रही होगी। बापू कितने व्यवस्थित थे और छोटे-से-छोटे काम को भी कितनी जिम्मेदारी से करने-कराने में तत्पर रहते थे इसका मुझे अच्छा अनुभव हुआ। मैं देखता था कि वह हर चीज का पूरा-पूरा उपयोग कर लेते थे। जब उनके पहनने की धोती घिस जाती थी तो उसकी चादर बना लेते थे। चादर के फटने पर छोटे-छोटे गमछे और उनके घिसने पर नीबू पानी दूध या रस छानने के लिए छोटे-छोटे टुकड़े बना लेते थे। जब ये टुकड़े वहां भी जवाब दे देते थे तो उनसे सिगड़ी-चूल्हा सुलगाने का काम लेते थे या उन टुकड़ों को गला-सड़ाकर उसकी लुगदी बनाई जाती थी और उसके कागज बनते थे। कागज का भी वह जिस सावधानी से उपयोग करते थे उस सावधानी से उपयोग करनेवाला दूसरा मैंने नहीं देखा।

बोरसद में कुछ तो व्यस्तता और कुछ मेरी असावधानी के कारण बापू के रस छानने के कपड़ों में से एक टुकड़ा खो गया। बात देखने में छोटी थी लेकिन मैं जानता था कि बापू को उससे दु:ख होगा। उसकी भी मुझे इतनी चिन्ता नहीं थी क्योंकि मैं स्वभाव का ढीठ और मन का पक्का था। यह भी समझता था कि बापू गुस्सा होंगे तो हो लेंगे। आखिर जानबूझकर तो मैंने गलती की नहीं थी। यों मन की तसल्ली होने पर भी एक बात का मुझे बड़ा डर और चिन्ता थी। वह यह कि इतनी व्यस्तता और महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियों के सामने होते हुए भी कहा-सुनी करने में बापू के पंद्रह-बीस मिनट जरूर लग जायेंगे और उनका उतना भी अमूल्य समय मैं बरबाद नहीं करना

चाहता था। पर करता क्या! वह दिन तो मैंने चतुराई से निकाल दिया। अगले दिन बापू का मौन था। नेहरूजी आदि कांग्रेस के बड़े नेता या शायद कांग्रेस कार्य-समिति के सदस्य ही बापू से मिलनेवाले थे। मैं चाहता था कि अपनी गलती की चर्चा बापू से उस समय करूं जबकि वह व्यस्त न हों या बोरसद से चलते समय रास्ते में करूं जिससे उनके समय का अपव्यय न हो। यही सोचकर मौनवार के दिन और नेताओं के साथ विचार-विनिमय करते समय मैं नया कपड़ा ढंककर उनके खाने-पीने की चीजों को ले गया। आशा थी कि शायद उनकी निगाह से बच जाऊं, लेकिन वैसा होना आसान न था। बापू ने मेरी चतुराई, या कहिये बदमाशी ताड़ ली और चर्चा में संलग्न होते हुए भी मुस्कराहट के साथ यह बतलाते हुए कि तुम्हारी चालाकी मैं समझ गया उन्होंने चुपचाप अंगुली के इशारे से डाट पिला दी। मैं वहां से चला आया। बाद में बर्तन बदल लाने को और किसीको भेज दिया। पर बापू सहज छोड़नेवाले न थे। शाम की प्रार्थना के बाद मौन पूरा होने पर, उन्होंने मुझे बुलाया और मुझसे हकीकत पूछी। मैंने कह दिया कि कपड़ा मेरी गफलत से खो गया था इसलिए मुझे दूसरा लेना पड़ा। उन्हें दुःख हुआ। उस समय किसीको समय दिया होने के कारण उन्होंने मुझसे कहा कि सवेरे प्रार्थना के बाद मेरे साथ घूमने चलना।

अगले दिन सुबह मैं उनके साथ घूमने गया। और लोग भी उनके साथ थे पर वह पीछे थे। बापू ने अपने दिल का दर्द मेरे सामने रक्खा। उन्होंने कहा "ऐसी गफलत हमसे कैसे हो सकती है? दरिद्रनारायण की सेवा का हमारा व्रत है। अगर उसका ख्याल रक्खें तो ऐसी गफलत कभी न हो। अपने काम में हमारा ध्यान रहे तभी हमारा चित्त एकाग्र हो सकता है, ज्ञान मिल सकता है और कार्य की सिद्धि हो सकती है, अन्यथा हमारी सेवा और कार्य का कुछ अर्थ ही नहीं रह जाता।"

मैंने टालने के लिए बीच में कहा "दरिद्रनारायण की सेवा का व्रत तो आपका है। मैं तो आपकी चाकरी में हूं।"

बापू और गंभीर होकर बोले "जब मैं दरिद्रनारायण की सेवा में लग गया तो उस समय मेरी सेवा करने का अर्थ भी दरिद्रनारायण की सेवा करना ही है। फिर न तो जमनालालजी-जैसे [illegible]

ऐसी गफलत तो तुमसे हो ही कैसे सकती है! इसके अलावा तू तो कातता भी है। उसमें कितना परिश्रम होता है यह तुझे मालूम है। यह कपड़ा खो गया यह तो एक जरा-सी बात है पर अगर तू विचारेगा तो तेरी समझ में आ जायगा कि उसमें कितने लोगों का परिश्रम सम्मिलित था। खेती में कपास पैदा करनेवाले किसान से लेकर चुनने ओटने धुनने कातने बुनने और धोनेवाले तक कितने लोगों के परिश्रम से यह कपड़ा तैयार हुआ था। उस परिश्रम का आदर करना तो दूर रहा अपनी लापरवाही से तूने उसका अनादर कर दिया। यह बात कैसे सहन हो सकती है! इस लापरवाही में हमारे स्वाभिमान और इस प्रकार का परिश्रम करनेवाले के स्वाभिमान की रक्षा क्या है। इसका अगर तू विचार करेगा तो तुझे पश्चात्ताप हुए बिना न रहेगा।

इस प्रकार बीस-पच्चीस मिनट तक वह मुझे समझाते रहे। उनके हृदय में कितनी वेदना थी साथ ही मेरे लिए कितना प्यार था यह उनके एक-एक शब्द से प्रकट हो रहा था। मेरे मन पर उसका बड़ा असर पड़ा। अब मैं खयाल करता हूं तो ऐसा लगता है मानो बापू उस घटना के बारे में मुझे आज भी समझा रहे हों।

२

ऐसा ही एक प्रसंग मुझे और याद आ रहा है। सेवाग्राम में बापू घूमने जा रहे थे। अन्य आश्रमवासियों के साथ-साथ माताजी और मैं भी उनके साथ हो लिये। घूमते समय चर्चा के लिए उन्होंने और किसीको समय दे रखा था। उनसे बातचीत करते हुए जैसे ही वह जा रहे थे कि उन्हें रास्ते में पूनी का एक छोटा-सा टुकड़ा पड़ा दिखाई दिया। इशारे से उन्होंने उसे उठा लेने को कहा। मेरी इच्छा हुई कि मैं उसे उठा लूं लेकिन मेरे उसे उठाने के लिए आगे बढ़ने से पहले ही दो लड़कियां उसे लेने को झपटीं और उनमें से एक ने उसे उठा लिया। मेरे मन में आया कि वह टुकड़ा मैं उनसे मांग लूं क्योंकि शायद बापू बाद में उसके बारे में पूछें। लेकिन छोटी-सी वस्तु होने की वजह से मैंने उसे नहीं मांगा। घूमकर लौटने पर जब बापू खाना खाने के लिए बैठे तब उन्होंने उस पूनी के टुकड़े को याद किया। जिस लड़की ने उसे उठाया था उसकी खोज हुई। वह आई। बापू ने जब उससे टुकड़ा मांगा

तो उसने कहा कि वह तो उसे कचरे की टोकरी में फेंक आई। इसपर बापू बहुत नाराज हुए, बोले "मैंने उसे उठाने के लिए इसलिए कहा था कि तू उसे कचरे की टोकरी में डाल आवे?" लड़की ने जवाब दिया कि मैं तो उसे कचरा समझकर ही उठाकर लाई थी और समझती थी कि वह कचरा गलत जगह पर पड़ा रहने से ही आपने उसे उठाने के लिए कहा था। इसलिए उसे संभालकर मैं कचरे के स्थान पर डाल आई। बापू ने पूछा "यदि वहाँ पैसा पड़ा होता तो क्या तू उठाकर उसे भी कचरे में डाल आती?" उसने उत्तर दिया "नहीं।" बापू बोले "यह भी पैसा ही था। असली धन क्या है तुम्हें आश्रम में रहकर यह पहचानना आना चाहिए। जिसने उस पूनी के टुकड़े को पूरा काते बिना छोड़ा उसने तो धन को फेंका ही। मैंने तुमसे उठाने को कहा तब भी तुम उस धन को नहीं पहचान सकी? अब जाओ उसको लेकर आओ।" लज्जित स्वर से लड़की बोली "बापू, मेरी गलती हुई कि मैं आपकी बात को पूरी नहीं समझ सकी। अब मैं उस टुकड़े को स्वयं ही कात दूँगी। आप उसके लिए न ठहरें।" लेकिन बापू माननेवाले नहीं थे। वह तो उस टुकड़े को स्वयं कातने को व्यग्र थे। अतः उन्होंने आग्रहपूर्वक उसे लाने को कहा और ऊपर से जतला दिया कि वह कैसे विश्वास करें कि आगे और कोई गफलत न होगी। उन्होंने कहा कि परिश्रम से धन बनता है और धन बनने पर उसका सदुपयोग करना हमारा कर्तव्य है। लड़की बेचारी शरमा गई और जाकर कचरे में से पूनी के उस टुकड़े को ढूंढ़ लाई। उसपर कुछ मिट्टी और घास के टुकड़े चिपके हुए थे। फूलकर वह कुछ फैल-सी भी गई थी। उसके बावजूद बापू ने उसको पूरी तौर से कातने के काम में लिया। उससे जो धागा बना वह रंग में काला और दूसरे सारे सूत में फर्क डालने वाला था। इसकी परवा न करते हुए बापू बोले कि धुलने के बाद जब कपड़ा धुलेगा तब यह मिट्टी भी उसमें से दूर हो जायगी।

१

कलकत्ता की बात है। कांग्रेस कार्य-समिति के सदस्य के रूप में जेल से छूटने के बाद बापू सोदपुर-आश्रम में ठहरे हुए थे। जवाहरलालजी उनसे मिलने आनेवाले थे। उन्हें बाजार हिन्द-फौज के विषय में बापू से महत्त्वपूर्ण चर्चा करनी थी। उनके आने का समय हो चुका था। खान-पानवालों

में से एक परिवार के लोग बापू से मिलने आये हुए थे। उनमें से एक लड़के के साथ जो उसी समय मैट्रिक या कालेज की कोई परीक्षा अच्छे नम्बरों से पास करके आया था बातचीत और सवाल-जवाब करते हुए बापू को मालूम हुआ कि वे लोग शाम तक आश्रम में ठहरेंगे। इसपर बापू ने अपनी डाक में से ऐसे पत्र जिनके बारे में सूचना-मात्र देनी थी उस लड़के को दे दिये और सूचना भिजवाने को उससे कह दिया। नेहरूजी इस बीच आ चुके थे। लड़का वह डाक लेकर बाहर चला गया। नेहरूजी के साथ बातचीत समाप्त होने के बाद वह लड़का आया और उसने दो-एक लिखे हुए पत्र बापू को दिये। बापू ने पूछा कि क्या इतना ही लिखा है? बाकी का क्या हुआ? उसने जवाब दिया कि और सब पत्र कलकत्ता के ही थे। उनको उसने टेलीफोन से सूचना दे दी है। केवल बाहर की चिट्ठियों के ही उत्तर दिये हैं। बापू ने कहा "मैंने तो तुमसे टेलीफोन करने को नहीं कहा था। उसने जवाब दिया कि जब सूचना ही देनी थी तो मैंने सोचा कि टेलीफोन से उन्हें खबर भी जल्दी हो जायगी और काम भी जल्दी हो जायगा। बापू ने उसे मीठे ढंग से उलहना देते हुए कहा कि टेलीफोन करने में जिस व्यक्ति को उत्तर भेजना था वह मिले या न मिले यह जोखिम रहती है। दूसरे, अगर किसी और ने संदेशा लिया तो उसके पहुंचने में गड़बड़ हो सकती है। शाम तक तुम यहां ठहरने ही वाले थे। तुम्हारे पास समय की तो कमी थी नहीं। इसके अलावा यदि पोस्टकार्ड लिखते तो तीन पैसे में ही काम हो जाता। टेलीफोन में तो ज्यादा पैसे लगे होंगे। ये चिट्ठियां भी जो तुम लिखकर लाये हो ये पोस्ट कार्ड पर ही होनी चाहिए थी। लेकिन उसमें तो मेरी गलती है कि मैं तुमसे पोस्टकार्ड पर लिखने को कहना चूक गया था। पर मजमून इतना छोटा था और बात इतनी साधारण थी कि यदि तुम स्वयं यह सोचते तो पोस्टकार्ड पर लिख सकते थे। आगे उसे एक-एक पाई का हिसाब किस तरह रखना चाहिए और फिजूलखर्ची बिल्कुल न हो इसका ध्यान किस सीमा तक रखना चाहिए, इसके बारे में अच्छी तरह से समझाने लगे।

४

एक बार एक ग्रामीण कार्यकर्ता अपने इलाके में हरिजन-कार्य के संबंध में बापू की राय लेने आये। जहांतक मुझे याद आता है, वह भाई आंध्र के

थे। उन्हें कोई बीमारी थी। बापू ने उनकी बीमारी के संबंध में उनसे काफ़ी पूछ-ताछ की। बापू ने पूछा कि आप बहुत अधिक नमक तो नहीं खाते ? उन्होंने उत्तर दिया कि बहुत ही कम नमक खाता हूं। बापू ने उनसे कहा कि नमक तुम्हें माफ़िक नहीं आता और अच्छा हो यदि तुम नमक बिल्कुल ही छोड़ दो।

बातचीत खतम होने पर बापू ने उन भाई से आश्रम में ही खाना खाने को कहा और उन्हें खाने का समय बता दिया। खाने के समय बापू ने उन भाई को अपने पास बैठने को कहा। परोसी हुई थाली उनके सामने रखी गई—स्वयं बापू ने कुछ चीज़ें उन्हें परोसीं। मंत्र बोलने के पहले बापू ने उन भाई से कहा कि थाली में से नमक निकाल दो। कार्यकर्ता ने समय खोये बिना बापू से कहा कि क्या फ़र्क पड़ता है, विश्वास रखिये मैं नमक नहीं खाऊंगा। बापू ने कहा कि इसीलिए तो कह रहा हूं कि इसे निकाल दो, ताकि वह बेकार न जाय। एक आश्रमवासी भाई तश्तरी ले आये और नमक उसमें निकाल दिया गया।

भोजन के बाद बापू ने मुझसे कहा कि मैं अपनी बैलगाड़ी में उन भाई को शहर छोड़ आऊं। रास्ते में वह भाई बहुत शर्मिन्दगी महसूस करते हुए बोले "कैसी अजीब बात है, एक ग्रामीण होकर भी मैं यह नहीं महसूस कर सका कि यदि नमक थाली में से नहीं निकालूंगा तो वह बेकार जायगा। जिन्दगी में इससे बड़ा पाठ सीखने को मुझे नहीं मिला।"

"मेरे लिए एक-एक पल भारी हो रहा है"

श्रीमन्नारायण

मुझे ऑल इंडिया रेडियो की हिन्दुस्तानी सलाहकार समिति की बैठक के सिलसिले में ९ जनवरी १९४८ को नई दिल्ली रहना पड़ा। शाम को बिड़ला-हाउस गया और वहां प्रार्थना-सभा में सम्मिलित हुआ। उस दिन बड़ी संख्या में आये हुए बहावलपुर के हिन्दू और सिख शरणार्थी प्रार्थना सभा में थे। जैसे ही गांधीजी प्रार्थना-मंडप की ओर बढ़े ये शरणार्थी बड़े जोर से चिल्लाये "बहावलपुर के हिन्दुओं को बचाओ! बहावलपुर में मुसलमानों की ज़्यादतियों को बंद करो।" सारा वातावरण तनावपूर्ण था। वहां कुछ शरणार्थी बौखलाये हुए-से थे और कुछ शायद दिमागी संतुलन खो बैठे थे। वे अपने कुटुम्बी जनों और सांसारिक वस्तुओं को खो चुके थे और सान्त्वना व सहायता के लिए गांधीजी की प्रार्थना-सभा में आये थे।

प्रार्थना के बाद मैं बापूजी के कमरे में गया और उनके चरण स्पर्श किये। मुझे वर्धा की संस्थाओं से सम्बन्धित कई समस्याओं के बारे में बातचीत करनी थी। परन्तु गांधीजी बड़े चिंतित व थके-से जान पड़े। इसलिए मैं कमरे में थोड़ी देर चुपचाप बैठ गया और फिर उनकी अनुमति लेकर बाहर चला गया। "मैं कल फिर यहां इसी समय आ जाऊंगा बापूजी!" मैंने कहा। "हां हम कल शाम को कुछ विषयों पर चर्चा करेंगे।" बापूजी ने धीरे-धीरे से उत्तर दिया।

१ जनवरी की प्रार्थना सभा में उपस्थिति बहुत कम थी। कुछ शरणार्थियों ने शुरू में हुल्लड़ मचाया और गांधीजी को उन्हें फटकार कर शान्त करके बैठाना पड़ा। उन्होंने कहा "अपने क्रोध को शांत करिये और धैर्य रखिये। केवल क्रोध से कुछ होगा नहीं।"

गांधीजी ने कण्ट्रोल हटाने की समस्या पर प्रकाश डालते हुए कहा "कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि नियंत्रण हटाने से जनता को कोई लाभ नहीं और जो खबरें मेरे पास आती हैं, वे गलत हैं। मैं कोई फरिश्ता नहीं हूं।

आपको कोई बात इसलिए नहीं माननी चाहिए, क्योंकि मैं उसे कहता हूं। आपको अपनी बुद्धि व विवेक से काम लेना चाहिए। यदि मेरे जैसे हजारों महात्मा भी आपको कोई बात कहें जो आपको उचित न लगती हो तो उसे तत्काल अस्वीकार कर देना चाहिए। इस तरह व्यवहार करने से ही आप अपनी स्वतन्त्रता को बनाए रख सकते हैं और उसके योग्य भी बनेंगे।

प्रार्थना के बाद मैं बापूजी के साथ उनके कमरे में गया। उन्होंने कुछ आवश्यक कागजात देखे और फिर मुझसे कहा कि मैं उनके साथ कमरे में घूमूं क्योंकि बाहर काफी सर्दी पड़ रही थी। मैंने उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की। वह सचमुच काफी कमजोर हो गए थे। काम के अधिक बोझ से और देश-विभाजन के कारण उत्पन्न हुई असीमित चिन्ताओं से उनके चेहरे पर विशेष रूप से कालापन उभर आया था। बाद में हमने वर्धा की संस्थाओं से सम्बन्धित कई समस्याओं पर विचार-विमर्श किया। महिलाश्रम के बारे में गांधीजी ने कहा "रचनात्मक कार्य के लिए शासन से अनुदान स्वीकार करने के मैं विरुद्ध हूं और न हमें वर्ष-प्रतिवर्ष जनता से रकम मांगनी चाहिए। आश्रम को बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तों को अपनाना चाहिए और अपने आपको आत्म-निर्भर बनाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए। हिन्दुस्तानी प्रचार के भविष्य के बारे में भाव-विभोर होकर बापू ने कहा "जहांतक मेरा सम्बन्ध है हिन्दुस्तानी समस्या के प्रति मेरी नीति में भारत-विभाजन के कारण कोई परिवर्तन नहीं आया है। मेरे मन मे भावी भारत का चित्र अब भी वही है जो पहले था। मैं नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में हिन्दुस्तानी सीखने का पक्षपाती हूं। भारत का चाहे राजनैतिक और भौगोलिक दृष्टि से विभाजन हो गया हो, परन्तु सांस्कृतिक रूप से कोई विभाजन हो गया है इसे मैं स्वीकार करने को तैयार नहीं हूं।"

हम सब जानते हैं कि गांधीजी ने कांग्रेस कार्यसमिति में कहा था कि विभाजन को स्वीकार न किया जाय। इससे देश और विदेश में बिखरी हुई

जबसे देश के टुकड़े हुए थे तबसे उनमें जो परिवर्तन हुआ था वह हम सबने देखा। परन्तु सबसे अधिक उल्लेखनीय बात यह हुई कि विभाजन से उन्में गहरे जख्मे के बाद उनकी विनोद की प्रवृत्ति लुप्त हो गई।

"क्या आपका पाकिस्तान जाने का इरादा है ?" मैंने पूछा। "हां यदि मैं इस स्थिति में होऊं तो मैं इसी समय पाकिस्तान जाना चाहूंगा"। मैं कराची कैसे जा सकता हूं जबकि दिल्ली मेरे सामने जल रही है! मैं पाकिस्तान के मुसलमानों को क्या कहूंगा जबकि मैं दिल्ली में हिन्दू और सिखों को शान्त नहीं कर सकता। बापू का प्रत्येक शब्द दुःख व दर्द से भरा हुआ था। उनका गला रुँध गया।

मैंने कहा "बापूजी मैं यह जानता हूं कि आप भारत-विभाजन के सख्त विरोधी हैं किन्तु फिर भी आपने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को यह राय दी कि वह कांग्रेस कार्यसमिति के निर्णय को स्वीकार करे। आपकी इस बात को आपके कुछ निकटतम साथियों ने गलत समझा है। यदि आपने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को इसके विपरीत राय दी होती तो शायद आज भारत का इतिहास कुछ और ही होता। भारत-विभाजन के बाद क्या आपके विचारों में परिवर्तन आगया है ?

"जरा भी नहीं। गांधीजी ने तुरंत उत्तर दिया "मैं अपने विचारों में कैसे परिवर्तन ला सकता हूं, जबकि मैं स्वयं अपनी आंखों के सामने प्रतिदिन भारत-विभाजन के बुरे परिणाम जिनके बारे में मैंने पहले सोचा था साफ़ देख रहा हूं। परन्तु मुझे खेद है कि कांग्रेस के प्रति मेरे रुख को गलत समझा गया है। इस भ्रान्ति को दूर करने के लिए मैं अपने विचार तुम्हारे सामने रखता हूं।" और तब गांधीजी धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ आवाज में बोलने लगे

"मैंने हमेशा कांग्रेस कार्यसमिति को राष्ट्रीय मंत्रिमंडल (केबीनेट) माना है। प्रत्येक स्वतन्त्र और उत्तरदायी देश के मंत्रिमंडल को आवश्यक अधिकार होते हैं और होने चाहिए, ताकि वह विदेशों के साथ संधि-वार्ता करे अन्यथा यदि मंत्रिमंडल को हर आवश्यक समस्या पर संसद् का परामर्श लेना पड़े तो सारा राजनैतिक काम चलना असम्भव होगा। वर्तमान परिस्थितियों के अंतर्गत कार्यसमिति ने भारत-विभाजन स्वीकार कर लिया

है। इस संधि-वार्ता में ब्रिटिश सरकार, मुस्लिम लीग और कांग्रेस तीनों ने भाग लिया। जब कांग्रेस कार्यसमिति की ब्रिटिश सरकार और मुस्लिम लीग से वार्ता नाजुक दौर में चल रही थी और स्थिति में दिन-ब-दिन परिवर्तन हो रहा था ऐसी अवस्था में वह संसद् के समानान्तर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी से परामर्श नहीं ले सकती थी। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी-रूपी संसद् के सामने अपने मंत्रिमंडल या कार्यसमिति के इस निर्णय की पुष्टि करने के सिवाय और कोई विकल्प न था। यह कार्यसमिति के विरुद्ध अविश्वास-प्रस्ताव पास करके उसके सदस्यों को कह सकती थी कि त्यागपत्र दे दो परन्तु एक जिम्मेदार देश की हैसियत से भारत केवल अपने मंत्रिमंडल के निर्णय की पुष्टि कर सकता था। यह एक स्पष्ट संवैधानिक व्यवस्था है। अगर भारत इस अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था का पालन न करता तो संसार उसका उपहास करता। इसलिए मैंने अनिच्छा व बड़े दुःख से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को कार्य-समिति के भारत-विभाजन के निर्णय को पुष्ट करने के लिए राय दी थी। मैं कांग्रेस के टुकड़े नहीं होने दे सकता था और भारत को संसार के सामने उपहासास्पद नहीं बना सकता था।

जब गांधीजी ने ये शब्द कहे तब वह बहुत गम्भीर थे। मेरे विचार में तो इससे बढ़कर सच्चा लोकतन्त्रवादी होने का ज्वलंत उदाहरण इतिहास नहीं दिखा सकता है न दिखायेगा। गांधीजी विभाजन के विचार के कट्टर विरोधी थे। परन्तु कांग्रेस-संस्था के जिसके वह जन्मदाता थे निर्णय के सामने चाहे वह गलत था वह नतमस्तक हो गए।

"तुम नहीं जानते श्रीमन्, मेरी आत्मा को कितना गहरा कष्ट पहुंच रहा है। बापू ने मेरी तरफ देखते हुए कहा "मेरे लिए एक-एक पल भारी हो रहा है।

गांधीजी थोड़ी देर चुप रहे, फिर धीमी आवाज में बोले "साम्प्रदायिक घृणा और हिंसा से आज दिल्ली जल रही है। मालूम पड़ता है कि हिन्दू और सिक्खों ने संयुक्त हो किया है। मेरी अपील का उनपर कोई असर नहीं पड़ता है। एक समय था जब मेरी आवाज का जनता पर जादू-सा असर था। मालूम पड़ता है आज वह सारी शक्ति खो गई है।

अबसे देश के टुकड़े हुए थे तबसे उनमें जो परिवर्तन हुआ था वह हम सबने देखा। परन्तु सबसे अधिक उल्लेखनीय बात यह हुई कि विभाजन से लगे गहरे धक्के के बाद उनकी विनोद की प्रवृत्ति लुप्त हो गई।

"क्या आपका पाकिस्तान जाने का इरादा है ?" मैंने पूछा। "हां यदि मैं इस स्थिति में छोड़ूं तो मैं इसी समय पाकिस्तान जाना चाहूंगा"। मैं कराची कैसे जा सकता हूं जबकि दिल्ली मेरे सामने जल रही है ! मैं पाकिस्तान के मुसलमानों को क्या कहूंगा जबकि मैं दिल्ली में हिन्दू और सिखों को शान्त नहीं कर सकता।" बापू का प्रत्येक शब्द दुःख व दर्द से भरा हुआ था। उनका गला रुंध गया।

मैंने कहा "बापूजी मैं यह जानता हूं कि आप भारत-विभाजन के सख्त विरोधी हैं किन्तु फिर भी आपने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को यह राय दी कि वह कांग्रेस कार्यसमिति के निर्णय को स्वीकार करे। आपकी इस बात को आपके कुछ निकटतम साथियों ने गलत समझा है। यदि आपने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को इसके विपरीत राय दी होती तो शायद आज भारत का इतिहास कुछ और ही होता ! भारत-विभाजन के बाद क्या आपके विचारों में परिवर्तन आगया है ?

जरा भी नहीं। गांधीजी ने तुरंत उत्तर दिया "मैं अपने विचारों में कैसे परिवर्तन ला सकता हूं जबकि मैं स्वयं अपनी आंखों के सामने प्रतिदिन भारत-विभाजन के बुरे परिणाम जिनके बारे में मैंने पहले सोचा था साफ देख रहा हूं ! परन्तु मुझे खेद है कि कांग्रेस के प्रति मेरे रुख को गलत समझा गया है। इस भ्रांति को दूर करने के लिए मैं अपने विचार तुम्हारे सामने रखता हूं। और तब गांधीजी धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ आवाज में बोलने लगे

"मैंने हमेशा कांग्रेस कार्यसमिति को राष्ट्रीय मंत्रिमंडल (केबीनेट) माना है। प्रत्येक स्वतन्त्र और उत्तरदायी देश के मंत्रिमंडल को आवश्यक अधिकार होते हैं और होने चाहिए, ताकि वह विदेशों के साथ संधि-वार्ता करे अन्यथा यदि मंत्रिमंडल को हर आवश्यक समस्या पर संसद् का परामर्श लेना पड़े तो सारा राजनैतिक काम चलना असम्भव होगा। वर्तमान परिस्थितियों के अंतर्गत कार्यसमिति ने भारत-विभाजन स्वीकार कर लिया

'अद्भुत रोमहर्षणम्'

उमा अग्रवाल

सन् १९३३ की बात है। अस्पृश्यता-निवारण और हरिजनों के लिए चंदा इकट्ठा करने के लिए बापूजी ने लगभग सारे देश का दौरा किया था। वर्धा से ही यह दौरा शुरू हुआ। करीब दस महीने लगातार यह दौरा चला। इस दौरान बापूजी सैकड़ों मील रेलगाड़ी में चले, मोटरों में सफर किया, स्टीमर और नावों से नदियां पार कीं। उत्कल प्रदेश की तो तमाम यात्रा पैदल ही की। सौभाग्य से इस दौरे में बापूजी ने मुझे भी अपने साथ रहने और घूमने का मौका दिया था। श्री ठक्कर बापा हमारी टोली के व्यवस्थापक थे। मीराबहन बापूजी की व्यक्तिगत परिचर्या की प्रधान थीं। और श्री चंद्रशंकर शुक्ल प्रधान मंत्री। इस तरह बापूजी के साथ दौरे में दस-बारह तो हम स्थायी सदस्य थे। बाकी हर प्रान्त, हर शहर और हर गांव में वहां के स्थानीय कार्यकर्ता और भक्तगण साथ हो लेते थे। प्रत्येक स्थायी सदस्य को एक-एक मुख्य जिम्मेदारी सौंप दी गई थी। टोली में मैं सबसे छोटी थी। मेरे लायक रोजाना के कुछ कार्य मुझे भी सौंप दिये गए थे। इतने सब लोग थे फिर भी मेरी हर तरह की हरकतों और दिनचर्या पर स्वयं बापूजी की पूरी नजर रहती थी। मेरा दिन-भर का कार्यक्रम वह रात में बैठकर सुन लेते थे। उनकी नजर बहुत पैनी थी। कान भी बहुत तेज थे। उनकी आंखों और कानों के मारे नाक में दम था। हमेशा डर बना रहता था कोई गलती न पकड़ ली जाय।

छोटी-छोटी बातों में सफाई की ओर उनका ध्यान सबसे पहले जाता था। सफाई और सादगी दोनों का मेल चित्त को प्रसन्न करता है। कमाल की तरह भी वह देख लेते थे कि करीने से की गई या नहीं। यात्रा का सामान रोज खुलता था और रोज बंधा जाता था। सामान सुन्दर और व्यवस्थित ढंग से बंधना चाहिए। तरतीब से जमाकर रखें तो थोड़ी जगह में ज्यादा चीजें रखी जा सकती हैं, इस सबका पाठ जरूरत पड़ने पर, बापूजी स्वयं देते थे।

और इसके बाद वह कुछ नहीं बोले। हम लगभग बीस मिनट तक कमरे में घूमते रहे। मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि मैं उनका इतना क़ीमती समय लूंगा। परन्तु उस दिन गांधीजी ने अपने अन्तर का दुख इस प्रकार प्रकट किया जोकि मेरे लिए बिलकुल नया था। ठीक ७ बजे पं० नेहरू कमरे में प्रविष्ट हुए। यह उनका प्रतिदिन का कार्यक्रम था। मैंने जल्दी-से बापू से जाने की अनुमति ली और साथ के कमरे में चला गया।

जैसे ही मैं उस अंधेरी रात को बिड़ला-हाउस से गया बापू के ये शब्द मेरे कानों में गूंजने लगे "तुम नहीं जानते श्रीमन् मेरी आत्मा को कितना कष्ट पहुंच रहा है। मेरे लिए एक-एक पल भारी हो रहा है।"

मैं लगभग १५ वर्षों से गांधीजी के घनिष्ट सम्पर्क में रहा था परन्तु मैंने बापू को इस प्रकार की अन्तर्वेदना से व्यथित कभी नहीं देखा था। मैं यह स्वप्न में भी सोच नहीं सकता था कि अन्तर्वेदना के ये दिन मेरी बापू से आखिरी मुलाकात के बीस दिन बाद ही अचानक समाप्त हो जायंगे।

निस्सन्देह गांधीजी का जीवन महान् था और वह मरकर और भी महान् होगए। यह संसार अबसे हजारों वर्षों तक उन्हें याद करता रहेगा।

'अद्भुत रोमहर्षणम्'

उमा अग्रवाल

सन् १९३३ की बात है। अस्पृश्यता-निवारण और हरिजनों के लिए चंदा इकट्ठा करने के लिए बापूजी ने लगभग सारे देश का दौरा किया था। वर्धा से ही यह दौरा शुरू हुआ। करीब दस महीने लगातार यह दौरा चला। इस दौरान बापूजी सैकड़ों मील रेलगाड़ी में चले, मोटरों में सफर किया, स्टीमर और नावों से नदियां पार कीं। उत्कल प्रदेश की तो तमाम यात्रा पैदल ही की। सौभाग्य से इस दौरे में बापूजी ने मुझे भी अपने साथ रहने और घूमने का मौका दिया था। श्री ठक्कर बापा हमारी टोली के व्यवस्थापक थे। मीराबेन बापूजी की व्यक्तिगत परिचर्या की प्रधान थीं। और श्री चंद्रशंकर शुक्ल प्रधान मंत्री। इस तरह बापूजी के साथ दौरे में दस-बारह तो हम स्थायी सदस्य थे। बाकी हर प्रान्त, हर शहर और हर गांव म वहां के स्थानीय कार्यकर्ता और मददगार साथ हो लेते थे। प्रत्येक स्थायी सदस्य को एक-एक मुख्य जिम्मेदारी सौंप दी गई थी। टोली में मैं सबसे छोटी थी। मेरे लायक रोजाना के कुछ कार्य मुझे भी सौंप दिये गए थे। इतने सब लोग थे फिर भी मेरी हर तरह की हरकतों और दिनचर्या पर स्वयं बापूजी की पूरी नजर रहती थी। मेरा दिन-भर का कार्यक्रम वह रात में बैठकर सुन लेते थे। उनकी नजर बहुत पैनी थी। कान भी बहुत तेज थे। उनकी आंखों और कानों के मारे नाक में दम था। हमेशा डर बना रहता था कोई गलती न पकड़ ली जाय।

छोटी-छोटी बातों में सफाई की ओर उनका ध्यान सबसे पहले जाता था। सफाई और सादगी दोनों का मेल चित्त को प्रसन्न करता है। सामान की तह भी वह देख लेते थे कि करीने से की गई या नहीं। यात्रा का सामान रोज खुलता था और रोज बंधा जाता था। सामान सुन्दर और व्यवस्थित ढंग से बंधना चाहिए, तरतीब से जमाकर रखें तो थोड़ी जगह में ज्यादा चीजें रखी जा सकती हैं, इस प्रकार पाठ जरूरत पड़ने पर, बापूजी स्वयं देते थे।

कहीं उनकी से कुछ सामान छूट गया या कोई चीज रास्ते में टूट गई या कुछ अवर बह गए, तो वह उनकी नजर से चूकता नहीं था। उसी समय संबंधित व्यक्ति को बुलाकर खुलासा पूछते और भविष्य में ऐसी गलती न हो इसकी ताकीद कर देते थे। लापरवाही उनके लिए असह्य थी। छोटी-सी पेंसिल भी यदि कहीं रह गई और उसकी जगह नई पेंसिल उनके सामने रख दी गई तो सारी कैफ़ियत देनी पड़ती थी कि उस पुरानी पेंसिल के टुकड़े का क्या हुआ कहीं भूल गए तो कैसे भूले कहीं गिर पड़ी तो कैसे गिरी किसीको दी थी तो वापस क्यों नहीं ली आदि। हर क्षण घड़ी की सुई की तरह व्यस्त रहने पर भी इतनी जांच-पड़ताल का समय बापूजी को कैसे मिल जाता था इसकी हैरानी अब भी होती है।

बापूजी बकरी का दूध और बकरी के दूध का ही माखन लेते थे। दूध औटाकर उसका माखन बनाना और सोते समय बाम का घी उनके तलवों पर मलना ये दो काम मुख्य रूप से मेरे जिम्मे थे। कितने दूध में कितना माखन बैठा कितना वक्त लगा आज ज्यादा देर क्यों लगी दूध ज्यादा था या आंच कम थी दूध नीचे कैसे जम गया, उस ओर पूरा ध्यान नहीं था क्या—आदि सवालों का जवाब देने के लिए हमेशा तैयार रहना पड़ता था। शैतान भी मैं पूरी थी। अपनी इस शैतानी से बापूजी को कभी-कभी तंग भी कर देती थी। बापूजी को शैतान बच्चे पसन्द भी बहुत थे। इसलिए उन्होंने मुझे शैतानी करने से कभी रोका नहीं। तलवों में घी की मालिश करते-करते अक्सर मैं उनके तलवों में गुदगुदी कर देती थी। बापूजी अपने पैर खींच लेते। मेरे आश्वासन देने पर कि अब गुदगुदी नहीं करूंगी वह फिर से पैर फैला देते थे। बापूजी को भी गुदगुदी होती है, यह देखकर उस समय मुझे बड़ी खुशी होती थी।

बापूजी के बूढ़े हाथों में ताकत भी बहुत थी। प्रणाम करने पर बापूजी हमेशा पीठ पर भारी धौल के संग आशीर्वाद देते थे। जितनी मजबूत पीठ होती उतनी ही जोर की धौल पड़ती थी। एक बार जोर की धौल खाकर मेरी मोटी-ताजी पीठ भी तिलमिला गई। लेकिन अपनी कमजोरी जाहिर कैसे होने देती! मैंने पूछा "बापूजी आपके हाथ में चोट तो नहीं लगी?

हँसकर बापू ने मेरी पीठ पर एक और धौल जमा दी। लेकिन इस बार वह हल्की थी।

अचरज की बात तो यह है कि मुझ-सी शैतान और अलमस्त लड़की से भी वह कितने ही काम करवा लेते थे। मैं भी अपनी योग्यता और समझ के अनुसार सब काम खुशी-खुशी करती। पत्र पढ़कर सुनाना किन्हीं पत्रों का जवाब लिखना अखबार की खबरें बताना कभी-कभी सभाओं में उनका भाषण लिखना कभी जनता से झोली फैलाकर हरिजन-फंड का चंदा इकट्ठा करना आदि आदि।

भाषा में मेरी पढ़ाई का ध्यान भी उन्हें रहता था। बापूजी की इच्छानुसार साथ के लोगों में से कोई अंग्रेजी पढ़ाता कोई संस्कृत। भगवद् गीता के श्लोक कंठस्थ कर लेने पर बापूजी मोटर या ट्रेन में कभी भी सुन लेते थे और यदि कोई गलती होती तो उसे सुधार देते थे। अपने पास ही सुलाते और प्रार्थना के लिए खुद ही रोज सुबह चार बजे उठाते। दुनिया-भर की व्यस्तता के बीच भी कितनी ममता और सहजता से यह सब करते थे वह!

बापूजी बच्चे से लेकर बड़े तक सभीके हास्य-विनोद में समान रूप से आनन्द लेते थे। मीराबेन तन-मन से बापूजी की सेवा में ही व्यस्त रहती थीं। इधर-उधर कहीं ध्यान नहीं रहता था उनका। महीनों से हम रात-दिन साथ थे लेकिन एक दिन उनकी आंखों ने भी कुछ देखा यद्यपि वह चीज शुरू से ही मेरे साथ थी। आश्चर्य के मारे उनसे नहीं रहा गया और मुझे एक दिन पकड़कर वह बापू जी के पास ले गईं। दरअसल मेरी गरीब नाक पर एक छोटा-सा तिल उन्हें दिखाई दे गया था। बोलीं बापूजी देखिये तो! ओम् की नाक के सिरे पर तिल है। उस समय बापूजी का मौन था और वह 'हरिजन' के लिए एक लेख लिखने में व्यस्त थे। दूर से नजर ऊपर की तिल को ध्यान से देखकर मुस्करा दिये और फिर से लिखने में जुट गए। माथे पर जरा भी शिकन नहीं पड़ी कि इस तरह लिखते समय बीच में उन्हें तंग क्यों किया गया।

बच्चों के संग वह उन्हींकी उमर के साथी बन जाते थे। पैदल घूमते वक्त लड़के-लड़कियों का बारी-बारी से सहारा लेकर चलते थे। हम

उनकी 'लकड़ी' थे। सब बड़ी उत्सुकता से अपनी बारी की बाट देखते व बल्कि ताक लगाये रहते थे कि कब पहला खिसके तो हम जा धमकें। कभी किसी व्यक्ति से गंभीर चर्चा या निजी बातचीत होती थी तो हम बेचारी 'लकड़ियों' को दूर ही रह जाना पड़ता था। ईश्वर ही जानता है, हम ऐसी मुलाक़ातों को दिल में कितना कोसते थे।

बापूजी से क़दम-से-क़दम मिलाना कोई आसान बात नहीं थी। कई बार बापू से हम बच्चों की शर्त लग जाती थी कि कौन आगे जाता है। बाक़ायदा एक-दो-तीन बोला जाता और बापूजी हमारे कन्धों का सहारा छोड़कर दौड़ पड़ते।

एक बार वर्धा में मेरे कान में दर्द हुआ। पिताजी उस समय जेल में थे। मां को चिंता हुई कि कान नाज़ुक चीज़ है कहीं हमेशा के लिए कोई ख़राबी न हो जाय। बापूजी उन दिनों दिल्ली किसी महत्वपूर्ण कार्य से गए हुए थे। उन्हें वहां इसका पता चला। फ़ौरन मां के पास तार आया कि उमा को कान के विशेषज्ञ को दिखाने बंबई ले जाओ। अजीब-सी बात मालूम देती है! इतने बड़े आदमी के पास ये छोटी बातें कैसे पहुंचती थीं और क्यों! लेकिन इसे गुन-जैसे भुक्तभोगी ही समझ सकते हैं। वर्धा से कोई भी व्यक्ति दिल्ली पहुंचता बापूजी उससे वर्धा के सारे समाचार पूछते एक-एक का नाम लेकर उसकी कुशल-क्षेम पूछते। यदि कोई छोटी-सी भी बात खासकर किसीकी तकलीफ़ की बतानी रह जाती तो बस बेचारे की इस लापरवाही पर पूरी ख़बर ले ली जाती।

मैं तो आज जब भी बापूजी का हंसकर धौल लगाना उनकी वह मंत्र-मुग्ध कर देनेवाली मुस्कान उनका कान पकड़कर चपत लगाना गुदगुदी करने पर पैर खींच लेना—इन सबकी याद करती हूं तो बस 'अद्भुत रोमहर्षणम्' की ही अनुभूति होती है।

बापू की महानता

रामकृष्ण बजाज

यह हम लोगों का बड़ा सौभाग्य रहा कि पिताजी—स्वर्गीय पूज्य जमनालालजी बजाज—की वजह से हम पूज्य बापूजी के इतने निकट रह सके। पूज्य पिताजी ने अपने त्याग और तप की वजह से बापूजी के पांचवें पुत्र का स्थान प्राप्त किया था। उनके आग्रह के वश होकर बापूजी वर्धा रहने चले आये। इसी कारण हमको भी बापूजी के इतने पास रहने का और अपने जीवन को बनाने में उनके मार्गदर्शन का लाभ मिलता रहा। अब जब भी मैं पीछे फिरकर देखता हूँ उन दिनों की याद करता हूं तो मुझे खुद, जैसा कि जगत् प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था, विश्वास नहीं होता कि बापू-सरीखे व्यक्ति सचमुच इस संसार में पैदा हुए थे और हमारे बीच एक साधारण मानव के रूप में रहे थे। उनकी एक-एक बात सोचता हूं तो चकित रह जाता हूं। जब उनके पास हम रहते थे तो ऐसा कभी नहीं लगता था कि वह कोई बहुत बड़े व्यक्ति हैं जिनसे हम डरें या दूर रहें। बच्चे जैसे अपने पिता या दादा के पास बेधड़क चले जाते हैं, उस तरह से हम उनके पास चले जाते और उसी तरह प्रेम भी पाते। इतना काम रहते हुए भी कभी हमने उनको जल्दी करते नहीं देखा। उन्होंने अपने व्यवहार से यह महसूस नहीं होने दिया कि वह महत्व का काम कर रहे हैं और इसलिए वह हमें समय नहीं दे सकते। वह साधारण मनुष्य की भांति ही लगते। अब भी सोचता हूं कि इसी साधारण मनुष्य ने इतने थोड़े समय में इतना सब काम किया तब हमें जो उनके पास रहे हैं इस पृथ्वी पर पैदा होकर इतना काम करने का विश्वास नहीं होता। आनेवाली पीढ़ी के लिए तो यह और भी कठिन होगा।

सन् १ १५ की बात है। उन दिनों बापूजी वर्धा में मगनवाड़ी बगीचे में रहते थे। मेरी उस समय उम्र कोई बारह वर्ष की होगी। पिताजी ने कुछ दिनों के लिए मुझे मगनवाड़ी में रहने के लिए भेज दिया था ताकि मुझे

उनके पास रहने का अवसर मिले और उनकी देखरेख और निगरानी में रहकर मेरा विकास हो। एक दिन मैं बापूजी की बैठक में गया। उन्होंने मुझे अपने पास बुलाकर कहा 'राम मैंने तुम्हारे लिए कई महीनों से वो विदेशी टिकटें रख छोड़ी हैं। मालूम नहीं उन्हें कैसे पता चल गया कि मुझे विदेशी टिकटें इकट्ठा करने का शौक है। कई महीने से उन्होंने वे टिकटें मेरे लिए याद करके रखी हुई थीं। कागजों के ढेर में से उन्होंने एक लिफाफा निकालकर मुझे दिया। कितनी आश्चर्य और खुशी की बात थी यह मेरे लिए! हर छोटे-बड़े व्यक्ति का वह कितना खयाल रखते थे! बच्चों को खुश करने में स्वयं उन्हें प्रसन्नता होती थी। उनके पास जो भी रहता उसे इस प्रेम और सहृदयता का अपने स्वयं के जीवन में अनुभव होता था।

मगनवाड़ी में शहतूत फालसे बेर आदि के बहुत पेड़ थे। मैं तो बच्चा ही था लेकिन मुझसे भी कोई-न-कोई काम तो कराना है इसलिए बापूजी ने मुझसे कहा कि पेड़ों पर चढ़कर सारे फल तोड़कर इकट्ठा करो और आश्रम के परिवार के बच्चों को इकट्ठा करके उनमें बांट दो। बापूजी इस बात का बराबर ध्यान रखते थे कि छोटी-छोटी चीजों में बच्चों को मजा भी आवे और साथ-ही-साथ उनको शिक्षण भी मिलता रहे। इन छोटे-छोटे अनुभवों से बच्चों को भावी जीवन की दिशा और अपने विचार-निर्माण में सहायता मिलती है।

१९४ में व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू हुआ। तब मैं कुछ सत्रह साल का था। जब काकाजी को गिरफ्तार किया गया तो मुझे भी उत्साह हुआ कि जेल जाना चाहिए। पूज्य बापूजी पिताजी तथा अन्य लोगों की वजह से वातावरण में इतना उत्साह और जोश था कि मन में यह लगता रहता कि अवसर पाकर हमको भी जेल जाना चाहिए और देश के लिए कुछ करना चाहिए। यदि अभी ही कुछ नहीं कर सके और इस बीच देश को आजादी मिल गई तो फिर जीवन-भर पछताना पड़ेगा कि देश की आजादी की लड़ाई में हम कुछ भी हिस्सा नहीं बंटा सके।

जब पिताजी को गिरफ्तार करके पुलिस जेल ले जा रही थी उनसे

लिया लेते समय मैंने उनसे इजाजत लेनी चाही कि पीछे से मैं भी सत्याग्रह कर सकता हूं न ? ज्यादा समय नहीं था। उन्होंने तुरन्त कहा कि यदि बापूजी तुम्हें अनुमति दें तो मेरी तरफ से इजाजत है। कुछ ही रोज बाद मैट्रिक की परीक्षा देकर मैं जेल जाने की अनुमति लेने बापूजी के पास पहुंचा। लेकिन अठारह बरस से कम होने की वजह से उन्होंने पहले मुझे इजाजत नहीं दी। मैंने आग्रह किया और कुछ दिन भी और कहा चाहे उन्हें विशेष रूप से क्यों न देनी पड़े मुझे तो अनुमति देनी ही होगी। मेरा इतना उत्साह देखकर वह उसे भंग नहीं करना चाहते थे। इसलिए दो दिन तक मुझे बराबर सेवाग्राम में बुलाया और यह जानने के लिए कि मैं जेल का जीवन खुशी से बरदाश्त कर सकूंगा या नहीं मुझसे हर तरह के सवाल पूछकर मेरी परीक्षा लेते रहे। उन्होंने कहा "एक बार जेल जाने से काम नहीं चलेगा। जबतक आन्दोलन चलता रहे, बराबर जेल जाना होगा।" मैंने कहा मुझे मंजूर है, लेकिन आप समय का कुछ अन्दाज तो दें ? उन्होंने कहा "समय का अन्दाज तो कौन दे सकता है, लेकिन पांच वर्ष की तैयारी होनी चाहिए। मैंने कहा "पांच वर्ष बराबर जेल जाना होगा तो मैं तैयार हूं। यदि व्यक्तिगत सत्याग्रह और १९४२ आन्दोलन का समय जोड़ें तो बापूजी का अन्दाज बिलकुल सही निकला। ये दोनों आन्दोलन मिलाकर करीब-करीब पांच वर्ष ही चले।

अब बापूजी ने मुझे इजाजत दे दी तो फिर उसकी पूरी जिम्मेदारी भी उन्होंने अपने ऊपर ही ले ली।

वर्धा के डिप्टी कमिश्नर को खुद ही चिट्ठी लिखी कि मैं अमुक जगह पर युद्ध-विरोधी नारा लगाकर सरकार का कानून भंग करूंगा। सत्याग्रह की पहली रात उन्होंने मुझे सेवाग्राम में ही बुलवा लिया था और कह दिया था कि पूज्य माताजी के साथ मैं सेवाग्राम में ही रहूं। रात को देर हो गई थी वह काफी थक भी गए थे फिर भी उन्होंने मुझे बुलाया और अपने हाथ का लिखा एक वक्तव्य[1] मुझे पढ़ने के लिए दिया। यह वक्तव्य उन्होंने

---

[1] यह वक्तव्य इस प्रकार था :

महाशय,

मेरा नामका कुछ मिलता है। मैं एक भूतपूर्व विद्यार्थी हूं। आज

खुद ही मेरे लिए तैयार किया था। मैं जब गिरफ्तार होकर जेल जाऊं और अदालत में मेरी पेशी हो तब वहां वक्तव्य देने के लिए यह उन्होंने बनाया था।

जबकि विद्यार्थी-जगत् में अराजकता फैल रही है, मैं यह बात कह देना जरूरी समझता हूं। मेरी उम्र अठारह साल से कम है, लेकिन मुझे विद्यार्थी-जगत् और बाहरी संसार का इतना अनुभव जरूर है कि मैं हर बात में अनुशासन की आवश्यकता महसूस कर सकूं। इसलिए मैंने जो कदम उठाया है, उसमें मैंने अपने माता-पिता और दूसरे बुजुर्गों की आशिष प्राप्त की है। अपने माता-पिता की देखभाल में मैंने जीवन की हर एक छोटी-मोटी तफसील में अहिंसा की व्यावहारिक शिक्षा पाई है। मैंने हाल ही में मैट्रिक की परीक्षा दी है। मैंने स्कूल जाना देर से शुरू किया। मेरे माता-पिता ने १९२ के असहयोग-आन्दोलन के दिनों में ही जबकि मैं पैदा भी नहीं हुआ था हम लोगों की बाकायदा स्कूल की पढ़ाई बन्द कर दी। मेरे माता-पिता ने हम सभीको स्वतंत्रता के वायुमण्डल में पाला इसीलिए जब मैंने स्कूल जाकर मामूली शिक्षा लेनी चाही तो मुझे इजाजत दे दी गई। लेकिन जब मौजूदा आन्दोलन शुरू हुआ तो मेरा दिल चंचल हो उठा। मैं सोचने लगा कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के प्रयत्न में मुझे जो अनुभव होगा, वह मामूली स्कूल की पढ़ाई से कहीं कीमती होगा, क्योंकि हरेक स्कूल का लड़का जानता है कि यह शिक्षा जनता की भलाई के लिए नहीं शुरू की गई है वरन् हमारे राज्यकर्ताओं के फायदे के लिए की गई है। यह जानते भी अगर हम स्कूल की शिक्षा लेते हैं तो उसका यही कारण है कि आज कई वर्षों से यही अकेली प्रचलित रही है, और उसकी बदौलत हमारी यह दुर्दशा हुई है। मैं इस आन्दोलन के राजनैतिक महत्व की अपेक्षा नैतिक महत्व से अधिक आकर्षित हुआ हूं। मैं जानता हूं कि अगर हिन्दुस्तान संसार के सामने पूर्ण अहिंसा का उदाहरण पेश कर सके तो वह मानवीय प्रगति में अपूर्व सहायता पहुंचायेगा। यह दिव्य आदर्श मेरे तरुण चित्त को मुग्ध करता है और ऐसे उच्च और उज्ज्वल आदर्श की प्राप्ति के लिए मैं किसी भी क्लेश या कष्ट को अत्यधिक नहीं मानूंगा।

मेरे यह पूछने पर उन्होंने उस वक्तव्य का अर्थ मुझे समझाया और कहा "कोई बात न समझो हो तो मुझसे पूछ लो। बाद में यह भी कहा कि यदि उसमें से किसी बात से मैं असहमत होऊं तो मैं उनसे कह दूं, वह उतना हिस्सा बदल देंगे। मैं तो यह सुनकर गद्गद हो गया। एक सत्रह बरस के बच्चे से बापूजी बराबरी का नाता रखकर पूछ रहे थे। मैं उनसे भला क्या असहमत हो सकता था! लेकिन उनके इस तरह के व्यवहार से दिल उत्साह से भर गया और अधिक जिम्मेदारी महसूस होने लगी। जितने भी दिन जेल में बिताने थे उनको खुशी से बिताने का संबल मिल गया।

मैंने एक बार जेल से माताजी को चिट्ठी लिखी कि यदि पूज्य बापूजी मेरे नाम चिट्ठी लिखें तो मुझे वह मिल जाया करेंगी ऐसी इजाजत मैंने जेल के अधिकारियों से ले ली है। यह जानकर बापूजी ने तुरन्त २१.१.४ को सेवाग्राम से मुझे चिट्ठी लिखी।

इस चिट्ठी के नीचे हमेशा की तरह 'बापू के आशीर्वाद' लिखा था लेकिन साथ ही 'मो. क. गांधी' भी लिखा था। मतलब यह कि जेल के अधिकारी कहीं गफलत में उनका पत्र मुझे न दे दें। उनका लिखा हुआ यह पत्र है ऐसा जानकर वे देना चाहें तो दें अन्यथा नहीं। हर छोटी-बड़ी बात में एक सच्चे सत्याग्रही के नाते बर्ताव करने का बापूजी प्रति-क्षण कितना ध्यान रखते थे उसकी यह एक छोटी-सी मिसाल है।

जो चिट्ठियां उनके पास आती थीं उनके पीछे का खाली भाग वह चिट्ठी का जवाब लिखने के काम में लाते थे। किसी भी तरह की फिजूल-खर्ची उनको पसन्द न थी। इन पर्चियों को वह एक बहुत साधारण-से तरीके के कोनेदार में रखते थे। यह कोनेदार कुछ गंदा हो गया तो उन्होंने एक सहयोगी से साफ करने के लिए कहा। उसने सफाई की तो सही लेकिन बापूजी के मन-लायक नहीं हुई। किसी भी तरह की गंदगी या अव्यवस्था उन्हें सहन नहीं होती थी। उन्होंने उस भाई को बुलाकर एक मिलाक की

भाँति बहुत समय देकर विस्तार के साथ समझाया कि किस तरह से पहले अलग करके साबुन से धोया जाय और उसे तख्ते पर लगाकर बराबर वजन के नीचे दबा दिया जाय जिससे कपड़ा गीला होने पर भी उसका मुड़े नहीं आदि ।

आगाखाँ-महल से छूटने के बाद १९४५ में बापूजी बंगाल असम और दक्षिण भारत के दौरे पर गये थे । मैंने जेल से छूटने पर याद दिलाया कि अभी पाँच वर्ष पूरे होने में कुछ महीने बाकी हैं, इसलिए आपको अधिकार है कि आप जो काम चाहें, मुझसे ले सकते हैं । उन्होंने दौरे में साथ चलने के लिए मुझसे कहा । मेरी खुशी का ठिकाना न रहा । इस दौरे में बापू के दल में काफी लोग थे । यात्रा लगातार चलती रही । कार्यक्रम हमेशा व्यस्त रहता लेकिन बापूजी को सदा खयाल रहता कि उनकी या उनके साथियों की वजह से मेजबानों को कोई तकलीफ न हो । बापूजी तो इतना ध्यान रखते लेकिन हम सब लोगों को इसकी इतनी परवा थोड़े ही होती । कोई-न-कोई बात हो ही जाती जिसको लेकर बापू को हम सब लोगों को बड़े धीरज से समझाना पड़ता । कभी-कभी तो हमें यह लगता कि कहीं बापूजी को हमें लेकर कोई कष्ट न हो । और कोई होता तो समझा-समझाकर हैरान हो जाता । लेकिन बापू तो यह भी बड़ी सहजता के साथ करते । हम लोगों को लगता कि इन सब छोटी-छोटी बातों में बापू का इतना समय नहीं जाना चाहिए । जहाँ हम जाते लोग उनके दर्शन करने के लिए एक-एक मिनट आतुर रहते । ऐसी स्थिति में हमारा बापू का इतना समय लेना कहाँतक उचित था । लेकिन बापू को इसकी परवा न थी । उनका दृष्टिकोण तो यही रहा होगा कि उन्हें नये-नये स्वयं सेवक तैयार करने हैं और इसलिए हमपर दिया गया उनका समय बर्बाद नहीं हो रहा था ।

इन दौरों में और सब कामों के साथ-साथ हर स्टेशन पर प्रार्थना होती । कनुभाई के साथ हम भी प्रार्थना की व्यवस्था में लग गये । मैं रामधुन आदि भी गाने लगा । यात्रा में जो भी काम होता सामान उठाकर इधर-से-उधर ले जाने आदि का भी वह सब जहाँतक हो सके हम लोग खुद ही करते । बापूजी को भी यह अच्छा लगता । एक दिन उन्होंने मेरी

प्रार्थना-सभा में मेरा नाम लेकर कह दिया "यह तो मेरा हमाल है।" और कोई मुझे हमाल या कुली कह देता तो मुझे कितना बुरा लगता लेकिन बापू के इस वाक्य को सुनकर खुशी से छाती फूल गई।

इस दौरे के दरमियान हम लोग खादी प्रतिष्ठान (सोदपुर) में ठहरे हुए थे। बापूजी कात रहे थे और खानसाहब[1] उनके पास ही बैठे थे। मेरे कुछ कलकत्ते के कुटुंबी और दोस्त बापूजी के दर्शन करने चले आये। मैं उन्हें बापू से मिलाने ले गया। उन सबने बापू को झुककर प्रणाम किया मुझे बुलाकर समझाया कि जब उनके मित्र लोग बैठे हों तब केवल उन्हें ही प्रणाम करना उचित नहीं था सबको प्रणाम करना चाहिए था। आगे से मुझे इसका खयाल रखना चाहिए खानसाहब या और भी बुजुर्ग बैठे हों तो उनके प्रति किसी तरह अनादर व्यक्त नहीं होना चाहिए। एक घर के बुजुर्ग के समान इन छोटी-बड़ी सब बातों पर बापू का ध्यान रहता था। उनके साथ के लोगों और बच्चों से किसी तरह की गलती न हो इसका वह खयाल रखते थे।

हमें तो यही आश्चर्य होता था कि इतनी सब बातों की तरफ वह एक साथ कैसे ध्यान रख लेते थे!

दक्षिण के दौरे में जो मुख्य घटनाएं वहां घटी थीं उनमें मदुरा का जगत् प्रसिद्ध मन्दिर उनके द्वारा हरिजनों के लिए खोला जाना भी एक थी। यह प्रसंग बड़ा ही अद्भुत और उत्साहपूर्वक था। बापू को भी उस मंदिर को हरिजनों के लिए खोल देने से बड़ी प्रसन्नता हुई थी क्योंकि यह जगह सनातनी विचारों का गढ़ थी।

लेकिन इससे भी ज्यादा खुशी बापू को पलनी के मंदिर में जाकर हुई। पलनी का मन्दिर बहुत ऊंची टेकरी पर बना हुआ है करीब सात-आठ सौ सीढ़ियां चढ़कर ऊपर जाना होता है। बापू को कुर्सी की डोली पर बिठाकर ऊपर ले जाया गया। हम लोग उनके साथ-साथ पैदल जा रहे थे। उन्हें कुर्सी पर ले जाया जाना बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा था लेकिन

[1] अब्दुलगफ्फार खां

इतना ऊंचा चढ़ना उनके लिए संभव नहीं था इसलिए उन्होंने कुर्सी पर ले जाया जाना मंजूर कर लिया।

रास्ते में उन्होंने खुद ही बताया कि वे पतनी क्यों जाना चाहते थे। मथुरा में तो लोग उनको आग्रह करके ले गए, लेकिन पतनी वह खुद भी ही इच्छा से जा रहे थे। मथुरा के मंदिर का नाम प्रतीक-रूप में धनवानों से जुड़ा हुआ है पतनी का मंदिर गरीबों का प्रतीक माना जाता है। इस लिए उन्होंने कहा कि जब वह मथुरा में गये तो पतनी-मंदिर में भी जाना ही चाहिए। पतनी के मंदिर की एक और विशेषता है। वह यह कि पुराने जमाने से ही मंदिर के इर्द-गिर्द जो गाना-बजाना भजन-पूजन होता है, वह हमेशा मुसलमान लोग ही करते आये हैं। वहां के पुजारियों को या अन्य लोगों को इसमें किसी तरह की आपत्ति नहीं थी। बापूजी के लिए यह एक विशेष आकर्षण की बात थी।

इस तमाम यात्रा में जहां कहीं बापू जाते हर जगह स्टेशनों पर, सड़कों पर, मीटिंगों में हजारों-लाखों की तादाद में लोग जमा होते। एक जगह तो कोई बीस-पच्चीस हजार लोग एक नदी में तीन-चार फुट गहरे पानी में कई घंटों तक रहे। बापू की गाड़ी वहां से गुजरनेवाली थी। सिर्फ उनकी झलक मिल जाय इसी भावना से ये लोग खड़े थे। इसी वजह से वहां दो-चार मिनट के लिए गाड़ी को विशेष रूप से रोका गया। बापू रेल के दरवाजे पर खड़े हो गए। उनको एक नजर देखने-मात्र से लोगों को बड़ा सुख-समाधान मिला।

गरीबों तथा हरिजनों के प्रति बापू की कितनी भावना थी इसका भी काफी अनुभव इस यात्रा के दौरान में मुझे हुआ। किसी भी जगह बापू हरिजनों के लिए पैसा इकट्ठा करने से नहीं चूकते थे। गरीब-से-गरीब लोग भी उन्हें अपने हाथों से पैसे-दो पैसे भी दे सकें इसकी कोशिश में रहते थे। इसकी वजह से बड़ी भीड़ हो जाती। बापू को तकलीफ भी बहुत होती लेकिन वह हर आदमी से जो भी वह देना चाहे, बड़ी खुशी से लेने के लिए हमेशा तत्पर रहते। गरीब एक पैसा भी दे तब भी उसके पीछे की भावना वह समझते और उसकी कद्र करते। गरीबों के द्वारा गरीबों की मदद हो इसे वह अच्छा समझते। इसलिए उनके सामने बड़ी रकम

लेनेवाले और इस तरह से दो-दो चार चार पैसे देनेवालों में कोई अन्तर नहीं था। एक तरफ तो वह उन ग़रीबों को खुशी देते जो उनको अपनी गाढ़ी कमाई का कुछ हिस्सा दे पाते, दूसरी तरफ उन गरीब हरिजन भाइयों को खुशी देते जिनके लिए उन पैसों का उपयोग किया जाता। जो पैसे मिलते उन्हें इकट्ठा कर उसका पूरा हिसाब रखना मेरे और मनुबाई के जिम्मे था। उसमें से कुछ रकम अन्य काम के लिए दी जाती उसका जमा-खर्च भी उसी समय करना जरूरी होता। यह सब काम हम बड़े उत्साह से करते और उसमें हमें बहुत आनन्द आता था।

* **

आखिरी बार मैं उनसे भंगी-कॉलोनी दिल्ली में उनके देहावसान के कुछ ही महीने पहले मिला था। उस समय मैं विद्यार्थियों को संगठित करने में लगा था और उनका मार्ग-दर्शन चाहता था। हम लोग उस समय 'नेशनल यूनियन ऑफ़ स्टूडेण्ट्स' बनाना चाहते थे और इस बारे में हमारी जो योजना थी वह हमने उनको बताई। उनको योजना पसन्द आई और उन्होंने कहा कि इसमें हमें किसीसे बहुत मदद की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए क्योंकि लोगों को विद्यार्थियों का राजनैतिक दृष्टि से उपयोग करने में अधिक दिलचस्पी है। फिर भी हमें अपने काम को बराबर करते रहना चाहिए। उन्होंने आगे कहा "एक चीज हमेशा ध्यान में रहे कि तुमको किसीकी मदद मिले या न मिले इसकी परवा नहीं करना उसके लिए अपना दर्जा नीचा मत करो या अपना सिद्धान्त मत छोड़ो।

स्मृति-पटल का एक बिन्दु

विमला बजाज

जब मैं संस्मरण लिखने बैठी तो फ़व्वारे की भांति मानस-पटल पर अंकित चौदह वर्ष पहले की बापू से भेंट की स्मृति उभर आई। विवाह के उपरान्त हम उनके आशीर्वाद लेने गये थे। उस रोज उनका मौन था। हम उन्हें प्रणाम कर एक ओर बैठ गए। चरखे की संगीत-ध्वनि सात्विक वातावरण में समाई हुई थी। एक व्यक्ति उन्हें डाक पढ़कर सुना रहा था। बीच-बीच में कोई कुछ आकर कह जाता था किन्तु सूत का तार तनिक टूटता न था। कांपते हाथों में मन की दृढ़ता छिपी थी।

इस कर्मयोगी की जीवन-साधना की तस्वीर आंखों के सामने से गुजर गई। दुबली-पतली देह में कितना आत्मबल होगा जिसके सामने एक शक्तिशाली सरकार परास्त हो गई! मुग्ध मन से मैं यह सोचती रही। ध्यानमग्न बापू चरखा चलाते जा रहे थे और मैं उनके ध्यान में मग्न थी। सहसा उन्होंने मुझसे जाने को कहा और मैं अपनी विचार-शृंखला तोड़ते हुए उठ खड़ी हुई। उन्हें प्रणाम कर हम वहां से चल दिये। बापू से बातचीत न हो सकी लेकिन इस मुलाकात की अमिट छाप दिल पर पड़ चुकी थी। मौन में भाषा से अधिक शक्ति छिपी है यह मुझे अनुभव हो रहा था। बापू मुझसे कितना कुछ कह चुके थे यह मैं ही जानती थी। मुझे विश्वास था कि आगे भी कई बार उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त होगा लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। यह मैं कैसे जान सकती थी कि यह मेरी पहली और आखिरी मुलाकात है! लेकिन शीघ्र ही वह अप्रत्याशित घटना घटी जिसकी स्वप्न में भी आशा न थी। सारा भारतवर्ष सहम उठा दुनिया शोक से ओतप्रोत हो गई। सबके लिए बापू पिता से भी बढ़कर थे वे फूट-फूटकर रो पड़े। मैं भी आंसू न रोक सकी। मन में दुःख-क्षोभ की लहरें उठने लगीं। काश मैं बापू से कुछ और मिल सकती! किन्तु मिलने का समय निकल चुका था। मैं मन मसोसकर रह गई।

आज बापू को गुजरे चौदह वर्ष हो गए, लेकिन उस मुलाकात की अमिट छाप मेरे हृदय पर अभी भी है। एक सामान्य भेंट भी जीवन में विशेषता ग्रहण कर लेती है जबकि वह एक केवल एक हो। एक में अनेक की भावना से उस एक मौन मुलाकात को ही मैंने अनेक मुलाकातों का सार मान लिया है। मानवीय गुणों से परिपूर्ण उस विशेष मानव का स्मरण करते हुए अपनी यह छोटी-सी संस्मरण-रूपी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

●

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट से प्रकाशित और प्रचारित पुस्तकें

१ बापू के पत्र—संपादक काकासाहब कालेलकर १.२५
'पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद' का परिवर्धित संस्करण (सचित्र)
(प्रस्तावना—डॉ. राजेन्द्रप्रसाद)

२ स्मरणांजलि—स्व. श्री जमनालाल बजाज के संस्मरण १.५
तथा उनके स्वर्गवास पर दी गई श्रद्धांजलियां। (सचित्र)
संपादक-मण्डल काका कालेलकर हरिभाऊ उपाध्याय
शिवाजी भावे श्रीमन्नारायण मार्तण्ड उपाध्याय
(प्रस्तावना—बनारसीदास चतुर्वेदी)

३ पत्र-व्यवहार (पहला भाग)—संपादक रामकृष्ण बजाज १
जमनालालजी का राजनैतिक नेताओं से पत्र-व्यवहार (सचित्र)
(प्रस्तावना—च. राजगोपालाचार्य)

४ पत्र-व्यवहार (दूसरा भाग)—संपादक रामकृष्ण बजाज १
जमनालालजी का देशी रियासतों के कार्यकर्ताओं से पत्र-व्यवहार, (सचित्र)
(प्रस्तावना—पट्टाभि सीतारामैया)

५ पत्र-व्यवहार (तीसरा भाग)—संपादक रामकृष्ण बजाज १
जमनालालजी का रचनात्मक कार्यकर्ताओं से पत्र-व्यवहार (सचित्र)
(प्रस्तावना—जयप्रकाशनारायण)

६ विनोबा के पत्र—संपादक रामकृष्ण बजाज ४
बजाज-परिवार के नाम लिखे विनोबाजी के पत्र (सचित्र)
जमनालालजी की डायरी में से विनोबा-संबंधी अंश और बजाज
परिवार के सदस्यों द्वारा लिखे विनोबाजी के संस्मरण
(प्रस्तावना—शिवाजी भावे)

७. पत्र-व्यवहार (चौथा भाग)—संपादक रामकृष्ण बजाज १.५
जमनालालजी का अपनी पत्नी जानकीदेवी बजाज के साथ (सचित्र)
(पृष्ठभूमि जानकीदेवी बजाज)

८. बापू-स्मरण—संपादक रामकृष्ण बजाज (प्रेस में)
जमनालालजी की डायरी में से बापू-सम्बन्धी अंश और बजाज परिवार के सदस्यों द्वारा लिखे बापूजी के संस्मरण (इसे एक प्रकार से 'बापू के पत्र' का दूसरा भाग समझना चाहिए।)

जमनालालजी-सम्बन्धी अन्य पुस्तकें

१ पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद—संपादक काका कालेलकर
जमनालालजी व गांधीजी का पत्र-व्यवहार। जमनालालजी की डायरी तथा पत्रों से गांधीजी-सम्बन्धी अंश तथा जमनालालजी-सम्बन्धी महात्माजी के संपर्क की अन्य सामग्री।
(प्रस्तावना जवाहरलाल नेहरू)
जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट प्रकाशन। (अप्राप्य)

२ पांचमा पुत्रने बापुना आशीर्वाद (गुजराती-संस्करण)।
संपादक काका कालेलकर प्रस्तावना जवाहरलाल नेहरू
(नवजीवन ट्रस्ट अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित)
'बापू के पत्र' का अंग्रेजी-संस्करण जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट प्रकाशन

३ To a Gandhian Capitalist

४ श्रेयार्थी जमनालालजी—ले हरिभाऊ उपाध्याय (प्रेस में)
श्री जमनालालजी बजाज की विस्तृत जीवनी
प्रस्तावना—डॉ राजेन्द्रप्रसाद
(सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन)

५. श्रेयार्थी जमनालालजी—(संक्षिप्त संस्करण) (अप्राप्य)
(सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन)

६. जमनालालजी—ले घनश्यामदास बिड़ला (प्रेस में)
(जमनालालजी का चरित्र-चित्रण सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन)

७. जमनालाल बजाज—ले स्व रामनरेश त्रिपाठी (अप्राप्य)
(जमनालालजी की जीवनी हिन्दी-मन्दिर, इलाहाबाद का प्रकाशन)

८ जीवन-जौहरी—ऋषभदास रांका (अप्राप्य)
(जमनालाल के जीवन-प्रसंग भारत जैन महामंडल वर्धा का प्रकाशन)

९. कृतार्थ जीवन—लेखक दा म पितरे २
जमनालालजी का मराठी जीवन-चरित्र
(जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट वर्धा का प्रकाशन)

१ मेरी जीवन-यात्रा—जानकीदेवी बजाज २
जानकीदेवी बजाज की आत्म-कथा
(सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन) प्रस्तावना विनोबा

११ माझी जीवन-यात्रा—अनु दा म बोरकर १
जानकीदेवी बजाज की जीवन-यात्रा का मराठी-अनुवाद
(पॉपुलर बुक डिपो बंबई का प्रकाशन)

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट के आगामी प्रकाशन

१ पत्र-व्यवहार (पांचवां भाग)
(जमनालालजी का अपने परिवार के सदस्यों से)

२ पत्र-व्यवहार (छठा भाग)
(जमनालालजी का देशी रियासतों के अधिकारियों से)

३ पत्र-व्यवहार (सातवां भाग)
(जमनालालजी का सामाजिक कार्यकर्ताओं व व्यापारियों से)

४ जमनालालजी के पत्र
जमनालालजी का विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों के साथ
का चुना हुआ पत्र-व्यवहार ।

५ जमनालाल की डायरियां
जमनालालजी की डायरियां राजनैतिक व ऐतिहासिक महत्त्व की हैं। तीन या चार भागों में इन डायरियों को प्रकाशित करने की योजना है।